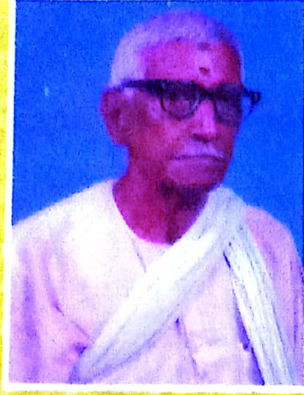
अतीत-मन्थन

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

Scanned by CamScanner



कौलिकतेँ वैयाकरण

वृत्तिएँ शिक्षक

रुचिएँ कवि

साधनेँ पत्रकार

ओ परिमार्जित शैलीक लेखक

गद्य-पद्य, एकांकी-नाटक, निबन्ध-आलोचना, संस्मरण-सर्वेक्षण, साहित्य-शतदलक प्रत्येक दलपर अमरजीक रमणीयता सुरभित भेटत । जहिना लेखन, तहिना वाचन, जहिना सम्पादन-प्रकाशन तहिना प्रचारण-प्रसारण, जहिना शोध-सन्धान तहिना संग्रह-संकलन, प्रत्येक समकोणक द्विभुज समतूल भेटत ।

आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'

Scanned by CamScanner

चि. श्री विनयदेव (राजू) को

सस्नेह -

[illegible]

20.११.७०

Scanned by CamScanner

अतीत-मन्थन

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

नवरत्न-गोष्ठी
आदित्य सदन
मिश्रटोला, दरभंगा

Scanned by CamScanner

ATEET–MANTHANA
SRI CHANDRANĀTH MISHRA 'AMAR'

प्राप्ति स्थान :

आदित्य सदन
मिश्रटोला, दरभंगा- 846004
दूरभाष : 06272-223485

© लेखक

पहिल खेप : फरवरी, 2010

प्रति : 300

मूल्य : 300 टाका मात्र

मुद्रक : प्रिंटवेल,
टावर चौक, दरभंगा
दूरभाष : 06272-248421

Scanned by CamScanner

आभार

अन्ततः बीतल जीवन क्रम पर दृष्टि निक्षेप करबाक परिस्थिति-निर्माण भइए गेल । साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, प्रेरणाक स्रोत बनल । एहि अल्पज्ञकेँ एहि आकाश छुबैत महगीक समस्यामे अर्थ चिन्तनक समस्यासँ निश्चिन्त कऽ रचनात्मक कार्यक मार्ग प्रशस्त कऽ देलक । एहि हेतु आभार व्यक्त करबाक योग्य शब्दो हमरा नहि भेटि रहल अछि । तथापि अकादेमीक वर्त्तमान अध्यक्ष श्रीसुनील गंगोपाध्याय, सचिव श्री अग्रहार कृष्णमूर्त्ति तथा मैथिली भाषाक संयोजक श्रीविद्यानाथ झा 'विदित' सहित वित्त उपसमितिक समस्त सदस्य लोकनिक प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करैत छियनि जे एहि वार्द्धक्यमे 'लेखक अपन आवास पर' योजनाक अन्तर्गत सम्मान पूर्वक अनुदान दऽ कृतार्थ कयलनि ।

एहि पुस्तकक प्रकाशनमे सतत सहयोग लै उत्साहित श्रीअशोक कुमार ठाकुर, श्रीफूलचन्द्र झा 'प्रवीण', श्रीदिलीप कुमार झा 'लूटन', श्रीसुमित कुमार 'नटवर', दौहित्र डॉ० श्रीशंकरदेव झा, पौत्र श्री आदित्य भूषण आ श्रीविभूति भूषण, संगहि समय-समयपर आबि एकर अप्रकाशित अंश सुननिहार साहित्यकार बन्धु सभक प्रति शुभकामना व्यक्त करैत छियनि ।

कहबाक अछि जे स्मृति शक्ति पर बल दैत जेना एतबा लिखि लेलाक बादो समय-समय बहुतो घटना सब स्मरण पथ पर अबैत रहैत अछि जे उल्लेख्य योग्य अछि, किन्तु टंकित-अंकित होयबाक क्रममे बीच-बीचमे मन पड़ैत गेल से चिप्पी सटैत गेलहुँ जाहि कारणेँ 'प्रिंटवेल'क संचालक श्री संजय जी सहित अक्षर संयोजक लोकनिकेँ असुविधा दैत रहलियनि । तथापि यथा समय एकरा प्रकाशित करबामे दत्त-चित्त रहलाह तदर्थ आशीर्वादक संग धन्यवाद दैत छियनि ।

वसन्त पंचमी
संवत्- 2066
सन् 2010 ई.

लेखक

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

Scanned by CamScanner

समर्पण

चित्र नहि, जनिक मूर्त्ति मानस-पटल पर अंकित अछि,

जनिक प्रेरणा, जनिक मार्ग दर्शनमे

ई जीवन-रथ सुगम बाट पर चलैत रहल

ताहि मातृचरणक पावन स्मृतिकेँ

श्रद्धा पूर्वक समर्पित-

श्रीबतहू

Scanned by CamScanner

एकर प्रयोजन की ?

एहि समस्त सृष्टिक क्रियाशीलता कार्य-कारणभाव पर आधृत रहैत छैक, तेँ मैथिलीओमे कहबी छैक– बिनु कारण टिटही नहि लागय । बहुत वर्ष पूर्व हमर एक एहन अन्तरंग मित्र जे नवीन कलमबाग लगाबय लगलाह तँ हमरा आग्रह पूर्वक बजबाय एकटा गाछ हमरोसँ रोपबौलनि, जखन ओ फड़य लगलनि तँ जाधरि जीबैत रहलाह ताधरि प्रत्येक वर्ष आम पठबैत रहलाह । ओ छलाह बाबू लोकपति सिंह, 'द्रोहाग्नि' खण्डकाव्यक रचयिता । ओ सर्वप्रथम आग्रह कयने रहथि जे अहाँ आत्मकथा लिखू । किछु वर्षक बाद हमर अनन्य मित्र, दू शरीर एक प्राण रामकृष्ण झा 'किसुन'क बालक 'भारती मण्डन' पत्रिकाक सम्पादक, मैथिली साहित्य संसारमे सुपरिचित श्रीकेदार कानन पत्र लिखि आग्रह कयलनि– काकाजी, अहाँ अपन आत्मकथा अवश्य लिखू । एवं क्रमेँ अनेक बन्धु आग्रह पर आग्रह करैत रहलाह । हम सुनैत रहलहुँ आ मनहिमन गुनैत रहलहुँ अपन लघु व्यक्तित्वक प्रसंग ।

आचार्य 'सुमन' जखन अपन 'मन पड़ैत अछि' लिखि छपा रहल छलाह तँ जेना आदेशक स्वरमे कहलनि– अहूँ आत्म-संस्मरण लिखिए लेब । हम प्रतिवाद करैत कहलियनि– हमरासन अति सामान्य लोकक आत्म संस्मरणक उपादेयता की ? ओकरा के पढ़त ? ई पढ़लासँ की लाभ होयतैक ? हमर कोन एहन जीवनक उपलब्धि अछि जे भविष्यक हेतु ककरो हेतु प्रेरणादायक होयतैक ? कविता, कथा, नाटक आदिसँ किछु मनोरंजनो होइत छैक, एहिसँ मन रंजे होयतैक ।

मुस्कुराइत कहलनि– छिड़िआयल रुद्राक्षक कोनो उपयोगितानहि, मुदा एक-एक दानाकेँ गाँथि जखन ओ मालाक रूप धारण कऽ लैत छैक, तखन ओहिपर शत-सहस्र इष्टक जप भऽ पबैत छैक । अहाँ अपन जीवनमे द्रुतगतिएँ सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा प्रशासनिक परिवर्त्तन होइत देखलिऐक अछि । ताहि सबकेँ अपन अनुभवक आधार पर लिपिबद्ध कऽ देबैक आ लिखि लेलाक बाद एक तटस्थ

Scanned by CamScanner

पाठक जकाँ अपने पढ़ि जयबैक तँ सब प्रश्नक उत्तर स्वत: भेटि जायत । हमरा विश्वास अछि जे कमसँ कम आध शताब्दीक मैथिली भाषा साहित्यक प्रामाणिक गतिविधि पर प्रकाश पड़तैक ।

आग्रह ओ अनुरोधके टारलो जाय सकैत छल, आदेशके टारब हमर कृतघ्नता होइत । हम अनुभव करैत छी जे आइ हम अपनाके जाहि ठाम आ जाहि स्थितिमे पाबि रहल छी तकर अधिकांश श्रेय सरस्वतीक ओही वरद पुत्रके छनि । जीवनक आरम्भिक कालमे जँ ओहि महामानवक सम्पर्कमे नहि आयल रहितहुँ तँ हमर जीवनधारा कोनो अन्धकूपमे खसल वा कोनो अरण्यमे जाय भुतिआय आ सुखाय गेल रहैत । श्रेष्ठजनक आदेशक पालन सेहो एक उपलब्धि थीके । अत: जे किछु अरकच-बथुआ सहेजि सकलहुँ तकरे ई संकलन मानल जयबाक चाही । हमरा एखनहु आशंका अछि जे ई श्रम सार्थक होयत वा नहि ।

एक शब्द दिस ध्यान आकृष्ट करब । अन्यान्य बन्धुलोकनि 'आत्मकथा' लिखबाक आग्रह कयलनि, किन्तु आचार्य 'सुमन' 'आत्म-संस्मरण' लिखबाक आदेश देलनि । आत्मकथा तथा आत्म-संस्मरण सुनबामे एकरङाहे लगैत छैक, किन्तु दूनूमे तात्त्विक अन्तर छैक । आत्मकथा कोनो महात्मा लिखि सकैत छथि, कारण मानव जीवनमे सत्कर्म, असत्कर्म, कुकर्म ओ दुष्कर्म कखनहु अज्ञानवश, कखनहु मानसिक आवेगवश असत्कर्म कयल जाइत छैक, किन्तु कुकर्म वा दुष्कर्म जानि बूझिकऽ कयल जाइत छैक । जाबत धरि सभक उद्घाटन नहि होइत छैक ताबत धरि ओ आत्मकथा नहि कहौतैक । से कोनो महात्मे द्वारा साहस कयल जाय सकैत छैक । हम ने महात्मा छी जे साहस कऽ सकी । तखन दुरात्मा सेहो नहि छी जे अनकर उत्कर्ष देखि ईर्ष्याक ज्वालामे अपनाके दग्ध करैत रहैत अछि । सामान्य लोक छी, जीवनक जे सामान्य अनुभूति अछि ताही आलोकमे हम आत्म-विश्लेषण हेतु प्रवृत्त भेलहुँ अछि । वयसक कारणे स्मृतिपटल पर विस्मृतिक दबाब किछु बेसीए पड़ि रहल अछि, तें कतेक धरि पहुँचि सकब से सम्प्रति कहब सम्भव नहि । एक टा बात और जे लघु व्यक्तित्व रहितो हमर कर्तृत्वक आयाम अपेक्षाकृत विस्तृत अवश्य रहल, तें सबके समेटब प्राय: सम्भव नहि होयत । किछु एहनो संस्मरण अछि यथा कन्यादान फिल्ममे हमर प्रवेश, जेना रामकृष्ण झा 'किसुन'सँ भेट, जेना 'चाणक्य' महाकाव्यक प्रणेता दीनानाथ पाठक 'बन्धु'क हमर आवास पर आयब । एहि सब संस्मरणके लिपिबद्ध कऽ चुकल छी आ ओ सब पुस्तकक आकारो ग्रहण कऽ चुकल अछि । ओहो सब आत्म-संस्मरणक अंश थीक । ओहि सबके एहिमे समाहित करब बतहपोथ भऽ जयबाक आशंकासँ अभीष्ट नहि छल । किन्तु किछु मित्रक आग्रह पर किछु अंश एतय, शेष परिशिष्टमे उल्लेख कऽ देलहुँ अछि ।

एकटा स्पष्टीकरण आरम्भेमे कऽ देब उपयुक्त बुझाइछ जे आत्म-संस्मरण

Scanned by CamScanner

लिखबामे सबसँ पैघ त्रुटि अथवा दोष आत्मश्लाघाकेँ मानल जाइत छैक, परन्तु हमरा जनैत अत्युक्ति, अहम्मन्यता, आत्म-प्रशंसासँ बँचैत जीवनक उपलब्धिक अंकन नहि कयल जाय तँ पढ़निहारकेँ पढ़लासँ लाभ की होयतनि ? हमरा सन सामान्य शिक्षाप्राप्त एक साधारण शिक्षकक पदसँ जीविकोपार्जन करैत सेवानिवृत्त भेनिहार व्यक्तिकेँ, जकरा ने विद्याबल, ने धनबल, ने जनबल, तथापि पात्रता नहिओ रहैत समाज द्वारा जे सम्मान हमरा भेटल से हमरा जनैत समाजक ऋणे हमरा माथ पर लादल गेल । एहि ऋणक परिशोधन हमरा सामर्थ्यसँ बाहरक वस्तु थीक । तखन जँ सूदि मात्रो सधयबाक सामर्थ्य एहिसँ भऽ गेल तँ जीवनकेँ कृतार्थ मानि लेब । अतः अपन प्रवृत्तिक अपने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करैत जे कटु-मधु अनुभव भेल तकरा लिपिबद्ध करबामे प्रवृत्त भेल छी ।

पूर्व पीठिका

बुझिए ने पाबि रहल छी जे कतय सँ आरम्भ करी । विशेष उल्लेख्य ई जे संयोगेवश हमर जन्मभूमि खोजपुर भऽ गेल । ने हमर पिताक जन्मभूमि थिकनि ने हमर पुत्र वा पौत्रक । एहि प्रसंग यथास्थान उल्लेख करब । हम बाल्यकालेसँ जेहन भाग्यवान रहलहुँ तेहन हमर पिता-पितामह नहि छलाह । हमर पितामहक जन्मभूमि डीहटोल हरिपुर छलनि, एखनहु निकटतम देयादवाद अधिक ओतहि छथि । हमर पितामह गिरिधारी मिश्र अल्पेवयसमे मातृहीन भऽ गेलाह तँ ब्रह्मोतरा-सागरपुर अपन मातामहीक लग चल अयलाह आ एतहि बसि गेलाह, तेँ हमर पिता पण्डित मुक्तिनाथ मिश्रक जन्म ब्रह्मोतरामे भेलनि । हमर पितामहकेँ तीन विवाह छलनि । पहिल नरही ग्रामवासी मोहनमिश्रक कन्या भूलरि देवीक संग, दोसर खोजपुर, तेसर मढ़िया । हमर पिता सेहो छबे वर्षक वयसमे मातृहीन भऽ गेलाह । हिनक मातामही सेहो नहि जीवित छलथिन तेँ सतमाय लग खोजपुर पठा देल गेलाह । ओतय हमर पिताकेँ माम नहि छलथिन, हमर सतपितामही मात्र दू बहिन छलीह से दूनू बहिन खोजपुरेमे रहैत छलीह । हुनका तावत कोनो सन्तान नहि भेल छलनि तेँ हमर पिता मायक दुलार-मलार हुनकेसँ प्राप्त कयलनि, मुदा जखन हुनका एक कन्या जन्म लेलथिन तखन हिनक ताक-छेममे कमी आबय लगलनि तँ हारि-दारि अपन मातृक नरही पठा देल गेलनि, जतय तीन गोट माम छलथिन । सबसँ जेठ यदुवंशी मिश्र जे थोड़-बहुत संस्कृत पढ़ने रहथिन, परन्तु कर्मकाण्डमे निपुण नैष्ठिक गृहस्थ । जहिया हमर पिता नरही गेलाह ताबत धरि हुनको कोनो सन्तान नहि भेल छलनि । पछाति दू गोट कन्या भेलथिन जनिका हम सब खंजनि पीसी आ कौशल्या पीसी कहियनि । एही खंजनि पीसीक पौत्र थिकथिन 'एना त नहि जे' शीर्षक कविता संग्रहक रचयिता नवतावादीमे बहुचर्चित कवि श्रीहेरकृष्ण झा । दोसर कौशल्या पीसी एकमात्र कन्याक जन्मक बाद विधवा भऽ गेलाक कारणेँ हम जहिया नरही पढ़बा लै पठाओल गेलहुँ तँ ओ नरहीएमे रहैत छलथिन । दोसर रहथिन रामकृष्णमिश्र जे ख्यातनामा पहलवान छलथिन । सुनल

Scanned by CamScanner

अछि जे हुनका एक बाधमे एक पाड़ासँ पालाँ पड़ि गेलनि तँ ओकरा थुथून पर तेहन समधानि मुक्का मारलथिन जे ठामहि अड़रा कऽ खसि पड़लैक आ आगाँ बढ़ि गेलाह ।

तेसर माम छलथिन भगीरथ मिश्र जे पढ़ल-लिखल रहथिन अति सामान्य, किन्तु प्रकृतिप्रदत्त वैद्यक गुणसँ एहन सम्पन्न रहथिन जे जड़ी-बूटीक गुणसँ परिचित आ नाड़ी परीक्षणमे अद्वितीय रहथिन । हिनका पीयूषपाणि कहल जाइनि । स्वयं आयुर्वेदिक औषधि बनबथि आ निःशुल्क चिकित्सा करथिन । जाहि प्रसादेँ अपने दुधगरि मालजाल नहि पोसथि, किन्तु बिनु दूध-दहीक कहियो भोजन नहि करथि ।

हमर पिता अपने जेठ माम यदुवंशी मिश्रक संरक्षणमे ओतहि पढ़ब-लिखब आरम्भ कयलनि । पढ़बाक उत्कण्ठा ततेक बढ़ि गेलनि जे अपने व्योंत धराय महामहोपाध्याय राजनाथ मिश्र, प्रसिद्ध रजेमिश्र, जनिक रचित 'तिथिनिर्णय' ग्रन्थ मिथिला भरिमे मान्य बूझल जाइत छनि, तनिकासँ व्याकरण पढ़य लगलाह । कोन धरानिएँ पढ़लनि, कोना खोजपुरमे बसि सकलाह, कोना पहिल विवाह रायपुर (छत्तीसगढ़) भेलनि, कोना काशीसँ पढ़ि कऽ घुरलापर वख्शीटोल हरिपुरमे म.म. मुकुन्द झा द्वारा स्थापित पाठशालामे अध्यापक भेलाह, कोना ओतयसँ महारानी-अधिरानी रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय अयलाह से सब वृत्तान्त सुनाबथि, से सब हुनका मुहेँ सुनल अछि, किन्तु जे देखल अछि ताहि समय हम अपनाकेँ एक प्रधानाचार्यक पुत्रक रूपमे चिन्हैत छलहुँ जनिकर अतिशय सम्मान मिथिलेश अपनहुँ करैत छलथिन, जाहि कारणेँ हमर किशोर वयस हमरा आकाश ठेका देने छल ।

जीवन-क्रम

अपन जन्मक समयक घटना ककरा मन रहलैक अछि जे हमरा रहैत ? तखन माय-बहिनक मुहेँ सुनल घटने सबकेँ आधार मानय पड़त । तदनुसार हमर जन्म वैशाख पूर्णिमाक 1925 ई.क राति 3 बजे भेल छल, जखन ज्येष्ठ कृष्ण पड़ीव भऽ गेल छलैक तेँ हमर टिप्पनिमे ज्येष्ठ कृष्ण पड़ीव अंकित छल । (एक विशेष बात जनाय दी जे भविष्यमे हमर जेठ-छोट तीन भायक मृत्यु भऽ गेलनि तँ हुनका लोकनिक टिप्पनि फाड़िकऽ फेकि देबाक क्रममे भ्रमवश हमर जेठ भायक बदला हमरे टिप्पनि फाड़ि फेका गेल, तेँ 'अंकित छल' भूत कालिक प्रयोग कयलहुँ अछि ।) जन्मक बाद हमर चीत्कार तते जोर तथा ततेक काल धरि चलैत रहल जे हमरा घरक चारू कातक आङनक लोक सब जागि गेल । हमर निकटतम पड़ोसी इन्द्रधर झा, जे ओहि समय गाम भरिमे सबसँ जेठ रहथि, जनिका गामक अधिकतर लोक इनर्धर बाबा कहैत छलनि, से हमर चीत्कार सुनि हमर नाम 'भोकरन' धयने रहथि । ओहि दिन मधवा (नेपाल तराइ) निवासी हमर पिसियौत पण्डित शिवनाथ झा खोजपुर आयल रहथि से प्रात भेने हमरा देखि बाजल छलाह– रातके जनारो एहे छथ ?

Scanned by CamScanner

एतहिसँ हमर एक प्रकारक असामान्य स्वभावक आरम्भ भऽ गेल जाहि कारणेँ हमर पारिवारिक नाम 'बतहू' पड़ि गेल । कहल जाइछ जे 3-4 वर्ष धरि हम गोङ रही । अपन जिद्दक अभिव्यक्ति इशारासँ कयल करी, से ततेक स्पष्ट होइत छल जे बुझबामे ककरो असौकर्य नहि होइक, तेँ हमरा प्रति ईहो टिप्पणी कयल जाइत छल जे ई पूर्व जन्ममे नटकिया छल । जे भविष्यमे सत्य भेल आ कन्यादान फिल्ममे बाध्य भऽ सिनेमाक पर्दापर उतरलासँ चरम पर पहुँचि गेल ।

हमर माय रहथि एकसरुआ, तेँ हमर वैमात्रेय बहिन, जनिक मातृक रहनि रायपुर (छत्तीसगढ़) आ सासुर नवानी छलनि । हुनक सासुर सम्पन्नपरिवारमे नहि छलनि, ताहू कारणे अधिक काल खोजपुरेमे रहैत छलीह । सुनल अछि जे हमर सब भाय बहिनकेँ बच्चामे वैह पोसलनि । 1927 मे हमरासँ छोट भाय विन्ध्यनाथक जन्म भेलनि आ किछु मासक बाद हमर एक भगिनीक जन्म सेहो भेलैक । हम गोङ तँ रही, मुदा लोथ नहि । कहल जाइछ 2 वर्ष पूरैत -पूरैत धुरझाड़ दौड़य लागल रही । टाङ होइत देरी खुरलुच्ची सेहो भऽ गेल रही । आब आङनमे दू गोट नवजात शिशुक आगमनसँ हम एक समस्या बनि गेलहुँ । घरक कोनटे लग इनार छलैक, सबकेँ आशंका बनल रहैत छलैक जे कदाच ओमहर ने चल जाय, इनारमे ने खसि पड़य । 1928मे समाधान एना ताकल गेल । पिताजी गर्मीक छुट्टी बितलापर दरभंगा आबय लगलाह तँ हमरा अपन संग कऽ लेलनि । हमरासँ जेठ भवनाथ दरभंगेमे पढ़ैत छलाह । खोजपुरसँ राजनगर रेलवे स्टेशन 13 माइल, हमरा राजनगर पहुँचयबाक लेल नथुआ नामक हरवाह छल, ओ सीक-पटइ पर एक ओरिमे एकटा ढाकीमे गतगर केथरी दऽ हमरा आ दोसर ओरिमे बोरामे किछु अन्न लेबऽ चाहैत छल, मुदा हम ओहि ढाकीमे बैसबाक हेतु तैयार नहि होइ, तखन दोसर ओरिमे एक ढाकीमे तऽरमे काँच आ उपरमे लाल-पीअर पाकल आम राखल गेल । भरि ढाकी आम देखि हम सहर्ष ढाकीमे बैसि गेलहुँ । बहिन लोकनि ओहि समयक हमर फुर्त्तीक वर्णन करैत बादोमे हँसैत-हँसैत लोट पोट भऽ जाथि । एहि तरहेँ हम दरभंगा आनल गेलहुँ । ने जानि यात्राक ओ लग्न केहन छल जे हमरा आजीवन एही दरभंगामे तेना खुटेसि देलक जे अन्तत: हम एतहि प्रवासीसँ निवासी भऽ गेलहुँ, हमर जेठि कन्या डॉ० श्रीयोगमायाझा केँ छोड़ि, पुत्र पौत्र सभक जन्मभूमि दरभंगे भऽ गेलनि ।

हम सोदर पाँच भाय छलहुँ, ताहिमे माँझिल हम । जेठ लक्ष्मीनाथ तथा भवनाथ, छोट विन्ध्यनाथ आ जीवनाथ । लक्ष्मीनाथक ई नाम धराउए रहि गेलनि । ओ बाल्यकालमे बेस हृष्ट-पुष्ट शरीरक रहथि । हमर पिताक दुइए टा काज छलनि, सांसारिक सब छल-छद्मसँ सर्वथा असम्पृक्त रहैत पूजा-पाठ आ अध्यापन, से पूजोक आसन पर रहैत कोनो छात्र किछु जिज्ञासामे अबथिन तँ समाधान कऽ देथिन । जहिया गार्हस्थ्यमे प्रवेश कयलनि तहिया अपना एको धूर भूमि नहि छलनि । विवाहोदान जे भेलनि से एक प्रकारेँ अनके

Scanned by CamScanner

घर-आङनसँ। ताहि स्थितिमे घर-गृहस्थी ठाढ़ करबामे केहन आ कतेक श्रम ओ संघर्ष करय पड़ल होयतनि से अनुमाने कयल जाय सकैछ। तथापि स्वयं विपन्न रहितहु जँ क्यौ सहायता माङय आबनि तँ पैंचो-पालट कऽ तकर पूर्त्ति कऽ देथिन, तेँ लोक भोलानाथ बूझनि। ताहि भोलानाथक ई हृष्ट-पुष्ट बालकके लोक गणेश कहय लगलनि तँ ई लक्ष्मीनाथसँ गणेश भऽ गेलाह। हुनकासँ छोट छलाह भवनाथ जे जेहने शरीरसँ बलिष्ठ तेहने मेधासँ परिपुष्ट रहथि। एहि दूनू भायक उपनयन भऽ गेलाक बाद हमर जन्म भेल।

ज्येष्ठ पुत्र पितृकर्मक प्रथम उत्तराधिकारी होइत छथि, तेँ पिताजी हिनका, जनिका हम सब बच्चा भाइ कहैत छलियनि, सुरसर (सुरसंड)मे एकदण्डी ब्रह्मचर्याश्रम स्थापित कयने रहथि, जतय वेद ओ कर्मकाण्डक शिक्षा देल जाइक, ततय पठा देने छलथिन। दोसर भवनाथके अपनसंग राखि व्याकरण पढ़ा रहल छलथिन। हम जखन दरभंगा आनल गेलहुँ तँ यैह हमर परिचर्या करैत छलाह।

प्रसंगतः उपर्युक्त दण्डीक विषयमे प्रत्यक्षदर्शीक मुहेँ सुनल एक अति चमत्कारक घटनाक उल्लेख कऽ दी। एही घटनासँ प्रभावित भऽ बच्चा भाइ केँ सुरसर ब्रह्मचर्याश्रम पठौने रहथिन। 1914-15 ई.क घटना थिकैक। दण्डी महाशय 15-20 ब्रह्मचारीक संग काशी यात्रापर बिदा भेलाह। ट्रेनमे बिनु टिकट लेने सबकेँ लऽ चढ़ि गेलाह। जनकपुर रोडसँ गाड़ी फुजलैक तँ टिकट चेक करय आबि गेलैक। टी.टी. सबकेँ पकड़ि लेलकनि। अगिला स्टेशन जोगियाड़मे सबकेँ उतारय लगलनि तँ दण्डी कहलथिन– आप हम लोगों को दरभंगा तक चलने दें। वहाँ मैं दण्ड सहित सबका भाड़ा चुका देने की व्यवस्था कर लूंगा। टी.टी. मानि लेलकनि। दरभंगा पहुँचला पर जखन किराया मङलकनि तँ कहलथिन– मैं दण्डी संन्यासी हूँ, आप मुझपर विश्वास कीजिए और हमें व्यवस्था करने के लिए जाने दीजिए, मुझे इन ब्रह्मचारियों को काशी ले जाना है। मैं लौटकर आने पर सब चुका सकूँगा। टी.टी. सबकेँ हाजतमे बन्द कराबय लऽ गेलनि तँ कहलथिन– आपको मुझ पर विश्वास नहीं है तो मुझे हाजत में बन्द कर दें, इन बच्चों का क्या दोष है ? ये तो मेरे कहने पर गाड़ी में चढ़े हैं। आठसँ बारह तेरह वर्षक ब्रह्मचारी सब रहथि। दण्डीकेँ हाजतमे बन्द कऽ ब्रह्मचारी सबकेँ छोड़ि देलकैक। ओकरा सबकेँ कहलथिन– तुम लोग महाराजा का महल है 'मोती महल' वहाँ चलो, मैं वहाँ मिल जाऊंगा।

ओही दिन काशी हिन्दू विश्वविद्यालयक स्थापना करबाक प्रसंग पण्डित मदन मोहन मालवीय महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहसँ परामर्शक हेतु दरभंगा आयल रहथि, जनिक आवास मोतीमहलमे छलनि। ब्रह्मचारीगण मोतीमहल पहुँचल तँ दण्डीजी ओकरा सभक प्रतीक्षामे ओतहि फाटक लग ठाढ़ रहथिन। संयोग जे मिथिलेश ओहि काल मोती महलमे मालवीयजीसँ गप्प करैत छलाह। ब्रह्मचारी सब अपन गुरुकेँ देखि आश्चर्यचकित। एहन चमत्कार पहिने ओहो सब नहि देखने छल। सिपाही फाटके लग सबकेँ रोकि देने

Scanned by CamScanner

छलैक । ब्रह्मचारीकें पहुँचिते दण्डीजी समवेत स्वरमे खूब जोर सँ तीन बेर हरि: ओम् नारा लगौलनि । मिथिलेश अपन एक पार्षदकें बाहर पठौलथिन । ओ घूरि कऽ जाय सूचना देलथिन जे एक संन्यासी किछु ब्रह्मचारीक संग श्रीमानक दर्शन हेतु फाटक लग ठाढ़ छथि । जेहने आस्थावान मिथिलेश तेहने आस्थावान मालवीयजी । अपन गप्प छोड़ि दण्डीजीकें बजौलथिन । ओ ब्रह्मचारी सभक संग प्रवेश कऽ अपन समस्या सुनौलथिन, ताही क्रममे कहलथिन जे हम स्वयं तँ स्वेच्छा गमन मन्त्र जनैत छी, तें हाजतसँ बाहर भऽ सकलहुँ । एकसर रहितहुँ तँ काशी चल गेल रहितहुँ, किन्तु ई ब्रह्मचारी सबकें लऽ जयबाक अछि ।

स्वेच्छा गमन पर दुनू गोटे कें विश्वास नहि भेलनि, तें मालवीयजी दण्डीजीक परीक्षा लेबाक हेतु कहलथिन– अगर आप स्वेच्छा गमन मन्त्र जानते हैं तो पहले मेरा एक काम कर दीजिए । मेरें आप्त सचिवके पास हिन्दू विश्वविद्यालय सम्बन्धी कागजात हैं उसे लेकर उन्हें आने का संवाद पहुँचा दीजिए । दण्डीजी एहि हेतु दू पहर समय मङलथिन आ ता धरि ब्रह्मचारी सभक अँटकबाक व्यवस्था कराय देबाक अनुरोध कयलथिन । जाहि भवनमे सम्प्रति महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय अछि, ब्रह्मचारी लोकनिकें अँटकबाक व्यवस्था भेलनि । ठीक 6 घंटाक बाद मालवीयजीकें अर्जेंट तार भेटलनि जे कागत पत्र लऽ आबि रहल छी । दोसर दिन सुनल अछि जे राज दरभंगाक दिससँ सब ब्रह्मचारीक काशी जयबाक अयबाक व्यवस्था कऽ देल गेलैक ।

विषयान्तर भऽ गेल, प्रकृत विषय पर घुरैत छी । श्रावणी पूर्णिमा दिन महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह रक्षाबन्धन पर्वक अवसर पर पूर्ण राजकीय वेषमे वर्त्तमान संस्कृत विश्वविद्यालयक सभाकक्ष आनन्दबागमे बैसेत छलाह, आगाँमे तीन टा चानीक बट्टामे टाका, अठन्नी आ चौअन्नी राखल रहैत छलनि । अपन कुल पुरोहित, विद्यालयक अध्यापक लोकनि, छात्रगण, राजक ब्राह्मण कर्मचारी सब, शुभंकरपुर, सुन्दरपुर, रानीपुर, खराजपुर, मिर्जापुर, चतरिया, गहुमी आदि गामक दरिद्र ब्राह्मण सब राखी बन्हबाक हेतु अबैत छलथिन । दक्षिणामे पुरोहित, अध्यापक लोकनिकें एक टाका, ब्राह्मण सबकें अठन्नी, छात्रसमुदाय आ दरिद्र सबकें चौअन्नी भेटैत छलनि । कहल जाइत छनि जे रमेश्वर सिंह हाथक बड़ सक्कत लोक छलाह, परन्तु ओहि दिन निर्धारित अवधि धरि उदार भऽ जाइत छलाह । निर्धारित समयक बाद उठि जाइत छलाह । पश्चात् अयनिहार लोककें निराश भऽ घूरि जाय पड़ैत छलनि । 1928मे तीन वर्ष पूर कऽ हम चारिम वर्षमे चल गेल रही । जखन पिताजी सब बिदा भेलाह तँ हमरा ककरा लग छोड़ताह, तें संग लेने गेलाह । मिथिलेशक हाथें एकटा चौअन्नी हमहू प्राप्त कयलहुँ से ताहि समय हमरा लेल गर्वक विषय भेल ।

राजपण्डित बलदेवमिश्र द्वारा सम्पादित चन्द्र पद्यावलीमे महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक ओ मुकुट पहिरने चित्र जखन बादमे छपल देखलियनि वा देखैत छियनि तँ स्मृति

Scanned by CamScanner

पटलपर ओहि दिनुक धूमिल चित्र अंकित भऽ जाइत अछि । आइ रक्षा बन्धनक जे परिवर्त्तितरूप देखि रहल छी से 'पोरस' नामक सिनेमा अयलाक बाद प्रचलित भेल, ई भाय-बहिनक पर्वक रूपमे मिथिलोमे पसरि गेल । दरिद्र ब्राह्मणकेँ दक्षिणाक रूपमे किछु प्राप्त भऽ जाइत छलनि ताहू पर पाला पड़ि गेलनि । ध्यातव्य जे मिथिलामे कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया भ्रातृद्वितीया अर्थात् भाय बहिनक पर्व मानल जाइत अछि जे क्रमश: क्षीणतर भेल जाय रहल अछि, लुप्तो भऽ जाय से असम्भव नहि ।

महारानी अधिरानी रमेश्वरलता विद्यालय ताहि समय कटहरबाड़ीमे रहैक, सम्प्रति जाहि ठाम दुर्गाभवन छैक । पोखरा पाटन जकाँ बनल ओहि भवनक उतरबरिया अलंगमे एकटा ताम धातुसँ बनल श्रीयन्त्र स्थापित रहैक जकर नित्य पूजा जोंकी महिनाथपुर निवासी जटाधरझा, किरानी कयल करथिन । विद्यालय पहुँचलापर प्रत्येक अध्यापक आ विद्यार्थीक कर्त्तव्य छलनि जे बाहरक इनार पर पैर-हाथ धोय श्रीयन्त्र लग ठाढ़ भऽ कल्याणी स्तोत्रक पाठ कयलाक बादे अपन-अपन कक्षा जाथि ।

1929 मे ओही श्रीयन्त्रक समक्ष पिताजी हमरा अक्षराम्भ करौने रहथि । आँजीसिद्धिरस्तु । तकर बाद देवाक्षर सिखाओल गेल, कारण जे मिथिलाक्षरमे पुस्तक नहि छलैक (आबहु नहिए जकाँ छैक) बालपोथी देवाक्षरेमे छपल भेटैत छलैक । अक्षर लिखबामे बड्ड मन लगैत छल । पथरखड़ीसँ लिखि-लिखि ओकरा मेटाय सौंसे मुँहमे लेपि लेल करी । ताहि लेल एकदिन बौआ भाइ दू चाट मारलनि तँ विद्रोहक झण्डा उठाय लेलहुँ । पिताजीक संग विद्यालय जयबाक जिद्द ठानि दियनि । आब दरभंगाक डेरहुपर हम समस्या बनि गेलियनि ।

पहिने श्रीयन्त्रक पूजा कयनिहार जटाधर झा किरानीक प्रसंग किछु विशेष चर्च कऽ दी । ओही समयमे ई परिवार अंग्रेजी शिक्षामे सेहो आगाँ छलैक । जटाधर झा तीन भाय छलाह जेठ दू भाय हलधर झा जनिक बालक अम्बिकादत्त झा स्कूल सबइन्स्पेक्टर रहथिन । दोसर जलधर झा जे मैथिलीमे साहित्य अकादेमी पुरस्कार पौनिहार यशोधरझासँ वरीय, विद्यावाचस्पति मधुसूदन झाक शिष्य रहथिन, दुनू गोटे जयपुरमे संगे रहि पढ़ैत छलाह । एही जलधर झाक लिखल आ मैथिली हित साधनमे छपल 'विलक्षण दाम्पत्य' शीर्षक समाचार मूलक विवरण केँ डा० श्रीरामदेव झा मैथिलीक पहिल आधुनिक कथा मानलथिन अछि । ताहि जलधरझाक बालक कृष्णदत्त झा 'प्रमत्त' सहरसा कालेजसँ संस्कृत विभागक विभागाध्यक्ष पदसँ सेवानिवृत्त भेलथिन । ई कृष्णदत्त, जटाधर झाक पुत्र धर्मदत्त आ अम्बिकादत्त झाक दू गोट पुत्र ऋद्धी-सिद्धी ई चारू गोटे जटाधरझाक संग रहि पढ़ैत छलाह । गोटेक वर्ष धरि पिताजी हमरा संग लऽ जाय विद्यालयमे हिनके सभक संग छोड़ि देथि । एही अवधिमे हम दू गोट बालपोथी धुरझाड़ पढ़य लगलहुँ आ खाँतमे एकाइसँ हुट्ठा धरि सीखि गेलहुँ ।

Scanned by CamScanner

पिताजीक मातृक नरहीमे दलाने लग लोअर प्राइमरी स्कूल रहैक । ओतय आङनमे कोनो नेना-भुटका नहि रहैक । स्कूलक सुविधा ध्यानमे राखि 1930क जनवरी वा फरवरीमे हमर नामांकन कराय देल गेल । स्थान, लोक, परिवेश सब भिन्न रहितो दूइए चारि दिनमे ओतय हमर मन रमि गेल । पहिल आकर्षण छलाह पिताजीक ममियौत बौकू । ओ भावमुद्रा प्रदर्शन पूर्वक तेना गोङियाथिन जे हमरा अद्‌भुत लागय । ओ हमरा कखनहु कान्हपर चढ़ाकऽ टोलक लोककेँ देखयबाक लेल घुमा आनथि । पिताजीक मामीकेँ छोट नेना लेल जेना मन कलायल छलनि, तेँ ओहो बड़ मानथि । एक बात एतहि जनाय दी जे बौकू अन्तिम समयमे खोजपुरेमे रहैत छलाह । ई दूनू माय-पूत हमरे कर्त्ता पुत्र बनौलनि तेँ दूनू गोटेक श्राद्ध हमरे करय पड़ल ।

प्राथमिक पाठशालामे चारिटा वर्ग रहैक, सी.बी.ए. आ लोअर । हमरा ततबा योग्यता भऽ गेल छल जे हमर नामांकन ए. क्लासमे भेल छल । हम तेना रितिया गेल रही जे गर्मी छुट्टी होयबासँ पहिने खोजपुर जयबाक कहियो चर्च नहि कयल । गुरुजी रहथि शिवकान्तझा । अत्यन्त क्षीणकाय, उपरसँ कठोर, मुदा भीतरसँ अति कोमल । छड़ी राखथि अवश्य, ओहि युगमे छड़ी नहि तँ मास्टर कोना, किन्तु ककरो पर उसाहब छोड़ि मारैत नहि कहि देखलियनि । हम तँ शहरसँ गेल रही, तेँ आन-आन विद्यार्थीसँ फरहर रही, साफ-सुथरा रहल करी । अपना वर्गमे सबसँ छोट, मुदा वर्गमे पूछल गेल प्रश्नक उत्तर देबा लै सबसँ बेसी उताहुल, तेँ गुरुजी हमरा बहुत मानथि । शनि दिन स्कूलमे सबसँ सफाइ होइ, गोबरसँ नीपल जाइ जाहिमे हम अपटु रही (यद्यपि आइ एहू वयस धरि अपन कोठली हम नित्य अपने बढ़ारैत छी आ पोछा लगबैत छी, सन्ध्यावन्दन लै आसन लगाय आन कृत्य करैत छी) सफाइक बाद एका-एक सँ शुरू कऽ सय हुट्ठे साढ़े तीन सय धरि सामूहिक पाठ होइक । ई काज जखन दरभंगामे रही तँ धर्मदत्तक नेतृत्वमे ऋद्धी, सिद्धीक संग कयल करी से सस्वर । एतहु आगाँ आगाँ लोअर क्लासक श्रीकान्त नामक छात्र पाठ करथि तकरा सब छात्र दोहराबय, किन्तु सस्वर नहि । हम एक दिन गुरुजीकेँ पुछलियनि जे हम आगाँ-आगाँ नहि पढ़ि सकैत छी ? गुरुजी कहलनि तुमसे होगा ? उत्तर देलियनि– काहे नहीं होगा ? ओ मानि गेलाह । हम टोप-टहंकारक संग शुरू कयल, गुरुजी चकित, छात्र सब उत्साहित, किन्तु श्रीकान्त अपनाकेँ अधिकारसँ वंचित बूझय लागल, तेँ हमरा प्रति ईर्ष्यालु भऽ गेल । तकर किछुए दिनुक बाद गर्मी छुट्टी भऽ गेलैक, हम गाम चल गेलहुँ । गामसँ घुरलापर ज्ञात भेल जे श्रीकान्त एकटा खत्तामे भेंटक फूल तोड़य गेल ताहीमे डूबिकऽ प्राणान्त भऽ गेलैक । दू टा बात एतहि स्पष्ट कऽ दी ।

पहिल ई जे हमरसब भाय-बहिनकेँ निसर्गेसँ मधुर कण्ठस्वर भेटल अछि, प्रत्युत अगिलो पीढ़ीमे ई गुण छैक । ईहो जनाय दी जे हमर मझिली दौहित्री डॉ० श्रीकविता झा संगीते शास्त्रमे पी-एच्.डी. उपाधि अर्जित कयने अछि । दोसर बात

Scanned by CamScanner

जे प्रायः स्कूलमे मातृभाषा बाजब निषिद्ध प्राय छलैक । हमरा गुरुजीसँ किछु पुछबाक होइत छल तँ मैथिलीएमे पुछियनि, किन्तु ओ उत्तर हिन्दीएमे देथि । लगैत अछि जे शिक्षक लोकनिक प्रायः ई धारणा रहनि जे मैथिलीमे बजलापर रोब-दाब नहि रहत, छौंड़ा सब गमि लेत आ धाख नहि राखत ।

मुदा विषयान्तर होइतहु मातृभाषामे की चुम्बकत्व छैक तकर अनुभवक आधारपर चर्चा कऽ दी तँ अप्रासंगिक नहि होयत । कतहु कोनो शिक्षा शास्त्रीक एक लेख पढ़ने रही । ओ एक सफल शिक्षक होयबाक रहस्य पर प्रकाश दैत लिखने छथि जकर सारांश ई जे प्राथमिक शिक्षासँ लऽ माध्यमिक स्तरक धरि शिक्षक बालक ओ किशोर वयसक छात्रकेँ पढ़बैत छथिन । एकरा सभक संग रहैत जनिका हृदयमे वात्सल्य भाव जतेक मात्रामे बढ़ैत जाइत छनि से ततेक मातृहृदयक भेल जाइत छथि । एहन शिक्षक छात्रक अति श्रद्धा भाजन होइत छथि आ वात्सल्य भाव उत्पन्न करबामे सबसँ अधिक शक्ति मातृभाषामे होइत छैक, तेँ प्राथमिक शिक्षा मातृभाषामे देब उचित थीक ।

हम अपन अनुभव कहैत छी जे सरस्वतीक कृपासँ हमर अध्यापनक मुख्य विषय मैथिली रहल । छात्रक संग मैथिलीएमे सम्भाषण होइत छल । परिणामतः मासक 15 ओ अन्तिम तिथिमे शिक्षण शुल्क असूलल जाइक । यदि कोनो छात्रकेँ अनुपस्थिति दण्ड अथवा विलम्बसँ अयलाक दण्ड होइक आ पाइ घटि जाइक तँ कोनो वर्गक छात्र हो, पैंच लेबाक हेतु हमरे लग अबैत छल । हम तकर पूर्त्ति कऽ दिऐक । हमरे लग अयबाक कारण यैह बुझाइत अछि जे अन्यान्य शिक्षक छात्रक संग हिन्दीएमे गप्प करथिन तेँ हुनका सभक संग ओ आत्मीयभाव नहि उत्पन्न होइक । एकरा आत्मश्लाघे बूझल जाय तथापि ई कहबामे हमरा कनेको संकोच नहि अछि जे छात्रवर्गमे हमर लोकप्रियता सर्वाधिक छल, तकर सम्पूर्ण श्रेय मातृभाषेकेँ छैक । एकर अनुभव आनो ठाम भेल अछि । बम्बइ प्रवासक अनुभव 'कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा'मे कऽ चुकल छी ।

पुनः कलम बहिक गेल, कहि रहल छलहुँ शनि दिन स्कूलमे खाँत पढ़बाक प्रसंग । हमरा अनुमति भेटल, हम सस्वर पाठ कयल । ओना नीति वचन छैक–

न गणस्याग्रतो गच्छेत् सिद्धे कार्ये समम्फलम् ।
यदि कार्य विपत्तिः स्यात् मुखतरस्तत्र हन्यते ॥

अर्थात् सामूहिक काजमे 'अगुआ' नहि बनबाक चाही, यदि सफलता भेलैक तँ श्रेय सब बाँटत आ जँ विफलता भेल तँ सब दोष मुखियाक माथ पर थोपि देल जाइत छैक । किन्तु हमरा प्रतीत होइत अछि जे ओहि दिन जँ कनीय वर्गक छात्र होयबाक कारणेँ हमरा ओ अवसर नहि देल जाइत तँ हमर ई प्रवृत्ति कुण्ठित भऽ जाइत, तेँ आब अनुमान करैत छी जे अगुआ बनबाक प्रवृत्ति हमरामे ओही दिनसँ प्रवेश कयलक ।

Scanned by CamScanner

नरहीक दू वर्षक जीवनक प्रसंग किछु रोचक संस्मरण अछि । पिताजीक मामकेँ हमहू सब लाला मामा कहियनि । ओ एक चतुर गृहस्थ रहथि । आवास भूमि दस-बारह कट्ठा छलनि । घरक पछुआड़मे घेड़ल-बेढ़ल विस्तृत बाड़ी रहनि तकर किछु भागमे प्रतिवर्ष आलूक खेती करथि । ओकर पाँतमे बीच-बीचमे सौंफ, रामदानाक गाछ होइक, टाटपर घेरा, झिमनी, करैल आदिक लत्ती रहैक । किछु भागमे हरदि, आद, धनी सेहो सब उपजाबथि । आलू 40-45 मन होइत छल होयतैक । उखाड़ल आलूकेँ चारि भागमे छाँटल जाइक, सबसँ बड़का एक कात जकर तरुआ होइक, ताहिसँ छोट, ताहूसँ छोट आ सब सँ छोट केराव-राहड़िक दाना सन, तकरा सबकेँ एक ठाम । ओहो डेढ़-दू मन भऽ जाइक । स्कूलसँ छुट्टी भेला पर बाबी एकटा मौनीमे कहिओ चाउर आ कहियो बदाम तथा दोसर मौनीमे छोटका आलू भुजयबाक लेल कंसार पठाबथि । पोखरिक पछबरिया-दछिनबरिया मोहारपर घर आ पुबरिया मोहर पर कंसार रहैक । कंसारक ओहि धीपल बाजुमे आलूकेँ जहाँ दैक कि एके मिनटमे पड़-पड़ाकऽ सिद्ध भऽ जाइक । लाला मामा वैद्य रहथि, दवाइ कूटय लेल मंजिस्ता रहनि, बाबी ओहि गरमायल आलूकेँ ओहिमे दऽ चारिए बेर चोट मारि, बाहरकऽ अपना खेतक तोड़ी-सरिसोक पेरायल झँसिगर कड़ू तेल, थूरिकऽ कने आद आ नोन मिला देथिन, ओ चनाजोर गरम भऽ जाय, ओहि संग भूजा पनिपिआइ करी से अपूर्व स्वाद आइ धरि मन अछिए । ई कहि दी जे आइओ 85 वर्षक आयुमे सेहो कृत्रिम दाँत बनबाय साँझक जलपानमे भूजा खाइत छी, किन्तु ओ स्वाद कतय भेटत । आचार्य सुमनकेँ सेहो भूजा अति प्रिय रहनि, प्रकृतिक कृपा सँ 92 वर्षहु वयसमे हुनक दाँत दुरुस्त रहनि । ओ कहथि जे आस्वाद्य रसमे छबे गोट रसक उल्लेख छैक, हमरा जनैत 'सोन्ह' सातम रस थिकैक, सोन्हगर वस्तुक स्वाद कहल गेल छबो रससँ भिन्न होइत छैक, एकर परतर आन रस नहि कऽ सकैत छैक ।

प्रसंगतः मन पड़ि गेल अछि । बलुआ बाजारक एक दवाइ कम्पनीक एजेंट छथि श्री शोभानन्द झा, हुनका कविता लिखबाक उत्कट रुचि छनि । जखन ओ दरभंगामे छलाह तँ अधिक काल सम्पर्कमे रहथि । एक दिन आवेशसँ पुछलनि- गुरुदेव ! अपनेकेँ कोन वस्तु सबसँ बेसी प्रिय अछि ? हम से आनय चाहैत छी । हम कहलियनि- भूजा । ओ बड़ीकाल धरि बकर-बकर हमर मुँह देखैत रहि गेलाह ।

दोसरो प्रसंग मन पड़ि गेल अछि । 1950-51मे 'वैदेही' मासिक पत्रिकाक सम्पादन करैत रही तँ कथाक लघुतम रूपक प्रयोग कयने रही तकर शीर्षक देने रहिऐक- 'गल्पक प्रपौत्र' ताहिमे एकटा अछि- 'भूजा', ओकर स्वरूप ई छैक । 'भूजा जलपान करैत रही तँ 'भूजा' शब्दक अर्थ पर ध्यान गेल- 'भू' माने पृथ्वी, ताहिसँ जकर जन्म भेल होइक से भेल 'भूजा' अर्थात् 'सीता', चट झुकिकऽ प्रणाम कयल आ गुरुजीकेँ जा कऽ कहि देलियनि- अपने नहि बुझबै, संस्कृतक बात थिकैक ।'

Scanned by CamScanner

फेर कलम कतयसँ कतय चल गेल । कहैत नरहीक घटनाक प्रसंग । हँऽ नरहीक दोसर घटना थीक । लाला मामा दुद्धा वैष्णव रहथि । हमरा से किएक बूझल रहत । एक दिन बाबी 'धोखा' नामक घाठिसँ बनल तरकारी रन्हलनि । ध्यातव्य जे सोतिपुरामे एकरा 'इड़हर' कहल जाइत छैक । लाला मामा जाड़ मासमे बीच आङनमे भगवानक पूजा करैत छलाह । बाबी हमरा नोन-तोन ठीक छैक वा नहि, से बुझबा लै पहिने भोजन पर बैसाय देलनि । खाय लगलहुँ तँ पुछलनि– तरकारी केहन भेल अछि ? हम कहलियनि बड्ड बढ़ियाँ, मासुए सन । लाला मामाक कानमे ई बात पड़ि गेलनि । ओ दुर्वासाक अवतार रहथि, भगवानकेँ ओहिना पसरले छोड़ि, हमरा लग आबि क्रुद्ध होइत कहलनि– मासुए सन लगैत छौ ? बाबीकेँ कहलथिन लोहिया उठौने आउ, आब ई दूषित अन्न हम तँ नहिए खायब, सबटा एकरे खाय पड़तैक । हमरा लग बैसले रहलाह । हमर दूनू आँखिसँ नोर बहि रहल छल, गरम मसाला पड़ल रहलाक कारणेँ कने कड़ू रहबे करैक । सबटा तऽ नहिए खा भेल, मुदा आध घंटा धरि खाइत रहलहुँ आ पोटा पोछैत रहलहुँ, जी ओकाय लागल, से देखि लोहियामे जे शेष छलैक से मँड़फेक्कामे उठा कऽ फेकि देलथिन । एहिसँ हुनक क्रोधक अनुमान लगा सकैत छी । सत्य पूछी तँ एहि घटनासँ हमर मन नरहीसँ उखड़ि गेल रहय ।

गर्मी छुट्टीमे गाम गेलहुँ । ओहि समय गाममे शतरंजक गोटी आयल रहैक । आम खूब फड़ल रहैक । गाछी, कलमबाग आदिमे रमन-चमन बढ़ि गेल रहैक । धिया-पूता लेल तँ 'घरसँ कल्हुअड़बे नीक' लोकोक्ति चरितार्थ भऽ गेल रहैक । कनेक गुमकी भेल, फेर जहाँ बसात डोलैक कि गाछ तर आमक पथार लागि जाइक । ताहि पर जँ वर्षा भऽ जाइक तँ ओहि झमाझम वर्षामे भीजैत पाकल आममे चोभा मारैत जे आनन्दक अनुभव होइक से शब्दमे व्यक्त करब कठिन । ओगरवाहि करैत चेतन लोक मचान पर बैसल शतरंज खेलाथि से हम खूब ध्यानसँ देखी । फलतः दसे दिनमे शतरंजक चालि चलय आबि गेल । चेतन लोक जखन नहि रहैत छलाह तखन संगी सभक संग खेलायल करी । गाछी झखड़ि गेल, गर्मी छुट्टी बीति गेल । आब फेर नरही जाय पड़त से देह सिहरि उठय ।

हमर हरवाह छल सुनरा चमार । खुट्टा पर दू टा लगहरि महीस रहय । सुनराक संग नरही बिदा करबाक काल माय पुष्ट कऽ छाल्ही खोआय बिदा कयलनि । खोजपुरसँ नरही आठ कोस । सवारीक युग नहि, चलैत-चलैत टाङ दुखाय लागय तँ सुनरा किछु दूर कान्ह पर उठा लेअय । आध पहर दिन उठैत जे बिदा भेल रही से पहर भरि राति होइत चूर-मार भेल नरही पहुँचलहुँ । सब गोटे खाय-पीबि निश्चिन्त भऽ गेल छलाह । लाला मामाकेँ गोड़ लगलियनि तँ पुछलनि– कोना अयलेहेँ ? कहलियनि– पैरेँ-पैरेँ, ताहि पर सुनरा कहलकनि– एहि बेदराक पैरेँ चलितहुँ तँ आइ पहुँचबो नहि करितहुँ ।

Scanned by CamScanner

ओ तँ बीच-बीच कन्हापर लऽ लैत छलियनि । से सुनिते लाला मामा तीन हाथ कूदि उठलाह । (आजुक समयमे आपत्ति जनक होइतो छुआ-छूतक प्रसंग ताहि समयक मानसिकताकेँ स्पष्ट करबाक शब्दावलीक उल्लेख आवश्यक प्रतीत भेल) लालामामा कहलनि– चमराक कान्ह पर चढ़ि अयलेहेँ आ गोड़ लागि कऽ हमरो छुतौलेँ ।

जनाय दी जे ताहि समय धरि पेंट पहिरबाक चलनि नहि छलैक । बेटाक लेल धड़िया आ बेटीक लेल घघरी होइत छलैक । सम्भ्रान्त घरक नेना लै पँचहत्थी छौहत्थी धोती होइक । हमर मोटरीसँ से बाहर कऽ अपनो धोती-अंगपोछा लऽ ओहि रातिमे कहलनि– चल पोखरि, अपनहु नहयलाह, हमरो नहौलनि । ताबत बाबी चूल्हि पजारि आलूक भुजिया, गहूम बदामक रोटी पकौलनि आ दूनू गोटेकेँ भोजन करौलनि । ओ तँ रच्छ रहल जे आषाढ़ मास छलैक सेहो इजोड़िया । जँ माघक अन्हरिया राति रहितैक तँ हमर की हाल होइत ?

सुनरा अन्हरोखे बाबीसँ पाथेय (बटखर्चा) लऽ गाम घूरल । हम ओकरा सँ गोटेक लग्गा भरि पाछुए रहैत चुप्पे चलि देलहुँ । ओ पाछू किएक ताकत । झटकल बढ़ल जाय, हम दौड़ैत ओकर पछोड़ धयने चलैत रहलहुँ । लक्ष्मीपुर लग कमला बहैत छलथिन । दुर्योगवश ओहू वर्ष प्रचण्ड रौदी रहैक । कमलामे जांघ भरि पानि रहैक, हमरा छाती भरि होइत । अयबाक काल सुनरा कान्ह पर उठा पार करा देने छल । घुरतीकाल सुनरा धड़धड़ायल धारमे पैसि गेल । हम ओतय आबि ठमकि गेलहुँ । सुनराकेँ सोर करबैक तँ ओ घुरा कऽ नरही ने लऽ जाय से डर छल । ओहि काल दैव सहायक भेलाह । लोहाक हमर मसियौत कृष्णकान्त चौधरी, प्रसिद्ध भुट्टे बाबू (चानपुराक अमरनाथ ठाकुर, पूर्व प्रधानाचार्य सी. एम्. कॉलेज, दरभंगाक श्वसुर) राजनगरमे तहसीलदार रहथि, ओ अपन बन्हौटा घोड़ापर लोहासँ राजनगर आबि रहल छलाह, हम धारक कातमे सिसकैत ठाढ़ रही, हमरा देखि, चकित होइत पुछलनि– बतहू, अहाँ एतय कोना ? हम नोर पोछलहुँ, नाक झाड़लहुँ, बात बनबैत कहलियनि सुनरा सङे गाम जाइत छलहुँ ओ हमरा कान्ह पर नहि लेलक, एतबा कहि कानय लगलहुँ । ओ हमरा घोड़ा पर बैसाय, घोड़ाकेँ एँड़ लगौलथिन ताबत सुनरा धार पार कऽ चुकल छल । लग आबि ओकरा अपन राजनगरक डेरा पर आबय लेल कहि आगू बढ़ि गेलाह । सुनरा हमरा हुनका संग घोड़ा पर देखि विस्मित होइत किछु कहलकनि, मुदा से ठीक सँ नहि बुझलथिन ।

सुनरा राजनगर डेरा पर आबि सब खेड़हा सुना देलकनि । दिनमे भोजनक बाद पुछलनि आब की करब ? कहलियनि टाङ बड़ेँ दुखाइए । गाम बड़ी दूर छैक, कोना जायब ? राजनगरमे सवारीमे एक्का टा भेटैत छलैक, खोजपुरक एक रुपैया भाड़ा छलैक से एक्का बलाकेँ दऽ गाम विदा कऽ देलनि । मुनहारि साँझमे हम गाममे एक्का परसँ उतरलहुँ तँ पहिने सबकेँ भेलनि जे कोनो पाहुन अयलाह अछि, मुदा हमरा देखि सब चौंकि उठलाह । सुनरा 10 बजे रातिमे पोखरिमे नहयबासँ लऽ सब खिस्सा सुना देलकनि ।

Scanned by CamScanner

ओमहर नरहीमे औनी-पथारी उठि गेलैक। तीन चारि दिनक बाद नरहीसँ बौकू पहुँचलाह। खोजपुरमे हमर एक संगी रहथि पनिचोभक चन्द्रभूषणझा हुनक माय विधवा रहथिन, दू भाय रहथि, तीनू गोटे एतहि रहैत छलाह। हुनके माम सीतारामझा जे हमरा बच्चा भाइसँ बहुत जेठ रहथिन तथापि दूनू गोटेमे मित्रता रहनि। ओ कलकत्ताक ट्राममे नौकरी करैत रहथिन। शतरंज हुनके आनल छलनि। चन्द्रभूषणसँ भजार लागल रहय, ओना ओहो हमरा सँ छेंटगर रहथि। बच्चा भाइ जखन अपन काज धन्धामे बाझल रहथि तँ हम शतरंजक गोटी लऽ हुनके आङन जाय भजारक संग खेलाइ, से शतरंजक चाट लागि गेल रहय।

बौकूकेँ अयला पर फेर हमरा बिदा करबाक सूरसार होअय लागल। माय पुष्ट कऽ छाल्ही देथि आ परतारथि, हम हनछिन करी। अन्ततः हमरा परतारि-सरतारि बौकूक संग बिदा कयल गेल। भजार हमरा अड़ियातैत बाबूबरही धरि अयलाह। दूनू भजार भरि बाट घूरि जयबाक षड्यन्त्र रचैत अयलहुँ। बरहीमे बौकूकेँ एक पीपर तर बैसाय, कान पर जनउ चढ़यबाक मुद्रा बनबैत कहलियनि– पोखरि दिससँ भेल अबैत छी, दूनू भजार बाधेबाध टपैत खोजपुर घूरि अयलहुँ। गाम पर आबि कहलियनि– बरहीमे बौकू हमरा बैसाय पोखरि दिस गेलाह से अहर-पहर ताकि नहि घुरलाह तँ हम घुरि अयलहुँ। दू घंटाक बाद बौकू हबोढकार कनैत पहुँचलाह आ गोङिआयल स्वर तथा मुद्रासँ कहलथिन बौआ हेड़ाय गेलाह। कानपर जनउ चढ़यबाक मुद्रासँ ई प्रमाणित भऽ गेल जे पोखरि दिस, मुदा हम गेलहुँ वा ओ गेलाह से तँ स्पष्ट नहि भेल। अन्ततः ई निर्णय भेल बौक-बताहक संग नेनाकेँ पठायब उचित नहि। बच्चा भाइ सेहो घोड़ी पोसने रहथि से ओ अपने घोड़ी पर पहुँचा औताह।

बिलाड़िक भाग्येँ सीक टुटैत छैक। एहि कहबीक अनुसार हमरा भाग्येँ जेहने अट्टट रौदी रहैक तकर विपरीत तेहन सतहिया लधलकैक जे कमलामे प्रलयंकर बाढ़ि आबि गेलैक, बलानमे छूरी फनकऽ लगलैक। ट्रेन पर्यन्त बन्द भऽ गेलैक। तत्काल अनिश्चित समय लेल हमर यात्रा स्थगित भऽ गेल।

जे रोगीकेँ भाबय से बैदा फरमाबय, आब जखने गऽर बैसय तखने शतरंजक गोटी लऽ भजारक आङन चल जाइ। जखन बच्चा भाइकेँ पता लागि गेलनि जे ई शतरंज खेलाइत छथि, दलाने पर एकटा सन्दूक रहैक, ओ ओहीमे शतरंज बन्द कऽ राखय लगलाह। ओतबे टामे केहन जाबीर भऽ गेल रही से आब बुझाइत अछि। हमरागाममे एकटा चिनमिनियाँ बाध छैक, ओकर माँटि बड़ लसिगर होइक। हमरा ओतय झिंगुर चमार चरवाह रहय, ओकरासँ माँटि मङबौलहुँ। दूनू भजार मिलि शतरंजक गोटी बनौलहुँ, सुखाकऽ आधाकेँ पतरखड़ीसँ उज्जर आ आधकेँ कोइलाकेँ चूरि कारी बनौलहुँ, गोबरसँ माँटिए पर शतरंजक घर बनाय ओहीसँ खेलाय लगलहुँ।

Scanned by CamScanner

प्रसंगतः कनेक पाट बदलैत छी । आगाँ चलि हम शतरंजक नीक खेलाड़ीमे गनल जाय लगलहुँ, ताहि सम्बन्धक एक घटना कहैत छी । गाममे हमर निकटतम पड़ोसी बौकूठाकुर, शिबूठाकुर दू भैयारी । हिनक पिता छलथिन बच्चू ठाकुर । हमर पिता अपन बाल्यकालमे हुनकासँ किछु पढ़ने छलथिन, तेँ गुरुभाइ भेलथिन, किन्तु आगाँ चलि शिबूठाकुर दरभंगा विद्यालयमे किछु वर्ष हमर पितासँ पढ़लथिन, तेँ जेठ जे बौकूठाकुर से हमर काका भेलाह आ छोट शिबूठाकुर शिबू भाइ भऽ गेलाह । बौकूठाकुरक पत्नीसँ हमर मायकेँ हित लागल रहनि, तेँ हमरा सभक हित काकी रहथि आ शिबूठाकुरक विवाह कहियो भारतमे रहल नेपालक राजदूत वेदानन्दझाक बहिनसँ, ओ दौरीपट्टी वाली भौजी रहथि । बौकू ठाकुरक बालक हरिवंशठाकुर दोस्त रहथि, भैयारी रहय आ शिबूठाकुरक बालक भातिज ओ फेकू बच्चा रहथि । हुनके बहिनक विवाह डीहटोल हरिपुर भेल रहनि। वरक पित्ती वीरेश्वरझा (हिनके बालक ख्यातनामा नाटककार, घटकैती नाटकक प्रणेता डॉ० श्रीकमलकान्तझा थिकथिन) कलकत्ता प्रवासमे रहैत शतरंजक ख्यातनामा खेलाड़ीक रूपमे अति चर्चित, सेहो बरियातीमे आयल छलथिन । ओ शतरंज खेलयबाक 'चैलेंज' देलथिन । खोजपुरमे सेहो किछु व्यक्ति नीक खेलाड़ीमे गनल जाइत छलाह ताहिमे कन्याक पित्ती बौकूठाकुर सेहो गनल जाइत छलाह । वरक पित्ती आ कन्याक पित्ती शतरंजक बिसात पसारलनि । निर्णय ई भेलैक जे एकबेर चलल चालि फेरल नहि जायत। कोनो दिससँ टिप्पा नहि रहताह । खेल शुरू भेल, बौकूठाकुर, सीताराम बाबू, तारानन्द बाबू, बच्चाभाइ सब बेराबेरी हारैत चल गेलाह । हम 17-18 वर्षक रही, गर्मी छुट्टीमे हमहू गाम गेल रही । सभक मुँह बिधुआ गेलनि । खोजपुरक मोंछ नीचा भऽ गेलैक । हम चारू बाजीमे वीरेश्वरझाक रणनीतिक सूक्ष्म अध्ययन करैत रहियनि । सब सभक मुँह दिस तकैत रहथि आ ककर चालि कोन ठाम उरेब होइत गेलनि तकर विश्लेषण करैत छलाह । पाँचम बाजी लै हम गोटी भरलहुँ । वीरेश्वरझा पहिने हमरादेखि झुझुआयलाह, कहलथिन- केहन-केहन गेलाह तँ मोंछबला अयलाह ? मुदा भगवतीक कृपा, हम दूनू 'फिल' केँ आगाँ करैत गढ़ बनौलहुँ । एक घंटाक बाद वीरेश्वरझा परास्त भेलाह । एहि बीचमे हम श्रीकमलकान्तजीसँ प्रसंगतः चर्चा कयलियनि तँ कहलनि- ओ हमर पिता रहथि आ हुनके मुँहेँ एकर चर्चा सुनल अछि । सन्तोष भेल जे हमर एहि आत्मश्लाघाक साक्षी एखनहु छथि ।

पुनः मूल बिन्दु पर अबैत छी । बाढ़ि घटलैक, बाट फुजलैक, बच्चा भाइ हमरा लऽ जयबा लै घोड़ी कसलनि । एहि बेर माय कहलनि- एकरा छाल्ही खोआ कऽ बिदा करैत छिऐक तेँ घूरि अबैत अछि, ऐहि बेर दागि कऽ बिदा करबैक । हमरा एहि बातक चोट जेना मर्म पर जाय लागि गेल । एहि मध्य हमरा परिवारमे दू टा शुभकार्य भेलैक, बच्चा भाइक विवाह-द्विरागमन, एक बालकक जन्म, हमर बहिनक ढंगा पुबारि टोल विवाह-द्विरागमन भऽ गेलनि । हमर अनुज बिन्ध्यनाथ तथा भौजी सहित नवजात बालकक

Scanned by CamScanner

मृत्यु भऽ गेलनि । लोक बौंसिकऽ परतारि कऽ थाकि गेल, हम खोजपुर दिस घुरिओ कऽ नहि तकलहुँ । 1932क दिसंबरमे लोअरक परीक्षा भेल, अपना स्कूलमे प्रथम स्थान भेटल । बेनीपट्टी थानाक अन्तर्गत जतेक प्राइमरी स्कूल रहैक, ताहि सब स्कूलक प्रथम आयल छात्र सभक स्कॉलर्शिप लै परीक्षा भेलैक 1933क जनवरीमे, हमर चयन ओहिमे भऽ गेल, किन्तु ओही थानाक कोनो अपर प्राइमरी वा मिड्ल स्कूलमे नामांकन भेलापर 2 वर्ष प्रायः 3/– रु. स्कालर्शिप भेटितैक ।

ओना लोहामे अपर प्राइमरी रहैक, ओही स्कूलमे स्कालर्शिप परीक्षो भेल रहय, ओतहि हमर सबसँ बड़की मौसी छलीह, किन्तु हुनकर बहुत पैघ परिवार छलनि । दोसर जमीन्दारी ठाठ रहैक । ईहो प्रसंगवश जनाय दी जे हमर माय चारि बहिन, सबसँ जेठ लोहा, हुनकासँ छोट घोघरडीहा, तेसर हमर माय, चारिम चपाहीमे रहथि । अद्भुत संयोग जे चारू ठाम हमर मसियौतक पाँच–पाँच भायक भैयारी रहय जाहिमे हमर अव्यवहित छोट बिन्ध्यनाथक मृत्युसँ एकटा खोँड़ भऽ गेल छल । ढंगामे बहिन रहथि, नरहीमे रहैत हम अपन बहिन अन्नपूर्णासँ विवाह द्विरागमनक बाद कैक बेर भेट कऽ आयल रहियनि । ओतय कलुआहीमे मिड्ल स्कूल छलैक, परन्तु ओहि ठामक संस्कार नीक नहि रहैक, तेँ ढंगामे सार बनिकऽ रहब स्वीकार नहि रहय, पिताजी सेहो पूर्ण सहमत नहि रहथि । खोजपुर चलबाक बहुत आग्रह भेल, मुदा हम एकदम नहि गछलियनि । अन्ततः हमर भावुकताकेँ ध्यानमे राखि पिताजी दरभंगा लऽ अनलनि– 'फिर बैतलबा डाल पर' हमर अग्रज भवनाथ प्रायः मध्यमा पास कऽ शास्त्रीमे पढ़ैत रहथि । अनुमान करैत छी जे पिताजीक इच्छा प्रायः ई छलनि जे हुनका संस्कृत आ हमरा अंग्रेजी पढ़ाबथि, तेँ हमरा पुनः कृष्णदत्त, धर्मदत्त, ऋद्धी–सिद्धी सभक संग कऽ देल गेल । कृष्णदत्त राजस्कूलमे प्रायः आठम वा नवम कक्षामे पढ़ैत छलाह । हम जटाधरझासँ धर्मदत्तक संग फर्स्टबुक पढ़य लगलहुँ ।

1933क बड़ा दिनक छुट्टीमे सब गाम बिदा भेलाह, किरानीबाबू सेहो सब गोटे गाम गेलाह । विद्यालय बन्द, छात्रावास खाली, अगत्या हमरा खोजपुर जाय पड़ल । कहि चुकल छी जे एहि बीचमे हमर भाउजि, भातिज आ अनुज विन्ध्यनाथक देहान्त भऽ गेल छलनि । ताहिसँ माय ततेक शोकाकुल भऽ गेल रहथि जे हमरा देखिते पाँजमे कसि करुणा कऽ कानय लगलीह हुनक आँखिक दहो–बहो बहैत नोरसँ हमर रुद्राभिषेक भऽ गेल, हमहू कानय लगलहुँ । आब बुझाइत अछि जे ओही नोरक संग मनक सब क्वाथ सर्वदाक लेल धोआ गेल । छुट्टी समाप्त भेला पर पिताजी बौआ भाइ दरभंगा बिदा भेलाह तँ माय हमरा रोकैत कहलनि जे तिलासंक्रान्तिमे बौआ भाइ गाम औताह तँ हुनका संग चल जायब ।

अति सामान्य परिवारमे जन्म लितहु भगवतीक कृपासँ दू–दू टा लगहरि महीस खुट्टा पर सब दिन रहल । दरभंगा डेरा पर उठौना दूध लेल जाइत छल जाहिमे सँ

Scanned by CamScanner

नापल-जोखल रातुक रोटीक संग भेटैत छल आ गाममे अछिन्नरे सेहो खूब छल्हिगर । खेलयबो-धुपयबा पर कोनो प्रतिबन्ध नहि । फर्स्टबुक लऽ गेल रही । तुरिया सभक बीच, जनिका सबकें अंग्रेजी पढ़बाक कोन कथा, कानमे अंग्रेजीक एक शब्दो नहि गेल रहनि, खूब रोब झाड़ी । हम शहरुआ आ ओ सब देहाती, हम महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक हाथमे राखी बन्हने छियनि, हुनक श्राद्ध आ क्षयाहमे पँचमेर मधुर, खाजा मुङवा, राबड़ीक भोज खयने छी, महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक राज्याभिषेक देखने छियनि, आनन्दबाग महलमे ततेक टा घड़ी छैक जकर आवाज रातिकऽ पाँच कोस धरि जाइत छैक, राजमे बड़का-बड़का बन्हौटा घोड़ा छैक, कुमार विश्वेश्वर सिंह ओहि घोड़ा पर चढ़ि पोलो खेलाइत छथिन आदि आदि बातक गौरवसँ चर्चा करी । निष्कर्ष ई जे हमरा लग अहाँ लोकनि भुच्च छी, गमार छी ।

सन्त तुलसी दासक वचन छनि– 'होइहें सोइ जो राम रचि राखा ।' खोजपुरमे एकटा सरकारी संस्कृत पाठशाला छलैक । ओहिमे हमर पिताजीक शिष्य, राजपण्डित बलदेवमिश्रक सहपाठी, गोइ मिसर लगमाक निवासी गिरिजानाथ झा, प्रसिद्ध पण्डित बच्चाझा अध्यापक रहथि, हमर बौआ भाइ आरम्भमे हिनके सँ पढ़थि । ई मूर्त्तिकलामे दक्ष छलाह । कृष्णाष्टमीक पूजामे कृष्ण आदिक मूर्त्ति बनयबामे छओ मास आ तकर बादे सँ सरस्वतीक मूर्त्ति बनायब आरम्भ कऽ देथि । जाहि चिनमिनियाँ बाधक चर्चाकऽ चुकल छी ततहिसँ माटि मङाय, ताहिमे पुरान कपड़ा कूटि-कूटि कऽ सबसँ अन्तिम सतहक निर्माण करथिन । 1934मे सरस्वती पूजा धूमधामसँ करबाक योजना रहनि । व्यवस्थापक बौआ भाइकें बनौने छलथिन, तें बौआ भाइ तिला संक्रान्तिसँ पहिने आबि गेल रहथि । किन्तु 1934क ओ इतिहास प्रसिद्ध भूकम्प–

माघ अमावस सोम दिवसमे तेसर पहर घड़ी
प्रलयकम्प भूकम्प छेड़ि लेल धन-जन नाश करी
सीतामढ़ी जनकपुर बेतिया मोतिहारी नगरी
जीर्ण-शीर्ण मधुबनी भेल पुनि दरभंगा सगरी (राज पं. बलदेव मिश्र)

सम्पूर्ण समाज विपत्तिक सागरमे डूबि गेल । ओकर विकरालताक वर्णन कतेक करब । राजपण्डितजी, कविवर सीताराम झा, रहुआ निवासी राजदेव झा आदि कवि लोकनिक कविता बहुतो दिन लोक कण्ठमे रचल-बसल रहलनि । प्रो० उमानाथ झा 'बितल दिन : बिसरल लोक' नामक आत्म संस्मरणमे सेहो वर्णन कयने छथि । छनमे छनाक भऽ गलैक । रेल, सड़क सब छिन्न-भिन्न, बाट-घाट सब बन्द । जे जतेक सम्पन्न छलाह से ततेक विपन्न भऽ गेलाह । कोउ न रहे बिनु दाँत निपोड़े ।

हमर परिवारपर अनभ्र वज्रपात भऽ गेल । माघ शुक्ल सप्तमीक दिन बौआ भाइक देहान्त भऽ गेलनि । धरती रहि-रहि काँपि उठैक । नढ़या कूकुर साँझेसँ तेहन

Scanned by CamScanner

भयानक स्वरमे भूकय लगैक जे सम्पूर्ण वातावरणमे एक प्रकारक आतंक पसरल रहैक । ओही स्थितिमे हमरा बौआ भाइक अन्त्येष्टिसँ श्राद्धधरि करय पड़ल । ई दुर्घटना हमर स्वभावक उग्रताकेँ ठामहि बदलि देलक । यातायात सुधरबामे तीन-चारि मास लागि गेलैक । अन्ततः हमरा तत्काल गामहिक पाठशालामे अमरकोष पढ़बाक विचार देल गेल । अंग्रेजी छूटि गेल, संस्कृत पकड़ा गेल । एक प्रकारेँ कहल जाय सकैछ जे जीवनधारा कोसी-कमला जकाँ पाट बदलि लेलक ।

दरभंगामे संस्कृत महाविद्यालयक भवन सम्पूर्ण रूपेँ ध्वस्त भऽ गेल रहैक । चूनाभट्ठीमे जयनगर रेलवेक पुवारिकात राजक बनाओल अध्यापक निवास, छात्रावास सहित राजपण्डित बलदेवमिश्र, महाराजक प्रमुख पार्षद पण्डित कमलाकान्तमिश्र आदिक आवास सब नष्ट भऽ गेल रहैक । सभक हेतु विद्यालये परिसरमे फूसक घर सब बनबाओल गेल रहनि । मिथिलेशक अपन परिवार सभक लेल रामबाग परिसरमे फूसेक हबेली सब बनल छलनि । गर्मी छुट्टीक बाद जे दरभंगा अयलहुँ तँ दरभंगाक मुँहे-कान बदलि गेल रहैक । दरभंगा इम्प्रूभमेंट ट्रस्ट नगरक कायापलटमे लागि गेल छल । दरभंगा टावर, टाउन हॉल, दूनूक बीचमे गोल बाजार (जे सम्प्रति चन्द्रधारी विज्ञान महाविद्यालय भऽ गेल अछि) गिरीन्द्र मोहन पथक दूनू कात राजक ऑफिसर सभक लेल बड़का क्वार्टर, डैनवी रोड (ध्यातव्य जे दरभंगा नगरमे सर्वप्रथम पीच रोड यैह बनलैक) एकरो काते कात राजकर्मचारीक लेल छोट-छोट क्वार्टर सब बनलैक आ ओहदाक अनुसार सबकेँ आबंटित कयल गेलनि । स्पेशल टाइपसँ लऽ ए.बी.सी.डी.ई.एफ.आ जी. टाइप रानीगंज टाइल दऽ बनल रहैक । प्रायः युद्धस्तर पर काज होइक तथापि अढ़ाय तीन वर्ष समय लागल होयतैक । प्रो० हरिमोहनझा ई दरभंगा ओ दरभंगा शीर्षक सँ एकर विस्तृत वर्णन कयने छथि, तेँ हम एतहि विराम लैत छी ।

'ईश्वरेच्छा बलीयसी' बौआ भाइक देहान्तक बाद पिताजीक समक्ष प्रायः ई प्रश्न उठल होइनि जे आब संस्कृत विद्याक उत्तराधिकारी ककरा बनाओल जाय ? बच्चा भाइ ब्रह्मचर्याश्रमसँ घुरलाक बाद प्रायः लाला मामाक प्रेरणासँ अथवा समाजमे हुनक प्रतिपत्ति ओ प्रतिष्ठासँ प्रेरित भऽ रमेश्वरलता विद्यालयसँ आयुर्वेद मध्यमा पास कऽ अपन वैद्यक कर्ममे लागि चुकल छलाह । यद्यपि दवाइ बनयबाक झंझटसँ अकच्छ भऽ पछाति होमियोपैथी चिकित्सा करय लागल छलाह । तेँ हमरा जे भाग्यमे लिखल छल अइउण् ऋलृक् रटब ताहिमे लगा देल गेल। आगाँ चलि 'गुदगुदी' कविता संग्रहमे 'अध्यापक' शीर्षकसँ हम लिखबो कयलहुँ-

हम अइउण्ऋलृक रटल जखन
कप्पार दरिद्रा सटल तखन

बड़ तेजगर रही से कहब सत्यक अपलाप होयत, भुसकौल रही से कहि अपना

Scanned by CamScanner

प्रति अन्याय करब होयत । मध्यम बुद्धि, मध्यवित्त परिवार होइतो परिवेश ओ सुविधा सब तेहन छल जे आधुनिक शिक्षा प्राप्त कऽ सकैत छलहुँ । नगरमे पिताजीक डेरा सी.एम्. कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, पिताजीक प्रतिष्ठा, राज दरभंगासँ सम्पृक्त छलहुँहेँ, नहि डॉक्टर तँ ओकील, प्रोफेसर आदि लटैत-बुड़ैत भइए सकैत छलहुँ, किन्तु यत्पूर्वं विधिना ललाट-लिखितं तन्मार्जितु कः क्षमः ? विधाता तँ मातृभाषाक सेवा कराबय चाहैत छलाह, आरम्भमे किछु बाधा होइतहु भविष्यमे मार्ग प्रशस्त भऽ गेल । एहि प्रसंग आगाँ कहब ।

1936मे जीवनाथकेँ गर्भाष्टम छलनि, हुनके दिनेँ हमरो उपनयनक दिन भेल चैत्र शुक्ल एकादशी । सुनल अछि जे हमर दूनू अग्रज भायक उपनयन बहुत धूमधामसँ भेल छलनि । महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह पर्याप्त सहायता कयने छलथिन । खोजपुरमे हमर पिता नवघरिया रहथि । किछु भूमि विवादक कारणेँ गामक डीही, समाङसँ भरल-पूरल एक परिवारक संग झगड़ा झाँटी भऽ गेल रहनि । हुनका सभक प्रभावक कारणेँ गाम भरिक लोक सहयोग करबामे नाकर-नूकर करय लगलथिन । एमहर पिताजी पाँच गोट महामहोपाध्याय रजेमिश्र, चित्रधर मिश्र, जयदेव मिश्र, परमेश्वर झा, मुकुन्द झा बख्शी सबकेँ सादर आमन्त्रित कऽ देने रहथिन । गौआँ लोकनिक असहयोगसँ चिन्तित भऽ पिताजी महाराजसँ निवेदन करैत अपन असमंजस कहलथिन । महाराज राजनगरसँ सामियाना, टेंट, महामहोपाध्याय सभक हेतु यातायात लै सवारी सभक प्रबन्ध कराय देलथिन ।

एतय जनाय दी जे अपन वैमात्रेय दामोदरमिश्रक अतिरिक्त रक्तक सम्बन्ध एकमात्र फन्नावारपरिवारसँ । हमर पितामह जनिकर दौहित्र तनिके पौत्रीक विवाह ओहि परिवारमे छलनि । तिलकनाथझा, जानकीनाथझा, जपीनाथझा हुनके पुत्र रहथिन जाहिमे सबसँ छोट जपीनाथ झा हमरा पितासँ डेढ़ वर्षक जेठ रहथिन जनिका संग काशीमे पिताजी पढ़ैत छलाह । हुनका हम सब काशी काका कहियनि । हिनक जेठ पुत्र तारानन्दझा हमर बच्चा भाइक संगी छलथिन आ छोट पुत्र श्री मुचकुन्दझा जे मुनिजी नामेँ ख्यात छथि, हमर संगी थिकाह आ खोजपुरमे हमर प्रमुख आकर्षण केन्द्र यैह छथि । ई परिवार पिताजीक सहयोगी रहथिन । हिनके कलमबामे टेंट सब लगलैक ।

गामक सबसँ प्रभावशाली रहथि नन्दीझा । जनिक प्रसंग सुनल अछि जे ओ प्रतिदिन बेराबेरी गामक चारू बाध घूमथि आ जकरा चासमे आरि कटल, खढ़-पतार बढ़ल आदि देखथिन तकरा बजाय फज्झति करथिन । एकर उल्लेख एहि हेतु कयल जे सामाजिक सामंजस्य ताहि समय केहन छलैक से बूझी आ आइ समाज कतेक बिखण्डित भऽ गेल अछि ताहि पर चिन्तन करी । ई क्षेपक भेल, मूल विषयपर अबैत छी ।

ओ नन्दीझा एहि टोल दिस अयलाह आ काशी काकाक कलमबागमे टेंट सब

Scanned by CamScanner

देखलथिन तँ काशीकाकासँ जिज्ञासा कयलथिन । ज्ञात भेलनि जे पाँच गोटे महामहोपाध्याय एहि उपनयनमे आबि रहल छथिन । तखन ओ गामक सब टोलक प्रमुखकेँ बजाय कहलथिन जे पाँच गोट बखारी रखनिहार हम आइ धरि पाँच के कहय, एको गोट महामहोपाध्यायक अपन दलान पर पैर नहि धोआ सकलियनि अछि आ ई नवघरिया गामक माथ कतेक उच्च कऽ रहल छथि । अवश्य ई साधारण लोक नहि छथि । हिनकासँ खोजपुरोक प्रतिष्ठा बढ़तैक, तेँ हमरा सबकेँ असहयोग नहि करबाक चाही । स्पष्ट कऽ दी जे सम्प्रति जेहने यशस्वी तेहने मनस्वी, सिद्धहस्त शल्य चिकित्सकक रूपमे प्रख्यात डॉ० आर्.एन्. झा अर्थात् श्रीरामनारायणझाक पितामह सोदर तीन भाय, तनिकेसँ प्रत्यक्ष विरोध छलनि, तनिका सबकेँ छोड़ि सम्पूर्ण गाम पिताजीकेँ सहयोग कयने छलनि, ओना कार्यकर्त्ताक रूपमे दरभंगासँ छरे-छाँट 20 गोट शिष्य रहथिन । एहि परिवारसँ विरोधक परिहार कोना भेलनि सँ आगाँ कहब ।

कहैत छलहुँ अपन उपनयनक प्रसंग । हमर दूनू भायक उपनयनक समय पारिवारिक परिस्थिति उत्साहवर्द्धक नहि रहि गेल छल, तेँ सामान्य रूपेँ यज्ञोपवीत धारण कराय देल गेल । दुर्दैववश उपनयनक बाद ज्वर भऽ गेल से तेना जड़िया गेल जे जाहि अनन्तमिश्रक चिकित्सा चलैत छल से पछाति घोषित कऽ देलनि जे पिल्ही भऽ गेल अछि । ताहि समय गर्मीक छुट्टीमे पिताजी गाम आबि गेल रहथि । छुट्टीक बाद पिताजी दरभंगा लऽ अनलनि, जीबूकेँ सेहो लऽ अनलथिन। कटहरबाड़ीमे गोपालबाबू बंगाली डाक्टर रहथि, हुनकासँ देखाओल गेल, ओ सूइ देब आरम्भ कयलनि । कतेक सूइ पड़ल से गनल नहि अछि, मुदा तेसर दिन पर दू मास धरि चलैत रहल । कोर्स प्रायः पूरा भऽ गेल छल तँ एक दिन फेर डॉक्टर लग लऽ गेलाह । ओ पेटकेँ दाबि-दाबि कऽ देखय लगलाह आ दहिना हाथक अङ्ुठासँ जोरसँ दबबैत पुछलनि– दुखता है ? हम तमसा कऽ कहलियनि– एना आङ्ुर भोकने ककरा ने दुखयतैक ? लाउ तँ अहाँ अपन पेट, हम एहिना आङ्ुर भोंकैत छी ! ओ हँसय लगलाह पिताजी केँ कहलथिन– प्लीहा तो ठीक हो गया, यकृत कुछ बढ़ा है । बदल कर सात ठो सूइ और देना होगा ।

हमरा उपर तँ पानि पड़ि गेल, भीतरसँ तामस सेहो भेल । साँझक जलखै लै दूनू भायमे एक टा पाइ भेटैत छल । दू आनामे एक सेर बदामक भूजा भेटैत छलैक । एक पाइमे पक्की आध पौआ । हम जीबूकेँ ओहि दिन दू टा पाइ माङिकऽ आनय कहलियनि । ई जनाय दी जे हमरा बाल्यकाले सँ ककरोसँ किछु माङयमे संकोच होइत रहल अछि । जीबू दू टा पाइ माङि अनलनि, एक पौआ भूजा अनलहुँ, जीबू तँ अन्दाजे सँ खयलनि, हम सब टा फाँकि गेलहुँ । परिणाम ई भेल जे दोसर दिन चारि-पाँचटा झाड़ भऽ गेल । पेटमे जे कड़ापन छल से पेट गुलगुल करय लागल । तकर बाद सँ बहुत भूख लागय लागल, जेना पेटमे हाहूती पैसि गेल हो । रोसड़ाक एक गरीब छात्र रहथि भूदेव ओ भानस

Scanned by CamScanner

करथि आ हमरे आश्रममे भोजन करथि । रातिमे रोटी तरकारी होइक । हम भूदेवकेँ कहियनि– अहाँ तरकारी काटू, हम आँटा सानि दैत छी ।

एकटा छोट सन बात बीचेमे कहि दी जे मैथिलीमे आँटाकेँ चिक्कस कहैत छैक आ हाथ पर पाथिकऽ जे पकाओल जाय से रोटी भेल, बेलि कऽ पकाओल केँ सोहारी कहैत छैक । हम लिखलहुँ चिक्कसकेँ आटाँ आ सोहारीकेँ रोटी । बोल फूटल शहरेमे तथापि एहने दू चारि गोट शहरू शब्द बोल–चालमे आबि गेल, अन्यथा हमरा सभक भाषा खाँटी मैथिलीए रहल, मुदा आब गामहु घरमे चाउर भऽ गेल अछि चावल, तरकारी भऽ गेल सब्जी, तथा वर–कन्याक स्थान लड़का–लड़की लऽ लेलक अछि । गोटा–गोटी मैथिलीक शब्दकेँ हिन्दीक शब्द क्रमशः गिड़ने जाय रहल अछि आ हम सब उदारताक नाम पर अपन शब्द सम्पदाक उपेक्षा कऽ रहल छी ।

प्रकृत विषयपर अबैत छी । भूदेव प्रसन्न भऽ आँटा नापिकऽ देथि, हम जानि–बूझि कऽ गील कऽ दिऐक आ मुट्ठी–मुट्ठी सुखायल आँटा दऽ सक्कत बनाबी, भूदेवकेँ कहियनि– अहाँ तरकारीमे मसाला पानि दऽ झाँपि दियौक, हम आँच उसका देल करबैक, तरकारी खदक लगतैक तँ उघाड़ि कऽ लाड़ि देबैक, अहाँ ताबत पढू गऽ, भूदेवऔर प्रसन्न । हम बढ़ि गेल आँटाक गोली बनाय तरहत्थीपर दाबि पेड़ा जकाँ पसारि चुलहाक आगिमे दऽ लिट्टी बना खाय ली । 15 दिन बितैत–बितैत कतय गेल यकृत, कहाँ गेल दुर्बलता, पूर्ण स्वस्थ–मस्त भऽ गेलहुँ, संगहि पाकशास्त्रमे पटु सेहो ।

दशमी छुट्टी सेहो बेस पैघ होइक । भरि दशमी राजदरभंगाक काफिला राजनगर चल अबैक । इन्द्रपूजामे पिताजीकेँ इन्द्रयज्ञक दायित्व देल जाइनि जे एक दिन होइक आ राजनगरमे कोन दायित्व से नहि बुझिऐक, परन्तु महालया दिन पार्वण कऽ राजनगर आबथि से कलश स्थापनसँ विजयादशमी धरि पूर्वाह्नमे अपन पूजा सम्पन्न कऽ, जाहिमे 3 घंटा समय लगनि, दुर्गामन्दिर जाथि से अढ़ाय तीन बजे आबथि । भरि दशमी एकभुक्ते करथि । एहि बीचमे प्रतिदिन चाउर–दालि–तरकारी–घृत–मसाला आदि राज दिससँ दइए जाइक संगहि शुद्ध दूधमे बनाओल पायस आ लड्डू दुर्गाक प्रसाद सेहो दऽ जाइक । भरि दशमी हमहू दुर्गा सप्तशतीक एक आवृत्ति पाठ कयल करी जे अद्यावधि कऽ रहल छी । पाठ सम्पन्न कऽ एकभुक्तक भानस करी, दुर्गाक प्रसाद जलपान होअय । विद्यालयक टहलू फौदरबा, जे दरभंगोक डेरा पर खबास रहनि, से राजनगरोमे दसो दिन संगहि रहय । ओहि दसोदिनमे शरीर बेस हृस्ट–पुष्ट भऽ गेल रहय । यात्रा दिन पूजा समाप्त कऽ पिताजी गाम जाथि आ फौदरबा अपन गाम नरही चल जाय । ओहि यात्रामे गाम गेलहुँ तँ माय हमर देह–दशा देखि पूर्ण आश्वस्त भऽ गेलीह ।

एमहर अध्ययनक क्रममे प्रथमा परीक्षामे लघुसिद्धान्त कौमुदी, प्रथम काण्ड अमरकोष, मित्रलाभ हितोपदेश, तर्क संग्रह, अयोध्याकाण्ड राम चरितमानस,

Scanned by CamScanner

जोड़-घटाव-गुणा-भाग देशी हिसाब सब रहय । अमर कोष कण्ठस्थ भऽ गेल छल, हिसाब आबि गेल छल, शेष आधा-छिधा मात्र । नवंबरमे बिहार संस्कृत एसोशिएशनक अग्रिम अर्थात् 1937 क परीक्षाक हेतु फार्म भरल जाइक । छात्र लोकनिसँ फार्म भराओल जाय लगलनि तँ हमरो फॉर्म भरबाक लौल भऽ गेल । पिताजीकेँ कोनो विषयमे नहि कहबाक अभ्यास नहि रहनि । दोसर जनैत छलाह जे जिद्दी छथि, मानताह नहिए । जखन कहलियनि जे हमहू प्रथमाक फॉर्म भरब तँ कहलनि-किरानीबाबूकेँ बजा अनियनु । किरानी रहथि अनन्तझा श्रोत्रिय, ओ गेङियाह लोक रहथि । उल्लसित भऽ बजाबय गेलियनि तँ पुछलनि कथीलै बजौलनि अछि? कहलियनि-से तँ ओ कहताह । अँघौस-मँघौस करैत उठि कऽ अयलाह तँ बटुआसँ परीक्षा फीस बाहर कऽ दैत कहलथिन- हिनकोसँ प्रथमाक फॉर्म आइए भरबा लेबनि । कोर्स पूरा भेले ने छल, पिताजीकेँ उत्तीर्ण होयताह से विश्वास नहि छलनि, किन्तु परीक्षा देलहुँ, परीक्षाफल प्रकाशित भेलैक ताहिमे द्वितीय श्रेणीमे उत्तीर्ण छात्र लोकनिमे हमरो नाम छल । अनुभव होइत अछि जे अनुत्तीर्ण भेल रहितहुँ तँ भविष्यक लेल नीके होइत, कारण आधार जे दृढ़ नहि भेल से भविष्योमे नहि भऽ सकल । आचार्य द्वितीय खण्ड छोड़ि, सब परीक्षामे द्वितीये श्रेणी होइत गेल आ जीवन भरि द्वितीय श्रेणीक लोक रहि गेलहुँ । मुदा ताहि समय बहुत उत्साहित भेल छलहुँ । प्रथमा परीक्षाक बाद मध्यमा परीक्षा तीन वर्षक बाद होइत छलैक, किन्तु 1938 ई.सँ संस्कृत एसोशिएशन मध्यमाकेँ तीन खण्डमे बाँटि एक-एक खण्डक परीक्षा लेबाक व्यवस्थाकऽ देलकैक ।

संस्कृत महाविद्यालयक छात्रावासमे 30सँ अधिके छात्र छलाह जाहिमे गणित ज्योतिष शास्त्रक आचार्य पासकऽ फलित ज्योतिष पढ़ैत छलाह जयकान्तझा । हिनक अनुज छलथिन बहुपरिचित कालीकान्त झा, जे ताहि समय राज-स्कूलमे शिक्षक रहथि, पछाति इण्डियन-आयावर्त्त प्राइवेट लिमिटेडक प्रबन्धकक पदसँ सेवानिवृत्त भेलाह, परन्तु ओतहु मास्टर साहेबे कहबैत रहलाह । ओहो अपन-अग्रज जयकान्तजीक संग संस्कृते छात्राबासमे रहैत छलाह । हम प्रथमा पास कयलापर ततेक उत्साहित रही जे एक दिन छात्राबास जाय की ने की फूरल, छात्र संघ बनयबाक प्रस्ताव विद्यार्थी सभक बीच रखलियनि । मास्टर साहेब से सुनि कने चकित भेलाह । ओ कहलनि- छथि तँ ई नेना, परन्तु हिनक प्रस्ताव प्रशंसनीय छनि । हुनकर छात्राबासमे बड़ धाख छलनि । हुनक समर्थन पाबि छात्र लोकनि पूरा उत्साहित भेलाह । एक बात विशेष रूपेँ जनाय दी जे आइ काल्हुक छात्र-जकाँ सब किशोर, तरुण, युवके नहि रहथि, किछु गोटे अजोद्ध सेहो रहथि । पहिल तँ ज्योतिषक जयकान्तेजी, जनिक अनुज हाइस्कूलमे शिक्षक रहथिन, दोसर भिट्ठाक जयकान्तझा व्याकरण-न्यायक आचार्य कऽ वेदान्त पढ़ि रहल छलाह, तेसर सीवीपट्टीक गणानन्दठाकुर व्याकरणाचार्य कऽ कर्मकाण्डक छात्र रहथि, सतलखाक गणेशपाठक व्याकरण आचार्यमे अनेक बेर अनुत्तीर्ण भऽ लसकल रहथि आ न्यायशास्त्रमे छात्रवृत्ति पबैत समय काटि रहल

Scanned by CamScanner

छलाह । हिनक एक रोचक संस्मरणक उल्लेख सेहो कऽ दी । ई विद्यालयक अध्यापको लोकनिसँ धोधिगर पोनगर रहथि । जखन व्याकरणक आचार्य परीक्षामे तेसर बेर फेल भेलाह तँ संगी सब पुछलथिन- की औ पाठकजी, एहू बेर...... तँ पाठकजी उत्तर देलथिन- अहाँ सब जकाँ हम अगुतायल नहिने छी, परीक्षक सेहो अहाँ सब सन उत्थर नहि ने होयताह । यदि शास्त्र एखन धरि भीजल नहि प्रतीत भेल होयतनि तँ उत्तीर्णांक नहि देने होयताह । कृपांक पाबि हम उत्तीर्ण होयबाक आकांक्षी नहि छी ।

प्रसंगतः ताहि समयक परीक्षक लोकनिक दृढ़तापर एक दृष्टि निक्षेप सेहो कऽ दी । जेना सम्प्रति शोध-छात्र सभक संग हुनक अध्यापकोक नामक उल्लेख होइत छनि तहिना संस्कृतक परीक्षामे अध्यापकक नाम रहैत छलनि । परीक्षक पक्षपातो कऽ सकैत छथि एहन आशंको नहि कयल जाइत छलैक । राज पण्डित बलदेवमिश्रक सोदर भायक पुत्र गंगाधर मिश्र, जे पिताजीक पौत्र होइतथिन, हमरे पिताजीक नामेँ आचार्यक अन्तिम खण्डक परीक्षा देने छलाह । संयोगवश हमरे पिताजी ओहिवर्षक प्राश्निक आ परीक्षक छलाह । हिनको उत्तर पुस्तिका एतहि आयल छलनि । हम नेना रही, संस्कृत पुस्तकालयक सहायक, सम्पूर्ण भास नाटकावलीक अनुवादक, डाक वचनक सम्पादक पं. जीवानन्दठाकुर, जे हमर पिताक शिष्य छलथिन, हमरा परतारि कऽ गंगाधरजीकेँ कते अंक भेटल छनि से चुपचाप देखि कहय कहलनि । पिताजी पूजा पर रहथि । हम गाँठ सँ गंगाधरजीक कॉपी देखाय देलियनि, फेल रहथि । ओहि दिन ओ चुप्पे चल गेलाह । हम ई नहि बुझैत रहिऐक जे ई काज अवैध थिकैक ।

दोसर दिन जीवा बाबू पिताजीकेँ प्रसन्न करबाक हेतु भरि फुलडाली बेलपात लेने भोरे अयलाह, पिताजीकेँ प्रणाम कऽ बेलपात दैत, किछु एमहर-ओमहरक गप्प करैत, हिचकिचाइत, साहस कऽ रौल नं० दैत प्राप्तांकक जिज्ञासा कयलथिन । पिताजी हमरा गाँठसँ कॉपी आनय कहलनि । आनिकऽ देलियनि । देखिकऽ कहलथिन- ई अनुत्तीर्ण छथि । जीवाबाबू ताहि पर कहलथिन-ई अपने विद्यालयक छात्र, अपनेहिक नामेँ फॉर्म भरने गंगाधरजीक रौल नम्बर थिकनि । किछु कृपांक दऽ उत्तीर्ण कऽ देल जाउन । पिताजी कॉपीक पन्ना उनटाय अशुद्धि देखबैत कहलथिन- जँ शास्त्रीक छात्र रहितथि तँ किछु कृपांक देबा पर विचारो कयल जाय सकैत छलनि । आब उत्तीर्ण भऽ ई पण्डित कहौताह, कोनो गुरुक लग पोथी नहि उनटौताह, परन्तु हिनका एकर बोध नहि भेलनि अछि जे भाव मे दू बेर प्रत्यय नहि होइत छैक । चरितार्थ शब्दसँ चरितार्थता अथवा चारितार्थ्य भाववाचक होयतैक, ई 'चारितार्थ्यता'क प्रयोग कयने छथि । जीवाबाबू फेर कहलथिन अपनेक नामेँ फॉर्म भरने अपने विद्यालयक विद्यार्थी........बीचेमे पिताजी टोकैत कहलथिन- एहिसँ विद्यालयक संग हमहू हास्यास्पद होयब । हम कर्त्तव्यच्युत नहि होयब । आइ महानता, बर्चस्व, अनाधिकार सदृश शब्दक निधोख प्रयोग भऽ रहल अछि । एकर उल्लेख एहि हेतु कयल जे आइ प्रश्नपत्र परीक्षासँ

Scanned by CamScanner

पहिने बाजारमे पहुँचि जाइत अछि। अभिभावक लोकनि परीक्षा केन्द्रमे स्वयं चिट पहुँचयबामे व्यस्त रहैत छथि आ तकर बाद मूल्यांकन केन्द्रक चक्कर मारैत फिरैत छथि। तेँ हम विद्यालयक ई व्युत्पत्ति करैत रहैत छी जे विद्या जतय लय होइत हो से भेल विद्यालय तथा विश्वसँ विद्याकेँ लय करबाक केन्द्र विश्व विद्यालय भेल।

स्मरण भऽ अयलाह अछि 'रूक्मिणी हरण' आ साहित्य-अकादेमी पुरस्कृत 'प्रतिज्ञा पाण्डव' सन देशक वर्त्तमान स्थितिक सजीव चित्रणसँ पूर्ण महाकाव्यक प्रणेता बबुआजी झा 'अज्ञात'। सत्य पूछी तँ वर्चस्व शब्दक व्युत्पत्तिपर हमरो ध्यान नहि गेल छल। अज्ञातजी आचार्य सुमनक आवास पर चलैत सान्ध्य गोष्ठीमे एक दिन ध्यान-आकृष्ट कयलनि। हम ओहि दिनसँ प्रणाम करय लगलियनि तँ हाथ पकड़ि लेलनि। हम कहलियनि- अपनेकेँ नहि, अपनेमे अवस्थित सरस्वतीकेँ प्रणाम करैत छियनि। ध्यातव्य जे हमरा हुनका संग पत्राचार विगत 30-35 वर्ष सँ होइत छल जाहिमे ओहो नमस्कारे लिखैत छलाह, यद्यपि आचार्य सुमनोसँ 6 वर्ष जेठ छलथिन। खेद जे 'प्रतिज्ञा पाण्डव' सन जीवन्त वर्त्तमान चित्रित महाकाव्योकेँ पुरस्कृत भेला पर नवतावादी अखरकट्टू साहित्यकार आङुर उठबैत रहलाह।

भावनामे लेखनी कतयसँ कतय भासि जाइत अछि। कहि रहल छलहुँ छात्रावासस्थ छात्र सभक प्रसंग। उक्त अजोद्ध छात्रक अतिरिक्त विद्यावाचस्पति उपेन्द्रझाक अनुज द्वय पं. सुरेन्द्रझा आचार्यक, देवेन्द्रझा शास्त्रीक छात्र छलथिन, कृषक खण्ड काव्यक प्रणेता मथुरानन्द चौधरीक अग्रज गोकुलानन्द चौधरी, लाल पुरक कुशेश्वरझा कुमुद, सोतिपुराक बुद्धिनाथ मिश्र, कुंजनाथ मिश्र, चकौतीक राजेन्द्रझा प्रभृति छात्र छलाह। मास्टर कालीकान्तझाक विचारसँ विधिवत् छात्र संघ'क संघटन भेल। गोकुलानन्द चौधरी अध्यक्ष, बुद्धिनाथमिश्र मन्त्री, कुशेश्वर झा 'कुमुद' हस्तलिखित पत्रिकाक सम्पादक नियुक्त भेलाह। प्रति सन्ध्याकाल शिव पंचाक्षरक सामूहिक गान, प्रति अष्टमी ओ पड़ीव तिथि केँ संस्कृत श्लोकक अन्याक्षरी स्पर्द्धा, प्रत्येक पूर्णिमाकेँ मासिक बैसकमे अपन-अपन नवरचित रचनाक पाठ, समस्या पूर्ति आदि छात्र संघक कार्यक्रम निर्धारित भेल। भाषा संस्कृत, मैथिली आ हिन्दी, भाषण करबाक इच्छुक लोकनिकेँ सेहो समय देल जाइनि। अन्त्याक्षरीक हेतु हमसब श्लोक सभक संकलन, ओकरा सबकेँ कण्ठस्थ करबामे लागि गेलहुँ।

मासिक हस्तलिखित पत्रिकाक नामकरण भेलैक 'चेतना'। सुन्दर अक्षर लिखनिहार दू गोट छात्र पत्रिकाक दू प्रति तैयार करथि। पारिश्रमिक रूपमे हुनका लोकनिकेँ 64 पृष्ठक एक कॉपी देल जाइनि। तेँ बहुत छात्र सुन्दर अक्षर लखिबाक हेतु प्रेरित भेलाह। एहि तरहेँ पाठ्य ग्रन्थसँ अतिरिक्तो रचनात्मक प्रवृत्ति छात्रलोकनिक मध्य विकसित होयबाक संभावनामे बृद्धि भेलनि।

Scanned by CamScanner

छात्रावासक अधीक्षक रहथि कविराज विश्वनाथझा जे शारदा चरण सेन कविरत्नक सेवा निवृत्तिक बाद नियुक्त भेल रहथि । ई प्रो. हरिमोहन झाक ग्रामीण रहथिन। अपन जीवन यात्रामे हरिमोहन बाबू बेस चर्चा कयने छथिन । कविराजजीकेँ बहुत विद्यार्थी रहथिन । ओना व्याकरणमे दू गोट अध्यापक रहथि, कारण आगाँ चलि कोनो शास्त्र पढ़बाक बाट व्याकरणेक बाट पार कऽ जाय पड़ैत छैक । एकर अतिरिक्त न्याय, वेदान्त, सांख्य, मीमांसा, कर्मकाण्ड, यजुर्वेद, सामवेद, ज्योतिष, आयुर्वेद शास्त्रक अध्यापन होइक । उक्त सबमे दू-चारि मात्र छात्र रहैत छलाह, ज्योतिष आ आयुर्वेदमे छात्रक संख्या भरल रहैत छलैक । हिनकासँ पूर्व शारदा चरणसेन 'कविरत्न' देश प्रसिद्ध आयुर्वेदक अध्यापक मानल जाइत छलाह, कारण आयुर्वेदक प्रथम पाठ्य पुस्तक थिकैक 'माधव निदान' जकर टीका सबसँ सरल-सुबोध हिनके कयल छलनि जे भारत भरि पढ़ल जाइत छलनि । अखिल भारतीय वैद्य संघ द्वारा हिनका 'कविरत्न' उपाधि प्राप्त छलनि । ई हमर पिताजीसँ सेहो जेठ छलथिन । बंगाली होयबाक कारणेँ हिनक संस्कृत उच्चारण हमरा सबकेँ अपूर्व लागय । अत्यन्त मृदु स्वभावक लोक छलाह । हम, देवेन्द्र भाइ दू चारि प्रथमाक विद्यार्थी मनोरंजन लै हिनकासँ अमरकोष पढ़य जाइ । लक्ष्मीक पर्यायवाची शब्द निम्न श्लोकमे छैक-

लक्ष्मीः पद्मालया, पद्मा, कमला, श्रीहरिप्रिया
इन्दिरा, लोकमाता, मा, क्षीरोदतनया, रमा

कविरत्नजी उच्चारण करथिन-

लोक्खी, पोद्दालोया, पोद्दा, कोमोला श्रीहोरिप्रिया,
इन्दिरा, लोकमाता, मा खीरोद तनोया रमा

प्रायः जखन मनोरंजनक इच्छा हो, उक्त श्लोक पढ़ाय देबऽ कहियनि । दू-चारि दिनक बाद हुनको बुझयलनि जे ई सब विनोद करय अबैत अछि । अनका क्रोध भऽ सकैत छलैक, किन्तु कविरत्न गुरूजीकेँ सेहो मनोरंजन होइनि । हमरा सबकेँ देखिते विहुँसैत उक्त श्लोक पढ़ि देथि आ कहथि जाओ, पोढ़ो । हम सब नकल करैत थपड़ी बजबैत खूब आनन्द उठाबी । बड़ी राजमाताक वैयक्तिक चिकित्सक, नाड़ी विज्ञानक विशेषज्ञाता, विख्यात नेत्र चिकित्सक डॉ. श्रीमोहन मिश्रक पितियौत उपेन्द्र मोहन मिश्र हिनके छात्र रहथिन ।

महाविद्यालयक प्रसंग चर्चा चलि रहल अछि, एक विस्मयकारी ओ ऐतिहासिक सुनल घटनाक सेहो उल्लेख कऽ दी । 1907 ई. मे विद्यालयक स्थापना भेलैक तँ स्वयं सामवेदीय होयबाक कारणेँ महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह सामवेद पढ़यबाक हेतु यजुर्वेद सँ पृथक् अध्यापक नियुक्त करय चाहैत छलाह, किन्तु सामगानमे पटु एको गोट मैथिल वैदिक नहि उपलब्ध भेलथिन तँ एक दाक्षिणात्य स्वामी व्यंकटेश शास्त्री (नाममे भ्रमो

Scanned by CamScanner

भऽ सकैछ) कें विशेष वेतन दऽ एहि शर्त्त पर नियुक्त कयलथिन जे एकोटा छात्रकें पारंगत होयबाक समय धरि स्वामीजी विद्यालयमे रहताह । से भऽ गेला पर अपन पूर्व स्थानपर घूरि कऽ जाय सकताह । छात्रमे परसा गढ़ी जदया, मधेपुरा जिलाक महेन्द्रनाथझाकें छात्रवृत्ति दऽ पढ़बा लै आनल गेलनि । जखन ई पारंगत भऽ गेलाह तँ 5 वर्षक बाद स्वामीजी अपन स्थान पर नियुक्त कराय स्वस्थान गेलाह । स्वामीजीक पारिवारिक भाषा संस्कृते रहनि से पिताजीक मुँहें सुनल अछि । हमर बाल सखा देवेन्द्रनाथ झा एही महेन्द्रनाथझाक कनिष्ठ पुत्र छलथिन जे पछाति सामवेद ओ यजुर्वेद दूनूमे स्वर्ण पदक प्राप्त कयने रहथि, संगहि सब शास्त्र मिलाय सर्वोच्च अंक प्राप्त कयनिहारकें म.म. राजनाथ मिश्र प्रसिद्ध रजे मिश्रक नाम पर 'राजनाथ स्वर्ण पदक' देल जाइक, सेहो पदक हमर सखा देवेन्द्रनाथझा प्राप्त कयने छलाह । पछाति पिताक स्थान पर हिनके नियुक्त कयल गेलनि । पछाति प्रभारी प्रधानाचार्यक पद पर सेहो रहलाह । सामवेदी गुरूजी सेहो क्रोधीमे परशुराम रहथि । एक घटना सूनू ई घटना यत्र तत्र सर्वत्र चर्चित रहैत छल ।

महाराज कुमार दूनू भाय कामेश्वरसिंह आ विश्वेश्वरसिंहक जखन उपनयन भेलनि तँ जाधरि दूनू भायकें सन्ध्यावन्दनादिक सब मन्त्र कण्ठस्थनहि भऽ गेलनि ताधरि सामवेदी गुरूजी नित्य जाय सन्ध्या वन्दन करबैत रहलथिन । एक दिन ताहि मन्त्रक उच्चारण पुनः अशुद्ध भऽ गेलनि जकर अभ्यास अनेक दिन करौने छलथिन, तें सामवेदी गुरूजी क्रोधमे आबि कान ऐँठि लेलथिन । कामेश्वरसिंह कनैत अपन पिताकें कहलनि जे हिनकासँ नहि पढ़ब, ई हमर कान ऐँठि लेलनि अछि । दोसर वैदिककें कहियनु पढ़ाय देताह ।

बूढ़ा महाराज प्रबोधित करैत कहलथिन-दोसर वैदिक नहि छथि आ ब्रह्मचारीकें अपन गुरुक प्रति आक्रोश नहि करबाक चाही, पाप होइत छैक । दूनू भाय मुँह लटकौने पिताक लगसँ घूरि अयलाह । हमहू मूल विषय पर घुरैत छी ।

शारदाचरण सेन जेहने कोमल स्वभावक रहथि ठीक तकर विपरीत कविराज विश्वनाथझा कठोर स्वभावक । कछुआ चकौतीक छात्र राजेन्द्रझा हिनक अतिप्रिय छात्र रहथिन । ओहो टेटियाह, गुरुजी बेसी मानैत छथि सेहो अहंकार रहनि । ओ अधिक काल हिन्दीए बाजथि, साहित्यक प्रति वितृष्णा रहनि, तें छात्र संघक अप्रच्छन्न विरोधी रहथि । जखन-तखन हमरा सभक गतिविधिमे अपना दिससँ नोन मेरिचाइ मिलाय, झँसिगर बनाय शिकाइत कऽ आबथि ।

प्रायः 1940 क घटना थीक । राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघक प्रचारक काशीनाथमिश्र दरभंगामे संघक शाखा चलयबाक हेतु पठाओल गेल रहथि । ओ उपयुक्त स्थानक खोज करबाक क्रममे एक दिन सन्ध्याकाल सड़क धेने जाइत छलाह । हमरा लोकनि शिव पंचाक्षरक गान करैत छलहुँ । ओहि समवेत गानसँ आकृष्ट भऽ छात्रावास दिस बढ़ि

Scanned by CamScanner

अयलाह । हमरा सभक समक्ष ओ अपन उद्देश्य आ शाखासँ प्राप्य संस्कारक वर्णन करैत एही परिसरमे शाखा लगयबाक प्रस्ताव रखलनि । हमरा दाबा रहय जे, हम प्रिन्सिपलक बेटा छी, तेँ तुरन्त सहमति दऽ देलियनि । दोसरे दिनसँ शाखा लागब आरम्भ भऽ गेल । राजेन्द्रझा छात्रावास अधीक्षक लग लुतरी लाड़ि अयलाह । कविराज विश्वनाथ झा एक दिन ओही समयमे आकस्मिक निरीक्षणमे आबि गेलाह आ पहिने काशीबाबूकेँ फज्झति करैत पुछलथिन-अहाँ ककरा अनुमतिसँ एतय ई शाखा लगबैत छी ? काशीबाबूसँ पहिनहि हम कहि उठलियनि-छात्र संघक अनुमतिसँ । ई छात्र संघ की थीक ? ई अधिकार एकरा के देलकै ? हम कने उद्दण्ड स्वभावक रही । कहलियनि- हम सब छात्र संघ बनौलहुँ अछि । ताहि पर सब छात्रकेँ डँटैत कहलथिन-अहाँ सब जँ संघ-फंघक फेरीमे रहलहुँ तँ सबकेँ निकालि देब, एतबा कहि चल गेलाह । छात्र लोकनि सटक सीताराम । छात्र संघकेँ विघटित करबाक घोषणा कऽ देलनि । राजेन्द्रझा अपन विजय बूझि मनहिमन प्रसन्न । हमरा आत्मग्लानि भेल ।

छात्र संघक सदस्य छात्रावाससँ बाहरो रहनिहार छात्र सब रहथि जे सब एहिमे भाग लेथि, ताहिमे विद्यालयक शासीनिकायक सदस्य लोकनिसँ सम्बन्ध रखनिहार सेहो रहथि । शासी निकायक अध्यक्ष रहथि पण्डित गिरीन्द्रमोहनमिश्र, हुनक आश्रित देवानन्दमिश्र, सदानन्दमिश्र आ गोकुलानन्दमिश्र, सेक्रेट्री रहथि असिस्टेंट चीफ मैनेजर दुर्गानन्दझा, तनिक आश्रित उपेन्द्रनारायणझा, जे आचार्य कयलाक बाद सुमन जीक सहायकक रूपमे मिथिला मिहिरमे, पछाति राजस्कूलक हेड पण्डित पदसँ सेवानिवृत्त भेलाह । शासी निकायमे अध्यापक सभक प्रतिनिधि रूपमे सामवेदी गुरूजी, तनिक बालक, देवेन्द्रनाथझा । काशीनाथमिश्र कनेँ अप्रतिभ भऽ गेल छलाह, हुनका संग लऽ हम सब तखने सेक्रेट्री दुर्गानन्दझाक डेरा पर गेलहुँ । उपेन्द्र जी भीतर जाय हमरा सभक अयबाक सूचना देलथिन, ओ बहरयलाह तँ हम छात्रावास अधीक्षक जे कठोर निर्णय सुनाय गेल रहथि से सब कहि देलियनि, ताहि पर पूछि देलथिन- ई राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की थिकैक । काशीनाथमिश्र संघक उद्देश्य स्पष्ट करैत शाखाक कार्य-कलाप पर पूर्ण प्रकाश देलथिन ।

सुनल अछि जे दुर्गानन्द बाबू बेसी लिखल-पढ़ल नहि रहथि, मुदा लौकिक व्यवहारमे परम पटु रहथि । काशी बाबूसँ सब बात सुनि कहलथिन- एहिसँ तँ विद्यार्थी सभक बौद्धिक आ शारीरिक विकासे होयतनि । हमरा दिस तकैत कहलनि- होस्टल सुपरिटेंडेंटक व्यवस्थामे हम हस्तक्षेप करबनि से उचित नहि होयत । काज एना करी जे सापो मरय, मुदा लाठी नहि टूटय । जँ विद्यालयेक अङनइमे शाखा लागय तँ कोनो क्षति ? हम कहलियनि-कोनो क्षति नहि । ओ तकर अनुमति दऽ देलनि । हम फेर कहलियनि- से लिखितमे दऽ देल जाय । हँसैत कहलनि- अच्छा, काल्हि उपेन्द्र आबि कऽ लऽ जयताह, आ अहाँ प्रिन्सिपलो साहेबसँ दसखत करायलेब ।

Scanned by CamScanner

राति 8 बाजि गेल रहैक । पिताजी चिन्तित भऽ टहलू फौदरबाकेँ ताकय लेल छात्रावास पठौने रहथिन, तेँ ओतय गेल छी से पता लागि गेल छलनि । जाइत देरी पुछलनि– दुर्गानन्द बाबूक ओतय किएक गेल छलहुँ ? सब वृत्तान्त सुनाय देलियनि, किछु नहि बजलाह, मुदा बेसी अबेर भऽ जयबाक कारणेँ बात गुलगुलाइत राजपण्डित जीक कानमे पहुँचि गेल छलनि । दोसर दिन भोरे फूल तोड़ि कऽ घुरलहुँ तँ बजाकऽ बड़ी डँटान डँटलनि । हम चुप्पे सबटा सुनि चल अयलहुँ । उपेन्द्र जी दुर्गानन्दबाबूसँ अनुमति पत्र लऽ अनलनि । साँझमे विद्यालय प्रांगणमे शाखा शुरू भऽ गेल । संगहि कविराज विश्वनाथझाक संग एक प्रकारक अप्रत्यक्ष संघर्षक जन्म सेहो भऽ गेलैक ।

बड़का भाइ अर्थात् राजपण्डितजी हमर अनिष्ट किएक सोचितथि, किन्तु हमर अध्ययनमे कम आ बाहरी क्रिया-कलाप बेसी देखि हमरासँ अप्रसन्न अवश्य भऽ गेल रहथि संगहि एक विशेष कारण सेहो भऽ गेल छलैक । 1938 मे हम मध्यमा प्रथम खण्डक फॉर्म भरने रही। ओही वर्ष हरिद्वारमे महाकुम्भ लागल रहैक । सनातन धर्म महामण्डलक महाधिवेशन सेहो आयोजित रहैक जकर संरक्षक मण्डलमे मिथिलेशक प्रथम स्थान छलनि, तेँ महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह सदल-बल भाग लेने छलाह । ओहि दलमे हमर पिताजी, राजपण्डितजी, पं. त्रिलोकनाथमिश्र, कविवर सीतारामझा, शिवेश्वर झा प्रसिद्ध शिव बाबू (श्रीमन्त्रेश्वरझा, साहित्य अकादेमी पुरस्कृतक पितामह) सबकेँ राज दरभंगा द्वारा यात्रा व्यय ओ हरिद्वारमे आवासक व्यवस्था छलनि, संगमे एक परिचारककेँ, एक खबासकेँ लऽ जयबाक अनुमति छलनि । परिचारक रूपमे हम संग जयबाक जिद्द ठानि देलियनि । बड़का भाइक इच्छा छलनि जे गुरुजीक परिचारक रूपमे अपने गणमे सँ ककरो संग लऽ लियनि, से ककरो कहिओ देने छलथिन । हम 'गण' शब्दक प्रयोग जानि बूझि कऽ कयलहुँ अछि ।

बड़का भाइक प्रसंग किछु विशेष चर्चा कऽ दी जाहिसँ 'गण' शब्दक तात्पर्य स्पष्ट भऽ जायत । बड़का भाइ रहथि राजपण्डितक पद पर । राज दरभंगा दिससँ समय-समय पर अनेक धर्मानुष्ठान भेल करैक, ताहि सभक कर्त्ता-धर्त्ता यैह होथि । जेना देशमे रौदी भऽ गेलैक तँ प्रजाक हितार्थ दस लाख वरूणक जप होयबाक चाही, से प्रेरणा महाराजकेँ देथिन । पैलेस आफिसरकेँ आदेश होइनि । 10 गोट अनुष्ठानीकेँ एक-एक लाख जप करबाक भार भेटनि । वरणमे एक जोड़ धोती, एकटा अंगपोछा, एकटा जलपात्र एकटा आसन आ प्रतिदिन हविष्यान्न भोजन लै दस दिनक भोज्यान्न, दिनमे फलाहार लै दूध, केरा, किसमिस आदि, ताहि पर एक टके हजार दक्षिणा भेटैक । मिलाजुलाकऽ सबासय-डेढ़सयक आमदनी भऽ जाइक । बड़का भाइकेँ थोड़बो संस्कृत लिखल-पढ़ल दरिद्र ब्राह्मणक प्रति हृदयमे बड़ दयाभाव रहनि । ओहन अनुष्ठानी लोकनि हिनक कृपादृष्टि प्राप्त करबा लै अमौट परक बिढ़नी जकाँ हिनका लग मड़राइत रहैत छलथिन ।

Scanned by CamScanner

किछु गोटे मन्दिर सब पर पुजेगरी, फुलतोड़ा आदि पद पर स्थायी जीविका प्राप्त कयने रहथि से सब हिनक गण बूझल जाथिन ।

जखन यात्राक प्रसंग जिज्ञासा करैत पिताजीकेँ पुछलथिन- अपने अपन संग कनिका लऽ जयबनि ? पिताजी कहलथिन- चन्द्रनाथ जिद्द ठनने छथि, ई तँ बतहूए छथि । बड़का भाइ घोर निषेध करैत कहलथिन- एक तँ एतेक दूरक यात्रा, दोसर कुम्भमे पचासो लाख लोकक रेड़ा होयतैक, ई बड़ नेना छथि, ई अपनेक की सहायता करताह ? उनटे एकटा मोटा भऽ जयताह । एहन गलती कथमपि नहि कयल जाय । पिताजी हमरा बहुत परतारलनि, कहलनि तीन दिन रेल गाड़िएमे रहय पड़तैक, कतय नहायब, की खायब, कतय सूतब? बड़ कष्ट भऽ जायत । हम तँ बतहू, अपन जिद्द छोड़निहार नहि । फेर कहलनि-बलदेव एकदम मना करैत छथि, हम चुप्पी साधि लेल आ मनहि मन जयबाक जोगाड़ लै सोचय लगलहुँ । फौदरबा जखन जयबाक दिनमे मोटा-चोटा बान्हय लागल तँ एकटा मोटामे अपन कपड़ा-लत्ता दोसरमे पोथी-कापी बन्हबा देलिऐक । फौदरबोक इच्छा रहैक जे हमही संग चलियनि । टमटम आबि गेल, मोटा चढ़बय लगलैक तँ ताहूसँ पहिने हम ओहि पर जाय बैसि गेलहुँ । पिताजी बहरयलाह तँ हमरा टमटम पर बैसल देखलनि तँ कहलनि-ओना बुझा-सुझा कऽ कहलहुँ, बलदेव से बिगड़ि जयताह । हम कचकचा कऽ कहलियनि- तखन हमर कपड़ा-लत्ता एहि मोटामे आ पोथी-तोथी ओहि मोटामे अछि से बाहर करबा दियऽ । आब जँ दू-दू टा मोटा फोलिकऽ बान्हल जाय लागत तँ ट्रेने छूटि जाय से शंका । हारि-दारिकऽ खिन्नमनेँ हमरा संग कऽ लेलनि ।

ओहि समय रेल गोड़ीमे चारि क्लास होइक, फस्ट, सेकेन्ड, ड्योढ़ा आ थर्ड क्लास । पिताजी लोकनिकेँ ड्यौढ़ा दर्जाक टिकट रहनि । उत्साह आरो बढ़ि गेल । एहिमे पैघ लोक चढ़ैत अछि, हमहू पैघ लोक छी । तकर बाद बड़का भाइक काफिला पहुँचलनि, हमरा गाड़ीमे बैसल देखि हमरा दिस गुम्हड़ि तकैत प्रश्नवाचक मुद्रामे पिताजी दिस तकलथिन तँ पिताजी संक्षिप्त उत्तर दैत कहलथिन- बतहूए छथि, नहि मानलनि । एक तरहेँ ओही दिनसँ हम हुनक अवज्ञा कयनिहारक श्रेणीमे मानल जाय लगलहुँ ।

प्रसंग चलि रहल अछि तेँ ओहि यात्राक प्रसंग जे जतबा स्मरण अछि तकरो उल्लेख कऽ दी । आइ बिदा भेलहुँ से परसू हरिद्वार पहुँचलहुँ । बड़का भाइ एकोबेर हमरा नहि टोकलनि । हरिद्वारमे महाराजक दू गोट अपन मकान छलनि ब्रह्म कुण्ड लग आ कनखलमे । महाराज अपन विशाल काफिलाक संग दिल्लीसँ अबैत गेलाह । छोटका भाइ अर्थात् साहित्य संसारमे सम्प्रति सुपरिचित प्रो. श्रीरमाकान्तमिश्रक पिता आ महाराजक 'टूर सुपरिं टेंडेंट' प. कमलाकान्त मिश्र महाराजक संग रहथि, ओ सब ब्रह्मकुण्डमे अँटकलाह आ हमरा सब अर्थात् दरभंगा ओ काशीसँ अयनिहार लोकनिकेँ कनखलमे व्यवस्था भेल ।

Scanned by CamScanner

हरिद्वारमे अनेक तीर्थ छैक । पुराणमे हरिद्वारक तीर्थक प्रसंग वचन छैक–

ब्रह्मकुण्डे, कुशावर्ते, बिल्वके नील पर्वते,
स्नात्वा कनखले तीरे पुनर्जन्म न विद्यते ।

आइ 71 वर्षक बाद संस्मरण लिखय बैसलहुँ अछि । ताहि समय नेना रहलाक कारणेँ आ आइ 85 वर्षक वयस भऽ गेलाक कारणेँ बहुत दृश्यतँ धूमिल भऽ गेल अछि । तथापि किछु विशेष घटना मनमे खचित रहि गेल, जेना पं. त्रिलोकनाथमिश्र आ कविवर सीतारामझा दूनू समवयस्क आ दूनू गोटे प्रत्युत्पन्नमतिक लोक, बात-बात पर तुक मिलाबथि, दूनूमे बेस धुरपटांग होइनि । राजपण्डित जी सतत धीर-गम्भीर बनल रहथि, हुनका कोनो हल्लुक-फल्लुक गप्पमे रूचि नहि रहनि । ईहो दूनू गोटे समक्षमे धाख रखथिन, किन्तु परोक्षमे किछु आलोचना सेहो । ब्रह्मकुण्डमे मिथिलेश अपने रहथि तेँ सुविधा बेसी, व्यवस्था चुस्त दुरूस्त । व्यवस्था एतहु रहैक, किन्तु कनेक ढील-ढाल, ताहि पर पं. त्रिलोकनाथमिश्र कविवर सीतारामझाकेँ कहलथिन- हमरा लोकनि तँ जे से, मुदा ई ढुण्ढिराज अर्थात् राजपण्डितजी कनखल मे कोना ? हम कने अपेक्षा सँ बेसी ढीठ रही, बीचमे टीपि देलियनि- कनखलमे हमरा पर कनखड़ल रहैत छथि । एहि रूपक शब्दक खेल करबाक प्रवृत्ति हमरोमे बाल्यकालेसँ छल से आब बुझाइत अछि । कनखल आ कनखड़ल शब्द पर दूनू गोटेक ध्यान गेलनि । प्राय: हमरामे कवित्वक बीज अछि तकर आभास भेलनि, हमरा एहि दूनू महानुभावक आशीर्वाद सर्वदा भेटैत रहल ।

कविवर सीतारामझाक चर्चा कयलियनि अछि, तेँ एक घटनाक उल्लेख तते अप्रासंगिक नहि होयत । हमर आवास मिश्रटोलाक समीप गुमती सन एकटा मुण्डा कोठामे महावीरजीक मूर्ति छलनि । 1969क माघ मासमे कोनो भक्त सांझमे महावीर मन्दिर मे धूप-दीप दऽ गेल छलथिन । मूर्ति पर तेलमे घोरल सिन्दूरक मोटकऽ लेप चढ़ल छलनि । दुर्योगवश रातिमे मूर्तिपर ओढ़ाओल वस्त्र मे आगि लागि गेलैक आ सम्पूर्ण मूर्ति जरि कऽ कारी खुंझा भऽ गेल छलैक । विद्वान लोकनि दग्ध मूर्तिक पूजाक निषेध कयलनि । ओ मूर्ति लोहाक फ्रेममे कंकरीटमे सीमेंट मिलाय बनाओल गेल छलैक । महल्लाक प्रमुख लोकक बैसकमे प्रस्तर मूर्ति लगयबाक विचार भेलैक । प्रख्यात महिला डॉक्टर अरोड़ा अपन पति पुरूषोत्तम अरोड़ाक स्मृतिमे प्रस्तर मूर्तिक व्यय वहन कयलनि । चैतमे मूर्ति अनबाक हेतु काशी गेलहुँ ।

ईहो जनाय दी जे आरम्भमे हम प्रतिवर्ष कवीश्वर चन्दाझाक पुण्यस्मृति मनबैत छलियनि, मुदा ने हिनक जन्मतिथिक पता छल ने निधन तिथिक, तेँ रामायणक रचयिता होयबाक कारणेँ रामनवमी तिथि निर्धारित कयने छलहुँ । हिनक देहान्त काशीमे भेल छलनि, तेँ ओहि वर्ष काशीएमे पुण्यतिथि मनयबाक निश्चय कयल । राममन्दिर पर आयोजन भेल । ओहि अवसर पर विद्वज्जन समिति (जे समिति काशीसँ प्रकाशित

Scanned by CamScanner

'मिथिला मोद'क प्रकाशक छल) संस्कृतमे एक अभिनन्दन पत्र सहित 'कविरत्न' उपाधिसँ हमरा सदृश अल्पज्ञकेँ सम्मानित कयलक आ कविवर सीतारामझा मंचेपर बैसल मैथिलीमे छन्दोबद्ध आशीर्वचन लिखि संवर्द्धना कयलनि । उक्त दूनू पत्रकेँ हमर सुराह मित्र डॉ. श्रीसुरेश्वरझा, प्रबन्ध सम्पादक 'अमर अर्चना' नामक अभिनन्दन ग्रन्थमे समाहित कयने छथि । किन्तु एक कौड़ी मूल्यक लोक हम संकोचवश उक्त उपाधिक प्रयोग नामक संग कतहु नहि कयल । यद्यपि एहिसँ आत्म प्रशंसाक गन्ध आबि रहल अछि, तथापि कविवरक स्नेहभाजन होयबाक उदाहरण स्वरूप एकर उल्लेख करबाक धृष्टता करय पड़ल । अस्तु !

कहि रहल छलहुँ हरिद्वार यात्राक प्रसंग । बड़का भाइक परिचारकमे रहथिन गुलंटी बाबू नामक एक अनुष्ठानी आ शुकना नामक खबास रहनि । शिव बाबू प्रतिदिन सबेरसकाल पिताजीकेँ संग कऽ श्लोकमे पूर्वोक्त तीर्थ सबमे दर्शनार्थ चल जाथि । एक दिन बड़का भाइ सेहो हिनका सभक संग बिदा भेलाह । ई अति स्थूल काय रहथि तेँ परोक्षमे किछु लोक ढुण्ढिराज कहथिन । ओहिदिन गुलंटी बाबू शुकनाक संग नील पर्वत पर दर्शनार्थ बिदा भेलाह तँ फौदरबाकेँ संग कऽ हमहू संग धऽ लेलियनि । भागीरथी अलकनन्दा आ नीलगंगा पर लगातार पीपा पर चचरी पुल छलैक ताहि पर बाटेँ ओहि पार गेलहुँ । नील पर्वतक तलहटीमे एक अगम आश्चर्य जनक इनार रहैक । लोहाक सिक्कड़मे बान्हल एकटा डोल छलैक । एकटा खोपड़ीक आगू एकटा साधु छलाह, ओ नील पर्वत पर चढ़निहारकेँ डोलसँ पानि भरि भरिछाक जल पीबि ऊपर चढ़य कहथिन । हमरा लोकनि हुनक परामर्शक उपेक्षा करैत पहाड़ पर चढ़य लगलहुँ । देखबामे नीचाँ सँ ओतेक दूर नहि बुझाइक मुदा घुमघुमौआ ओ बाट चारू कात घुरैत आजुक पाँच कीलोमीटर भऽ जाइक । से बाटेमे सभक कण्ठ सुखाय लागल, बेदम भेल भगवती मन्दिर धरि पहुँचैत गेलहुँ । आश्चर्य भेल जखन पुजेगरी अपना हाथेँ चानीक एक चननकाठी चरणोदक देलनि जे कण्ठ लग जाइत बिलाय गेल होयत, मुदा एक गिलास जल पीलापर जे तृप्ति होइत से ओहि एक चननकाठी चरणोदकसँ भेल । घुरतीमे बूझि पड़य जे क्यौ गर्दनियाँ दऽ नीचाँ धकेलि रहल अछि । एक तरहेँ बूझू जे दौड़िते अबैत गेलहुँ । पियासेँ लहालोट भऽ गेलहुँ ।

नीलगंगामे यमुना जकाँ नीलाभ जल, मुदा प्रवहमान नहि, जमकल, तैयो सब गोटे भरि जांघ-जलमे पैसि आँजुड़सँ भरि-भरि छाक जल पीबि लेल । चैत मासक रौद, कनखल घुरैत बाटेसँ सबकेँ ओ पानि नाक बाटेँ बहय लागल । बड़का भाइक द्वारेँ मन्दगतिएँ चलैत पिताजी लोकनिकेँ घुरबामे समय लागि गेलनि । बड़का भाइ परिश्रान्त, घामेँ-पसेनेँ तर-वतर अबैत देरी लुद्द दऽ बैसि रहलाह । एमहर हमरा पाँचो गोटाकेँ पटापट छिक्का होइत, नाकसँ पानि बहैत देखि पिताजी हमरा आ फौदरबाकेँ एकटा

Scanned by CamScanner

चुनौटीसँ मड़ुआसन कारी गोली खोआ देलनि । जनाय दी जे पिताजी दम्माक पर्मानेंट रोगी छलाह । तेँ नित्य हफीम खाथि, ओ मड़ुआ भरि गोली हफीम रहैक । हम आ फौदरबा बाँचि गेलहुँ आ ओहितीनू गोटे केँ ज्वर भऽ गेलनि । शिवबाबू तँ स्वयं पाकी रहथि, मुदा बड़का भाइ फटोफट्टमे पड़िगेलाह, हुनको पूजाक ओरियान, अपने भानसमे हुनको भानस हमरे करय पड़य । हम मनहि मन प्रसन्न होइ जे हमर जयबाक विरोध करैत छलाह, आइ हमरे प्रत्याशा छनि ।

समाचार पत्रमे बहरयलैक जे 47 लाख लोक कुम्भमे आयल छलैक जाहिमे धक्कम धुक्कामे सैकड़ो लोकक जान गेलैक, हजारो लोक दुःखित पड़लैक । आइ जकाँ अंग्रेजी दवाइक ने आविष्कार भेल छलैक ने वनहरदिजकाँ कतहु डाक्टरे रहैक । स्टेशन पर ट्रेनमे तेहन रेड़ा रहैक जे प्लेट फार्मपर तिल धरबाक जगह नहि भेटैक ताहिपर हिनका लोकनिकेँ ज्वरमुक्त होयबामे समय लागि गेलनि । परिणामतः मध्यमा प्रथम खण्डक परीक्षा एही बीच भऽ गेलैक, हमरा परीक्षा छूटि गेल ।

19म दिन हरिद्वारसँ बिदा होइत गेलहुँ । ट्रेनमे एकाएक बड़का भाइ पूछि देलनि– अहाँक परीक्षा कहिया अछि ? हमर उत्तर छल–छूटि गेल । ताहि पर क्षुब्ध होइत सन कहलनि– हम मना करैत छलहुँ, अहाँ जिद्द कऽ चल अयलहुँ, ई जिद्द भविष्यमे भीख मङाय देत । हम अपना जीवनमे पिताजीकेँ एहन क्रुद्ध होइत नहि देखने छलियनि । 'भीख मङाय देत' शब्द जेना हुनक मर्मकेँ वेधि देलकनि, स्वाभिमान सेहो जागि गेलनि । हुनका कहलथिन– अँय औ बलदेव, अहाँ भीख मङाय देत से किएक कहलियनि ? अहाँ जाहि पद पर छी से ककरा प्रसादेँ ? औ, जे दुइओ अक्षर हमरासँ पढ़लक से पूर्ण सम्पन्न नहि, तँ सरस्वतीक कृपासँ विपन्नो नहि अछि आ ई तँ हमर आत्मजे थिकाह, ई भीख मङताह ? कहू तऽ, दस दिनसँ अहूँक परिचर्या यैह नेना कयलक अछि आ अहाँ तकरा शाप दैत छिऐक ? बड़का भाइ सकदम्म, एहन अप्रतिभ होइत बड़को भाइकेँ कहियो नहि देखने छलियनि । बुझायल जे हुनको मनहिमन भीख मङाय देत वाक्य पर पश्चात्ताप भेल होइनि । दरभंगा आबि पिताजी हमरा कहलनि– एक टा बात सदा स्मरण राखब, जीविका लै बलदेवकेँ कथमपि नहि कहबनि । आइ प्रतीत होइत अछि जे क्रोध जे भेलनि से हुनको मनकेँ बहुत दिन धरि मथैत रहलनि, यदा-कदा मुँह सँ बाहर भऽ जाइनि–क्रोधः पापस्य कारणम्' । अस्तु ।

1938 मे हमर परीक्षा छूटि गेल जे हमर मात्र एक वर्षक हानि भेल, मुदा परिवारमे एक सुखद तँ दोसर असहनीय दुःखद घटना घटित भऽ गेल । सुखद घटना ई जे पिताजी बाबा धाममे चढ़यबाक हेतु हरिद्वारसँ गंगाजल अनने छलाह से चढ़यबाक हेतु गर्मी छुट्टीमे वैद्यनाथ धाम जयबाक निश्चय कयलनि । ताहि यात्रामे माय, तीनू बहिन, अनुज जीवनाथ सबकेँ लऽ जयबा निर्णय छलनि । संयोग वश मिर्जापुरक परम भक्त

Scanned by CamScanner

शिष्य पं. वासुदेवझा सपरिवार सेहो संग देने रहथिन । हमर ओही वासुदेव भाइक सुपुत्र थिकथिन पण्डित श्रीश्यामानन्दझा जे 5-6 वर्षक रहथि से हो संग छलथिन ।

हमर वैमात्रेय एक बहिन जीवेश्वरी नवानी आ दोसर बहिन वागीश्वरी मधवा, सहोदर बहिन अन्नपूर्णा ढंगा पुवारि टोलमे रहथि । नवानी आ ढंगा पहुँचब तँ सुगम छैक, किन्तु मधबा तँ पुपड़ी (जनकपुर रोड) रेलवे स्टेशनसँ सात-आठ कोस उत्तर नेपाल तराइमे, हुनका आनय के जायत से समस्या । हम कहलियनि- हम जायब । पिताजी प्रायः हरिद्वार यात्रामे हमर तत्परता आ पटुता देखि प्रभावित रहथि, तेँ अनुमति दऽ देलनि । हम एकसरे ट्रेनसँ पुपड़ी आ ओतयसँ टमटम कऽ सुरसर (आब सुरसंड) ओतयसँ डेढ़-दू कोस मधवा पहुँचि गेलहुँ । एकसरे हमरा देखि हुनका सबकेँ आश्चर्य भेलनि । अयबाक उद्देश्य सुनि हमरा बहिनक सासु आ प्रो. श्रीरमाकान्तमिश्रक नानी तँ सहजहि, जे हुनक भैंसुर पं. सुवंशझा, जे हमर पिताजीक शिष्यो रहथिन, वराही विद्यालयमे द्वितीय अध्यापक सेहो, एक नेनाक संग हमरा बहिनकेँ बिदा करब एकदम अस्वीकार कऽ देलनि । हमर बहिनोइ ता दिवंगत भऽ गेल छलाह । हम अपन पिसियौत पं. शिवनाथझाकेँ, जे हमर जन्मक दिनमे खोजपुरे मे रहथि, जनिक चर्चा कऽ चुकल छियनि, जा कऽ अपन समस्या कहलियनि । ओ तुरन्त हमरा संग अयलाह आ पं. सुवंशझाकेँ बिदागरी कऽ देबय कहलथिन । नाकर नूकर करैत कहलथिन- एहि टेल्हक संग कोना जाय दियनु? शिवजी भाइ कहलथिन जे ई मधबाक टेल्ह नहि थिकैक, शहर-बजारक फेरल टेल्ह थिकैक । अहाँ निर्भय भऽ बिदा कऽ दियनु । हम कृतकार्य भेलहुँ ।

पं. सुवंशझा केहन सुधंग रहथि ताहि प्रसंग एक रोचक घटना सुनू । ओ हमर बहिनोइक जेठ भाय तँ छलथिने, हमर छोटका भाइ अर्थात् पं. कमलकान्त मिश्रक विवाह हिनक वैमात्रेय बहिनसँ छलनि ई दोहरा सम्बन्ध छल । हिनक आँखि कमजोर छलनि । बहुत बादक घटना थीक, जखन हम मिश्रटोलामे अपन आवास बना लेने छलहुँ । ई आँखि देखाबय अयलाह । हम डॉ. श्रीमोहनमिश्रक ओतय लऽ गेलियनि । ओ आँखिमे दवाइ दऽ एक घंटा बैसय कहलथिन आ तकर बाद जाँच कऽ एकटा पुर्जा लिखि, हाथमे दैत कहलथिन- मोतियाबिंद भऽ गेल अछि, ऑपरेशन कराबय पड़त, से जहिया करयबालै तैयार होइ ताहि सँ एक दिन पूर्व पेशाब जाँच करा लेब आ ओ रिपोर्ट लेने आयब । ई कहलथिन हमरा खूब पावर बला चश्मा लिखि देल जाय । डॉक्टर साहेब प्रतिवाद करैत कहलथिन- कतबो पावरक चश्मा देब, बिनु ऑपरेशन करौने ज्योति नहि घूरत । घुरतीमे कहलनि- अहाँ कोन मूर्खक ओतय लऽ अनलहुँ ? घाव-घोसक ने ऑपरेशन होअय, आँखिमे छूरा चलौतैक तँ लोक निपट्टेने भऽ जायत । ई लघुशंकाक जाँच कराबय कहलनि । अहीं विचार करू, कतय आँखि शरीरक उपरका भागमे आ लघुशंका लोक नीचाँ सँ करैत अछि, आँखि आ लघुशंकामे कोन सम्बन्ध? ई ऑपरेशनक नाम पर पाइ

Scanned by CamScanner

झीटय चाहैत छथि। हम एहन ठक डॉक्टरक फेरीमे नहि फँसब। ओही दिन गाम घूरि गेलाह।

प्रकृत विषयपर पुनः आबी। अन्ततः बहिनक बिदागरी कराय तेसर दिन दरभंगा घुरलहुँ, जखन कि दोसरे दिन घूरि अयबाक विचार छल, तेँ पिताजी कनेक चिन्तित भऽ गेल छलाह, किन्तु पहुँचितहि आश्वस्त भऽ गेलाह। बहुत दिन पर तीनू बहिन एकत्र भेल छलीह। बेस उल्लासमय वातावरणमे यथासमय बाबा धामक यात्रा सम्पन्न भेल। पुनः हमही बहिनकेँ पहुँचाबय गेलियनि। बहिनक सासु हमर कतेक दुलार-मलार कयलनि से कहल नहि जाय, कहलनि-पेटमे प्रान नहि, आँखिमे निन्न नहि, मनमे भरोस नहि छल जे कुशल पूर्वक फेर अहाँ सबकेँ देखब।

गर्मी छुट्टी बीति गेल छल। बहिन लोकनि अपन सासुर गेलीह, माय खोजपुर, जीवनाथ दरभंगामे रहि गेलाह। ई तँ सुखद घटना भेल, किन्तु किछुए दिनक बाद जीवूकेँ सन्निपात ज्वर भऽ गेलनि, अन्ततः राज अस्पतालमे भर्ती कराओल गेलनि, डॉक्टर लोकनि अपन सब शक्ति लगौलनि, किन्तु भावी जे छलैक से भेलैक, निज कृष्णाष्टमीक अहल भोरे जीवू शरीर त्यागि देलनि, ओहिकाल एक मात्र हमही छलियनि। ओ दृश्य कहियो बिसरि नहि सकलहुँ, बौआ भाइक अन्त्येष्टि आ श्राद्ध कयनहि छलियनि, हिनको सब क्रिया-कर्म हमरे करय पड़ल। पिताजी तँ जेना बौक भऽ गेलाह। मायक कोरपच्छू सन्तान आ हुनक परोक्षमे मृत्यु भेलनि, उतरी पहिरने हम खोजपुर पहुँचलहुँ तखन जे करुणाक सागर उमड़ल से ई पंक्ति लिखबोक समयमे हृदयकेँ आलोड़ित-विलोड़ित कऽ रहल अछि।

किछुए दिन पहिने बाबाधामसँ सब गोटे आयल रही, तखन पुनः एहन वज्राघात, विपत्तिक पहाड़ टूटिकऽ माथपर खसि पड़लाक कारणेँ मायकेँ एक प्रकारेँ देवता-पितरपरसँ आस्था टूटि गेलनि। बौआ भाइक मृत्यु माघी सप्तमी दिन, विन्ध्यनाथक चौठचन्द्र दिन, जीबूक कृष्णाष्टमी दिन आ एहू सबसँ पहिने जूड़शीतल दिन हमरासँ जेठि एक बहिन छलीह सुशीला जनिक मृत्यु हमरा ज्ञान-प्रान होयबासँ पूर्वे भऽ गेल छलनि। अन्तिम घटनासँ लोककेँ हमरा प्रति सहानुभूति बढ़ि गेलैक, जे हमर उच्छृंखलताकेँ कने आरो बढ़ाय देलक। तथापि 1939मे मध्यमा प्रथम खण्डसँ लऽ 1945 मे आचार्य धरिक परीक्षा उत्तीर्ण होइत गेलहुँ, अन्तिम टामे प्रथम श्रेणी शेष सबमे द्वितीय श्रेणी भेटैत गेल। फेल होयबाक दुःख केहन होइत छैक तकर अनुभव हमरा नहि भेल। हँऽ आत्म विश्लेषण कयला पर लगैत अछि मानव शरीर पाबिओकऽ 'पुनरपि जननं, पुनरपि मरणं, पुनरपिगर्भ निवासम्' जे अन्तिम जीवनक परीक्षा होइत छैक ताहिमे विफलता अवश्यम्भावी अछि, एहि चक्करसँ उबरबाक साधना नहि कऽ सकलहुँ। अस्तु !

भावनामे बहि गेल छलहुँ, पुनः धरातल पर अबैत छी। छात्र संघक चर्चा भऽ

Scanned by CamScanner

चुकल अछि । छात्रावास अधीक्षकक डँटलापर छात्रावासमे रहनिहार सब छात्र सटकि गेलाह, किन्तु बाहर रहनिहार हम सब नओगोटे जे छलहुँ से नवरत्न कमीटी बनौलहुँ । 'नव' शब्दमे श्लेष छल एक अर्थमे नओ संख्या, दोसरमे नवीन लोक जे आबय चाहथि, द्वार फूजल रहतनि । लोकोक्ति छैक खुट्टा बलें पड़रू डिंड़िआइत अछि से एहि नवरत्न कमीटीक सब सदस्य शासी निकायक कोनो ने कोनो सदस्यसँ सम्बद्ध छलहुँ, तेँ आत्मविश्वास सुदृढ़ छल, संगहि मास्टर साहेब अर्थात् कालीकान्त बाबूक नैतिक समर्थन सेहो रहय । नवरत्न कमीटीक 'कोडवर्ड' बनल 'एन्.आर.सी.' नवो गोट मासमे 2/–रूपैया कऽ जलपान तथा पानक खर्च हेतु कोष बनौलहुँ । विद्यालयसँ सटले उत्तर आ छात्रावासक सामने पूब लक्ष्मण साहु हलुआइक दोकान आ लक्ष्मी भगतक पानक दोकान छलैक । वनस्पति घी (डालडा) क आबिष्कार नहि भेल छलैक । शुद्ध घी मे छानल जिलेबी 6 आने सेर, दू पाइए कचौड़ी आ सैकड़ाक हिसाबसँ आठआने सैकड़ा पानक खिल्ली बिकाइत रहैक । 64 पाइक रूपैया होइक । एन.आर.सी. यैह दूनू गोटेकेँ बूझल छलैक । हमरा सभक दूनू ठाम खाता बही छल । जनिका जखन सुविधा हो, जलपान कऽ खाता बहीमे लिखि दियौक । मासदिन पर सब हिसाब होइक । 18 टाकासँ बेसी जे भऽ जाइक तकर पूर्ति हम कऽ दिऐक । पूछल जाय सकैछ जे से कतय सँ अनैत छलहुँ ? पहिल तँ विद्यालयसँ 4/–रू० छात्रवृत्ति भेटैत छल, तकर अतिरिक्त पिताजीकेँ बराबरि गुणीक पाता अबैत छलनि, विद्यार्थीमे संग लऽ जाथि । विद्यार्थीओकेँ बिदाइ भेटैत छलैक । हमर क्षेत्र किछु और विस्तृत छल । महाराज दरभंगाकेँ विभिन्न रजबाड़ासँ यथा– जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, पाटियाला, काशीनरेश, डुमराँव, हथुआ, रामनगर कूचविहार आदि ठामसँ निमन्त्रण अबैत छलनि से पुरबाक हेतु महाराजक प्रतिनिधि रूपमे हमरे पिताजीकेँ पठाओल जाइनि । विद्यार्थीक रूपमे अधिकठाम हमरे लऽ जाथि । तदतिरिक्त एक सिपाही एक चोबदार संग रहनि । चोबदारकेँ चानी मढ़ल एक बल्लम आ राजमुद्रांकित विशेष परिधान । ओकरा सब राजा–महाराजक विरुदावली कण्ठस्थ रहैक । राजक दिससँ कपड़ा, अशर्फी राज मुद्रांकित एक पत्र रहैत छलैक । जाहि रजबाड़ामे जाइ ताहि राजक अतिथिशालामे आवास भेटनि । उपहार उपस्थित करबाक हेतु ओ राजा तिथि निर्धारित कऽ दरबार लगाबथि । हम सब जाइ । चोबदार पहिने एहि महाराजक विरुदावली गाबय तखन ओहि ठामक राजाक, तकर बाद तीनबेर झुकि कऽ सलाम करनि, तखन उपहार सजाओल थार पिताजी उठाकऽ राजाक समीप जाथि, ओ राजा सिंहासनसँ थारकेँ स्पर्श कऽ ओ उपहार स्वीकार करथि । पुनः अतिथिशाला आबी । विदाइक तिथि निर्धारित होइक । कोनो राजपुरूष अतिथिशाला आबि पत्रोत्तरक संग सबकेँ फराक–फराक बिदाइ देथि, ओहिमे विशिष्ट वस्त्रक संग नगद सेहो रहैक । हमरो पुष्कल राशि प्राप्त भऽ जाय, ओ टाका पिताजी हमरासँ नहि लेथि । हम उदारता पूर्वक फुर्र–फाँइमे उड़ाओल करी । तेँ मानल जाय सकैछ जे एन.आर.सी. पर हमर वर्चस्विता बनल रहैत छल ।

Scanned by CamScanner

कहबाक प्रयोजन नहि जे एहन राजसी ठाठ-बाटमे, ओहि राजकीय परिवेशमे पालल जाइत एक किशोर मनकेँ अधिकसँ अधिक उच्छृंखल होयबामे कतेक विशेष योगदान भेटल होयतैक । विद्यालय परिसरमे राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघक शाखा लागब केँ कविराज विश्वनाथ झा अपन पराजय बुझलनि । बड़का भाइकेँ जाय सबटा बात कहि सुनौलथिन, ओ कोनो कान-बात नहि कयलथिन । भीतरे-भीतर एक शीतयुद्ध आरम्भ भऽ गेल । एकर प्रभाव छात्र समुदाय पर सेहो पड़लैक, किन्तु हमरा लोकनिक दल सदा बहुमतमे रहल । आइ अनुभव भऽ रहल अछि जे अपन जिद्दपर अड़ल रहबाक संघर्ष हमरा जीवनक आदिएसँ आरम्भ भऽ चुकल छल ।

दरभंगा राजमे इन्द्र पूजाक जेहने विशाल तेहने आकर्षक आयोजन होइक । दूर-दूर सँ व्यापारी लोकनि आबथि । रंग-विरंगक काँस-फूल-पित्तड़ि-तामक वर्तन बेचनिहारो सब जुटैत छलैक । नेना-भुटकाक लेल मनोहारी खेलौना । बेनीपट्टीक गुलाब जामुन, लोहाक चन्द्रकला, सरिसबक लड्डू, बंगालक रसगुल्ला, छैनाक सन्देश आदिक स्वतन्त्र दोकान आबि जाइक । काशीसँ पानक दोकान, मीना बाजार, सर्कस कम्पनी सब पहुँचय । एमहर इन्द्रभवनमे पन्नावाइ, शैलकुमारी आदि गणिका, दरबारी दास, मिसरिया आदि नटुआ, रामझा, शिवनन्दनमिश्र, बलरामझा, दुर्गानाथझा आदि कीर्त्तनाचार्य आदिक कोनो पौराणिक आख्यान पर संगीतक संग प्रवचन होइनि । सब बैसकक श्रोतावर्ग भिन्न-भिन्न होथिन । पूर्वाह्नमे बबुआन लोकनि, कन्हैयाजी (महाराजक भागिन) हुनक लगुआ-भगुआ, ओ मोसाहेब लोकनि, कहियो काल राजाबहादुर विश्वेश्वर सिंह सेहो आबथि । बेर खन नटुआक नाच, गबैया सभक गीत, कीर्तनाचार्यक प्रवचन, एहिमे विशेष रूपेँ विद्यालयक अध्यापक ओ छात्र, मन्दिर सभक पुजेगरी, फुलतोड़ा, अनुष्ठानी आदि जुटथि, रातिमे इन्द्रभवनमे सुनिऐक वाइजी सभक महफिल होइक आ बाहर उमाकान्तक नाटक मण्डली नाटक करैक । रातुक महफिल छोड़ि अन्यान्य सब आयोजनमे हम सब भाग ली । रातिमे नाटके देखी । एखनहुँ आकाशवाणीक प्रातः कालिक वन्दना कार्यक्रममे अनूप जलोटाक गाओल- 'मैया, मैं नहि माखन खायो' गीत सुनै छी तँ शिवनन्दनमिश्रक छबि ओ स्वर साकार भऽ उठैत अछि आ उपशास्त्रीय गायन होइत छैक तँ पन्ना बाइक भैरवी ठुमरीक स्वर मनमे अनुगुंजित होअय लगैत अछि ।

गबैया लोकनिमे माङनि खबास, रामचतुर मल्लिक, रग्घूझा, बालगोविन्दझा, जटाशंकरझा, बटुकजी आदिक गायन होइनि । इन्द्रभवनमे प्रवेश हेतु पागे प्रवेश पत्र रहैक । बिनु पाग पहिरने राजा बहादुर सेहो नहि जाथि । बाहर अपार भीड़ पर नियन्त्रण हेतु सड़क पर अनवरत दू टा, घोड़सवार घोड़ा दौड़बैत रहैत छलैक । बीच-बीचमे निरीक्षण करबाक हेतु फिटिन पर टन-टन घंटी बजबैत सरदार मालसिंह बहराथि तँ अग्निशामक यन्त्रकेँ सड़क पर अयला पर जेना बाट-बटोही सड़क छोड़ि कात पड़ाइत अछि तहिना बीच

Scanned by CamScanner

सड़कसँ कात पड़ाय । सरदार मालसिंहक रोआब जे देखने छथि सैह कहि सकैत छथि । हम सब पाग पहिरने निर्द्वन्द्व भावेँ बाहर भीतर जाइ आबी ।

महाराज इन्द्रक पूजा स्वयं करथि । कमलपत्री रंगक ठेहुन धरि साँची धोती, देह पर पीतम्बरी तौनी, दूनू कानमे चमकैत हीरा, आङुर सबमे रंग-विरंग रत्नजटित औंठी । बड़का भाइ पूजा करबथिन, कुलपुरोहित हाथमे अक्षत, चानन, फूल, माला आदि पूजन सामग्री देल करथिन । मथुराक एक पण्डा रहथि तोता राम, दीप मिझयबाक डरेँ जा धरि पूजा करथि ता धरि बिजली पंखा बन्द रहैक तेँ तारक पंखा लऽ डोलबैत रहथिन । आरती कालमे ढोल-ढाक, घड़ी-घंटा, झाँझ-सिंगा, ढोल-पिपही सब संग बाजय लगैक तँ आसमर्द होअय लगैक । महाराज दहिना हाथमे आरतीक थार, बामा हाथेँ घंटी डोलबैत त्रिपेक्षण करय लागथि तँ तोताराम पाछाँ-पाछाँ नचैत पंखा डोलबैत संग घुमैत रहैत छलथिन । धूपक दिव्य सुगन्धित धुआँसँ पूरा इन्द्रभवन भरि जाइक । ओहि अवसर पर सर्वसाधारणक प्रवेश नहि रहैक, किन्तु राजसँ सम्पृक्त रहलाक कारणेँ हमरा सभक प्रवेश रहय । एहन विशिष्ट अवसर पर अपनाकेँ सम्मिलित होइ तँ बूझि पड़य सर्वसाधारणसँ भिन्न हमहू पैघ लोक छी ।

नाटक देखबाक हेतु 'पास' बाँटल जाइक । पिताजीकेँ 20 टा पास अबैत रहनि । सातो अध्यापक आ एक किरानी बाबूकेँ दऽ शेष 12 टा हमरा दऽ देथि । हम अपन मुँहपुरूखी देखाबी । पास प्राप्त करबालै छात्र समुदाय हमर चारू कात चक्कर कटैत रहय ।

राज दरभंगामे जे कोनो धार्मिक अनुष्ठान, पावनि-तिहार, देवपितृ कर्म आदि होइक से पैलेस आफिसरक माध्यमसँ । पैलेस आफिसर रहथि मुरलिया चकक पं. धनेश्वरझा, सुनैत छी जे हनुको कोनो एकेडमीक विशेष शिक्षा नहि रहनि, किन्तु दुर्गानन्देझा जकाँ लौकिक व्यवहार ओ राज-काज चलयबामे पूर्ण पटु रहथि । ओ कर्मकाण्ड विषयक कोनो शास्त्रीय परामर्शक हेतु हमरे पिताजीसँ भेट करय विद्यालय अबथिन । ओ हाथ रिक्शापर चलथि । लोकक मुँहेँ सुनल अछि जे एकबेर कोनो टमटमक घोड़ा बगदि गेलैक, टमटमकेँ लऽ पड़यलैक, हिनक प्राण अवग्रहमे पड़ि गेलनि, सौभाग्य वश खसबासँ बाँचि गेलाह । तहियासँ टमटम पर चढ़बासँ शपथ खा लेलनि आ हाथ रिक्शासँ चलय लगलाह, तेँ लोक विशेषतः राज कर्मचारी लोकनि हिनका 'नरवाहन' कहथिन । एहन रिक्शा नेना वयसमे हिनके देखने रहियनि, प्रौढ़ भेलापर कलकत्ता गेला पर देखबामे आयल । हिनक बालक हमर सुफल भाइ छलाह, ओ हमरासँ जेठ बौआ भाइक संगी रहथिन, तेँ ईहो हमरा बड़ मानथि । दूनू बापुतक हेम-क्षेम हमर परिवारसँ छलनि, परस्पर दूनू परिवारमे नोंत-पिहान चलैत रहय ।

इन्द्रपूजाक अवसर पर कोनो अध्यापक नहि रहथि, जनिका ओहि ठाम पाहुन

Scanned by CamScanner

नहि अबथिन । हुनको लोकनिकें नाटकक 'पास'क प्रयोजन पड़नि तँ हमर पुछारि करथि । हम जोगाड़ी लोक, सुफल भाइक माध्यमसँ तकर व्यवस्था कऽ दियनि, तें अन्यान्य अध्यापककें हमर विरुद्ध कोनो शिकाइत नहि रहनि । हमरा सभक स्वैच्छिक गतिविधिमे कोनो अड़चन नहि आबय । भनें छात्र संघक विघटन भऽ गेल रहय, किन्तु साहित्यिक गतिविधिक संग सन्ध्याकालीन शिव पंचाक्षरक सामूहिक गान चलैत रहल । समस्तीपुरक पोद्दार रामावतार 'अरुण' जनिका केन्द्रीय मन्त्री सत्यनारायणसिंहक अनुकम्पासँ पछाति पद्मश्री उपाधि सेहो भेटल छलनि तनिक पहिल कविता संग्रह 'अरुणिमा' नामसँ प्रकाशित भेल रहनि, तकर भूमिकामे अपना समयक प्रख्यात हिन्दीक कवि कलक्टर सिंह 'केसरी' लिखने रहथिन- इस कविता संग्रह का कवि अभी-अभी पन्द्रहवाँ वसन्त पार कर सका है'' । एन्.आर.सी. क लसेढ़मे हमहू किछु-किछु पद जोड़य लागल रही । फूसि किएक कहू, से मैथिलीमे नहि, बबजिया हिन्दीमे । मैथिलीक हलचल सँ ओतेक परिचय नहि रहय । हँऽ राजपण्डित जीक सम्पादन मे राज प्रेससँ कवीश्वर चन्दा झाक चन्द्रपद्यावली प्रकाशित भेल रहनि, ओहिमे शिवविषयक भक्ति परक पर्याप्त गीत छनि । पिताजीक पूजा-पाठमय वातावरणमे पालित होइत रहलाक कारणें स्वत: पूजा-पाठक प्रति आस्था छल वा अछिओ, किन्तु अनुपनीत रहलाक कारणें मात्र पार्थिव शिवलिंगक ओंकार रहित मन्त्रसँ पूजाक अधिकार छल से पिताजीक संग प्रदोष कालमे बड़े उत्साह ओ विन्याससँ करैत छलहुँ । पिताजी नित्य प्रदोष पूजा करथि । 1907मे जखन दरभंगा आयल रहथि ता कवीश्वर दरभंगामे रहथि, हुनक आवास दिवानी तकियामे रहनि आ मीमांसक शिरोमणि म.म. चित्रधरमिश्रक आवास सेहो ओही ठाम, हुनके अनुशंसा पर पिताजीकें एहि विद्यालयमे स्थान भेटल रहनि । चूनाभट्टीमे डेरा रहनि, रेलवे लाइन पार कऽ दिवानी तकिया बाटें विद्यालय लग पड़नि, जाइत-अबैत कवीश्वरक चरण स्पर्श करबाक अवसर भेटि जाइनि । ओना पिताजीकें गीत-नाद आदिमे कोनो विशेष रूचि नहि देखियनि, किन्तु चन्दाझाक प्रति श्रद्धा भावक कारणें हुनक रचित गीत प्रदोष पूजाक काल हमरा गाबि कऽ सुनाबय कहथि । गीतक भनितामे जेना- 'भनकवि चन्द्र हमर करनी गुनि क्यौ नहि देत शरण अनतय' शिव जाउ कतय ? अथवा 'सुयश चन्द्र बापक देबि ! राखह, वन तजि जाह बसतिया, हे गौरी सुनहु हमर हित बतिया' आदि गाबी तँ मनमे होअय जे हमहू जँ गीत बनाबी तँ हमरो नाम भनितामे चुट दऽ बैसि जायत । ई उत्सुकता आ केसरीजीक भूमिका ततेक प्रेरित कयलक जे सात टा गीतक एकटा बुकलेट चन्द्रनाथ पदावली' नामसँ 1940मे छपाय लेलहुँ कारण हमरो पन्द्रहम वर्ष छल ।

एकर बाद मैथिलीमे चशमाक आत्मकथा' लिखलहुँ, ई कविता हमरा हास्य-व्यंग्यकारक रूपमे अग्रसर करत तकर कोनो आभास नहि छल आ ने से सब बुझबाक कोनो अवगति छल, किन्तु कवि मंच पर एकरा खूब लोकप्रियता भेटलैक । एक दिन मिथिला- मिहिरक सम्पादक सुरेन्द्रझा 'सुमन' क ओतय गेलहुँ आ मिथिला मिहिरमे

छापि देबाक अनुरोध कयलियनि । ओहो 1941क नवंबरक अंकमे एक कात एक कोनमे छापि देलनि । एही बीच पूर्व छात्र संघक अध्यक्ष गोकुलानन्द चौधरीक अनुज मथुरानन्द चौधरी 'माथुर' व्याकरण मध्यमा पासकऽ साहित्य शास्त्रीक छात्रक रूपमे एहि विद्यालयमे नाम लिखौने रहथि आ 'कृषक' नामक खण्डकाव्य लिखि रहल छलाह, हुनकासँ दोस्ती भऽ गेल, एक दोसरकेँ दोस्त कहय लगलियनि । ई कम्यूनिष्ट विचारधाराक लोक रहथि, हम राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघक शाखा मे जाइ । यद्यपि ताहि समय राजनीतिक विचारधाराक कोनो ने ज्ञान छल ने अवधारणा, तथापि दोस्त हमरासँ पाँच बर्ष जेठ रहथि, हुनकामे किछु प्रौढ़ता आबि गेल रहनि, ओ मनहिमन हमरा अपन प्रतिस्पर्द्धी बूझथि । हमर कविता पत्रिकामे छपल ताहि हेतु हुनका आनन्दक अपेक्षा ईर्ष्या सैह भेलनि । संघ शाखाक सेहो विरोधे करथि ।

एमहर बड़का भाइ मिथिला-मिहिर आद्यन्त पढ़थि । राजपण्डितक अतिरिक्त राज पुस्तकालयक अंग्रेजी विभागक अध्यक्ष आचार्य रमानाथ झा आ संस्कृत विभाग अध्यक्ष बड़का भाइ रहथि, ई सब पढ़बाक हुनका समय भेटनि । हमर चश्माक आत्मकथा पढ़लनि तँ बजाय पुछलथिन- ई चन्द्रनाथमिश्र के थिकाह ? सुमनजी कहलथिन बूढ़ा गुरूजीक बालक । बड़का भाइ ताहि पर हुनका मना करैत कहलथिन- हिनका एहि सबलै प्रोत्साहित नहि करबाक थीक, ई ओहिना पढ़ब-लिखब छोड़ि उच्छृंखल भेल जाइत छथि, एहि रजनी-सजनीमे लागि-जयताह तँ आरो चौपट्ट भऽ जयताह । अपने उच्छृंखल छथिहे, छात्र संघ बनाय छात्रो सबकेँ उचछृंखल बनौने जाय रहल छथि ।

हम मैथिलीमे कविता छपलासँ उत्साहित भऽ 'बालकों से' शीर्षक हिन्दी कविता लऽ सुमनजीक ओतय गेलहुँ, कविता लऽ लेलनि, किछ कहलनि नहि । हम अगिला अंकक प्रतीक्षा करय लगलहुँ, चारिटा अंक प्रकाशित भऽ गेलैक, 'बालकों से' नहि छपल । जा कऽ स्मरण करौलियनि, अगिला अंक कहि टारि देलनि । अगिलो अंकमे नहि छपल तँ बड़ क्षोभ भेल । पुस्तक भण्डार, लहेरियासराय सँ 'बालक' नामक मासिक छपैत छलैक, ओकर सम्पादन विभागमे छलाह रघुवंश महाकाव्यक मैथिलीमे अनुवाद कयनिहार अच्युतानन्द दत्त, ध्यातव्य जे हिनके अनुज रहथिन परमानन्द परमार्थी ई दूनू भाय दत्तबन्धु नामेँ हिन्दी ओ मैथिली दूनू साहित्य-संसारमे बहुचर्चित रहथि । एही दत्त बन्धु नामसँ प्रभावित भऽ बाबू भुवनेश्वर सिंहक परिवारक बाबू जलेश्वर सिंह बाबू भीमेश्वर सिंह दूनू भाय सिंहबन्धु नामसँ लिखय लागल रहथि । दत्तजीकेँ कविता देलियनि, दू बेर ओ ओकरा पढ़लनि, हमरा नीचाँ सँ ऊपर धरि ठिकियाकऽ देखलनि आ पुछलनि अपने लिखल थीक ने ? कतहुसँ उतारल नहि ने थीक ?

हम पूर्ण आश्वस्त कयलियनि । कहलनि अगिला अंकमे छपत, छपि गेलापर डाकसँ अंक पठा देल जायत । हुनकर आश्वासन भेटल, एम्हर हम सुमनजीसँ क्षुब्ध

Scanned by CamScanner

रहलाक कारणेँ सम्पादक शीर्षक कविता लिखलहुँ-

हम सम्पादक, हम सम्पादक,
चुट्टासँ पकड़ि पकड़ि लाबी,
हम यत्र-तत्र जे किछु पाबी
फल्लाँक उदय, फल्लाँक मरण
नित ढेर लगाबी संवादक ।

दत्तजी जहिना कहने रहथि तहिना अगिला अंकमे कोनो विद्वानक पैघ निबन्ध छपल रहनि ओही बीच कोष्ठमे कविता छपल रहय । अंक डाकसँ भेटल । देखिकऽ जे आनन्द भेटल आ उत्साह बढ़ल से तँ अनिर्वचनीय छले, संगहि अहंकार सेहो बढ़ि गेल जे आब हम कवि भऽ गेलहुँ । अंक पाबि, गर्वोन्नत भेल, दसे डेग पर सुमन जीक डेरा छलनि, अंक लऽ दौड़ल चल गेलहुँ आ देखबैत कहलियनि- देखल जाओ, जाहि कविताकेँ अपने गोड़िकऽ राखि लेलहुँ से एहिमे छपल अछि । ओ कोनो प्रूफ देखि रहल छलाह, उनटा कऽ देखि लेलनि आ कहलनि - एखन रहऽ दिअऽ, हम चैनसँ पढ़ि कऽ काल्हि दऽ आयब । यद्यपि हम अपन मित्रमण्डलीकेँ जल्दी देखाबय चाहैत छलियनि, उत्साहसँ मन उधिआइत छल, विशेषतः दोस्त अर्थात् माथुरजीकेँ, परन्तु मन मसोसिकऽ अंक छोड़ि देलियनि । ओ साँझमे अंक लऽ बड़का भाइकेँ देखबैत कहलथिन- हिनकामे कवित्वक बीज छनि जे आब अंकुरित भऽ चुकल छनि, एकरा नहि रोकल जाय । पता नहि बड़का भाइ की कहलथिन, मुदा तकर बाद यदा-कदा हमर कविता मिथिला मिहिरमे छपय लागल ।

एक आवश्यक विषयक उल्लेख सेहो कऽ दीजे हम अपन जीवनमे विद्या टा अर्जन नहि कऽ सकलहुँ, शेष बहुत किछु अर्जन कयल । पद नहिओ रहैत अपेक्षया ख्याति ओ प्रतिष्ठा हमरा समाज सँ अधिके भेटल । साधारण विषयक साधारण शिक्षक रहितो, अल्प आयक अछैतो नगरमे भूमि-भवन वनयबामे कृतकार्य भेलहुँ तकर अधिकांश श्रेय एहि साहित्य-साधनेकेँ छैक, दोसर 'क्षणशः कणश्चैव विद्यामर्थं च चिन्तयेत्' तथा सन्तोषामृत तृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्, कुतस्तद्धन लुब्धानामितश्चेतश्च धावताम् अथवा सन्तोष एवं पुरुषस्य परं निधानम्' एहि नीति वचनकेँ अपन-जीवन दर्शनक अंग बनौने रहलहुँ, हिन्दीओमे कहल छैक- जो आबे सन्तोषधन, सब धन धूरि समान । त्रुटि ई भेल जे क्षण सेहो अर्थ चिन्तनेमे लागि गेल । पहिनहि कहि चुकल छी जे विद्या टा नहि अर्जित कऽ सकलहुँ ।

1938 क अगस्त जहिया हमर अनुज जीवनाथक निधन भऽ गेलनि तहिया सँ 1947 क अगस्त धरिक 9 वर्षक अवधिमे हमरा जीवनमे अन्हड़-बिहाड़ि अबिते रहल । पाँच भाइक भैयारीमे आब मात्र बाँचल रहलहुँ सबसँ जेठ आ माझिल हम । जेठ भाय

Scanned by CamScanner

त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः अर्थात् भोर दुपहर साँझ तीनू बेर भाङक सेवन करैत छलाह, ताहि परसँ पत्नी सहित सद्यः जात सन्तानक मृत्युसँ अर्द्ध विक्षिप्त भऽ गेल छलाह, दोसर विवाह भेलाक बाद प्रथम पुत्र रमानाथक, जे रमानाथमिश्र 'मिहिर' नामेँ मैथिली साहित्य संसारमे अपन स्थान बनौने रहथि, 1939 मे जन्म भेलाक बादो तत्परता पूर्वक घर-गृहस्थीक देखभाल करबाक दिस रुचिपूर्वक प्रवृत्त नहि रहथि ।

छलीह तँ माय, परन्तु पुरुषार्थी रहथि । जोड़ा बड़द, दू टा लगहरि महीस खुट्टा पर, एकटा पोसिया, एक टा घोड़ी से छलनि, दू टा चरवाह, एकटा हरवाही करैत कमतीया रहैत छलनि । अति कठोर परिश्रमसँ खढ़-खढ़केँ जोड़ैत तेहन गृहस्थी ठाढ़ कयने छलीह जे धनिक कहौनिहारोक घरमे जे अन्न नहि रहनि से हमरा घरमे जोगाओल रहैत छल । जओ-गहूम, राहड़ि-बदाम, खेड़ही-उरीद, कुर्थी-काउन, सरिसो-रैंची सब किछुक थोड़ बहुत उपजा अपने खेतमे करबैत छलीह । जाहि गाममे भूमि कीनि कऽ हमर पिता घड़ारी बनौने रहथि, ताहि गाममे आठ-दस बीघा जोतसीम जमीन भऽ गेल छलनि । एकादशी-चतुर्दशी, पूर्णिमा-संक्रान्ति, भदवा-दिक्शूल-अधपहरा आदि पंचांगक सामान्य ज्ञान रहनि, तेँ पण्डिताइन कहाबथि । ईहो जनाय दीजे हमरा परिवारमे ताहू समय एको गोटे निरक्षर नहि रहथि । हमर बहिन लोकनिकेँ कोनो स्कूली शिक्षा तऽ नहि रहनि, ओहि युगमे स्त्रीवर्गक हेतु स्कूली शिक्षा रहबो ने करैक, मुदा साक्षरतो सब घरमे नहि छलैक । हमर माय मंगलवारी व्रत करथि, ताहि दिन बेर खन व्यासगादी जकाँ लगाय टोलक दाइ-माइक बीच मनबोधक कृष्ण जन्म, लल्लू लालक प्रेम सागर, महाकवि लाल दासक स्त्री धर्म शिक्षा आदि व्याख्या पूर्वक पारायण ओ प्रवचन करथि । महावीरजीकेँ 'रोट' चढ़ैत छनि, अनन्त पूजा जकाँ अनेक आङनक काकी-पीसी-बहिन लोकनि अपन-अपन आङनसँ धूमन आ रोट आनथि, हनुमान चालीसाक सामूहिक पाठ करैत जाथि, ओतेक काल धूमनक धूपसँ सम्पूर्ण वातावरण गमगम करैत रहैक । स्त्रीशिक्षाक प्रति हमर पिताजीक दृष्टिकोण बड़ उदार रहनि । सामान्यतः संस्कृत विद्वान लोकनि स्त्रीशिक्षाक घोर विरोधी रहथि उदाहरणार्थ 1909मे जखन 'मिथिला-मिहिर' मासिक पत्रिका प्रकाशित होअय लगलैक तँ प्रथमे अंकमे म.म. मुकुन्द झा बख्शीक स्त्रीशिक्षा पर विरोधमे छपल लेख देखल जाय सकैछ । किन्तु हमर विवाहक जखन चर्चा चलल तँ हमर पिताजी सर्वप्रथम कन्याक साक्षरतेक प्रसंग जिज्ञासा कयलथिन । हमर श्वसुर यदुवंश झा आश्वस्त कयलथिन जे कन्या अपर पास अछि । ओ ताहि दिनक कट्टर कांग्रेसी रहथि, राजनीतिमे फूसि कहि देब कोनो अपराध नहि मानल जाइत छैक । परन्तु हमर पत्नीकेँ अ, प, र, एहि तीनू अक्षरहुक जँ बोध रहितनि तँ सन्तोष होइत, हिनका द्विरागमनक बाद हमर माय साक्षर बनौलथिन ।

मनमे प्रश्न उठि सकैत अछि जे हम किएक ने से काज कयलहुँ ? ताहि समय लज्जाक तेहन आवरण रहैक जे लोक श्रेष्ठ जनक समक्ष अपन कमसँकम प्रथम सन्तानकेँ

Scanned by CamScanner

कोरामे नहि लैत छल, एहन कयनिहारकेँ कलियुगाह कहि खिधांस कयल जाइक । कन्याकेँ स्कूली शिक्षा वर्जित छलैक, किन्तु शिक्षित परिवारमे अधिकतर साक्षर बनयबाक प्रचलन छलैक, संगहि गृहस्थ जीवनकेँ सुचारू रूपेँ चलयबाक हेतु हस्तशिल्प, गृहविज्ञान आदिक प्रायोगिक शिक्षा माय-पितियाइनिसँ भेटि जाइक, कनियाँ-पुतरा खेलक माध्यमसँ व्यावहारिक ज्ञान देल जाइक । ई विशेषत: ब्राह्मण परिवारक प्रसंग मानल जाय सकैछ । आइ ई स्थिति अछि जे शुद्ध यज्ञोपवीत बनौनिहारि महिला अप्राप्य छथि, जे जनउ आइ पहिरैत छी, तेसरे दिनसँ ओकर सूतसँ रोइयाँ उघड़य लगैत छैक । 5-6 सय वर्षसँ महाकवि विद्यापतिक गीत अथवा अन्यान्य व्यवहार गीत महिले लोकनिक कण्ठमे सुरक्षित छल से महिलाक कण्ठसँ बिलाय गेल, पोथीमे छापि कऽ पौतीमे दस-बीस वर्ष सड़ैत ओतहुसँ नष्ट भऽ जाय तँ आश्चर्य नहि ।

कतयसँ कतय चल गेलहुँ । कहि रहल छलहुँ परिवारक प्रसंग । हमर दोसर भाउजि जे अयलीह से कनेक कड़ा मिजाजक, ताहि परसँ दोसर पत्नी लोक कहैत छैक ओहुना-बेसी दुलारू होइत छैक । हमर बच्चा भाइ बामा पैरसँ कनेक कज्जी छलाहे ताहिपर द्वितीय वर भऽ गेल रहथि, तेँ टाका गनिकऽ विवाह भेल छलनि । ससुर रहथिन भलमानुस, दरिद्र छिम्मड़ि, सिद्धान्त ई रहनि जे जँ बेसाहे खायब तँ तुसलीफूल चाउर किएक नहि । ओ महानुभाव मास-दू मास पर आबि जाथि । जखन अयलाह अछि तँ दस दिन कोना ने रहताह ? गाम पर ने खेत-पथार, ने माल-जाल तखन जयबाक हड़बड़ीए कथीक ? जमाय तीनबेर भाङ पिबिते रहथिन, पाहुनकेँ सादा कोना देल जयतनि तेँ दूध तँ घरेमे, रहल चीनी, सेहो चारिए अने सेर, दूनू साँझ भाङ पीबथि, नीक-निकुत खाथि आ जमायक संग शतरंज खेलाथि । कहथि प्रो. जयदेव मिश्र- पाहुन आ माँछ बस तीन साँझ, पहिल साँझ छनर-मनर, दोसर साँझ बड़ बेस, तेसर साँझ इछाइन-बिसाइन तकर बाद गन्हाइन । मुदा से के बूझय ?

हमरा मायकेँ एक तँ 'वजट' फेल भऽ जाइनि, दोसर दलान पर समधि, तेँ बहरायब बाधित । फलत: हरवाह-चरवाह, जन-बड़जना सबकेँ देखब-अढ़ायब कठिन भऽ जाइनि । व्यवस्थामे हमर भाउजि हस्तक्षेप करय लगलथिन जे हमरा मायकेँ सहाज नहि । तकर परिणाम ई भेल जे उपजा-बाड़ी घटय लागल, घर-गृहस्थी लड़खड़ाय लागल, पारिवारिक अन्त: कलहक सूत्रपात भऽ गेल ।

ताही स्थितिमे जीवनाथक मृत्यु, पिताजी पहिनहिसँ उदासीन छलाह आरो विरक्त भऽ गेलाह संगहि मायकेँ सेहो मोह भंग भऽ गेलनि । मायक पेटपर दहिना भाग लाल रंगक अइला जकाँ मांसबृद्धि जकाँ छलनि जे क्रमश: बढ़ल जाइत छलनि । ककरो कहला पर चूनमे किछु आन वस्तु मिलाकऽ ओहिपर लेप लगौलथिन । आब ओ आमक आँठीक आकार सन भऽ गेलनि, टीस मारय लगलनि, पिजुआ गेलनि, ओकरा देखयबा लै दरभंगा

Scanned by CamScanner

अयलीह । राज अस्पतालमे भर्ती कयल गेलनि, ऑपरेशन भेलनि, सात दिन पर टाँका कटलनि । एही अस्पतालमे जीवूक मृत्यु भेल छलनि तेँ हमरा एकसर मन खिन्न भऽ जाय तेँ माधोपुरक एक मित्र रहथि देवनारायण जी जे पछाति सैन्य सर्विसमे पुजेगरीक पद पर नियुक्त भेलाह । सेवा निवृत्तिक बाद अधिक काल आबथि । ओहि समय ओ बड़ सहयोग कयने रहथि, आइओ हुनक ओ स्वरूप स्मृति पटल पर बनल अछि।

माय स्वस्थ भऽ गेलीह, परन्तु खोजपुरक पारिवारिक विषम वातावरणमे घूरि कऽ जयबाक लेल प्रस्तुत नहि भेलीह । खोजपुरक स्थिति दिनानुदिन बिगड़िते गेल । एकरे समाधान लेल हमर विवाह एक-बद्धू गाम बेलामे कराय देल गेल । हमर श्वसुरक जेठ भाय बच्चाझा हमरा पिताक छात्र रहथिन, यद्यपि ओ जीवित नहि छलाह तथापि हुनक अनुज थिकथिन, तेँ विश्वास कऽ लेलथिन । ओ कहने रहथिन जे लड़खड़ाइत खेती-बाड़ी केँ सम्हारि देब, किछु कर्ज-वर्ज छलनि से सधाय देब । 1941 मे मध्यमा पास कयने रही, ओही वर्ष विवाहो भेल ताहि क्रममे माय गाम गेलीह । किन्तु ओहि वर्ष द्विरागमन नहि भेल । पिताजीकेँ जे आश्वासन हमर श्वसुर देने छलथिन तकर पूर्ति ओहिना कयलथिन जेना चुनावक समयमे देल गेल आश्वासनक पूर्ति नेता लोकनि करैत छथिन । ओ एतबा कयलनि जे एक-दू बेर आबि बच्चा भाइक संग कहा-सुनी कयलनि आ हमरा दुनू भायमे भिन्न भिनाउज भऽ गेल ।

सम्पत्ति तत्काल तीन भागमे विभाजित भेल । तेसर भाग पिता-माताक जीवनकाल धरि रहतनि, पश्चात समान भागमे बाँटल जायत । किन्तु खेती-बाड़ी करबाक हेतु तत्काल हमरे देल गेल । जीवनमे मात्र एक वर्ष खेती कयलहुँ, ताहि सँ पूर्व खुरपी-कोदारि नहि छूने छलहुँ, से ओहिवर्ष रोपनीक समय खेतक आरिक कोन-कान स्वयं कोदारिसँ बनौलहुँ । समय सेहो संग देलक, उपजा पूर्ण सन्तोषजनक भेल । एक बीघाक एक खेत मे दुइए टुकरी भेल छल, हमरा 10 कट्ठामे 14 मन धान भेल, बच्चाभाइकेँ 8 मन मात्र भेलनि । कहय लगलाह जे अहाँ उसराहा भाग हमरा हिस्सामे दऽ देलहुँ जखन कि खेतक माँटि एक रंग छलैक । ओ बँटबारा काल जे भाग लेथि से हुनका देल गेल रहनि, हमरा तँ खेती-पथारीसँ कोनो सम्पर्क ताहिसँ पूर्व नहि छल । कोन खेत कतय अछि, कतेक अछि तकर कोनो परिज्ञान नहि छल । हमरा बेसी उपजा परिश्रमक बलेँ भेल छल । एही बात पर दूनू भायमे किछु रऽ-झऽ भऽ गेल ताहि पर बच्चा भाइ बड्ड मारि मारलनि । माय गाम आबि गेल छलीह । से हमर द्विरागमन भेलाक बाद छोटकी पुतोहुक संग फेर दरभंगा आबि गेलीह ।

हम 1944 मे आचार्य प्रथम खण्डक परीक्षा पासकऽ 1945क आचार्य द्वितीय खण्डक फॉर्म भरि चुकल छलहुँ । एकटा ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण बातक उल्लेख कऽ दी जे 1907 मे रमेश्वर लता संस्कृत महाविद्यालयक स्थापनासँ पूर्व मिथिलामे सरस्वती

Scanned by CamScanner

पूजाक प्रचलन नहि छलैक। ई पूजा-जयपुर आ बड़ौदा महाराजक ओतय होइत छलनि। 1908 सँ सर्वप्रथम एही महाविद्यालयमे आरम्भ भेलैक एहि पूजाकेँ राजकीय पूजा मानल जाइक। बड़ी राजमाताकेँ सन्तति नहि छलनि, हुनके सन्तोषार्थ हुनक नाम रमेश्वरलता जोड़ल छलनि। बड़ीराज माता एकरा अपन सन्तान जकाँ मानैत छलथिन, तेँ सरस्वती पूजाक दिन राज परिवारक सब सदस्य निश्चित रूपेँ अबैत छलथिन। मिथिलेश दरभंगामे रहैत छलाह तँ अयबे करैत छलाह।

1944क सरस्वती पूजा दिन अयलाह तँ अकस्मात पिताजीसँ पूछि बैसलथिन- अपने एहि विद्यालयमे कहियासँ छिऐक? पिताजी उत्तरमे कहलथिन 1907 क आषाढ़ शुक्ल द्वितीयाक दिन विद्यालयक स्थापना भेलैक, हम ओही दिनसँ छी आ श्रीमानक जन्म ओही वर्ष अग्रहण कृष्ण भैरवाष्टमी दिन भेल। महाराज आश्चर्यित सन होइत कहलथिन- हमर जन्मोसँ पहिने सँ? पिताजी कहलथिन जी श्रीमान।

एहिसँ 5 वर्ष पूर्व पिताजीक संग एक घटना भेल छलनि, तकरो उल्लेखकऽ दी, कारण भविष्यमे घटित घटनापर ओहू घटनाक प्रभाव पड़ल होइक से सम्भव।

कृतज्ञताकेँ विद्यासँ साक्षात् सम्बन्ध नहि छैक, कृतज्ञता विवेक पर आधृत रहैत छैक। अतः विवेक रहित विद्वान सेहो कृतघ्न होइत छथि, तकर एक ज्वलन्त उदाहरण थीक निम्नांकित घटना। नाम नहि लेब। पिताजीक एकटा एक-निष्ठ छात्र रहथिन। ओ स्वयं एक दिन कहने रहथि अपन एक-निष्ठताक प्रसंग। एहि विद्यालयमे म.म. चित्रधर मिश्रक बाद मीमांसा शास्त्रक अध्यापक रहथि ठाढ़ी निवासी मीमांसक शिरोमणि प. रविनाथझा। हुनका धर्म समाज संस्कृत महाविद्यालय, मुजफ्फर पुरमे नियुक्तिपत्र भेटि गेलनि, ओ सरकारी संस्था रहैक। हुनका चल गेला पर मीमांसा अध्यापकक स्थान रिक्त भऽ गेलैक। दोसर मीमांसक छलाह नहि। हमर पिताजी प्रधानाचार्य छलाह, उक्त एकनिष्ठ छात्र एही विद्यालय मे अध्यापक रहथिन। ओ स्वयं कहलनि- गुरूजी हमरा कहलनि-अहाँ मीमांसामे आचार्य कऽ लिअऽ। उत्तीर्ण भेलापर एकरो प्रभार अहींकेँ दऽ देब आ ताहि हेतु अतिरिक्त मानदेय सेहो भेटि जाय तकरो चेष्टा कऽ देब। हम कहलियनि गुरूजी, हमरा पढ़ायके देताह ? हम तँ अपनेक अतिरिक्त कोनो आन पण्डितक समक्ष पोथी फोललहुँ नहि। गुरूजीक ततेक कृपा हमरा पर छलनि जे ओ स्वयं स्वाध्याय कऽ हमरा मीमांसा सेहो पढ़ाय देलनि आ उत्तीर्ण भेलापर उक्त शास्त्रक प्रभार हमरा देल गेल तदर्थ वेतनमे 10/-टाका बृद्धि कऽ 20/सँ30/टाका कऽ देल गेल।

एहन एकनिष्ठ छात्रक मनमे प्रिंसिपलक पद पयबाक महत्त्वाकांक्षा जागि गेलनि। तकर पूर्ति हेतु ओ एकटा सत्कार्य कयलनि। पिताजीक बाद विद्यालयमे वैह वरिष्ठ छलाह। पिताजी अधिक काल बाहर जाथि तँ हुनके प्रभारी बनबैत रहथिन। ओहिबेर पिताजी राज दरभंगाक प्रतिनिधित्व करबाक हेतु कूच बिहार बिदा भेलाह।

Scanned by CamScanner

जयपुरक महारानी, कूच बिहार महाराजक बहिन, भारतीय राजनीतिक क्षेत्रमे बहुचर्चित नाम, जनिक निधन विगत 3 जुलाइ 2009कें भेलनि अछि । ताही गायत्री देवीक विवाह भेल छलनि । जाहि दिन पिताजी कूचबिहारलै कूच करताह ताहीदिन बिदा होइत काल विद्यालयक बौका नामक चपरासी अंग्रेजीमे टाइप कयल एक पत्रपर हस्ताक्षर कराबय अयलनि । ध्यातव्य जे राज दरभंगाक 'आफिसियल' सब काज अंग्रेजीएमे चलैत छलैक । पिताजी विद्यालयक कोनो विशेष काज होयतैक से बुझि हस्ताक्षर कऽ देलथिन ।

पुनः एक क्षेपकक उल्लेख करब । पिताजी अंग्रेजी नहि जनैत रहथि । एक संस्मरण कहिओ सुनौने रहथि । जखन विद्यालयमे नियुक्त भेलाह आ चिट्ठी पत्री अंग्रेजीमे देखलथिन तँ अंग्रेजी सीखि लेबाक इच्छा भेलनि । किरानी रहथि हरिवंश झा (ब्रह्मोत्तरा) हमर पितामहक मातृक, हमर पिताक जन्मभूमि ओतहि, ताहि सम्बन्धें भातिज होइतथिन । वयसोमे 4-5 वर्ष छोट तथापि पिताजी हुनका अंग्रेजी सिखा देबऽ कहलथिन । छब्बीसो अक्षर सीखि लेलाक बाद जी+ओ=गो, एस्+ओ=सो तथा डी+ओ= डू, टी.+ओ= टू पढ़ौलथिन तँ पिताजी कहने रहथि- हम हरिशंकरकें पुछलियनि- जैह 'ओ' जी मे लगौलिऐक तँ गो भेलैक सैह 'ओ' डीमे लगौने डू कोना होयतैक? कहलनि अंग्रेजीमे एहिना होइत छैक । ताहिपर हम कहलियनि-एहन अव्यवस्थित भाषा हम नहि पढ़ब । हम तँ ओ भाषा पढ़ने छी जाहिमे एक अकारान्त पुलिंग शब्द रामः, रामौ, रामाः पढ़लहुँ तँ संसार भरिक अकारान्त पुल्लिंग संज्ञाक रूपावली तथा एक भू धातुक भवति, भवतः, भवन्ति पढ़ि गेलहुँ तँ पठति, चलति, गच्छति आदि अनेक धातुक रूपावली कण्ठमे आबि गेल । राखू अपन अंग्रेजी । यैह हरिशंकर झा पछाति मधुबनी कोर्टमे परम यशस्वी मुख्तार भेलाह । पुनः मूल पर आबी ।

पिताजी जाहि पत्रपर हस्ताक्षर कयने रहथिन से महाराजेक नामें सम्बोधित छलनि, तें सोझे महाराजक हाथमे पहुँचलनि । महाराज चिट्ठी पढ़ि छोटका भाइ अर्थात् पं. कमलाकान्त मिश्रकें बजबाय पुछलथिन ।- बूढ़ा गुरूजी सेवा निवृत्त होअय चाहैत छथि ? छोटका भाइ प्रतिप्रश्न कयलथिन- श्रीमानकें के कहलक अछि? ओ दरखास्त देखबैत कहलथिन । छोटका भाइ कहलथिन- अंग्रेजीमे टाइप कयल छैक । हमरा लगैत अछि गुरूजीसँ क्यौ वंचना कयलकनि अछि। से रहितनि तँ श्रीमानकें आबि कऽ कहितथि अथवा हाथसँ लिखि कऽ दितथि । अच्छा, हम भाइकें (राज पण्डितजी) कें पूछि कऽ कहब, हमरा लग कोनो चर्चा नहि कयलनि अछि । बड़का भाइकें पुछलथिन, बड़को भाइ अनभिज्ञता व्यक्त कयलथिन ।

राज दरभंगामे सेवानिवृत्तिक कोनो सीमा निर्धारित नहि छलैक । कर्मचारी जतेक पर नियुक्त भेल रहैत छलाह तकर आधा पेन्शन देबाक व्यवस्था रहैक । छोटका भाइ जखन बड़का भाइक मन्तव्यसँ अवगत करौलथिन तँ सुनल अछि जे महाराज गारि पढ़ैत

Scanned by CamScanner

पत्र मचोड़ि कऽ फेकि देलथिन आ पिताजीक नियुक्तिक समय भेटैत वेतनक जिज्ञासा कयलथिन । पिताजीक नियुक्ति 20/रु० पर भेल छलनि तकर आधा 10/रु० जोड़ि 40/रु० सँ 50/रु० कऽ देबाक आदेश हेड आफिस पठाय देलथिन । एक क्षेपक पुनः-

पिताजीकेँ कूच बिहारसँ घुरबामे 15-16 दिन लागि गेलनि, तकर हमही कारण भेलियनि । कहि चुकल छी जे पिताजी लोकनिकेँ जाहि रजबाड़ामे जाथि तकर अतिथिशालामे आवास देल जाइनि । अतिथिशालाक बनल भोजन पिताजी करथि नहि, तेँ प्रतिदिन उपाति लऽकऽ कोनो कर्मचारी दऽ जाइनि, हम भानस कऽ ली । उपाति लऽकऽ जे अयलाह से बेनीपट्टी दिसक कोनो गामक ब्राह्मण रहथि । ओ राजमाताक राजमहलमे एकटा कालीक मूर्ति रहनि, जनिकर पूजा राजमाता स्वयं करथि, से ई ब्राह्मण हुनके पूजाक व्यवस्था करबाक हेतु नियुक्त रहथि । हम पिताजीक पूजाक सब व्यवस्था कऽ हुनका पूजा पर बैसि गेलाक बाद अपनहु सन्ध्यावन्दनक क्रममे एक टाङपर ठाढ़ भऽ गायत्री जप करैत रही । फौदरबा खबास भानसक ओरियानमे छल । उपाति लऽ कऽ जे अयलाह से हमरा ओहि मुद्रामे देखि चकित-विस्मित 5 मिनट ठाढ़ रहलाह । एतयसँ गेलाक बाद प्रायः हमरा प्रसंगमे किछु राजमाताकेँ कहलथिन । दोसर दिन पुनः उपाति लऽकऽ अयलाह तँ हमरा कहलनि- अहाँकेँ राजमाताक ओतयसँ एखनहि बजाहटि अछि । हमरा तकर तात्पर्य किछु नहि लागल । कहलियनि- हमर पिताजी अनकर कयल भानसक अन्न नहिं खाइत छथि । ओहि दिन हम स्नान कऽ अयले रही, तेँ स्पष्ट करय पड़ल जे सन्ध्या वन्दनक बाद हम भानस करय चल जायब । बेरखन अहाँ आबि कऽ संग लऽ जाय सकैत छी । ओ 4 बजे आबि कऽ हमरा संग लऽ गेलाह । राजमाताकेँ पाँच कि छओ टा बेटी छलथिन जाहिमे एक मात्र गायत्री देवीक विवाह द्विरागमन भेल छलनि शेष सब बेटीक संग बैसलि रहथि । राजमाता हमरा परिचय पात पूछय लगलीह । हुनक बंगला भाषा हमरा बुझयमे नहि आबय । ओ ब्राह्मण दुभाषियाक काज कयलनि । पहिने तँ ओ हमरोसँ हिन्दीएमे गप्प कयने रहथि, ओहि ठाम जा कऽ बुझलियनि जे ईहो मैथिल थिकाह । बेटी सब राज माताकेँ दुलारेँ छिड़िआइत सन मुद्रामे किछु कहलकनि । ओ हमरा एक टाङ पर ठाढ़ भऽ जप कऽ ओकरा सबकेँ देखाय देबऽ कहलनि । हम कने ढीठ सन होइत कहलियनि- गायत्री जप कोनो तमाशा नहि थिकैक, उपासना थिकैक । एहि हेतु उचित समय, उपयुक्त स्थान ओ आसन चाही । ई बिनु अन्नग्रहण कयने कयल जाइत छैक । आब लगैत अछि जे ओमहर गायत्री देवी राजमाताक बेटी अथवा बेटी लोकनिक बहिन छलथिन, एमहर हम गायत्री जप कहलियनि प्रायः से आकर्षणक बिन्दु छलनि । राजमाता मुस्कुराइत ताकि कऽ ओहि ब्राह्मणसँ बंगलाभाषामे किछु-किछु कहलथिन तावत एकटा चानीक सराइमे बंगालक प्रसिद्ध मधुर 'सनेस' आ चानीएक गिलासमे जल आनि कऽ देलक एकटा राजकुमारी बाजलि- एइ सोटो पण्डित, एइटा आमार वाङला देशेर मिष्टी, अनेक भालो लाग्चे ।

Scanned by CamScanner

हम नेनामे बेसी लजकोटर रही । वस्तुत: तीन वर्ष पूरा होइते छात्रमय वातावरण मे लऽ आनल गेल, माय-बहिन केर कोर छूटि गेल, स्त्रीगण समाजसँ सब दिन दूरे रहि गेलहुँ, तेँ कनेक आरो लाज होअय । राजमाता आग्रह करैत कहलनि- की भाव चेन, खाओ । हम तोड़ि कऽ खाय लगलहुँ । यद्यपि 'सनेस' हमरा गराँ लागय, एखनहुँ लगैत अछि, किन्तु ओहिमे केशरि तेहन छलैक जे ओकर सुगन्ध अपूर्व बुझायल । ओही बीचमे राजकुमारी सब बेराबेरी कहय लागल-

एक गोटे कहलक- एइ सोटो पण्डित, उपासना काले केनो शिघीर-शिघीर जल खाच्चो ? दोसर कहलक- उपासना काले एक पदे केनो दाँड़ाए थाक्चो? तेसर कहलक- एह सोटो पण्डित, तोमार देशेर कउआ शाला बड़ो चालाक, चुप करी थाके, खोखीर हाथ ते जेई किच्छु पाबे सेई टा नियै पलाय जाय, आमार देशेर काक शाला बोका, चुप कोरी थाके, एक खाने ओइ खाने जेई टा पाबे से ई टा नियै पाबे, हाथ ते किच्छू नियेना । हम सब मधुर खाय दू घोंट पानि पीबि हाथ मुँह धोय लेलहुँ ।

ओ ब्राह्मण हमरा संग आबि पिताजीकेँ कहलथिन-राजकुमारी लोकनिकेँ ई विद्यार्थी जे एक टाङ पर ठाढ़ भऽ जप करैत छथि से देखबाक उत्कट लालसा छनि । हमहू मैथिल ब्राह्मण छी, राजमाताक सेवामे रहैत हुनक पूजाक ओरियान तथा ओ विधवा छथि तेँ हुनका लै फराक पाक होइत छनि से हमही करैत छियनि । ओ एक्के बेर भोजन करैत छथि । ई विद्यार्थी अपनेक पूजाक व्यवस्था कऽ राज राजमहलेमे जाय सन्ध्यावन्दन करताह । हम अपनेक पाक कऽ देब । तेँ राजमाता अपनेसँ निवेदन करय पठौलनि अछि । पिताजी हमर सहमति लऽ दोसर दिन जयबाक स्वीकृति दऽ देलथिन । तावत तीनदिन बीति चुकल छल । चारिम दिन हम गेलहुँ । राजमाताक ओहि काली माताक कक्षमे सन्ध्यावन्दनक व्यवस्था छल । जीवनमे पहिले पहिल हुनक स्नान गृहमे कृत्रिम झरनामे स्नान कयलहुँ । आसन पर बैसलहुँ । राजकुमारी सभक संग राजमाता दर्शक रूपमे बैसलीह । हम जेना सन्ध्यावन्दन करैत छी से आरम्भ कयल । आचमन, प्राणायाम, मार्जन सूर्योपस्थान जपसँ पूर्वक मुद्रा आदि ध्यान पूर्वक देखथि । ई सब ओहि राजकुमारी सभक हेतु तमाशा बनि गेलैक । गोटेक सप्ताहतँ राजमहल जाइत अबैत बीति गेल । पिताजी बिदा करबाक हेतु निवेदन करथिन, काल्हि फेर काल्हि होइत-होइत 14-15 दिन लागि गेलनि । चलबाक दिनमे राज सिरिस्ताक अनुसार सबकेँ बिदाइ देले गेलनि, हमरा ताहिसँ अतिरिक्त पाँचो टुक कपड़ाक संग एकटा गिन्नी भेटल । पिताजी अयलापर मायकेँ कहलथिन-अहाँक बतहू हमरोसँ बेसी बिदाइ लऽकऽ अयलाह अछि । हमर माय ओहि गिन्नीक ढेला बनबौलनि । 1957मे हुनक देहान्तक बाद रखले छल । 1959 मे एही डेरापर चोरि भेल ताहिमे अन्यान्य वस्तुक संग ओहो लऽ गेल ।

एहि बीच पिताजीक अनुपस्थितिएमे वेतन बृद्धिसँ सम्बद्ध समाचार पूर्णत: पसरि

Scanned by CamScanner

चर्चाक विषय बनि गेल छलैक । दरभंगा घुरला पर हितचिन्तक लोकनि प्रतिशोध लेबा लेल पिताजीकेँ रंग-विरंगक परामर्श देबय लगलथिन । पिताजी एहन सत्कार्य के कयलनि तकरो पता लगयबाक कोनो चेष्टा नहि कयलनि, प्रत्युत हितेच्छु लोकनिकेँ प्रतिक्रियामे एकेटा बात कहथिन- हमर तँ उपकारे भेल, भगवती दोसरोकेँ ई सद्बुद्धि देथुन ।

एक विशेष विषयक उल्लेख कऽ दी जे महाराज जखन दरभंगामे रहथि तँ आनन्दबाग पैलेस पर माँछ अंकित लाल पताका फहराइत रहैक आ बाहर जाथि तँ उतारि लेल जाइक जाहिसँ लोक बुझि जाय महाराज छथि वा नहि । रहथि तँ साझमे नित्य दरबार लगैत छलनि । दर्शनार्थी, विशिष्ट कार्यार्थी सर-सम्बन्धी लोकनि ताही समय भेट करबाक हेतु जाथि । दरबारी लोकनिक तँ नित्यक ड्यूटीए रहनि । सुनल अछि जे किछु आप्त लोकनिक राज-काजक निष्पादन सेहो ताही समयमे होइनि, मुदा बेसी मनोविनोदे होइक ।

मनोविनोद सम्बन्धी एक मनोरंजक आँखिक देखल नहि, कानक सुनल घटनाक उल्लेख कऽ दी । ओहि युगक अधिकांश लोकतँ धराधाम छोड़ि चुकल छथि । प्रो. श्रीरमाकान्तमिश्र एखनहु साक्षी छथि । सुन्दरपुरक एक जौआँ भाय रामझा तथा लक्ष्मणझा देखबामे एकदम समान । एक जोड़ा जौआँ भाय एखनहु शुभंकरपुरमे छथि, स्वरूप, आवाज, भाव-भंगिमा सबमे समान, ओ दूनू भाय गोर रहथि, ई दूनू भाय पिण्डश्याम छथि । एकठाम दूनूकेँ ठिकियाकऽ देखलासँ किछु अन्तर बुझिओ पड़त, पृथक-पृथक् देखने भ्रान्ति अवश्यम्भावी । से रामझा लक्ष्मणझा दूनू भव्य मूर्ति महाराजक अंग रक्षक रहथिन । दरबारक मनोविनोदक क्रममे एक दिन डाँड़ भरिक एक टा खजबा कटहर अयलैक । महाराज कहलथिन ई सौंसे कटहर जे खाय जायत तकरा इनाम देबैक, नहि सधौला पर दण्डित होयत । सभासदमे ककरो साहस नहि भेलनि । सबकेँ स्तब्ध देखि सुनैत छी महाराज कहलथिन- की खयबोमे ई मिथिला वीर विहीन भऽ गेल ? पाछाँमे ठाढ़ रामझा कहलथिन- श्रीमान, हमरा जँ आज्ञा भेटय तँ हम सठाय सकैत छी । रामझा आज्ञा भेटलापर कटहरकेँ फाँड़ैत जाथि, आँठी छोड़ाय खयने जाथि । 60 प्रतिशत अंश खाइत खाइत पेट अफड़य लगलनि । बुझाइनि जे प्रकृति एहि कटहरमे कमरीओक बदला केवल 'को' कसि देने छैक । सभासद सभक नजरि रामेझा पर लागल रहनि । हाथ शिथिल होइत देखि महाराज टोकि देलथिन- की हओ राम! रामझा कहलथिन- सरकार, बड़ जोर लग्घी लागि गेल अछि । लग्घी कऽ अयबाक अनुमति भेटि गेलनि । दौड़ल गेलाह आ लक्ष्मण झाकेँ कहल थिन लक्ष्मण, जान बँचाबह । ओ पाँच मिनट अभ्यन्तर अपन उर्दी-टोपी (जाहि वेषमे अंग रक्षक रहैत छलथिन) पहिरि हाथ पोछैत पहुँलाह आ कटहर खाय लगलाह । समस्त कटहर उदरस्थ भऽ गेल । ई रामझा नहि लक्ष्मणझा थिकाह तकर आभासो ककरो नहि भेलनि । रामझाक जय जयकार भऽ गेलनि । एहने एहने

Scanned by CamScanner

मनोरंजन सब दरबारमे होइत छलैक । प्रसंगत: ईहो कहि दी जे राजपण्डित जीक एक बाल संगी रहथिन कैलासमिश्र, ओ भोजन भट्ट रहथि तेँ 30/टाका मासिक हुनका एहीकाज लै भेटल करनि, यद्यपि निरक्षर छलाह । प्रकृत विषय पर आबी ।

दरबारक विधान रहैक जे महाराजकेँ आबि गेलापर प्रवेशक तथा जाधरि बैसथि ताधरि जयबाक अनुमति नहि रहैक । पिताजी जखन महाराज कतहु जाथि आ जखन कतहुसँ आबथि, मात्र ताही दिन अन्यथा स्वयं कतहुसँ महाराजक प्रतिनिधित्व कऽ घूरथि तखने टा जाथि, सेहो महाराजक दरबार आबि गेलाक बाद आ दू जोड़ जनउ आशीर्वाद स्वरूप दऽ घूरि आबथि, कुशल-क्षेम ठाढ़े ठाढ़ होइनि, बैसथि कहियो नहि । महाराज सेहो धाख करथिन, हिनका बैसलासँ प्राय: मनोविनोदमे बाधाकेँ दृष्टिमे राखि बैसबाक आग्रह नहि होइनि । कूच बिहारसँ घुरला पर भेट करय गेलथिन तँ महाराज मुस्कुराइत पुछलथिन- बहुत दिन लागि गेल ? सकुशल घुरलहुँ ने ?

पिताजी कहलथिन- 'चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करष्यति वै यम:' श्रीमानक कृपा दृष्टि रहैत अछि तँ हमर अनिष्ट कोना होयत । विलम्बक कारण भेल जे हम विद्यार्थीमे अपन बालककेँ संग लऽ गेल छलियनि । ओहि ठाम ई राजमहलमे एक खेलौना भऽ गेलाह । राजमाता बिदा करिते ने छलीह । तकर बाद मिथिलेश कोना चिन्हलनि से कहब आत्मश्लाधा होयत । किन्तु ओ परिचय अन्तमे अजमेर मैथिल महासभाक अधिवेशनमे काज आयल आ 1960 क 10 सितंबर सँ पटना सँ पुन: 'मिथिला-मिहिर'क प्रकाशन आरम्भ भेल । भऽ सकत तँ यथास्थान तकर चर्चा करब ।

1944क सरस्वती पूजाक अवसर पर विद्यालयमे मिथिलेशक संग पिताजीकेँ जे प्रश्न प्रतिवचन भेल छलनि तकर उल्लेख कऽ चुकल छी । ओही वर्षक दिसंबरमे बड़ा दिनक छुट्टीसँ 5-7 दिन पूर्वे महाराज छोटका भाइक माध्यमसँ पिताजीकेँ पुछबौलथिन जे बार्द्धक्यक कारणेँ बूढ़ा गुरुजीकेँ आब विद्यालय जयबा-अयबामे कष्ट होइत होयतनि । काशीमे रहय चाहथि तँ राज ओतय रहबाक सब व्यवस्था करतनि अन्यथा गाममे रहय चाहथि तँ पूर्ण वेतन पेन्शन रूपमे भेटैत रहतनि । से हुनक मन्तव्य बूझि कऽ सूचित करह । छोटका भाइ आबि कऽ जखन महाराजक प्रस्तावक सम्बन्धमे पुछलथिन तखन पिताजी उत्तरमे कहलथिन जे जँ शास्त्र पुराण प्रमाण तँ मिथिलोक माहात्म्य न्यून नहि, तेँ बालबच्चाक संग समाजक मध्य अपन गामेमे रहब अभीष्ट अछि । ओही वर्षक अन्तमे डेरा डण्डा समेटि सब गोटे गाम चल गेलहुँ । गाममे दू घरमे चुलहा जरब सेहो माता-पिताक अछैत से अयशस्कर मानि आश्रम एक भऽ गेल । किन्तु एहिसँ पूर्वक घटनाक किछु विवरण छूटि गेल तेँ पाछू घुरैत छी ।

माय दरभंगा आबि नियमित रूपेँ रहय लगलीह तँ एहिठामक उठौनाक दूधक स्तर आ मात्रा दूनू बहुत झुझुआन बुझयलनि तेँ हमर बखराक एक लगहरि महींस जे गाम

Scanned by CamScanner

पर छल तकरा दरभंगा डेरापर मङाय लेलनि । प्रश्न उठल जे एकरा बान्हल कतय जायत ? के चराओत? समाधान एहि प्रकारेँ भेलनि । डैनवी रोडक सी.टाइप क्वाटरमे डेरा रहय । तकरे सटले पूब राज दरभंगाक एक पैघ सन खपरैल मकान रहैक, तकर तीन खण्ड रहैक । एक खण्डमे सुमनजी, दोसर खण्डमे हरीबाबू सोति, जे राजक हेड आफिसमे कर्मचारी आ तेसर खण्डमे काशीनाथ ठाकुर, न्यायशास्त्रक अध्यापक रहैत छलाह । ई एकसरे रहैत छलाह । एकर लागल एक बहरघरा रहैक जे पड़ले रहैत छलैक । पिताजी काशीबाबूसँ कहलथिन, ओ सहर्ष स्वीकार कऽ लेलथिन । चरवाह जाबत ताकल जायत ताबत काल धरि झिंगुराकेँ राखि लेल गेलैक । झिंगुरे गामसँ महींस अनने रहय । तत्काल समस्याक समाधान भऽ गेल ।

गर्मीक छुट्टी अयलैक । ई 1942क घटना थीक । मायकेँ गाम जायब अनिवार्य भऽ गेलनि । ओहि वर्ष आम खूब फड़ल रहैक । हमरा गाछीमे 'भेम्हा' नामक एकटा आमक विशाल अड़ैजंघ गाछ रहैक जकर आम जेहने मधुर तेहने अद्‌भुत सुगन्धक स्वादक होइक । ओ गाछ किछुने किछु सब साल फड़बे करैक आ ओहि आमक अमौट फराक कऽ बनौले जाइक, जाहिमे सँ राजमाता, राजलक्ष्मी (महाराजक प्रथम पत्नी) तथा महाराजकेँ उपहार स्वरूप पिताजी देल करथिन । माय गाम नहि जयतीह तँ अमौट कोना बनत आ सब गोटे जायब तँ एहि महींसक की होयतैक ? ओहि समय 'सन्त तुलसी दास' सिनेमा चलि रहल छलैक । चपाहीक हमर मसियौत चन्द्रमोहनठाकुर जे गुलाब बाबू नामेँ सम्बोधित होथि । रहथि हमरा सँ जेठ, मुदा पढ़बामे पाछू, तेँ एक दोसरकेँ भाइ कहियनि । हम दूनू भाय अपनामे विचारिते रही तावत नेपाल तराइ सँ एक सम्पन्न थारु परिवारक तरूण हमरे सभक समयवयस्क कोनो विषादेँ घरसँ पड़ाय दरभंगामे नौकरी तकैत बौआइत टौआइत पहुँचल । ओकरा राखि लेल गेलैक, नाम रहैक मोतीलाल, असली नोपाली भुच्च छल । एकर विशेषताक उल्लेख पछाति करब । हम दूनू भाय माय लग प्रस्ताव रखलियनि जे अहाँ लोकनि गाम जाउ । हम दूनू भाय छुट्टीमे रहि जाइत छी । प्रश्न रहल आम खयबाक, से भाइ अहाँ लोकनिकेँ राजनगर पहुँचाय, सवारीक व्यवस्था कऽ खोजपुर बिदा कऽ देताह आ अपने चपाही जाय थोड़ेक जर्दा, जर्दालू आ बम्बइ आम लऽ घुरि औताह । जावत ओ सठत तावत बाजारोमे आम सस्ता भऽ गेल रहतैक । रामजी खट्टीकसँ कीनि लेब ।

कटहरबाड़ीक रामजी खट्टीक स्थायी रूपेँ तरकारी पहुँचबैत रहनि । आमक समयमे शुरूमे बम्बइ आ जर्दा आ बादमे पाल परक मालदह सँ लऽ कलकतिया, फजली, राढ़ी, सिपिया, सुकुल अन्तमे बथुआ धरि उधारे सप्लाइ कयल करनि । पिताजीकेँ आम अतिप्रिय रहनि आदि रोहिनियाँ सँ अन्त बथुआ धरि खयबे करथि । केहन प्रिय रहनि तकर एकटा उदाहरण प्रस्तुत करैत छी । 1946 मे चौठचन्द्रमे हमरा गाम जयबाक छल । पिताजी

Scanned by CamScanner

गाममे छलाह । समाद पठौलनि जे बाजारमे आम भेटैत होइक तँ अवश्य लेने आबी । ई हो जनाय दीजे बथुआ जे सौंसे कहियो ने पकैत छैक, एक दिस पाकल दोसर दिस काँच, किछु अंश सड़लो । जखन अम्मत लगनि तँ हमरा मायकेँ कहथिन–आममे ई डोम होइत अछि, आब आबय तँ नहि लेब । मुदा जखन सठि जाइनि आ रामजी खट्टीकक आङनवाली लऽकऽ अबनि तँ माय कहथिन–आब नहि लेब । तँ पिताजी कहि उठथिन–अच्छा आइ भरि लऽ लियौक, केहनो होइक, थिकैक तँ आमे ।

चौठचन्द्र धरि बथुओ सठिए जकाँ जाइक, तथापि महग–सहग भेटैत रहैत छैक । ताहि समय मटिया तेल आ चीनी खुल्ला बाजारमे दुर्लभ रहैक, कपड़ा धरि राशन कार्ड पर भेटैक, तेँ चीनी, मटिया तेल सेहो लऽ जयबाक छल । गामसँ साइकिल लऽ एक आदमीकेँ पठाय देबाक समाद दऽ देने रहियनि । राजनगर स्टेशन पर सुनरा साइकिल लऽ आयल छल । चीनी, मटियातेल, आम ई सब सुनराकेँ दऽ साइकिलसँ अपने गाम पहुँचलहुँ । पिताजी दिनुका भोजन पर बैसल छलाह । जाइत देरी कुशलो–क्षेम सँ पहिने पुछलनि- आम भेटबो कयल ? कहलियनि- हँऽ रामजी खट्टीक 100 दऽ गेल । सुनरा लेने अबैत अछि । ताहिपर कहलनि- हम धीरे-धीरे, खाइत छी, तावत आबि जायत ने? कहलियनि-- हमतँ साइकिलसँ चल अयलहुँ ओ कतबो झटकि कऽ चलल होयत तैयो दू-अढ़ाय घंटा लगबे करतैक । ताहि पर बजलाह अच्छा तखन रातिएमे खायब । एतेक प्रिय रहनि आम । पछाति बहुत आत्मसन्तोष एहि लऽकऽ भेल जे ओ आम हुनक जीवनक अन्तिम रहनि । अगिला वर्षक आमसँ पहिनहि 1947क चैत्र पूर्णिमा दिन ओ शरीर त्यागि देलनि ।

प्रसंगत: ईहो कहि दी जे आम हमरो अतिप्रिय अछि । गर्मी छुट्टी आमेक मासमे होइत छैक । गाममे रहबाक अवसर ताही समय मे होअय । ओतय गामक बालसखामे छथि पं. श्रीमुचकुन्दझा प्रसिद्ध मुनि जी, हम मुनि महाराज कहैत छियनि । हुनक कलम बाग हमर अभयारण्य रहय । गाछ सँ खसल पाकल आम खयलहुँ तँ की बहादुरी, गाछ पर चढ़ि हाथसँ टोबि बम्बइ, मालदह तोड़िकऽ गाछे पर खयबामे नीक लागय, दस-बारह टा खाइ ताहीमे पेट गच्च । अपन उकठाह स्वभावक दोसरो एकटा घटना कहैत छी ।

बाबू तुलापति सिंहक बालक तथा कर्नल डॉ. श्री मेघपतिसिंह प्रसिद्ध कमलानन्द सिंहक पिता बाबू उषापतिसिंह सनातन धर्म महामण्डल' द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षा 'धर्मकोविद' क परीक्षा केन्द्र अपन गाम पचहीमे बनौने रहथि, हम सेहो ओकर परीक्षार्थी रही । अध्यात्म रामायण, देवी भागवत आदि पाठ्य पुस्तक रहैक । गर्मी छुट्टीमे गाममे रही । गाम पर पढ़बा लै एकान्त नहि भेटय तँ गामक बाहर सड़कक कातमे एक पोखरि छैक, ओकर मोहार पर एक सघन कदम्बक गाछ छैक । हम बेरखन पोथी लऽ ओहि कदम्बक दोकन्हा पर बैसि पढ़ल करी । दोसर टोलक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति सड़क धयने

Scanned by CamScanner

जाइत गाछ पर बैसि पढ़ैत हमर आवाज कानमे पड़लनि, पहिने चकुअयलाह, तखन अकानलनि, फेर ऊपर ताकि पुछलनि- के छी गाछ पर ? उत्तर देलियनि- बतहू । गाछ पर चढ़ि कऽ? फेर उत्तर देलियनि- एकान्तमे परीक्षाक तैयारी करैत छी । बुझायल छगुन्ता मे पड़ल ओ आगाँ बढ़ि गेलाह । पछाति जे भेटनि तकरा कहथिन- पण्डित जीक छोटका बेटा बेस अबण्ड भऽ गेलनि, एहन अगिमुत्तू नेना नहि देखने छलहुँ, लम्बोदर बाबूक पोखरिक मोहार पर जे कदम्बक गाछ छैक तकर दोकन्हापर पोथी लेने पढ़ैत देखलिऐक, कनेको चुकने सोझे पोखरिएमे खसतैक चभाक् ।

मुख्य धारामे अबैत छी । माय हमरा सभक प्रस्ताव मानि लेलनि । झिंगुराकेँ दू दिन पहिनहि गाम पठाय देल गेलैक जे राजनगर स्टेशन पर अपने बैल गाड़ी लऽकऽ सुनराकेँ पठाय दैक । भाइ जहिना नेयार छल तहिना राजनगरसँ हिनका दूनू गोटे केँ खोजपुर बिदा कऽ चपाही जाय आमतँ अनबे कयलनि, ओ तबला बजबैत छलाह से तबलो लेने अयलाह । बड़का भाइ 10 बजे पुस्तकालय चल जाथि से पुनः 1 बजे डेराआबि, भोजन विश्राम कऽ 3 बजे पुनः चल जाथि तँ साँझेमे घूरथि । हम हुनक अनुपस्थितिक समयमे तबला बजायब सीखल करी ।

महींसकेँ दूनू साँझ मिलाय चारि साढ़े चारि सेर दूध होइक । पिताजी उसिना चाउर आ कडू तेल नहि खाथि । हमरा गाम जयबाक काल माय कहैत गेलीह जे दूध अहाँ सब खायब, मुदा पहिल छाल्ही बाहर कऽ घिउ (घृत) सेहो बना कऽ राखब । से सब लूरि हमरा भऽ गेल छल । ओतेक दूध आ खयनिहार मात्र तीन गोटे । तीन-चारि दिन दूनू साँझ तस्मै बनाय खाइत रहलहुँ, जी उमठि गेल तँ तीन-चारि दिन दिनमे दही चूड़ा, रातिमे तस्मै । हमरे सभक डेराक पतियानीमे राजक एक पदाधिकारी रहथि चुम्मन ठाकुर, हुनकर बालक सूर्यकान्त ठाकुर, जे बादमे एम.बी.बी.एस डॉक्टर भेलाह, ओ समवयस्क राज स्कूलक छात्र रहथि । एक दिन दुपहरियामे अयलाह । हम सब ओहू दिन तस्मै बनौने रही से भोजनक हेतु परसल जाइत रहय । भाइ कनेक तस्मै खयबाक आग्रह कयलथिन । पहिने नाकर-नूकर करैत कहलथिन- हम तबला सीखय चाहैत छी, तेँ आयल छलहुँ । भाइक बहुत आग्रह पर थोड़ेक तस्मै खयलनि आ पुछलथिन- एहन बढ़ियाँ खीर अहाँ सब कोना बनबैत छी ? हमरा सभक घरमे एहन नहि बनि पबैत अछि । भाइ कहलथिन किनुआ दूधमे तँ पानि फेंटल रहैत छैक, मक्खन बाहर कयल रहैत छैक, एहन बढ़ियाँ कोना होयतैक । ताही संग भाइकेँ की फुरलनि की नहि, पूछि देलथिन- एखन दूध बहुत फाजिल होइत अछि । अहाँ माँ केँ पुछबनि जे उठौना लेतीह तँ जाधरि मौसी सब नहि अयलीह अछि, दू सेर दूध हम दऽ सकैत छी । गप्पे गप्प मे ओ दूध लेबऽ लगलाह । नगदी आमदनीक जरिया भऽ गेल । दूनू भाय छूटि कऽ फूह खेलाय लगलहुँ । ओही पाइसँ सिनेमा सेहो देखि आबी । विश्वास करब ? 'सन्त तुलसीदास'

Scanned by CamScanner

सिनेमा आयल रहैक, विष्णुपंत पगनीस तुलसीदासक भूमिकामे रहथि । ताहि समय धरि सिनेमामे पार्श्वगायन नहि आयल रहैक । ओ रामवन गमनक समय एकटा गीत गाबथि- 'वन चले राम रघुराई' जेहने कारुणिक ओ गीत रहैक तेहने हुनक मधुर कण्ठ रहनि । करुणाक रसधार बहि जाइक, आधलोक गीत सुनैत सुनैत कानय लागय, ताहिमे एक हमहू रही आ यैह गीत सुनबा लै हम सब नओ शो ओ सिनेमा देखलहुँ । आब बुझैत छिऐक जे रसक साधारणीकरण एकरे कहैत छैक ।

नव नौकर मोतीलालक प्रसंग कहिए दी जे ओ केहन भुच्च रहय । रहय ओ सम्पन्न घरक, कारण ताहि समयमे जहिया ओ हमरा ओतय आयलतँ 40/टा रूपैया हमरा मायकेँ राखय लै देने रहनि, किन्तु अज्ञ एहन रहय जे अयलाक बाद माय बाल्टी दऽ पानि आनय कहलथिन । डेराक बाहरेमे ट्यूब वेल रहैक, ओ बाल्टी लऽ गेल आ 15 मिनटक बाद खाली बाल्टी लेने ई पूछैत घूरल जे मालिक, कुइयाँ कहाँ छौ जे पानी लबिती ? माय कहलथिन- बाहरमे कल छैक । ओ गेल आ फेर घूरि कऽ कहैत आयल कलमे मुँह कहाँ छै, बाल्टी केने बाटेँ डुबतै ? संग जा कऽ चला कऽ देखा देलिऐक । ओकर आश्चर्यक ठेकान नहि रहलैक । चकित होइत बाजल- मालिक, ई की छियौ, ई तऽ पानी बोकरै छौ । पानि भरि कऽ बाजल- खूब निम्मन छौ, पानी भरैत-भरैत डण्डो पेला जाइ छै । यद्यपि सी टाइप क्वार्टरमे बिजली नहि लागल रहैक, मुदा स्ट्रीट लाइटक एकटा पोल ओहू ठाम रहैक । साँझमे जहाँ बत्ती जरलैक कि मोतीलाल बाहरे सँ चिकरल- मालिक, दौग दौग देखही ? भेल जे की भेलैक, दौड़ि कऽ गेलहुँ । मोतीलाल आङुर देखबैत पुछलक- ई की छियौ? कहलिऐक ई आकाश काँकोड़ थिकैक । मुँह बबैत छैक कि इजोत भऽ जाइत छैक । एहने अलौकिक रहय ।

एक दिन हँसी मे भाइ पुछलथिन- मोतीलाल, वियाह भेल छौ? कहलकनि- हमरा आउर के बेदरेमे वियाह भऽ जाइ छै, महज गओना जबान भेलापर होइ छै, से अखनी नइँ भेल गऽ । पुछलथिन- कोन गाम सासुर छौक ? कहलकनि- झाँझ पट्टी, ताहि पर भाइ कहलथिन- तखन तोँ हमर साढू भेलेँ, हमरो वियाह झाँझ पट्टीए अछि । मोतीलाल क्रुद्ध भऽ गेल । हमरा कहलक-मालिक हमर हिसाब दऽ दे । तोरा ओइठिन आब नइँ रहबौ, ऊ मालिक हमरा गारी देलक अय । हम सब कुछ सहबौ महज गारी नइँ सहबौ । कहैत-कहैत, बुझबैत-बुझबैत हारि गेलिऐक, नहि मानलक, मुदा अयबाक दिन जे 40 टा टाका माय लग जमा रखने छल से तँ हुनका अयले पर भऽ सकैत छलैक, हिसाबो तँ पिताजी करितथिन, तेँ तावते धरि रहल जाधरि ओसब गामसँ अयलाह । यद्यपि साढू कोनो गारि नहि भेलैक तथापि ओ जँ गारि बुझलक तँ भान भेल जे एहन सामान्यो लोकमे एतेक स्वाभिमान होइत छैक जे एहि लै ओ अपन जीविकोकेँ लात मारि सकैत अछि आ आइ राजनीतिमे लोक केहन स्वाभिमान शून्य भऽ गेल अछि जे चुनावसँ पूर्व

Scanned by CamScanner

जकरा संग गारा–गारी भेल रहैत छैक, सत्ताक लोभमे तकरो संग घाड़ा–जोड़ी करबामे लाज नहि होइत छैक। धन्य थीक सत्ता जे कहियो छल गंगा सागर– आइ भऽ गेल गुहखत्ता।

नरहीमे सेहो जथा–जाल छल, पिताजीक मातृकमे वंशधरक नामपर मात्र एकटा ममियौत बौकू रहथिन। यदुवंशी मिश्रकेँ मात्र दू कन्या, जेठि कन्या रहथिन कोइलखमे खंजनि दाइ जनिक पौत्र लोकनिमे 'एना त नहि जे' कविता संग्रहक कवि श्रीहरेकृष्ण, मिथिला विश्वविद्यालयक इतिहास विभागसँ सेवा प्राध्यापक श्रीतुलाकृष्णझा, कटिहार कॉलेजक अंग्रेजी विभागसँ सेवा निवृत्त श्रीबालकृष्णझा आदि छथिन। छोट माम भगीरथ मिश्र बाल ब्रह्मचारीए रहि गेलथिन। जेठ दूनू मामक मृत्युक उपरान्त नरहीक आश्रममे यदुवंशी मिश्रक छोटि बाल विधवा कन्या कौशल्या दाइ आ रामकृष्ण मिश्रक पत्नी। एक बेर नरहीक सब जमीन माल गुजारी नहि देलाक कारणेँ नीलाम भऽ गेल रहनि तँ पिताजी ओ नीलाम सम्पत्ति किनि लेलनि ताहिमे भगीरथ मिश्रक नाम सेहो जोड़ि देने रहथिन। हम जखन नरहीमे पढ़ैत रही ताही समयमे लाला मामाक मृत्यु भेल रहनि। मृत्युसँ पहिने लाला मामा पिताजीक नामेँ बसीयतनामा लिखि देने छलथिन ताहीमे खंजनि पीसीक नामेँ दू बीघा सेहो लिखबाय देने रहथिन। 1939 मे ओ जमीन पुनः नीलाम पर चढ़ि गेल रहनि। रहिका सर्कल सँ सम्मन आयल रहनि जे अमुक तारीख धरि माल गुजारी नहि चुकायब तँ जमीन नीलाम भऽ जायत।

पिताजी बच्चा भाइकेँ टाका दऽ रहिका पठौलथिन। ओतय की भेलनि से नहि जानि। रसीद कथी लै कटौताह, मधुबनी सँ 48/ रू.मे हरक्यूलश साइकिल किनने गाम घूरि अयलाह। पछाति रहिका सर्कलक मैनेजर रहथि दुलारपुरक शुभनारायण चौधरी (हिनके कन्या थिकथिन डॉ. श्रीमती पन्नाझा) ओ ढंगा पुबारि टोलक हमर बहिनोइ गोपालमिश्रक बहिनोइ छलथिन। चौधरीजीक ओतय पैरबी कऽ हमर बहिनोइ जमीनमे 12 अथबा 15 कट्ठाक एकटा कान–खापट भरल भिंड़ रहैक तकरा नीलाम पर चढ़ाय शेष जमीन बरी कराय देलनि। ओही वर्ष हमर जेठ भातिज रमानाथक, जे पछाति रमानाथ मिश्र 'मिहिर' नामसँ मैथिली साहित्यक प्रशंसनीय सेवाक प्रसादेँ ख्याति अर्जित कयने छलाह, जन्म भेल छलनि। पौत्र प्राप्तिक प्रसन्नतामे पिताजी सीवी पट्टीक मिसरिया नटुआकेँ नाचय लेल बजौने छलथिन। ओहि उत्सवमे हमहू गाम गेल रही। विनोदार्थ एकरो उल्लेख कऽ दी। मिसरियाक संग जे विपटा रहैक से एक गोटे दर्शकमे भीड़ रहलाक कारणेँ अपन नेनाकेँ कान्ह पर लऽ नाच देखाय रहल छलैक– ओकरा दिस लोकक ध्यान आकृष्ट करैत कहलकै- सरकार लोकनि, गाछ विरिछमे तँ कनोजड़ि अपने सब देखने छिऐक महज कलियुगमे मनुक्खोमे कनोजड़ि होतइ से भविक्ख पुरानमे लिखल छइ से परतच्छ भऽ गेलइ। बेस हहारो पड़ल रहैक से आइओ मन अछिए। अस्तु!

हम नव साइकिल देखि बच्चा भाइक परोक्षमे झिंगुराकेँ संग लऽ सिखबा लै

Scanned by CamScanner

गाछी लऽ गेलहुँ । दू–चारिए बेर रेङने होयब ता बच्चा भाइ ओम्हरे खेत दिस गेल छलाह घुरैत काल देखलनि, चट आबि दू–चारि मुक्का झिंगुरा कें आ दू चटकन हमरो मारि, साइकिल छीनि चल अयलाह । हम मनहिमन बहुत दुखी भेलहुँ आ अपने साइकिल कीनब से मनमे ठानि लेलहुँ ।

चतरियाक संगी रहथि सूर्यकान्त, हुनकोसँ दोस्त लगौने रही । ओ सब दिन साइकिल सँ आबथि । रहनि झरपटहे, मुदा एक दिन कहलियनि– दोस्त, हमरो साइकिल सिखाय दिअऽ । डैनवीरोडमे प्रवेश करबाक बड़का फाटकक पुवारिकात, जाहिठाम एखन बस, ट्रक आदिक भङठी होइत छैक, बेस प्रशस्त परती छलैक । ओही परती पर चारि–पाँच दिनमे सिखाय देलनि ।

दरभंगामे जे हमर परिवेश बनि गेल छल, ताहूसँ अपनाकें खूब बुधियार मानैत रही, किन्तु नेनपन संग नहि छोड़ने छल । 1941मे विवाहक चर्चा चलल तँ मनमे सबसँ पैघ लोभ एकरे भेल जे बिदाइमे कमसँ कम साइकिल तँ भेटबे करत । ओहि समय धरि रेडियोक ततेक प्रचलन नहि छलैक, किन्तु सम्भ्रान्त परिवारक लोक जमायकें घड़ी, औंठी आ साइकिल देबे करथिन, जे आब चारि चक्काक गाड़ी पर पहुँचि गेल अछि । विवाह करय बिदा भेलहुँ, पिताजी कहने रहथि जे नव विवाहितकें सारि–सरहोजि महुअक कालमे ससुरसँ किछु विशेष वस्तु माङय लेल रूसि रहय कहैत छैक । अहाँ मुँह फोलि किछु नहि मङियनि । याचना कयने लोक ओछ भऽ जाइत अछि । हम ओहि आज्ञाक अक्षरशः पालन कयल, हम ने किछु मङलियनि ने ओ किछु देलनि । विवाहक बादो साइकिलक सेहन्ता मनमे लगले रहि गेल ।

समय बीतैत गेल । चतरियाक दोस्त आब अधिक काल अनुपस्थित रहय लगलाह । भेट भेलापर कहलनि एक तँ साइकिल जर्जर अछिए ताहूमे एकटा चक्का बर्स्ट भऽ गेल, टायर ट्यूब अकाजक भऽ गेल अछि । एखन तीन रूपैया दू आना नहि होइत अछि । सोचैत छी एकरा बेचिकऽ नवे कीनिली । हम पुछलियनि– कतेमे बेचब ? कहलनि बीसो टाका देत तँ दऽ देबैक । हम कहलियनि– किछु दिन पहिने हमर भाइ साहेब 48/रू०मे नब हरक्यूलस किनने छलाह । एकर एक तेहाइ 16/रु० हम देब । कहलनि अहाँ दोस्त छी, अहाँसँ कोन मोल–मोलाइ । दोसर दिन गुड़कबैत लेने अयलाह । हम टायर ट्यूब लगाय चालू कऽ लेल । ई साइकिल किनलहुँ कोना सेहो सुनि लिअऽ ।

ई घटना 1942क थीक । 9 अगस्तक दिन भारत छोड़ो आन्दोलन आरम्भ भेलैक । 1934 भूकम्पक बाद जेना सम्पूर्ण यातायात व्यवस्था छिन्न–भिन्न भऽ गेल छलैक तहिना लोक रेल, तार, सड़क, पूल सबकें ध्वस्त कऽ देने छलैक । मन नहि पड़ैत अछि जे कोन कारणें माय आ पिताजी नरही गेल छलाह । हम आ भाइ तथा नौकर मोतीलाल डेरा पर रही । हम दूनू भाइ लोकक देखा देखी खूब बढ़ि–चढ़ि कऽ भाग लेने

Scanned by CamScanner

रही । ओही क्रममे रेलवेक लोहाक तीनटा टुकड़ी हाथ लागल रहय । एक टा गोल सन कोनो पार्ट थिकैक से स्मृति चिह्नक रूपमे रखने छी । दू टा टुकड़ी गाम लऽ गेलहुँ । हमरा गाममे दू घर लोहार गोपाल ठाकुर, शीतल ठाकुर । ई सब चक्कू, सरौता आ गुप्ती छड़ी बनयबामे ख्याति प्राप्त कयने रहय । ओ दूनू टुकड़ी देखय देलिऐक तँ आँखि चमकि उठलैक । पुछलक कथी लै अनलहुँ अछि ? कहलिऐक एकर जतेक चक्कू बनि सकय से बना दैह । बनाइ कतेक लागत ? कहलक एहि छोटका सँ बीस टा चक्कू बनि जायत, बनाइमे बड़की टुकड़ी हम लऽ लऽ लेब । हम सहर्ष स्वीकार कऽ लेलिऐक ।

ओ बीसो टा चक्कू लऽ दरभंगा अयलहुँ । एकटा अपने रखलहुँ । जेबीएमे रखने रही । ताहि समय धरि फाउंटन पेन नहि–आयल रहैक । कड़ची कलमकाठीक कलम बनाय, मोसियानीमे डुबाय लोक लिखैत छल । हँऽ कठही पेन्सिल होइत छलैक, कलम बनयबालै आ कठही पेन्सिलकेँ छिलबालै चक्कूक प्रयोजन सबकेँ होइक । जहाँ ककरो पेन्सिल वा कलम टूटैक, चट जेबीसँ बाहर कऽ बनाय दिऐक । ओकर तेज धार देखि सब कहय इह् ई तँ पचपनो नम्बर छूरीक कान कटैत अछि, कतय भेटैत छैक? कहिऐक–दामो छैक एक टाका, हमरा गामक लोहार बनबैत अछि । एहि तरहेँ एकर विज्ञापन कयल, गोटेक मास बीतैत–बीतैत उनैसो गोट चक्कू बिकाय गेल । ताही टाकासँ ओ झरपटही साइकिल किनलहुँ, दू आना जेबीसँ लगाय टायर ट्यूब सेहो भऽ गेल । आब एकर कायाकल्पक प्रसंग सुनू ।

छात्रावासमे लदारीक एकटा मुष्टण्ड आ मन्दबुद्धि, मुदा घरक सम्पन्न छात्र रहथि, हुनका सब गोआर भाइ कहनि तेँ असल नाम स्मरण नहि भऽ रहल अछि । ओ एक दिन कहलनि– हमरा साइकिल सिखा देब ? कहलियनि–एकर हाल तँ देखिते छिऐक । साइकिल एखन किएक सीखब ? कहलनि जँ ककरो ने कहिऐक तँ हम अहाँकेँ कही । कहलियनि नहि कहबैक । फेर कहलनि– सप्पत खाउ । हम कहलियनि गंगाक सप्पत । तखन कहलनि– घटक सब अबैत अछि, जँ वियाह भऽ गेल तँ साइकिल देबे करत, साइकिल सीखल रहत तखन ने ओहि पर चढ़ि कऽ आयब । जँ किछु खर्चोबर्च लगतैक तँ करबैक, हमरा सिखाय दिअऽ । किछु खर्चोवर्च लगतैक तँ करबैक' ई वाक्य हमर तरुण मनमे एकटा बिजलौका जकाँ विचार चमका देलक, जँ पाँचो–सातो गोटे एहन भेटि जाय तँ ताहीसँ साइकिलक कायाकल्प कयल जाय सकैत अछि ।

हम भाइसँ परामर्श कयल । अपने नेपथ्यमे रहलहुँ, भाइकेँ अधिकृत कऽ देलियनि । जाहि परती पर अपने सिखने रही तकरे प्रशिक्षण सेन्टर बनौलहुँ आ 4 बजे सँ साढ़े 5 बजे समय रखलहुँ, जे जतेक दिनमे सीखथि प्रतिदिन एक टाका लगतनि । आइ ककरो गपोड़ बुझाइनि, ताहि समय धरि सम्पन्ने लोक साइकिलो राखथि । स्मरण अबैत अछि, गोआर भाइ, गंगा सागरक रामकुमार, पूर्णियाँ जिलाक एकटा पाठकजी,

Scanned by CamScanner

जनिका पर पछाति एकटा कविता सेहो लिखलहुँ, बनि पड़त तँ तकरो उल्लेख करब, धनखोरिक शोभानन्द, लालपुरक कुशेश्वरजी, आदि सात-आठ गोटे क्यौ चारि, क्यौ पाँच दिनमे सिखैत गेलाह एही क्रममे सहयोग करैत मोतीलाल सेहो साइकिल चलायब सीखि गेल। निश्चित राशितँ नहि मन अछि, किन्तु हमर ई प्रयोग सफल रहल, फ्रेम, हैण्डिल, घंटी पुरने रहल, शेष सब पार्ट बदलबाय नव कऽ रङबाय तेहन बनबाय देलिऐक जे च्यवन सुनि जकाँ जबानी आबि गेलैक। एहि सभक उल्लेख एहि हेतु कऽ रहल छी, स्मरण कऽ अपनहु छगुन्ता होइत अछि जे एहन व्यवसायात्मिक बुद्धि ओही वयसमे कोना भऽ गेल।

सत्य पूछी तँ हमरा जनैत आइ धरि समस्त नव आविष्कारमे साधारण वित्तक लोकक हेतु साइकिलँ बेसी उपयोगी दोसर कोनो आविष्कृत वस्तु नहि भेलैक। हम अपने स्थितिसँ अनुभव करैत छी जे लाखे नहि करोड़क करोड़ लोक एहि साइकिलक प्रसादेँ जीविकोपार्जन कऽ सुविधा पूर्वक जीवन यापन करबामे समर्थ भऽ सकल अछि। जहियासँ साइकिल चलयबासँ असमर्थ भऽ गेलहुँ अछि, क्रमशः सामाजिक सम्पर्क संकुचित होइत गेल अछि। एहिसँ पहिने लोक सवारीक हेतु घोड़ा-घोड़ी पोसैत छल, अनेक तरद्दुत करय पड़ैत छलैक आ एकर तँ सबसँ पैघ विशेषता छैक जे ने एकरा दाना-पानी चाहिऐक, ने ई गोँतैत अछि ने लिद्दी करैत अछि, बन्हौटा घोड़ा पोसनिहारकेँ सहीस राखय पड़ैत छलनि, छंठीओ घोड़ी पोसनिहारकेँ लिद्दी उठाबय पड़ैत छलनि, थऽड़ि खड़रय पड़ैत छलनि। एकरा बेसीसँ बेसी दस-पाँच दिन पर दस पम्प हवा देबय पड़त। ईहो बेसीसँ बेसी कनेमने हवा छोड़त। 1942 सँ 2001 धरि साठि वर्ष साइकिलसँ हजारो कीलोमीटर यात्रा कयने होयब।

मुख्य रूपसँ साधारण सम्पन्न लोक आब मोटर साइकिल रखैत छथि। ओहू समय एकर आविष्कार भऽ गेल रहैक, किन्तु वृटिश शासन कालमे सर्वसाधारण लोककेँ अधिकार नहि छलैक। नेना रही तहिया दरभंगामे एकटा एस.पी.केँ दोसर राजा बहादुरकेँ सओखसँ मोटर साइकिल चलबैत देखियनि। विचारिकऽ जँ देखबैक तँ सम्प्रति जतेक डकैती, बैंक लूटि, अपहरण, आतंकक प्रसार होइत छैक, मोटर साइकिलक भूमिका सबसँ अधिक छैक। वैज्ञानिक आविष्कार सब मानव समुदायकेँ जहिना प्रगतिमे साधक भेलैक अछि, एकर दुरुपयोग दुर्गतिक गर्त्तमे लऽ जयबामे सेहो तहिना। अस्तु।

मूल विषय पर आबी। पिताजी सेवानिवृत्त भऽ गाम चल गेलाह, किन्तु हुनक पद पर जे वरीय होयबाक कारणेँ मोंछमे तेल लगबैत छलाह तथा आतुरतावश ओ षड्यन्त्र रचने छलाह से ठामक ठामे रहि गेलाह, महाराज हुनका पदोन्नत नहि कऽ लोहना विद्यापीठक प्रिन्सिपल प. त्रिलोकनाथमिश्रकेँ बदली कऽ एहि पद पर प्रतिष्ठित कऽ देलथिन। ओ जेहने प्रकाण्ड विद्वान रहथि तेहने प्रत्युत्पन्नमति। राजपण्डित ओ कविवर

Scanned by CamScanner

सीतारामझाक समवयस्क रहितो अत्यन्त आधुनिक रहथि, ओहि युगक संस्कृत पण्डितमे हम साइकिल पर चढ़ैत आ तबला बजबैत हिनके टा देखलियनि । जखन लोहनेमे रहथि तँ महाराज कुमार जीवेश्वर सिंहक उपनयन भेल रहनि, ताहि अवसर पर जे महोत्सव भेल रहैक से वर्णनातीत अछि । ताही अवसर पर 'वेणीसंहार' संस्कृत नाटक हिनके निर्देशकत्वमे लोहनापीठक छात्र सब कयने छलाह । पूर्वाभ्यास संस्कृत महाविद्यालयमे होइक । हमरा एहि सबमे अल्पे अवस्थासँ आवश्यकतासँ अधिक रुचि, तेँ हम पूर्वाभ्यास देखय चल जाइ । एक दिन तबालची एकठाम तालमे गलती कऽ देलकैक तँ ओकरासँ तबला छीनि अपने बजाबय लगलाह । मैथिलीमे 'जीमूत वाहन' नामक नाटक प्रकाशित छनि । संस्कृत आ हिन्दी मे किछु गीत सेहो छपल छनि । हमर बड़का भाइक बाघ सन कल्ला छलनि, पण्डित केहन रहथि से बुझबाक क्षमता तँ हमरा नहि रहय, किन्तु हुनक वाग्मिताक आगाँ केहन-केहन विद्वानक कल्ला नहि अलगैत रहनि, दस-पाँच हजार लोकक उपस्थितिओमे लाउडस्पीकर पर भाषण नहि करथि, हुनका सोझाँ अड़ैत हम हिनका आ कविवर सीताराम झा मात्रकेँ देखने छियनि ।

प्रसंगतः पण्डित त्रिलोकनाथमिश्रक प्रत्युत्पन्नमतित्वक मनोरंजनार्थ किछु उदाहरणक उल्लेख कऽ दैत छी । अवसर पर किछु बाजि देबामे ककरो रोच नहि रखथिन । 1934 क भूकम्पसँ पहिनहि छओगोट ग्रह एकत्र भऽ रहल छथि, कोनो भयानक प्राकृतिक आपदाक सम्भावना, तकर शान्त्यर्थ राज दरभंगा द्वारा एक कोटि गायत्री महायज्ञ भेल रहैक । ओहि अनुष्ठानमे भाग लेनिहार सभक परीक्षा भऽ रहल छलनि । एकर परीक्षक मिश्रेजी रहथि । एक गोटे अर्द्धपण्डित अनेक बेर हिनका सुनाय अन्यान्य व्यक्तिकेँ कहथिन- हम पण्डितजीक सहपाठी रहि चुकल छियनि । अनेक बेर ई बात सुनिकऽ मिश्रजी कहि उठलथिन हँऽहँऽ अहाँ हमर सहपाठी रही आ हम अहाँक सह छागर, तेँ अहाँ पर छरपि जाइछ, मन अछि ने ? उपस्थित जन समुदायमे दस मिनट धरि तोड़ पर तोड़ ठहक्का पड़ैत रहलैक ।

अड़ाइ डंगा, मालदहमे मैथिल महासभाक अधिवेशन रहैक । बिहार संस्कृत एसोशियनक प्रथमाक पाठ्य क्रममे एक पत्र हिन्दी बदलामे बंगला सेहो रहैक । प्रस्ताव अयलैक जे ओहिमे मैथिलीकेँ सेहो स्थान देल जाइक । मिश्रजी प्रस्ताव उपस्थित करैत महाराजकेँ कहलथिन- श्रीमान, हम सब डेली पोन उठयबैक तैयो नहि होयतैक, श्रीमान कनेक टेलीफोन उठयबैक ताही पर मैथिलीक समावेश भऽ जयतैक ।

एक दिन शेखरजीक संग हुनके लग बैसल रही । एक आप्त व्यक्ति भेट करय अयलथिन, प्रसंगतः पूछि देलथिन-अपनेकेँ वेतन कतेक भेटैत अछि ? मिश्रजी कहलथिन दूसय दस । हम दूनू गोटे चकित । भेटैत रहनि 40/हुनका चल गेलाक बाद हमरा दूनू गोटेक मुखाकृति पर विस्मयक भाव देखि स्वयं जोरसँ हँसैत कहलनि- अहाँ

Scanned by CamScanner

सबकेँ प्रतीत भेल होयत जे मिथ्या कहलथिन, पण्डित भऽकऽ फूसि बजैत छथि, परन्तु हम सर्वथा सत्य कहलियनि । दूसय दस अर्थात् एतेक पैघ महाविद्यालय तकर प्रधानाचार्यक वेतन चालीसटाका, से सुनिकऽ दस लोक दूसत कि नहि? तेँ कहलियनि दूसय दस । एना वार्त्तालापहुमे श्लेष अलंकार ।

एक व्यक्तिक संग व्याकरणमे उपहास कयलथिन । मिश्रजीक गाम गोसपुर, हुनक क्षेत्रक विधान सभाक एक प्रत्याशी भेट करय अयलथिन, प्रणाम करैत निवेदन कयलथिन- मैं आपके क्षेत्र से विधानसभा का उमीदवार हूँ । आपसे आशीर्वाद लेने आया हूँ । मिश्रजी तुरन्त आशीर्वाद दैत कहलथिन- आप सुयोग्य उम्मीदवार हैं, मैं भगवती से प्रार्थना करता हूँ कि आपकी अभिलाषामे सप्तमी तत्पुरुष हो, मेरा विश्वास है कि ऐसा होकर रहेगा । ओ व्यक्ति सप्तमी तत्पुरुषक की अर्थ भेलैक से बुझलथिन अथवा नहि से ओ जानथि । हमरा लोकनि बहुत प्रयत्नसँ हँसीकेँ रोकने रहलहुँ, हुनका गेला पर हँसीक बान्ह टूटि गेल, हमरा सभक संग अपनहु हँसलाह ।

एहि क्षेपकक बाद पुनः मूल विषयपर अबैत छी । पिताजीक जीवनसँ विरक्ति, मायक मोहभंग, जेठ भाइक क्रियाकलाप हमरा तरुणे अवस्थामे अपन भविष्यक प्रति चिन्तित बनाय देने छल । माङनि खबाससँ हारमोनियम सीखय लागल रही, भाइ सँ तबला, अभिनयमे रुचि छल, गाममे सामाजिक स्तर पर कृष्णाष्टमी, गणेशपूजा, गामक पाठशालामे सरस्वती पूजा आदि उत्सवमे गामेक नवतुरिया सभक सङोर कऽ चौकी जोड़ि, साड़ी सभक पर्दा बनाय नाटक कयल करी । सबमे मुँहपुरुखी अपन रहय, से टा नहि बिसरय । एतबे नहि, साहित्यमे प्रवेश भइए गेल छल, चित्र बनयबाक प्रयास सेहो करी । नरहीमे वैदगिरीसँ लाला मामाक प्रतिप्रत्ति देखने रहियनि । हिन्दीक एक पुस्तकमे आयुर्वेदिक औषधि सभक गुण, प्रयोग, बनयबाक विधि आदि लिखल रहैक, तकरो अनुशीलन करी, किन्तु चित्त स्थिर नहि रहय, जीवन यात्रा कोन मार्गें सुगम होयत तकर चिन्ता सतत लागल रहैत छल ।

पं. त्रिलोकनाथमिश्र जखन लोहनासँ रमेश्वरलता प्रिन्सिपलक पदपर अयलाह तखन किछु छात्र सेहो संग अयलथिन, ताहिमे मुख्य रहथि कुमार गंगानन्द सिंहक भागिन हीरानन्दझा शास्त्री जनिकासँ पूर्वसँ मैत्री भाव छल, ततेक प्रगाढ़ नहि । विद्यालयक सरस्वती पूजाक प्रसंग उल्लेख कऽ चुकल छी । विद्यालयक सरस्वती पूजाक हेतु छात्र समुदाय अथवा अध्यापक लोकनिसँ चन्दा नहि कयल जाइत छलैक । राज दिससँ 10/टाका मात्र भेटैक । पूछि सकैत छी जे तखन पूजा ओही 10/रु० सँ भऽ जाइक? आयक स्त्रोत रहैक राजपरिवार, बड़ी राजमाता तँ विद्यालयकेँ सन्ताने जकाँ मानथिन, छोटी राजमाता, राजलक्ष्मी (महाराजक धर्मपत्नी) आनन्द किशोरी (राज बाहादुरक धर्मपत्नी, दाइजी (महाराजक बहिन)राजा बहादुर, कन्हैया जी (महाराजक एक मात्र भागिन)

Scanned by CamScanner

हिनका लोकनिसँ राशि संकलित होइक । 1940 सँ 44ई. धरि ई राशि एकत्र करबाक कमान बालसखा देवेन्द्र भाइ आ हमरा हाथमे रहल । हमर एहि दूनू मित्रक प्रवेश सब ठाम रहय । बड़ी राजमाताक अन्त:पुर धरि, ओ रहथि हाथक सक्कत । दूनू मित्र जाय भेट करियनि कहथि- बुझले छौक, हम समाद पठादैत छिऐक, मुंशी सँ लऽ लिहेँ, ओकरो बुझले छैक । कहियनि- सरकार मुंशीजीकेँ जतेक बूझल छनि ततबेसँ आब काज चलतैक ? द्वितीय युद्धक कारणेँ सब वस्तुक दाम आकाश ठेकल जाइत छैक । कहथि- ई टिकजरौना सब अपनामे मुड़कटौअलि करैत अछि आ पेरल जाइए लोक । अच्छा, किछु बढ़ाय दैत छियौक । नहि सरकार किछुए बढ़ौने नहि चलतैक । एहि तरहेँ दसक बदला बीस लऽ आनी ।

1945क सरस्वती पूजा लै पूजा समिति बनल, हीरानन्दजी कुमार साहेबक भागिन थिकथिन, तेँ समितिक सचिव बनाओल गेलाह । हीरानन्दझा शास्त्री यद्यपि बहुचर्चित नाम अछि, तथापि अनभिज्ञ लोकक हेतु थोड़ेक परिचय दऽ दी । आचार्य उत्तीर्ण भेलाक बाद ई आर्यावर्त्तक सम्पादकीय विभागमे जीविकापन्न भेलाह । आर्यावर्त्तमे एक व्यंग्य स्तम्भ रहैक 'चुटकुलानन्द की चिट्ठी' रघुनन्दन प्रसाद ई स्तम्भ लिखैत छलाह, बहुत दिन रहलाह, किन्तु व्यवस्थापक सँ मतभिन्नता भऽ गेलाक कारणेँ ओ आर्यावर्त्त छोड़ि देलनि तँ हीरानन्दझा शास्त्री लिखय लगलाह । मिथिलामिहिर जखन पटनासँ प्रकाशित होअय लगलैक तँ गोनू झाक चटिसार व्यंग्यस्तम्भ सेहो यैह लिखैत छलाह । पदोन्नत भऽ उपसम्पादक भऽ गेला पर कार्याधिक्यक कारणेँ ई स्तम्भ हमरा लिखबाक अनुरोध भेल तँ हम शीर्षक बदलि 'धर्मधकेलानन्दक बलिधिंगड़ो' नामसँ सात वर्ष धरि लिखलहुँ । हीरानन्दजी अन्तमे आर्यावर्त्तक प्रधान सम्पादकक पदसँ सेवानिवृत्त भेलाह । एहि हीरानन्दजीक नायकत्वमे पूजा समिति बनल, ताहिमे नवरत्न गोष्ठीक अथवा अन्यान्यो कोनो पुरान विद्यार्थीक समावेश नहि भेल । हिनका लोकनिकेँ ने ओ झोंझ देखल ने गुरकिल्ली बूझल, पैलेस आफिससँ जे दस टाका अबैत छलैक । ततबे अयलैक । ओमहर दुर्गागंजमे मैथिल महासभाक अधिवेशन सम्भावित छलैक, जकर स्वागत मन्त्री पं. त्रिलोकनाथमिश्र बनाओल गेल छलाह, ओ ताहिमे बाझल रहथि । छात्रावासस्थ छात्रमे सँ एको गोटेक प्रतिनिधित्व पूजा समितिमे नहि रहलाक कारणेँ हुनको सबमे आक्रोश । लाबा-फरभीउठि गेल । पूजासमिति सब छात्रसँ चन्दा मङलथिन, सभक एकेटा उत्तर छलैक-एहिठाम चन्दा देबाक परम्परा नहि छैक ।

एमहर हमरो वर्चस्वितापर आघात भेल छल, हमर प्रतिस्पर्द्धी ठाढ़ भऽ गेल छलाह, तेँ हम सब अपनामे चन्दा कऽ फराके छात्रावासमे मूर्ति नहि आनि पुस्तकक पूजा आरम्भ कयल । सूचनार्थ कहि दी जे अद्यावधि विद्यार्थी जीवनसँ आरम्भ कयल पुस्तक पूजा अपन आवासपर करैत आबि रहल छी ।

Scanned by CamScanner

कहि चुकल छी जे विद्यालयक सरस्वती पूजा राजकीय मानल जाइक, जाहिमे राजपरिवारक सदस्य सब अबथिन, ताहिहेतु राजक तोसखानासँ गद्दीदार कुर्सी सब अबैक जाहिमे पहिया लागल रहैक। चानीक गुलाबजल छीटयवला झाड़ी, इत्रदान, पानदान, महारानी, राजमाता लोकनिक पर्दाक हेतु कनात लगाय देल जाइक। हमर पिताजी एक दिन पूर्व जाय सबकेँ हकार दऽ अबथिन। राजपरिवारक हेतु प्रसादक विशेष व्यवस्था रहैक। राजक ऑफिसर लोकनि जेना पं. गिरीन्द्रमोहनमिश्र, दुर्गानन्दझा, यदू बाबू, वैद्यनाथ बाबू, पुष्करनाथ रैना (हिनकर परिधान अद्‌भुत रहनि, ई कश्मीरी ब्राह्मण, काँखतर नारंगी रंगक कपड़ामे बान्हल वेद संहिता, माथमे मुरेठा, अचकन, चुस्त पैजामा आदि रहनि), पैलेस ऑफिसर धनेश्वरझा आदि अवश्य दर्शनार्थ आबथि। पैलेस आफिसक आदेश पर तोसखानासँ आन वर्ष जकाँ सब वस्तु आबि गेल रहैक। किन्तु राजपरिवारमे हकार नहि गेल रहैक। हम सब छात्रावासमे अपने सब पुस्तकपूजामे व्यस्त रही। विद्यालय दिस हुलकीओ देबय नहि गेलहुँ।

प्रिन्सिपल साहेब पूजासँ एक दिन पूर्व अयलाह, पूजा कऽ फेर दुर्गागंज चल गेलाह। बड़ी राजमाता जेँ सन्तान जकाँ मानथिन तेँ ओ सदल-बल अयलथिन, शेष राजपरिवारसँ क्यौ नहि। ने हुनक ठीकसँ स्वागत सत्कार भेलनि ने संग आयल लोककेँ प्रसादे भेटलैक। एमहर लोहनापीठसँ आयल छात्र सब 'बाप जनम ने देखल गाय, चालनि लऽ दूहाबय जाय' लोकोक्तिकेँ चरितार्थ करैत साँझमे भाङक जलसा कऽ राति में पूजा पद्धतिमे उल्लिखित-नृत्य गीतादिकं चरेत् वचनक अनुपालनमे रड़धुम्मस करैत गेलाह। ओहि पहियावला कुर्सीपर एक गोटे बैसथि, दोसर गोटे गुड़काबथि। एहि क्रममे दू टा कुर्सीक टाङ टूटि गेलैक, गुलाबजल छीटय वला झाड़ी छीना झपटीमे पक्का पर खसलासँ पचकि गेलैक।

ओहि समय किरानी रहथि अवध बाबू, दोसर दिन उदासचित्त कलपैत सन आबि कऽ छात्रावासमे सब वृत्तान्त कहलथिन। हमहू रही, कहलियनि जे नामे तँ थीक अहाँक अवध, मुदा प्रिन्सिपल साहेबक अयलापर अहींक वध होयत, तेँ सेक्रेट्री छथिन दुर्गानन्द बाबू, हुनका सब वृत्तान्त कहिअबियनु। भऽ सकय तँ प्रेसिडेंट छथिन मिसरजी हुनको सूचना दऽ दियनु। आब अनुभव भऽ रहल अछि जे प्रतिशोधमे हमरा सभक चिनगीकेँ ज्वालामे परिवर्तित करबाक चेष्टा छल।

हमरा पं. त्रिलोकनाथमिश्रसँ 1938 क महाकुम्भमे हरिद्वारेसँ परिचय छल। हमरा मानितो छलाह बहुत, एतेक धरि जे चरणस्पर्श करय लगियनि तँ गुरुवत् गुरुपुत्रेषु कहि दूनू हाथ उपरे पकड़ि लैत छलाह। एही क्रममे ईहो कहि दी जे आचार्य सुमन सेहो बहुत दिन पैर नहि छूबय देथि। कारण ओ हमर पिताजीक एकनिष्ठ शिष्य पण्डित सहदेवझाक शिष्य छलाह जनिका सहदेव भाइ कहियनि। बहुतो दिनक बाद जखन मासिक स्वदेशक

Scanned by CamScanner

प्रकाशन आरम्भ कयलनि तँ सम्पर्क बढ़य लागल, साहित्य दर्पणमे जँ कतहु संचर लागय तँ जा कऽ पुछियनि, तकर बाद कहलियनि जे आब तँ अपने गुरुवर्गमे आबि गेलहुँ, आशीर्वादसँ वंचित नहि कयल जाय । तकर बादे सँ प्रणाम करय देथि ।

लोहनापीठसँ आयल छात्र लोकनि नवरत्न गोष्ठीक समानान्तर नूतन छात्र संघ बनौने छलाह । सरस्वती पूजाक राति भेल रड़धुम्मसक विषयमे धारणा छलनि जे प्रिन्सिपल साहेब दुर्गागंजसँ औताह तँ हम आरो लगा-बझा कऽ विरूद्धमे कहबनि, ओ हमरा बेसी मानिते छथि, सबटा सही मानि हुनका लोकनिकेँ दण्डित करथिन तकरो आतंक छलनि । किन्तु हमरा माघशुक्ल सप्तमीक दिन अग्रज भवनाथक वर्षी करबालै खोज पुर जाय पड़ैत छल, तेँ पूजाक दोसरे दिन खोजपुर चल गेलहुँ । अनुमान करैत छी जे नवरत्न गोष्ठीक सदस्य लोकनिक मनोबलकेँ तोड़बाक लेल नूतन छात्रसंघ एक षड्यन्त्र रचलक । खोजपुरमे हमर अनन्य बाल सखा मुनिजी, दरभंगामे आप्त सखा छीतन बाबू उक्त दूनू व्यक्तिकेँ परस्पर परिचय रहनि । तेँ मुनिजीक उक्तिसँ लिखल एकटा पोस्टकार्ड छीतनबाबूकेँ भेटलनि, ओहिमे लिखल छलैक-

श्रीछीतन बाबूकेँ इतः श्रीमुनिजीक नमस्कार ।

सूचना दैत परम दुःख होइत अछि जे चन्द्रनाथजी दरभंगासँ अबैत काल बाटेमे रद्द-दस्तसँ पीड़ित खोजपुर पहुँचैत-पहुँचैत दिवंगत भऽ गेलाह । अगिलग्गीमे जेना कुकड़ाहा उड़ि-उड़ि गाम भरि पसरि जाइत छैक तहिना ई समाचार चारू भाग पसरि गेलैक । आगाँ ई खेड़हा विस्तृत छैक, ताहि सभक उल्लेख विस्तारय-तारय भऽ जायत । निष्कर्ष एतबे जे हमर जे 'अमल' उपनाम छल ताहिमे सुमनजी 'ल' अक्षरकेँ 'र' अक्षर बना देलथिन । आब हम चन्द्रनाथ मिश्र अमर' भऽ गेलहुँ । आब तँ हमर जे परिचय संसार अछि । ताहिमे किछुए प्रतिशत व्यक्ति होयताह जनिका हमर मूल नाम जानल होइनि । हमरा एहि काण्डसँ अजस्त्र लाभ भेल । जनिका सबकेँ हमरा प्रति पहिने आक्रोश छलनि से सहानुभूतिमे परिवर्तित भऽ गेलनि ।

एहिमध्य सबसँ अधिक हताश-निराश भेलाह छीतन बाबू, हुनका अन्न-पानि किछु नहि सोहाइन । कर्मकाण्डी गुरूजी अर्थात् डॉ. श्रीगणपतिमिश्रक पितामह पं. पद्मग्नाभमिश्र छीतन बाबूकेँ आश्वासन देलथिन जे चन्द्रनाथक जे किछु रचना तकरा सबकेँ ताकि एकत्र करू, पुस्तकाकार छपयबामे जे खर्च लागत से हम देब । ओमहर दुर्गागंज महासभामे हमरो नाम पर शोक प्रस्ताव पारित भऽ गेल । हमरा तखन ज्ञात भेल जखन राजनगरसँ हमर मसियौत भाय भुट्टे भाइ, जनिक चर्चा कऽ चुकल छियनि, जिज्ञासामे अपन मौसा-मौसीसँ भेट करय हमर गाम पहुँचलाह । हमरा ज्वर भऽ गेल छल तेँ गाममे 15 दिन लागि गेल छल, तेँ हम गामेमे छलहुँ, ओ घोड़ासँ उतरलाह तँ हम प्रणाम कयलियनि । ओ विस्मित भऽ गेलाह । तखन एहि समाचारक प्रसारक प्रसंग

Scanned by CamScanner

पिताजीकेँ विस्तारसँ कहलथिन । हम दोसरे दिन दरभंगा आबि गेलहुँ, अयलहुँ कि तमासा बनि गेलहुँ, सभक उल्लेख सम्भव नहि अछि । सबसँ पहिने साढ़े आठ बजे रातिमे छात्रावासस्थ छात्र समूह हमरा संग सुमनजीक डेरा पर पहुँचलहुँ, संयोग एहन जे ताहि समय सुमनजी हमरा पर अपन सम्पादकीय टिप्पणी लिखने छलाह तकरे प्रूफ देखि रहल छलाह, हमरा देखि ओहि प्रूफकेँ फाड़िकऽ फेकि देलथिन । एहि प्रकरणकेँ एतहि समाप्त करैत छी ।

कर्मकाण्डी गुरुजीक चर्चा कऽ चुकल छियनि । हुनका प्रसंग किछु और चर्चा करैत छी । ताहि समय पिताजी प्रिन्सिपलक पदपर छलाहे । कर्मकाण्डी गुरुजी पिताजीक महाजन सेहो रहथिन । जखन अर्थ संकट होइनि तँ हिनकेसँ पैंच-पालट होइनि, तेँ आवागमन बनल रहनि । महाराज हुनक बदली राज स्कूलक हेड पण्डितक पद पर कऽ देलथिन । हाल ई भऽ गेलनि जे एतय विद्यालयमे अध्यापक लोकनिक हेतु गद्दी मसलंग लागल रहैत छलनि । स्नान भोजन कऽ 11 बजे आबथि आ विद्यालयेमे मध्याह्न विश्राम कऽ एक-आधटा छात्र एहि विषय सबमे रहैत छलथिन तनिका पढ़ाय 4 बजे चल जाथि । हाइस्कूलमे ठीक साढ़े 10 बजे जाउ, ठाढ़े-ठाढ़ पढ़ाउ । एतय पढ़यबाक माध्यम मैथिली ओतय हिन्दी ई और विकट समस्या । विद्यालयमे हिनका स्थान पर हटाढ़ रूपौली वासी पं. रघुनाथझाकेँ पदस्थापित कयल गेलनि । डेढ़-दू वर्ष घोर संकटमे रहलाह । एक दिन अपन व्यग्रतेँ पिताजी लालबाग गेलाह तँ विखिन्न भेल अपन संकट सुनौलथिन । पिताजी कहलथिन- एक दिन दरबार जाय श्रीमानकेँ अपन संकट कहियनु, किन्तु ओ बिनु बजौने दरबार कहियो नहि जाथि । पिताजीक आग्रह पर एक दिन गेलाह, महाराजसँ निवेदन करैत कहलथिन हम कोन अपराध कयल जे हमरा दण्ड स्वरूप अङरेजिया स्कूलमे बदली कऽ देल गेल ?

महाराज विस्मित होइत कहलथिन जे हम तँ सुविधाक दृष्टिएँ अपनेकेँ राज स्कूल बदली कऽ देल जे ई घरक अति समीप अछि, विद्यालय दूर पड़ैत अछि । अपनेकेँ असुविधा होइत अछि तँ तुरन्त बदली कराय दैत छी । एहि मध्यावधि मे हम सब किछु-किछु रघुनाथ बाबूसँ पढ़ि ली । पं. पद्मनाम मिश्र जेहने प्राचीन परम्पराक पोषक रघुनाथ बाबू तेहने आधुनिकताक संवाहक । ई राजाबहादुरक दरबार जाथि । हमर वरीय मित्र कामेश्वर झा 'कुसुम' हिनके डेरामे रहैत छलाह । रघुनाथ बाबूक अनुज शिवनाथजी समवयस्क मित्र रहथि, जाहि कारणेँ हमरो आवागमन अधिक काल बनल रहय । हम जखन अल्हुआष्टक शीर्षक एक कविता लिखलहुँ तँ हुनके डेरामे कुसुमजीकेँ सुनबैत रहियनि तखने रघुनाथ बाबू बाहर सँ आबि गेलाह, गुरूवर्गक धाख होअय तेँ चुप भऽ गेलहुँ, ओ शुरूसँ पुनः दोहराबय कहलनि । हम धखाइत सम्पूर्ण कविता सस्वर सुनाय देलियनि । एक बेर फेर सुनाउ । हम दोहरौलहुँ तँ पुछलनि-अन्तिम पदसँ अहाँक तात्पर्य

Scanned by CamScanner

की अछि ? अन्तिम पद छैकः-

माखन मिसरीकेँ देलनि छोड़ि
स्नेहक बन्धनकेँ लेलनि तोड़ि
हमरासँ पुरना प्रेम जोड़ि
रहलाह ताकि सब खेतकोड़ि
मन्दिरक थिका घनश्याम हमर,
पतिराखन अल्हुआ नाम हमर ।

हम अपना जनैत एकर व्याख्या कयलहुँ । स्मरण कराय दी जे ई कविता 1942 मे लिखने छलहुँ, द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त प्राय छलैक, देशमे अकाल पड़ल छलैक । मान्यता छैक जे त्रेता युगमे एहने अकाल पड़ल छलैक तँ राजा जनक हर जोतने रहथि जाहिमे सीता प्रकट भेल छलथिन । ओहिवर्ष बड़का-बड़का हवेलीमे अन्नक अभावमे लोकके प्राणरक्षाक हेतु अल्हुआक शरण लेबय पड़ल छलैक । कतोक मन्दिरमे भगवानकेँ भोग लगयबा लै अल्हुआ देल जाइनि । हम रघुनाथ बाबू गुरूजीकेँ व्याख्या करैत कहने छलियनि- सीताक उत्पत्ति भूमिसँ आ अल्हुओक उत्पत्ति भूमिएसँ, अतः सीतासँ अल्हुआकेँ सोदर भायबहिनक सम्बन्ध, तेँ अल्हुआ रामक सार भेलनि, तेँ हम लिखलिऐक- 'हमरा सँ पुरना प्रेम जोड़ि' आ एही सम्बन्धेँ अल्हुआ गर्वसँ कहैत अछि- 'मन्दिरक थिका घनश्याम हमर' गुरुजी पीठ ठोकि देलनि तथा अपेक्षासँ अधिक प्रसन्नता व्यक्त करैत कहलनि हम अहाँकेँ एकदिन राजाबहादुरक दरबारमे लऽ जायब । दू-तीन दिनक बाद हमरा एक दिन लऽ गेलाह, ओतय अल्हुआष्टक कविता गाबि कऽ सुनौलियनि, दरबारमे गुरुजी अन्तिम पदक जे तात्पर्य हम कहने रहियनि तकरा आरो प्राञ्जल भाषामे सबकेँ कहलथिन । आत्म प्रशंसा नहि मानी तँ कहब जे ओहि दिनक दरबार राजाबहादुरक दरबारक मोसाहेब सबमे लोक प्रिय बनाय देलक । हम रघुनाथ बाबूक कृतज्ञ भऽ गेलियनि । एहि कृतज्ञताक मूल्य कोना चुकौलियनि तकरो उल्लेख कऽ दी ।

ई घटना 1945क थीक । रघुनाथ बाबू राज स्कूलक हेड पण्डितक पद पर बदली भऽ आबि गेल छलाह । हुनका कन्यादान छलनि । स्कूलसँ मास-दूमासक अवकाश चाहियनि । हेड मास्टर छलथिन एन्. के. घोष, ओ बड़े कड़ा प्रशासक । छुट्टीक आवेदन देला पर कहलथिन जे जाधरि स्थानापन्न दोसर पण्डित ताकि कऽ नहि दऽ देब ताधरि छुट्टी नहि भेटत । मार्च मास रहैक, हम आचार्यक अन्तिम वर्षक परीक्षार्थी रही । रघुनाथ बाबू हमरा अपन समस्यासँ अवगत करबैत कहलनि अहाँ परीक्षा दऽ कऽ हमर सहायता कऽ सकैत छी । गर्मीछुट्टी होयबा धरि हमरा बदलामे आबि कऽ पढ़ाय दिऐक तखने हमरा छुट्टी भेटत । हम स्वीकार कऽ लेलियनि । जहाँ धरि स्मरण अछि

Scanned by CamScanner

एकैस मार्चकेँ हम परीक्षा दऽ मुजफ्फर पुर सँ घुरलहुँ तकर प्राते रघुनाथ बाबू हमरा एन्.के.घोषक समक्ष उपस्थित कयलनि । छात्रावस्थामे धोती-कुर्त्ता परिधान रहबे करय, अध्यापक रूपमे देह पर तौनी लऽ लेबय कहलनि । हुनको यैह परिधान रहनि । ओहि दिन जे परिधान धारण कयल से हमर स्थायी भऽ गेल । एखनुक एक घटना कहि दी । एक दिन एक पत्रकार कोनो विषय पर हमर अभिभत बुझबाक हेतु साक्षात्कार करय अयलाह । हम गंजीए पहिरने हुनक प्रश्नक उत्तर दैत रहियनि, अन्तमे कहलनि- एक चित्र भी लेना है, कृपया आप कपड़ा पहन लें । हम कुर्त्ता पहिरि लेल, ताहिपर कहलनि- मैं पूर्णत: अमरजी का चित्र लेना चाहता हूँ और बिना चादर के अमरजी पूर्ण नहीं होते हैं । ओ एतबा कहि हँसैत रहलाह, हम कोठली आबि तौनी वामकान्ह पर राखि लेल, ओ फेर टोकलनि, इतनेसे काम नहीं चलेगा, फुलफार्ममे आना पड़ेगा, दायेँ काँखके नीचे घुमा कर चादर के छोर को वायेँ कन्धे पर डालने के बाद फुलफॉर्म होता है । कहियो रघुनाथ बाबूक आदेश सँ लेल तौनी आइ हमर परिचिति बनि गेल अछि ।

कहि रहल छलहुँ राज स्कूलक प्रसंग । 22 मार्च 1945 सँ हम राजस्कूलमे अध्यापन आरम्भ कयल । एही अवधिमे सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ.बी.झा, सुप्रसिद्ध कथाकार ललित, गुमनाम बायोलॉजी शिक्षक दिवानाथ मिश्र आदि हमर छात्र रहलाह । विषादक विषय जे तीनू गोटे हमरा जीविते स्मृति शेष भऽ गेलाह । एक जानकारी और दऽ दी जे छात्र जीवनमे हम उच्छृंखल मानल जाइत रही, हमर शुभेच्छु लोकनिकेँ हमरासँ घोर निराशा रहनि । बहुतो गोटे तँ एतेक धरि टिप्पणी करथि जे ई बूढ़ा गुरुजीक नाक कटौथिन । एतबा बात हम आइओ स्वीकार करैत छी जे अपन अंकन अपन वस्तु स्थितिसँ बेसी करैत छलहुँ, दोसरक परामर्शकेँ अपना बुद्धिक सोझाँ मोजर नहि दैत छलिऐक, किन्तु एहन काज कोनो नहि कयल जे स्वयं कलंकित होइ वा कुलकेँ कलंक लागय । अनुशासन बन्धनसँ छिटकल रहय चाहैत छलहुँ । 1941सँ शिक्षक जीवन आरम्भ करबासँ पहिने धरि राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघक शाखामे नित्य भाग लैत रहलहुँ जे अनुशासन प्रिय बनबामे सहायक भेल । सम्पूर्ण रूपमे शिक्षकक जीवनतँ 11 अगस्त 1947सँ महारानी लक्ष्मीवती एकेडमी, लहेरियासरायसँ आरम्भ भेल, किन्तु पहिले पहिल राजस्कूलमे स्थानापन्ने रहलहुँ तथापि एन्.के. घोष सन कठोर प्रशासकक अधीनता सेहो एहिमे योगदान कयलक तकर आभास पछाति भेल ।

मासक अन्तमे 8 वा 9 दिनक वेतन लेबा लै जखन स्कूलक किरानी बाबू हमरा बजौलनि तँ हम ई कहैत ओ लेब अस्वीकार कऽ देलियनि जे हम अपन गुरुजीक सहायतार्थ हुनक काज कऽ दैत छियनि, हुनका कन्यादान छनि, अत: वेतन हुनके देल जाइनि । किरानी बाबू घोषसाहेबकेँ जा कऽ कहलथिन तँ ओ विस्मय-विमुग्ध भेल हमरा बजौलनि, हम ओही बातकेँ दोहरबैत कहलियनि जे हम एहि सेवाकेँ अपन प्रशिक्षण

Scanned by CamScanner

मानैत छी, हमरा अपने एकटा टेस्टिमोनियल जयबाक दिनमे दऽ देल जायत जे भविष्यमे सहायक होयत आ तकरे हम अपन वेतन मानि लेब । हुनक ओ प्रशंसा पत्र एखनहु हमरा लग अछि । ओना ओकर उपयोग करबाक आवश्यकता हमरा नहि भेल । रघुनाथ बाबू स्कूलमे गर्मी छुट्टी होयबासँ एक दिन पूर्व कन्यादान यज्ञ सम्पन्न कऽ अयलाह आ योगदान कयलनि, घोष साहेब हमरा प्रसंग सब बात कहलथिन आ हमरा बजबाय टाइप कयल प्रशंसा-पत्र मुस्कुराइत हाथमे दऽ देलनि । हम जाइत देरी हुनका समक्षे रघुनाथ बाबू केँ झुकि कऽ प्रणाम कयलियनि तँ करुणार्द्र दृष्टिएँ हमरा दिस तकैत जोरसँ माथ ठोकि देलिन । ई हो जनाय दी जे ओ एकरा आजीवन स्मरण रखलनि आ घोष साहेबकेँ सेहो हमरा प्रति नीक धारणा भऽ गेलनि, से तखन बुझबामे आयल जखन हम एम.एल. एकेडमीक छात्रावास अधीक्षक भऽ लहेरियासराय गेलहुँ, तँ हुनक मकान स्कूलक समीपे छलनि, एक दिन प्रातः काल टहलैत आबि कऽ हमरा अपन कन्याकेँ संस्कृत पढ़ाय देबाक अनुरोधक कयलनि, हम छात्रावासमे अनुशासन बनाय रखबाक हेतु समयाभावक कारणेँ स्वीकार नहि कयलियनि ।

एहि अवधिमे आचार्यक परीक्षा फल प्रकाशित भेलैक । हम द्वितीय श्रेणीमे अपन रौलनम्बर तकैत रहलहुँ, प्रथम श्रेणी आइ धरि भेले ने छल तेँ ताहिमे तकबाक प्रवृत्तिए ने भेल । मन बहुत उदास भऽ गेल, चिन्तामे डूबल रही, ता छीतन बाबू आर्यावर्त्त लेने प्रथमश्रेणीमे हमर रौल नम्बरमे लाल चिह्न लगौने उल्लसित भेल अयलाह आ कहलनि आइ भरिपेट मोतीचूरक लड्डू खोआबय पड़तह, तोरा फस्ट डिवीजन भेलह आ आर्यावर्त्त सोझामे पसारि देलनि । पेटमे प्राण पलटल । हम बड़का भाइकेँ जाय प्रणाम कयलियनि आ सामान्य शिष्टाचारक अनुसार पूछि बैसलियनि जे आब आगाँ की करू ? घन गम्भीर स्वरमे कहलनि- से हमरासँ की पुछैत छी ? हमर कहल अहाँ कहिया मानलहुँ जे अहाँकेँ परामर्श दिअऽ । हम तँ कहब जे पण्डित होयबाक हेतु न्याय पढू । हम कहलियनि अमुक अध्यापक तँ व्याकरण, न्याय, मीमांसा सबमे आचार्य छथिआ 30/टाका मासिक पर कतेक वर्ष सँ खटि रहल छथि । बड़का भाइक सोझाँ -सोझी मुँह लागल उत्तर देबे हमर दुःसाहस छल । गरजि कऽ कहलनि- से तँ हम पहिनहि कहि देलहुँ जे अहाँकेँ अपना जे फुरत सैह करब । हम चुप्पे मूड़ी निहुरौने ओतयसँ चलि देलहुँ ।

बड़का भाइ हमर अनिष्ट सोचताह से तँ कल्पनो नहि कयल जाय सकैछ । वस्तुस्थिति ई छलैक जे घनघोर आस्थावादी ओहि युगक एहि ठामक लोककेँ संसारमे होइत युगपरिवर्त्तनक आभासे नहि छलैक । विश्वास तँ ई रहैक जे 'महेश तनयद्रोही स्वर्गारोही भविष्यति । तेँ नवपरिवर्तनक अनुरूप विशेषतः ब्राह्मण वर्गमे एको व्यक्तिक नाम लऽ सकैत छी जनिक नाम राष्ट्रिय क्षितिज पर चर्चित अर्चित होइनि ? उत्तर भेटत, नहि । एहि ठाम अर्थात् मिथिलामे सर्वशक्ति सम्पन्न मिथिलेश छलाह जे अखिल भारतीय जमीन्दार महासभाक अध्यक्ष छलाह । जमीन्दारी उन्मूलनक विरुद्ध सुनल अछि प्रिवी

Scanned by CamScanner

काउन्सिल धरि लड़लाह आ अन्तमे हारि गेलाह । एतबे नहि, लोक सभाक प्रथमे चुनावमे श्यामनन्दनसिंह सदृश सामान्यलोकसँ पराजित भऽ गेलाह । यद्यपि छोट मुँह, पैघ बात कहब होयत, तथापि हमरा जनैत महाराजक परामर्शदाता लोकनि सेहो दूरदर्शी नहि छलथिन, तेँ किला बनबाय दरभंगा राजकेँ खुदसर स्टेटक पंक्तिमे अनबाक परामर्श देलथिन । एही ठाम राम गढ़क राजा कामाख्या नारायण सिंह जमीन्दारी उन्मूलनसँ पहिनहि सम्पूर्ण सम्पत्ति प्रजावर्ग मे वितरित कऽ सम्पूर्ण छोटा नागपुरमे अपन स्वतन्त्र क्रान्ति दल बनाय सब सीट पर जाधरि जीलाह जितिते रहलाह । एकर उल्लेख हम अपन पत्रकारिताक इतिहासमे सेहो कयने रही, किन्तु छपबाक समयमे एहि अंशकेँ छाँटि देल गेलैक ।

वामपन्थी विचारधाराक कुण्डसँ चुरूमे जल लऽ 'अपवित्रः पवित्रोवा' कयनिहार बुद्धिक अजीर्णताक संक्रामक रोगसँ ग्रस्त लोककेँ ई कथन सामन्ती मानसिकतासँ सम्बद्ध प्रतीत होयतनि, किन्तु ई सर्वथा सत्य थीक जे प्रजाक हितमे महाविद्यालय, विद्यालय, टोल पाठशाला संचालित छल, दरभंगा, लोहना, सरिसब, राजनगर, लक्ष्मीपुर, कपिलेश्वर स्थान आदि एकर साक्षी अछि । आधुनिक शिक्षामे मिथिलांचल पछुआयल रहल तथापि जखन एहि दिस अभिमुख भेल तँ ताहि दिनुक तिरहुत डिबीजन भरिमे सर्वप्रथम इंगलिश हाइस्कूल राज स्कूल दरभंगेमे स्थापित भेल, पछाति राजनगर, पण्डौल, सरिसब आदि ठाम हाइस्कूल स्थापित कयलक । आइ दरभंगाक मेडिकल कॉलेज एतेक विस्तार पौने अछि, एकरो मूल मेडिकल स्कूलकेँ पटनासँ दरभंगा अनबामे राज दरभंगेक योगदान छैक । टेक्निकल स्कूल एकरे अवदान थिकैक ।

आइ एतेक पैघ अस्पताल भेल अछि, किन्तु एकर विकाससँ पहिने राज दरभंगेक अस्पताल छलैक । राज दरभंगाक जतेक सर्कल छलैक सबठाम राजक दातव्य औषधालय छलैक जतय आयुर्वेदिक चिकित्सक नियुक्त रहैत छलाह । अनेक महाराजी पोखरि कतोक महाराजी बान्ह एखनहु एहि नाम जानल जाइत अछि । कृष्णपक्ष तँ सबकेँ सुझलैक, शुक्लपक्ष दिस लोक आँखि उठाकऽ नहि तकलक । शोषण सुझलैक, पोषणकेँ नहि देखलक । दूषणक चर्चा सब कयलक, भूषण बाँतर बुझयलैक । अवगुणकेँ खोधि-खोधि तकलक, गुणकेँ गोबर-माँटि तर तोपि देलक । तकरे प्रतिफल छल लोकसभाक निर्वाचनमे पराजय । एहि सभक उल्लेखसँ हमर तात्पर्य ई नहि अछि जे हम अन्यान्य लोकसँ बेसी बुधियार छी अथवा सामन्तवादक हम समर्थक छी, तात्पर्य एतबे जे एहि ठाम अदूरदर्शिता व्याप्त रहलैक से एखनहु छैक । आब तँ मैथिलीकेँ सांविधानिक मान्यता भेटना 6 वर्ष भऽ गेल, एको टा प्राथमिक स्कूल मैथिली माध्यमसँ स्थापित भऽ सकल अछि ? मानल जे विकासक अन्यान्य अनेक द्वार उद्घाटित भेल अछि, किन्तु मातृभाषाक जड़ि क्रमहि उच्छिन्न भऽ रहल अछि, तकरा जँ नहि बचायब तँ छिन्ने मूले नैव शाखा न पत्रम् । फेर की कहैत की कहय लगलहुँ ।

Scanned by CamScanner

हम जहिया व्याकरणाचार्य परीक्षा उत्तीर्ण भेलहुँ तहिया गदहपचीसी सेहो नहि बीतल छल, न्याय-मीमांसा आदि दर्शन शास्त्र सब दिस कनेको रुचि नहि छल । स्वतः प्रवृत्ति छल साहित्य दिस, तेँ बड़का भाइक परामर्शक अवहेलना करैत साहित्य पढ़बाक हेतु प्रवृत्त भऽ गेलहुँ । एहिसँ क्यौ गोटे ई धारणा नहि बनाय ली जे हम साहित्यमे पण्डित भऽ गेलहुँ । पाण्डित्य हमरासँ कोसो दूर रहल । हमरा ने छन्दक ज्ञान भेल ने अलंकारक, शास्त्रेषु भ्रष्टाः कवयो भवन्ति' एहि उक्तिक प्रत्यक्ष उदाहरण भऽ गेलहुँ तथापि समाज हमरा सम्मान देलक, आदर कयलक, जकर अधिकारी छलहुँ नहि । ई पहिनहु कहने छी पुनः कहैत छी आ एहीसँ अनुभव होइत अछि जे पाण्डित्यक कतेक अवमूल्यन भऽ गेलैक अछि ।

हम छी आस्थावादी जीव, पूर्वजन्मार्जिता विद्या, पूर्वजन्मार्जितं धनम्' सदृश वचनपर पूर्ण आस्था अछि, तकरे प्रतिफल मानि रहल छी । जाहि बड़का भाइक परामर्शक अवहेलना कयलियनि सैह बड़का भाइ मिथिलेश कामेश्वर सिंहक निधन भेला पर हमरा बजाय शोकमूलक कविता लिखय कहलनि आ ओही कविताक आधार पर श्राद्धमे आमन्त्रित गुणी लोकनिक सूचीमे एहू अल्पज्ञक नाम अंकित भेलनि । कन्यादान फिल्ममे पर्दापर उतरबाक बाध्यता भऽ गेल तखन जाहि बड़का भाइक भय मनमे समायल छल से बड़का भाइ बम्बइसँ घुरला पर हृष्ट हृदयसँ आशीर्वाद देलिनि, जकर उल्लेख 'कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा'मे कयने छी । एहन छलनि हुनक मातृभाषाक प्रति अनुरागक प्रमाण ओ परिमाण अन्यथा ओ हमरा गंजन करितथि । राजपण्डित जीक प्रसंग कहि चुकल छीजे हुनका संस्कृत पण्डित सभक विपन्नता पर सतत ध्यान रहैत छलनि । एहि प्रसंग दू टा घटना मन पड़ि गेल अछि तकरो उल्लेख करब, ताहिसँ पहिने ई कहि दी जे संस्कृत शिक्षा मुख्यरूपेँ ब्राह्मणे समाज ग्रहण करैत रहल । आधुनिक युगमे अर्थोपार्जन हेतु शिक्षाकेँ महत्त्व देल जाइत छैक, पछिलो शताब्दीधरि ज्ञानार्जन शिक्षाक उद्देश्य छलैक, अर्थोपार्जनकेँ भाग्यक संग जोड़ल जाइत छलैक फलतः संस्कृत पण्डित आर्थिक दृष्टिएँ विपन्न रहैत छलाह, यद्यपि आब ओहि स्थितिमे परिवर्त्तन भेलैक अछि ।

राज दरभंगाक दिससँ कोनो विशेष शुभकार्यक अवसर पर सब शास्त्रमे एक विशेष परीक्षा होइक, छात्रक नहि, पण्डित सभक, जाहिमे उत्तीर्ण भेलापर प्रमाण-पत्र स्वरूप पण्डितकेँ धोती देल जाइनि तेँ ओहि परीक्षाकेँ धौत परीक्षा कहल जाइक । उपनयन, श्राद्ध आदि अवसर पर गुणीक रूपमे पण्डित लोकनिकेँ समाजक समृद्ध लोकनि सादर आमन्त्रित करथिन ताहिमे हिनका लोकनिकेँ प्राथमिकता देल जाइनि । ई धौत परीक्षा अन्तिम बेर महाराजकुमार जीवेश्वर सिंहक उपनयनक अवसर पर भेल रहैक जाहिमे हमर वरीय मित्र कामेश्वरझा 'कुसुम' मैथिली विषय लऽ सम्मिलित भेल छलाह, यद्यपि उत्तीर्ण नहि भेलाह, तथापि मैथिलीक उन्नति चाहनिहार लोकनिकेँ एहि विषयक प्रसन्नता भेलनि जे संस्कृत शास्त्र सभक पंक्तिमे मैथिलीकेँ स्थान तँ भेटलैक ।

Scanned by CamScanner

आब दू गोट घटनाक प्रसंग सूनू । महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह अपना समयमे दू गोट वायसरायकेँ बेराबेरी दरभंगा अयबाक हेतु आमन्त्रित कयने छलथिन । प्रथम, लार्ड विलिंडनकेँ, जनिक पत्नीक नाम पर राज दरभंगाक जे पुरना अस्पताल छलैक तकर विस्तृत भवनक नामकरण भेलैक आ हुनके हाथेँ तकर उद्घाटन भेल छलैक । ताहि अवसर पर धौत परीक्षोत्तीर्ण शतशः पण्डितकेँ वायसराय अर्थात् बड़ा लाट, अर्थात् बृटिश राज्यक सर्वोच्च पदाधिकारीक स्वागत करबाक हेतु आमन्त्रित कयने छलथिन । निश्चित संख्या तँ नहि कहि सकैत छी, एहिसँ अनुमान लगाओल जा सकैछ जे सम्प्रति महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक मूर्ति जाहि चौरंगीपर स्थापित छनि ताहि ठामसँ एखन जे राज अस्पताल छैक तकर मुख्यद्वार धरि सड़कक दूनू कात एक रंग परिधानसँ सुसज्जित पण्डित लोकनिक पंक्ति लागल छलनि । एक रंग परिधानकेँ गणवेष सेहो कहि सकैत छिऐक जकर व्यवस्था राज दिससँ कयल गेल छलैक । तकर स्वरूप रहैक कपड़ाक मिलसँ बहरायल उज्जर दपदप धोती, कारी रंगक चपकन, ताहिपर पीताभ रेशमीतौनी, माथपर कोकटी पाग, उज्जर पैताबा पर हाफ कारी रंगक जूता । चौरंगीसँ अस्पतालक फाटक गोटेक सय गज अवश्य होयतैक, ताहिहिसाबेँ कमसँ कम दूसय विद्वान पंक्तिबद्ध ठाढ़ रहथि । केहन मनोरम दृश्य लगैत छल होयतैक से कल्पना कऽ सकैत छी, हम तँ तकर प्रत्यक्षदर्शी छी । राज अस्पतालक सामने जे एखन एकटा जर्जर मकान छैक ताहीमे विद्यालय रहैक, हम सब छात्रवर्ग चानन ठोप कयने पंक्तिबद्ध ठाढ़ रहबाक आदेशक पालन करैत रही ।

बड़ा लाटक आवास यूरोपियन गेस्ट हाउसमे रहनि । सम्प्रति ओहिमे हमर अनुज साहित्यकार श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद' ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालयक वित्त पदाधिकारीक हैसियतसँ रहि रहल छलाह । ओही ठामसँ एकटा मुण्डा 'कार' मे महाराजाधिराजक संग लॉर्ड विलिंडन, ओहने दोसरकारमे राजा बहादुरक संग लेडी विलिंडन अस्पताल भवनक उद्घाटन हेतु बहरयलाह । चौरंगीसँ अस्पतालक गेट धरि दुबगली गणवेषमे पंक्ति बद्ध पण्डित सबकेँ ठाढ़ भेल देखि चकित होइत कारमे अपनहुँ ठाढ़ भऽ गेलीह आ पाग दिस इशारा करैत राजा बहादुरकेँ पूछि देलथिन । ई सब के थिकाह ? राजा बहादुर कहलथिन– सब मैथिल संस्कृत पण्डित थिकाह, माथ पर पागथिकनि । बहुत प्रसन्न मुद्रामे आश्चर्यित होइत आ थपड़ी बजबैत अपन प्रसन्नता व्यक्त करैत कहलथिन– ई मैथिल 'फाग' सनेसमे हम एकटा अपना संग लऽ जायब ।

ई सब बात राजा बहादुरक पार्षद लोकनिक मुँहेँ सुनल अछि, दृश्य मुदा, आँखिक देखल अछि । फीता कटबासँ पूर्व यजुर्वेदीय मन्त्रसँ शान्ति पाठ भेलैक तकर बाद सामवैदिक गुरूजीक सामगानसँ सम्पूर्ण परिसर गुंजायमान होइत रहैक । ओमहर कोनो सुगन्धित तरल पदार्थक झिस्सीक वर्षा जकाँ सम्पूर्ण परिसरकेँ सुरभित कऽ देलकैक ।

Scanned by CamScanner

बड़का भाइक गणमे एक यद्दूबम नामक अनुष्ठानी शंख ध्वनि कयलनि । लेडी विलिंडन एहि सब चमत्कारसँ अद्भुत रसमे उबडुब करय लगलीह ।

आमन्त्रित पण्डित लोकनिकेँ वस्त्र सब भेटिए गेल रहनि । चङेरा नहि, भरि-भरि धामी पँचमेर मधुर, खाजा, मुंगबा, यात्रा व्ययक अतिरिक्त नगद विदाइ भेटलनि । जय जयकार महाराजक आ सुयश बड़काभाइकेँ भेटलनि, कारण पण्डित वर्गक एहन प्रदर्शनक परामर्श हुनके देल रहनि ।

एहि प्रसंग पिताजीक एक विनोदपूर्ण वार्त्तालापक चर्चा सेहो करब ।

उपर्युक्त पण्डित सभक गणवेषमे संस्थाक प्रधान सभक हेतु किछु विशेष प्रावधान छलनि, धोतीक स्थान पर चुस्त पायजामा आ हाफ जूताक स्थानमे फुल जूता । पिताजीक समवयस्क पं. पद्मनाभमिश्र तथा ज्यौतिषी नित्यानन्द मिश्र रहथिन, एहि दूनू गोटेसँ यदा-कदा परस्पर विनोदवार्त्ता होइनि । ओहि दिन पिताजीकेँ ओहि परिधानमे देखि कर्मकाण्डी गुरूजी पूछि बैसलथिन की और प्रेन्सपल, ई जुत्ता ? पिताजी तुरन्त उत्तर देलथिन- साधारण लोकक स्वागतमे नहि ने आयल छी, बड़ा लाटक स्वागतमे जुत्तो तँ मजगूते चाही ।

दोसर बेर लार्ड लिनलिथगो वायसराय आयल रहथि, अवसर की रहैक से नहि मन पड़ैत अछि । एहन विशिष्ट नहि, तखन बहुत छोटो नहि, ताहूमे पण्डित समाज एहिना सत्कृत भेल छलाह । महाराज कुमार जीवेश्वर सिंहक उपनयन आ जहिया कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापनाक निमित्त राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसादकेँ लक्ष्मीश्वर बिलास पैलेस अर्थात् आनन्दवाग समर्पित कयलथिन, ताहू अवसरपर विद्वद्वर्गक समागममे भेल छलनि । पण्डितवर्गकेँ सम्मानित करबाक सत्परामर्श महाराजकेँ बड़के भाइ अर्थात् राजपण्डिते जी दैत छलथिन तेँ पं. पद्मनाभमिश्र कहल करथिन जे बलदेव मिश्र राजपण्डिते नहि पण्डितराज सेहो छथि ।

कनेक टा बात ईहो कहि दी जे पण्डित लोकनिक ओहि गणवेषक देखा देखी 1942मे हमरा लोकनि व्याकरणक शास्त्रीक परीक्षा देअय 31 गोटे मुजफ्फरपुर गेल रही तँ एकतीसो गोटे कारीकारी चेक वला कपड़ाक एके रंगक हाफशर्ट सियौलहुँ जे मुजफ्फर जिला स्कूलमे प्रदर्शनीक रूप धारण कऽ लेलक ।,

यद्यपि दरभंगाक साहित्यिक मंच पर हम आबि गेल रही, किन्तु मैथिलीमे मंच छलैके कोन ? लऽ दऽ कऽ मैथिल महासभा जे हरिसिंहदेवीय सीमा रेखामे आबद्ध, अधिवेशनो नियमित नहि रहैक । हिन्दीक मंच रहैक, तुलसी जयन्ती, भारतेन्दु जयन्ती, जयशंकर प्रसाद जयन्ती आ पुस्तकालय आन्दोलन जोर-शोर सँ चलैत रहैक । ताहि अवसर सबपर कवि सम्मेलन होइक, हिन्दीओमे रचना करैत रही, कवितामे दम रहल हो वा नहि, किन्तु सुकण्ठ रहलाक कारणेँ सस्वर पाठ करी आ से उपस्थापन बेजाय नहि होअय

Scanned by CamScanner

संगहि चश्माक आत्मकथा तथा अल्हुआष्टक ई दू टा हथियार मैथिलीक रहय । परिणामत: हिन्दी कविता पाठक बाद हास्य रसात्मक कविताक आग्रह होअय, तेँ जेना पचीसीमे दोमड़ि दस भेला पर चारू गोटीक पवहारि भऽ जाइत छैक से हमरा भऽ जाय । एकरा आत्म प्रशंसा बूझी अथवा वस्तुस्थितिक उल्लेख, हम अपना जनैत लोकप्रियताक कारणक उल्लेख मात्र कयलहुँ अछि ।

मैथिल महासभाक अधिवेशनमे पिताजी सेहो जाथि । 1937मे सरिसब मे महासभाक अधिवेशन भेल रहैक जाहिमे पिताजीक संग पहिले पहिल गेल रही, सेहो सरिसबक लड्डु बड़ नामी रहैक ताही लोभेँ । सरिसब गाम नामक थिकैक से नहि बुझैत रहिऐक । साहित्य रत्नाकर मुंसी रघुनन्दनदास तथा बाबू भोलालालदासकेँ पहिले पहिल ओतहि देखने रहियनि । तावत कवि-तवि नहि भेल रही, किन्तु कविता पाठ जे भेल रहैक ताहिमे महावीरझा 'वीर'क कविता बड़ नीक लागल रहय से पद विन्यासक कारणेँ नहि, से सब बुझितो नहि रहिऐक, हुनक नाटकीय उपस्थापन बालमनकेँ आकृष्ट कयने रहय । भोजनक समय लड्डू माङि कऽ खयने रही सेहो स्मरण अछि ।

विशुद्ध मैथिली मंच पर कविता पाठ करबाक प्रथम अवसर हमरा मनीगाछीमे 1944क मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशनमे भेटल छल । मधुपजीसँ परिचय तँ सुमनजीक डेरेसँ छल, किन्तु एक मंचसँ संग-संग कविता पाठ करबाक प्रथम अवसर छल । मित्र प्रवर श्रीचन्द्रभानुसिंहसँ पहिल परिचय एतहि भेल, भाइ चन्द्रभानुजी 'कहियोने हो भोला बाबा एहन पीड़ा भेल' कवितापर श्रोता वर्गसँ खूब थपड़ी हँसोथने रहथि, मुदा परिषद पर जाहि वर्गक वर्चस्विता छलैक ओहि वर्ग द्वारा 'हूट' करबाक चेष्टा भेल रहनि । कोसीक बाढ़िक विभीषिका पर एहन चित्ताकर्षक कविता कमसँ कम दू दशक धरि कविसम्मेलन सबमे श्रोताक दिससँ सुनयबाक आग्रह होइत रहलनि । ताहि दिनसँ आइ धरि हिनका संग भेल मैत्री दिनानुदिन दृढ़सँ दृढ़तर होइत गेल अछि । 1944मे एक वर्ग विशेष द्वारा जनिका भाषाक विशुद्धताक नाम पर धकिअयबाक चेष्टा भेलनि, 60 वर्षक बाद साहित्य अकादेमी द्वारा तनिके रचित 'शकुन्तला' महाकाव्य पुरस्कृत भेलनि जे सिद्ध करैत अछि जे भाषा पर ककरो बपौती नहि होइत छैक ।

यद्यपि ई बहुचर्चित घटना थिकैक, जे वर्त्तमान छथि तनिका हेतु नहि, मुदा भविष्यक पीढ़ीक हेतु प्रसंगवश एकर चर्चा बेसी अनुपयुक्त नहि होयत । सी.एम. कॉलेजक कामेश्वर भवनमे मैथिलीक कोनो आयोजन छलैक । ने अवसर मन अछि, ने वर्ष, ई कोनो इतिहासो नहि थीक जे से आवश्यक मानल जाय । उक्त आयोजनमे हास्य सम्राट प्रो. हरिमोहनझा भाषाक विशुद्धताक प्रसंग एकटा संस्मरण सुनौलथिन । कहलथिन-एक व्यक्ति हमरा पर आक्षेप करैत कहलनि- प्रो. साहेब अहाँ मैथिलीकेँ चौपट्ट कऽ रहल छिऐक । खेड़हीकेँ मूंग, घाठिकेँ वेसन, नेनुकेँ मक्खन आ लाडुकेँ लड्डू लिखैत

Scanned by CamScanner

छिऐक । हम उत्तर देलियनि– खेड़हीक घाठिमे नेनु मिलाय जे लाडु बनायब तँ सोति पुराक पंचकोसीसँ बाहरक लोकक कण्ठेमे लसकि जयतैक । तखन कओलेजमे पढ़लासँ नओलेज ततेक भए जाएत जे हओलमे शओल ओढ़ि फुटबओल खेलाय लागब । ई प्रसंग उद्धृत करबाक उद्देश्य हमर ई अछि जे ने कृत्रिमतासँ भाषाकेँ सुरक्षित राखि सकैत छी ने अति उदारतासँ, सम्प्रति जलपान, जलखै, पनिपिआइ एकार्थक तीन शब्दक अछैत हम सब 'नाश्ता' शब्दक प्रयोग करैत छी । एहिसँ मैथिलीक शब्द सम्पदा क्रमशः क्षीण भऽ रहल अछि । मैथिलीक जे अभिव्यक्ति सामर्थ्य छैक से एकर मौलिक शब्दावलीक प्रसादेँ, तकर प्रयोग जँ साहित्यकारे लोकनि नहि करताह तँ जनसामान्यसँ आशा करब दुराशा मात्र होयत । एखन आवश्यक ई अछि जे जनपदीय शब्दावली जे छिड़िआयल अछि तकरा समेटि वृहत् शब्दकोषक निर्माण हो, तकर विपरीते भऽ रहल अछि जे चिन्तनीय थीक ।

1946मे हमरा जीवनमे तीन गोट विशिष्ट घटना घटित भेल । पहिल हमर प्रथम कविता संग्रह 'गुदगुदी' प्रकाशित भेल आ राजनगर मैथिल महासभाक अधिवेशन मे पहिले दिन 200 प्रति बिकाइओ गेल जे बहुत प्रोत्साहित कयलक । दोसर घटना ओहीवर्ष मैथिली साहित्य परिषदक मधुबनी अधिवेशनमे संयुक्त मन्त्री पदक चुनाव लड़लहुँ आ विजय भेल जे साहित्य क्षेत्रमे क्रियाशील रहबामे सहायक भेल । तेसर घटना मिथिलामे प्राच्यविद्या सम्मेलन हो ताहिहेतु नागपुरमे जे प्राच्य विद्या महासम्मेलन आयोजित रहैक ताहिमे प्रस्तावित मिथिला विश्वविद्यालयक दिससँ आमन्त्रण पत्र लऽ एक शिष्ट मण्डल गेल रहैक । ओहि शिष्ट मण्डलमे प्रयागसँ म.म.डॉ. उमेश मिश्र तथा डॉ. जयकान्त मिश्र आ दरभंगासँ आचार्य रमानाथझा, प्रो. ईशनाथझा तथा आचार्य सुमनक नाम छलनि, मुदा सुमनजी मियादी ज्वरसँ ग्रस्त भऽ गेलाह । अपना व्ययसँ जयबाक प्रश्न छलैक । सम्मेलन दिससँ एक मात्र सुविधा ई रहैक जे रेलवे कन्सेशन टिकटमे एके पीठक रेल भाड़ासँ दूनू पीठक यात्राकऽ सकैत छलहुँ । आन क्यौ प्रस्तुत नहि भेलाह तँ सुमनजीक स्थान पर हम जयबा लै प्रस्तुत भऽ गेलहुँ ।

यद्यपि ओहि समय हम कैदराबाद मुकुन्दी चौधरी हाइस्कूलमे 6 मासक हेतु हेडपण्डितक अस्थायीपदपर कार्यरत रही, तेँ छुट्टीक आवेदन पत्र देलिऐक । हेड मास्टर गोपीकान्तझा स्वीकार नहि कयलनि । हम चुप्पे किरानीकेँ त्याग पत्र थम्हाय चलि देलहुँ । ओहि यात्राक दूटा रोचक संस्मरण अछि ।

भलमानुसक लक्षणक अनुसार सन्ध्याकाल कनेक शिवजीक बूटीक सेवनक अभ्यास छात्र जीवनेसँ छल, तेँ पुष्ट कऽ मिसरी आ दक्षिणी मिलाय चूर्ण बनाय सितोपलादिक एक डिब्बीमे संग लऽ लेने रही । महासम्मेलनक दिससँ आवासक एहन व्यवस्था छलैक जे भिनसरे दैनिक समाचार पत्र सबकेँ दऽ गेलैक । किछु कालक बाद दाढ़ी बनबयबा लै नौआ अयलैक, हमरा देखि ओ चकित, ओकरा देखि कऽ हम विस्मित,

Scanned by CamScanner

मकसूदन ठाकुर, दरभंगामे बहुत दिन पिताजीक आ बड़का भाइक दाढ़ी बनबैत रहनि। चपाहीक हमर मसियौत, जनिक चर्च कऽ चुकल छियनि, हुनक पितामहकनाम मधुसूदन ठाकुर रहनि। मकसुदना जहाँ डेरा पर आबय, हमर माय कहथिन-गुलाबबाबू, अहाँक पितामह आबि गेलाह। हमरा सबकेँ ता दाढ़ी मोंछ नहि भेल छल, माय जे परिहास करथिन तेँ हमरा ओकरापर बेसी ध्यान जाय। ओ बेस आह्लादित, कुशल क्षेम संक्षेपमे पूछि कहलक साँझमे आबि कऽ थिर भऽ गप्प करब।

ओहि सम्मेलनमे हमरा किछु करबाक नहि छल, केवल पाँचटा मुण्ड गनयबाक छलैक, जेना एखन भारतीय विधान मण्डल वा लोक सभामे होइत छैक- 'भने भरल हो भुस्सा गोबर तैयो मुण्डक मोल छै'। से हम दिल्लीक पाँचम सवार जकाँ छलहुँ। वस्तुतः काज करबाक छलनि म.म.डॉ. उमेशमिश्रकेँ, ओ दूनू बापुत प्रस्ताव स्वीकृत भऽ गेलाक बाद आगाँक कार्यकलापक प्रसंग पदाधिकारी लोकनिसँ विमर्श करबाक हेतु अँटकि गेलाह, हम तीनू गोटे चल अयलहुँ। रमानाथ बाबू, ईशनाथ बाबू एक कमरामे भीतर दिस रहथि। हम मुण्डमात्र, वयसमे सबसँ कनिष्ठ, नगण्य, तेँ जाहि कमरा बाटेँ भीतर जयबाक बाट रहैक ताहिमे एकसरे रही। मकसूदन ठाकुरकेँ फैलसँ देश, समाजक हालचाल बुझबाक रहैक तेँ थोड़ेक कालक बाद ओ पहुँचि गेल। हम सायं कृत्य करबासँ पूर्व अटैचीसँ शिवजीक बूटीक डिब्बी फोलिते छी ता भाइजी माने महामहोपाध्यायजी दूनू बापुत ओमहरसँ कार्य सम्पादित कऽ आबि धमकलाह। हमरा डिब्बी फोलने देखि पूछि बैसलाह- की थीक ? आब हमर स्थिति हिन्दीमे वाग्धारा छैक-काटो तो खून नहीं, हिन्दीमे जकरा सफेद झूठ कहैत छैक से बाजय पड़ल। सरस्वतीक कृपा सँ तुरन्त फुरा गेल कहलियनि- सितोपलादि, डिब्बी तँ ओकरे छल। भाइजी ई कहैत आगू बढ़ि गेलाह- एक खोराक हमरो देब, हमरो सर्दी बुझाइत अछि। आब हमर संकटक अनुमान कऽ सकैत छी, संगहि ईहो बूझि गेल होयब जे फूसि बाजय मे केहन माहिर छी। निवेदन एतबे जे एहिसँ हमर नाम फुसियाहक श्रेणीमे जुनि अंकित कऽ ली। ओना हम ने हरिश्चन्द्र छी ने युधिष्ठिर, जकरा आपद्धर्मकहैत छैक तकर निर्वाह करय पड़ैत छैक सबकेँ।

ओ फूसि महासंकटमे दऽ देलक, घबराहटिसँ घाम छूटय लागल। मकसुदना ठीकसँ नहि बुझलकैक, घबरायल देखि कारण पुछलक आ उपाय सेहो सुझाय देलक। लगेमे आयुर्वेदिक औषधिक दोकान छलैक, चौदह अनामे छोटसन डिब्बी देलकै से दौड़ि कऽ कीनि अनलक। एकटा टाका देने छलिऐक, आपस भेल दुअन्नी ओकरा पारिश्रमिक रूपमे छोड़ि देलिऐक। आइ तँ दू आनामे बकरीक नेंड़ी सेहो ने भेटत, मुदा ताहि समय दू आनामे होटलमे भात-दालि-तरकारी-भुजियाक संग चटनीओ दैत छलैक तेँ इनाममे दुअन्नी देलासँ हमरा कृपण नहि मानि लेल जाय।

एहि यात्रामे एकर अतिरिक्त हमरा हेतु दू गोट ऐतिहासिक महत्त्वक घटना सेहो

Scanned by CamScanner

भेल । घुरतीमे प्रयागमे संगम स्नान तथा डॉ. अमरनाथझासँ बिनु भेट कयने रमानाथबाबू, ईशनाथ बाबू कोना घूरि अबितथि ? ओ दूनू गोटे अमरनाथ बाबूक ओतय चल गेलाह आ हम भाइजीक डेरापर चल अयलहुँ । जयकान्त बाबूक सहयोगसँ हमरो त्रिवेणी संगम स्नान भऽ गेल । अमरनाथ बाबू ईशनाथ बाबूक उपस्थितिसँ प्रायः बेसी आह्लादित भेलाह । की ने की फुरलनि, मैथिलीओमे एहन सुकण्ठ ओ मधुर कवि छथि, प्रायः हिन्दीक कविकेँ से देखयबाक इच्छा भऽ गेलनि । साँझमे हरिवंश राय बच्चन आ रामकुमार वर्मा, जे दूनू छात्र रहल छलथिन, दूनू गोटेकेँ बजबाय कविगोष्ठी आयोजित कयलनि । दोसराइत पुरयबाक हेतु जयकान्त बाबूकेँ समाद पठाय हमरो बजबाय लेलनि । ई सुखद संयोग हमरो लागल जे पहिल कविता हमरे पढ़य कहलनि । आइ गौरवक अनुभव होइत अछि जे हिन्दीक ओ दुइ महान कविक संग हमहू कविता पाठ कयने छी । खेद जे एकर साक्षी जयकान्त बाबू आब नहिं रहलाह । दोसर दिन ई समाचार अखवारमे छपलैक । यात्रीजी प्रयागे मे छलाह, समाचार पर नजरि पड़लनि, ओ दौड़ल भाइजीक डेरा पर पहुँचलाह । गप-सपक प्रसंग कहलनि- चलह, तोरा निरालाजीसँ भेट करा दैत छियह । उत्सुकता बढ़ि गेल, बिदा भेलहुँ तँ भाइजी पूछि देलनि- कतय जाइत छी ? उत्तर देलियनि तँ स्मरण देयौलनि जे ट्रेन साढ़े तीन बजे जे अछि से ध्यानमे राखब । भाइजीक कथनमे ध्वनि सँ बुझायल जे हुनका ने निराला जीक प्रतिकोनो आस्था छनि ने यात्री जीक प्रति आकर्षण ।

हम यात्री जीक संग टमटमसँ दारागंज पहुँचलहुँ । निराला जी नामे टासँ नहि, आनो विषयमे निराला छलाह । केबाड़ बन्द छलनि । यात्रीजी खटखटौलथिन तँ भीतर सँ आवाज अयलनि कौन? मैं नागार्जुन । बैठो, आता हूँ । लगभग 20 मिनटक बाद केबाड़ फुजलैक, हम हुनक स्वरूप देखि चकित रहि गेलहुँ, पाँच हाथ लम्बा शरीर, रत-रत गोर, नंग-धड़ंग, नीचाँ जँघिया, देहमे सैंडो सियाओल गंजी, प्रायः ओहि समय व्यायाम कऽ रहल छलाह । हमरा देखि कनेक असहज होइत पुछलथिन यह दूसरा कौन है? यात्रीजी हमर नाम कहैत कहलथिन- हिन्दी-मैथिलीका उदयमान कवि हैं, दरभंगासे आये हैं, उन्हें आपके दर्शन की लालसा थी । निराला जी खौंझायल सन स्वरमे कहि उठलथिन- मैं कोई दर्शनीय-प्रदर्शनीय वस्तु नहीं हूँ । फिर आना, एतबा कहि भीतर चल गेलाह । हमरा दर्शनमात्र भेल । प्रतीत भेल जे यात्रीजीपर एहि हेतु क्षोभ भेलनि जे एक अपरिचित व्यक्तिक समक्ष ओहन बगयमे बहरायब अप्रिय लगलनि । हमरा ओहन महान साधकक दर्शनेसँ सन्तोष करय पड़ल ।

ईहो एतहि जनाय दी जे हमरा अनुसन्धान दिस प्रेरित करबाक सम्पूर्ण श्रेय भाइएजी केँ छनि । प्रयागसँ बिदा होयबासँ कनेक पहिने कहलनि जे अहाँक गाममे बलिराज गढ़ अछि, ओ एक ऐतिहासिक पुरातत्त्वक स्थल थिकैक । दरभंगामे प्राच्य विद्यामहासम्मेलनक अवसर पर बलिराज गढ़क सम्बन्धमे जँ किछु लिखि सकी आ ओ

Scanned by CamScanner

तथ्य परक रहत तँ अहूँकेँ अवसर भेटत । हम चेष्टा करबो कयलहुँ, यद्यपि ओ स्वीकृत नहि भेल, किन्तु ओ आलेख बहुत दिन धरि हमरा लग छल, जकरा आधार बनाय हमर भातिज रमानाथ मिश्र 'मिहिर' एक टा लेख मैथिलीक कोनो पत्रिकामे छपौलनि । हमर लेख भने स्वीकृत नहि भऽ सकल, परन्तु पछाति प्रो. कृष्णकान्त बाबू एकरा पाछू पड़लाह, उत्खननक काज थोड़ बहुत भेलैक, एखनहुँ पुरातत्त्व विभागक कार्य सूचीमे छैक । सम्प्रति समाजवादी कुदाल सेनाक नेता पचरूक्खी निवासी श्रीरामलखनझा एहिहेतु सक्रिय छथि । हमरा मस्तिष्कमे दू टा बात जे ओहि क्रममे खचित भऽ गेल से एखनहु स्मरण अछि । महाभारतमे उल्लेख छैक जे दुर्योधन बलरामसँ गदा युद्धक प्रशिक्षण प्राप्त कयलनि । बलराम ओहि समय अपन सगोत्रीय यदुवंशीय राजा बलिक ओतय पहुनाइमे रहथि । प्रशिक्षणक गोपनीयता केँ ध्यानमे राखि दुर्योधन मिथिलेमे ओ प्राप्त कयलनि । जँ ई अनुमान सत्य तँ एहि गढ़क प्राचीनता पाँच हजार वर्षक सीमाकेँ स्पर्श करैत अछि ! आ दोसर तथ्य ई बहरायल जे हमरा लोकनि हरिअम्ब मूलक छी, हमरा सभक बीजी पुरुष पं. पीताम्बरमिश्र एतय राज पण्डित रहथि जनिका चारि पुत्र छलथिन । चारू गोटेकेँ एक-एक गाम-जीवन निर्वाह हेतु राज्यसँ प्राप्त छलनि । हरिअम्मय मूलमे चारि गोट मूलग्राम एही बलिराजगढ़क चौदिस अवस्थित अछि, बलिराजपुर, शिवा, रखबारी, मङरौना । एकर अतिरिक्त जे मूलग्राम अछि जेना हरिअम्मय आहिल आदि से प्रशाखा थीक । तथ्यपर पहुँचबाक लेल अनुसन्धान अपेक्षित अछि ।

कहि चुकल छी जे हमरा अनुसन्धान दिस प्रवृत्त होयबाक प्रेरणा भाइजी देलनि । प्रो. कृष्णकान्तमिश्र प्राच्य विद्या सम्मेलनक पद्धतिक अनुसरण करैत 1956 ई. सँ अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन आरम्भ कयलनि । ओकर दोसर अधिवेशन 1962 ई. मे आयोजित भेलैक । हमरा ओहिमे मैथिली आन्दोलनक सर्वेक्षण करबाक दायित्व देल गेल जे विस्तृत रूपमे हम प्रस्तुत कयल । ओकर पुस्तकाकार 1962क अक्टूबर-दिसम्बरक वैदेहीक स्पेशल अंकक रूपमे प्रकाशन भेलैक । सुनलहुँ बी.ए. ऑनर्स आ एम्. ए. क मैथिलीक छात्र लोकनिक हेतु परम उपयोगी सिद्ध भेलनि । परिणामत: गोट-गोट प्रति बिकाय गेलनि । पछाति छात्र लोकनि हमरा ओतय आबथि । छायाप्रतिक आविष्कार ताबत एतय धरि नहि पहुँचल छलैक ।

जखन मैथिली अकादमीक स्थापना पटनामे भेलैक तँ अध्यक्ष भेलाह श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार, जनिक स्नेह ओ आशीर्वाद हमरा पहिनहिसँ प्राप्त छल । हम एकर पुन: प्रकाशनक हेतु हुनकासँ एकर उपयोगिता जनबैत जाय कऽ निवेदन कयलियनि । ओ पहिने पढ़ि लेबाक हेतु पोथी रखैत एक मासक बाद निर्णय सुनयबाक वचन देलनि आ तदनुसार एक मासक बाद पटना बजाय मैथिली पत्रकारिता पर समग्रतासँ समीक्षात्मक ग्रन्थ लिखबाक परामर्श देलनि । हम अल्पज्ञ 1905 सँ 1979 धरिक 75 वर्षमे प्रकाशित 87

Scanned by CamScanner

गोट पत्र-पत्रिकाक खोज कऽ चारि वर्षक समय लगाय अनवरत श्रम करैत ग्रन्थ प्रस्तुत कयल । 1981 मे मैथिली अकादमी छपलक आ 1983मे साहित्य अकादेमी एहि ग्रन्थकेँ पुरस्कृत कऽ हमरा कृतार्थ कयलक । एकर बाद विद्यालंकारजी महामहोपाध्याय मुरलीधरझा पर विनिबन्ध लिखबाक भार देलनि, सेहो मैथिली अकादमीसँ प्रकाशित भेल । आचार्य सुमनक प्रतिनिधित्व कालमे साहित्य अकादेमी बंकिम चन्द्र ओ हरिनारायण आप्टे पर अंग्रेजीमे प्रकाशित विनिबन्धक अनुवाद करबाक भार देलक । ई सर्वविदित अछि जे अंग्रेजीमे हमर विशेष प्रवेश नहि अछि, किच्छु सानि-बाटि कऽ पिण्ड छोड़ाय लेबाक प्रवृत्ति नहि अछि तेँ झिंगुर बाबू सँ समय लऽ एकमास छात्र जकाँ हुनका डेरापर जाय पढ़लहुँ, साक्षी स्वरूप पुस्तक रखने छी । फूसि किएक कहू, तखन हिन्दी अनुवाद सेहो मङौलहुँ । हमरा हिन्दी अनुवादमे अनेक विसंगति बुझायल, बीच-बीचमे सन्देह भेला पर झिंगुर बाबूसँ भेट कऽ अबियनि । एहि सब बातक उल्लेख एहि हेतु कयलहुँ अछि जे किछु सिखबाक हेतु कोनो निर्द्धारित वयस नहि होइत छैक । संस्कृतमे नीतिकार एतेक धरि कहने छथि- 'बालादपि सुभाषितं ग्राह्यम्' किरणजी तँ डॉ. शैलेन्द्रमोहनझाक निर्देशनमे वर्णरत्नाकर पर शोधकार्य कयलनि जखन कि शैलेन्द्रमोहन बाबू किरण जीसँ 22 वर्ष छोट छलथिन ।

प्राच्य विद्या महासम्मेलनक चर्च भऽ चुकल अछि । उक्त संस्थाकेँ कोनो विश्वविद्यालये आमन्त्रित कऽ सकैत छैक । दरभंगामे कोनो विश्वविद्यालय छलैक नहि तेँ पं. गंगाधर मिश्रक सक्रियतासँ प्रस्तावित मिथिला विश्व विद्यालयक हेतु एक समिति बनल छलैक जकर सचिव पं. हरिनाथमिश्र मनोनीत रहथि । लक्ष्मीश्वर सार्वजनिक पुस्तकालयक मुख्य भवनक पुवारिकातक कोठलीमे कार्यालय रहैक, हरीबाबू ओहीमे रहितो छलाह । ओकर सटल छोटकी कोठली मैथिली साहित्य परिषदकेँ कार्यालय लै भेटल छलैक । परिषदक मन्त्री रहथि प्रो. परमाकान्त चौधरी हुनक आवास सामने दच्छिन पोस्ट आफिसक पछुआड़मे छलनि । हमरा संग शंकरमिश्र सेहो संयुक्त मन्त्री रहथि । साँझमे दूनू संस्थासँ रुचि रखनिहार लोक जुटैत रहथि । किरणजी काशीसँ घुरि गाम आबि गेल छलाह । ओ मैथिली साहित्य परिषद पर जे एक वर्ग विशेषक वर्चस्विता छलैक जाहि वर्गक संक्षिप्त नाम नाथ एण्डको. रखने छलथिन, हुनका लोकनिक वर्चस्विताकेँ तोड़बाक प्रयत्नमे लागल छलाह । किरण जी अधिक काल दरभंगा आबथि । ई हमरासँ बहुत जेठ आ श्रेष्ठ रहथि, किन्तु हिनक एक बहिन चपाही मे रहथिन, बहिनोइ हरिमोहन ठाकुर हमर मसियौतक पितियौत रहथिन । ज्येष्ठ साहित्यकार होयबाक कारणेँ यद्यपि प्रणाम करैत रहियनि, तथापि चपाहीक लाटेँ कखनहु विनोद सेहो भऽ जाय ।

एक दिन हरीजीसँ परिषदक प्रसंग चर्चा करैत कहलथिन नाथ एण्ड को० केर कण्ठतरसँ बहराय आब कल्लातर आयल अछि, आब आङुर पैसाय कल्लातरसँ बाहर

Scanned by CamScanner

करबामे सुगम होयत। हम कहलियनि नाथ विहीन एतयके छी ? अपने कांचीनाथ, ई हरिनाथ, हम चन्द्रनाथ तावत एक दिससँ सुमनजी, दोसर दिस शंकर मिश्र पहुँचि गेलाह। हरीजी कहलथिन- ई दूनू गोटे बिनु नाथक छथि तेँ हिनका सभक हाथमे परिषदक वागडोर धराय देल जाय। एही हाहा हीहीक क्रममे हरिजी मिथिला विश्वविद्यालयक आवश्यकता पर एकटा कविता लिखि देबय कहलनि जे हम लिखबो कयलहुँ आ बाबू लक्ष्मीपति सिंहक पितियौत बाबू दुर्गापति सिंह पटनासँ मिथिलाज्योति नामसँ मासिक पत्रिका प्रकाशित करय लागल छलाह जकर प्रथमे अंकक प्रारम्भिके पृष्ठ पर 'ई ज्योति अमर' शीर्षक हमर कविता छपल छल जे हमर चारिम कवितासंग्रह 'आशा दिशामे संकलित अछि, ओही ज्योतिक कोनो अंकमे ओ कविता छपल रहय 'कवि महामन्त्र फूकैत चलह निर्माण विश्वविद्यालय हो'। ई कविता कोनो संग्रहमे संकलित नहि अछि।

ताही समय हम स्कूल छात्रावासक अधीक्षक बनाओल गेलहुँ। दूनू साँझ प्रार्थना सभा कयल करी। ताहि सभाक हेतु हिन्दीमे एक कविता लिखने रही- "हम नवीन ज्योति पर प्रबुद्ध सावधान है" जे हरीजीकेँ सुनौने रहियनि। आत्म प्रशंसामे ईहो कहि दी जे हरीजीक हम प्रिय कवि रहियनि, युगचक्रक अनेक पंक्ति हुनका कण्ठस्थ रहनि जकरा सबकेँ गप्पक प्रसंग अनेक ठाम उद्धृत करथि। ई प्रार्थनागीत बहुत पसिन्न पड़लनि। प्रस्तावित मिथिला विश्वविद्यालयक कार्यालय चलयबाक हेतु एक योजना बनलैक। ताही अन्तर्गत एहि एकपनियाँ गीतक दू हजार प्रति छपलैक जकर दू पाइ (पुरना) दाम राखल गेलैक। ताधरि 64 पाइक रूपैया होइक। योजना एना बनलैक जे एहि एकपनियाँसँ जे पाइ होयतैक ताहि सँ पुनः अठपनियाँ पम्फलेट छापब जकर दाम चारिआना राखब, ओकरा बेचिकऽ जे आमदनी होयत ताहिसँ शिक्षाविद् लोकनिसँ विश्वविद्यालयक आवश्यकता पर लेख लिखबाय एक पुस्तक प्रकाशित करब। गोटेक हजार तँ हमर स्कूल छात्रे सबमे बिकाय गेल, दस-पाँच प्रति हमर पुरान फाइलमे एखनहु होयत। बिकयला पर एकछाहा तामक पाइ आयल। ओकरा टाकामे बदलि हम हरीजी लग जमा कऽ देलियनि। हरीजी जे अन्यान्य कार्यकर्त्ताकेँ देलथिन बेचबाक हेतु तकर हिसाब हमरा लग नहि अछि। आगाँ एहि योजनाक की भेलैक सेहो ज्ञात नहि। हमरा केवल कागतक दाम लागल छल, सुमनजी अपना प्रेसमे मङनीएमे छापि देने छलथिन। प्रसंगतः कहि दी जे एतय अठपनियाँ योजना आगाँ नहि बढ़लैक, किन्तु विद्यापति गोष्ठीक एक वृहत् आयोजनक हेतु एक एहन बुकलेट भूदान पर सात गोट कविक एक-एक कविता लऽ छपबौने रही जाहिमे नागार्जुन (यात्रीजी) क कविता काशीमे संन्यासी लोकनि भिक्षाटन करैत जेना मजीरा बजबैत प्रत्येक चरणक अन्तमे 'हर गंगे' जोड़ि गबैत छथि, ताही तर्जपर छनि–

सन्त विनोवा हैं भगवान, हरगंगे, ऊसर, परती औ शमशान हर गंगे, सन्त विनोवा

Scanned by CamScanner

पावैं दान, हरगंगे, कौआ करे गंग असनान, हरगंगे, फिर हड्डी का टुकड़ा दान, हर गंगे इत्यादि सेहो संकलित छनि । अस्तु ।

1946 मे साहित्य शास्त्रीक प्रथम खण्ड पास कऽ गेल रही, 47 मे द्वितीय खण्डक फॉर्म भरने रही । पिताजीक स्वास्थ्य दिनानुदिन क्षीण भेल जाइत रहनि । आकांक्षा रहनि जे जाहि पौत्रक जन्ममे मिसरिया नटुआकेँ नचौने रहथि तनिक उपनयन सेहो देखि ली । हमर भातिज 'मिहिर' आठ वर्षक भऽ गेल छलाह । उपनयनक उद्योग भऽ गेलनि । कुटुम्ब सबकेँ निमन्त्रित करबाक, ठाम-ठामसँ विदागरी करयबाक भार हमरा भेटल रहय । संयोग एहन जे बेनीपट्टीमे ओही बीच मैथिल महासभाक अधिवेशन सेहो रहैक । राजनगरक सफलतासँ हमरा महासभाक स्थायी सदस्यता भेटि गेल । कवि सम्मेलन मे हमरो आमन्त्रण छल । गामसँ अपन चरणदासक टैक्सीसँ बिदा भेलहुँ । चपाहीमे मौसी छलीह, सुगौनामे मामा छलाह । लक्ष्मीपुर मे पिताजीक अनन्य भक्त शिष्य पं. शुकदेव भाइ छलाह, डीहटोल हरिपुरमे देयादलोकनि छथि, ढंगा पुवारि टोलमे बहिन छलीह, मुरलियाचकमे बचकुनक नानी छलथिन, बेनी पट्टीमे मैथिल महासभाक अधिवेशन छल, मटिहानी विद्यालयमे तरौनीक पं. रविनाथ ठाकुर पिता जीक अनन्य शिष्य छलथिन, मधबा (नेपाल तराइ)मे पिउस छलीह, बहिन छलीह । एतेक ठामक यात्रा करबाक छल । गामसँ बिदा होयबाक काल पिताजी इनार लगधरि अड़ियातैत अयलाह । प्रणाम कयलियनि तँ हमर माथ पकड़ने कनेक काल हमरा दिस देखैत रहलाह, आँखि नोराय गेलनि । पुछलियनि- एना किएक ? भरभरायल कण्ठे कहलनि- अहाँकेँ गामसँ जाय देबाक इच्छा नहि होइत अछि, आब हम पाकल आम भऽ गेलहुँ, कखन डण्टीसँ तुबि जायब के जनैछ ? मुदा यज्ञ ठानल अछि, अहाँकेँ बहुत ठाम जयबाक अछि, जाउ, बच्चा बच्चे रहि गेलाह, तेँ मायक चिन्ता अहीकेँ राखय पड़त ।

भाव विह्वल भेल बिदा भऽ गेलहुँ, मुदा पिताजीक ई अन्तिम दर्शन थीक से आशंका नहि छल । चपाही, सुगौना, लक्ष्मीपुर, हरिपुर डीह टोल, ढंगा पुबारि टोल, मुरलियाचक होइत बेनीपट्टी पहुँचि गेलहुँ । कवि सम्मेलन मे कोनो नव कविता सुनबितिऐक से चिन्तनमे छल । अकस्मात एक बिन्दु आयल- आइ सात दिनसँ पैरेँ एहिगामसँ ओहि गाम धरि चलैत-चलैत देह चूरमार भऽ रहल अछि, किएक तँ भातिजक उपनयन थीक । एहने-एहने कर्मकाण्डमे सवर्ण समाज अस्त-व्यस्त रहैत अछि । एहि लेल पाइ-पाइ जोड़य पड़ैत छैक, खेत-पाथर भरना धरय पड़ैत छैक, ऋण पैंच करय पड़ैत छैक, किन्तु निम्नवर्गीय लोक एहि सब झंझटसँ दूर, लूटि लाउ, कूटि खाउ, संचय करबाक प्रवृत्ति सँ सदा निर्लिप्त रहैत अछि । यैह दू टा चित्र कलमक नोंक पर आयल आ लिखाय गेल-

'बापक मरिते,
बुच्चू बाबूक कटै छनि दिन

Scanned by CamScanner

भरि टोल समाजक, घर-परिवारक अंट-संट अधलाहक नीकक चिन्ते टा करिते-करिते' इत्यादि । तथाकथित प्रगतिशील वर्ग द्वारा एकर कटु-आलोचना पछाति भेल जे ई सर्वहारावर्गक विरोधी छथि । अस्तु । हमर दुइ चित्र कविता तैयार भऽ गेल । अपने मुँह मियाँ मिट्ठू लोकोक्ति छैके तदनुसार एही महासभाक पछिला राजनगर अधिवेशनमे 'ओकील' शीर्षक कविता पर थपड़ी हँसोथने रही । महासभाक किछु स्थायी सभासद लोकनि रहबे करथि । जनता उत्सुकता पूर्वक सुनलक, थपड़ीओ भेटल, बिदाइ सेहो भेटल । ओतयसँ मटिहानी होइत मधवा पहुँचि गेलहुँ । एतेक दूरक आ एतेक दिनसँ पैरेँ चलैत रहबाक वृत्तान्त सुनि सुस्तयबाक आग्रह भेल । व्यग्रता देखौला पर पीसी कहलनि- बहिनक ओहिठाम रहलह, जँ हमरा एतय एकोदिन नहि रहबह तँ हम मोजर नहि करबह, बहिन जयथुन, हम किएक जयबह ? अगत्या एक दिन और रहय पड़ल ।

पीसीक सम्बन्धमे एकटा क्षेपक कहि दी । ओ हमर पिताक वैमात्रेय बहिन रहथिन, हुनक सोदर दामोदर मिश्र, जनिका हम नहि देखने छलियनि, अल्पायु भेलथिन, हुनक एक मात्र पुत्र जनिक नाम छलनि दिनेशचन्द्रमिश्र जे धराउ नाम रहि गेलनि हम सब विल्टू भाइ कहियनि । हिनकर मातृक छलनि चकौती, हमर काकी परबुद्धी रहथि, खोजपुर छोड़ि नैहर चल गेलीह । एही विल्टू भाइक एक मात्र बालक श्री प्रकाशचन्द्रमिश्र जीवन-संघर्ष करैत साइन्स ग्रेजुएट भेलाह, सम्प्रति हाइस्कूलक प्रधानाचार्यक पदसँ सेवानिवृत्त भऽ दरभंगेक लक्ष्मीसागरमे अपन भवन बनाय दू सुयोग्य बालकक संग निवास कऽ रहल छथि । किन्तु हमरा पीसीक नैहर खोजपुरे रहलनि । पीसी हमर नूज रहथि तेँ अपना हाथेँ भानस भात नहि कयल होइनि, किन्तु परिवारक लोकक हेतु थारी परसल जाय लगनि तँ ताहिकाल बेटी अथवा पुतोहु जे परसथिन तनिका प्रत्येकक दालिक बाटीमे फोड़नक मेरिचाइ आ तेजपात अवश्य देबय कहथिन । एकर उल्लेख एहि हेतु कयल जे एखनहु दालिमे ओ फोड़न भेटैत अछि तँ पीसी नित्य स्मरण भऽ अबैत छथि । अस्तु ।

मधवासँ घुरतीमे दुर्योगवश कोनो सवारी नहि भेटल, हारि कऽ जनकपुर रोड (पुपड़ी स्टेशन) आबि पहिल ट्रेन छूटि गेल, दोसर ट्रेन साढ़े आठ बजे रातिमे दरभंगा पहुँचौलक । छात्रावास पहुँचलहुँ तँ प्रो. भक्तिनाथ सिंह ठाकुर कनिष्ठ रघुनाथ सिंह ठाकुर प्रसिद्ध रग्घूबाबूक खवास मोतिया देखिते देरी कहलक-मर्र, अहाँ एखनी धरि गाम नहि गेलिऐक अछि ? बूढ़ा गुरूजी तँ बिदा भऽ गेलाह । पुरनिमे (पूर्णिमे) दिन, गामसँ छठमे दिन आदमी ताकय आयल रहय । अर्थात् हम जाहि समयमे 'बापक मरिते' पाँती लिखैत छलहुँ ताहि समय पिताजी गामपर तुलसी चौरा तर पाड़ल जाइत छलाह । रग्घू बाबू मोतियाकेँ फज्झतिओ कयलथिन, भोज़नक कतबो आग्रह कयलनि, हम भोजन की करितहुँ आँखिक सोझाँ घुप्प अन्हार भऽ गेल छल । गामसँ बिदा होइत काल पिताजीक नोरायल आँखिक ओ दू बुन्द अश्रु शोकक महासागर प्रतीत होअय लागल छल, मित्रवर्ग

Scanned by CamScanner

भोजनक दुराग्रह स्नेहवश करथि, हमरा ओ आग्रहक शब्द कानमे टाकु भोंकब सन लागय। बाजब से बुकौर लागय। अन्तमे हारि कऽ छोड़ि देलनि, किन्तु रग्घूबाबू, मेघाबाबू, छीतनबाबू भेल भानस क्यौ खयलनि नहि। ईश्वरीय कृपा जे ओही मानसिक स्थितिमे निद्रा कखन भऽ गेल से नहि बुझलिऐक। 4 बजे भोरे स्वप्नेमे पिताजीक ओ वाक्य 'मायक चिन्ता अहींकेँ राखय पड़त' जेना खूब जोर सँ क्यौ कानमे कहलक, आँखि फूजि गेल। छीतन बाबूकेँ जगाय बड़का भाइ आ छोटका भाइ (कमलाकान्त मिश्र)सँ भेट कऽ क्षौर दिन अर्थात् परसू खोजपुर अयवाक आग्रह कऽ आठ बजे ट्रेन सँ गाम बिदा भऽ गेलहुँ।

राशि तँ नहि स्मरण अछि, किन्तु राजक दिससँ सेहो श्राद्धमे किछु साहाय्य भेटल छल, बड़का भाइ, छोटका भाइ प्रिन्सिपल साहेब, अध्यापक लोकनि चुमाओनक नाम पर जे टाका देने छलथिन से सब सङोरि-बटोरि छीतन बाबू खोजपुर पहुँचि गेलाह। किछु ऋण-पैंच कऽ समाजक आग्रहसँ वृषोत्सर्ग श्राद्ध सम्पन्न भेल। बलिराज पुरक महन्थ साहाय्यमे चाउर-दालि कीनय नहि देलनि। ताहि दिन एतेक बुझबाक बुद्धि नहि भेल छल, किन्तु आब हम वृषोत्सर्ग श्राद्धक पक्षपाती नहि छी। ऋषि-मुनि जाहि समय वृषोत्सर्ग श्राद्धकेँ एतेक महत्त्व देलथिन तहिया गोधन समाजक मुख्य धन छलैक, तेँ साँढ़क आवश्यकता छलैक। आइ ने ककरो गाय छैक ने गोचर भूमि। साँढ़क सुरक्षाक ने कोनो व्यवस्था छैक, तेँ कट्टर सनातनी होइतो वर्त्तमान सामाजिक परिवेशमे हम एहिसँ अपन असहमति रखैत छी। जँ क्यौ परामर्श मङैत छथि तँ निरुत्साहिते करैत छियनि।

श्राद्ध सम्पन्न कऽ दरभंगा घुरि कऽ अयलहुँ अवश्य, किन्तु आब ने पिताजीक पेन्शन, ने विद्यालयक छात्रवृत्ति, साहित्य तथा आयुर्वेद एहि दूनू शास्त्रमे छात्रवृत्तिक प्रावधाने नहि छलैक, किन्तु 'गुदगुदी' कविता संग्रहक प्रति तँ छल जे आधार बनल। मासमे 15/रु० तहियो पर्याप्त छलैक। जँ एकोटा पोथी जकर दाम रहैक दस आना, आठ आनामे दिऐक, प्रतिदिन बिकाय जाय तँ दैनिक खर्च चलि जाइत छल।

एम्.एल्. एकेडमीमे नियुक्ति

एमहर मैथिली साहित्य परिषदक संयुक्त मन्त्री रहलाक कारणेँ संगहि सक्रिय कार्यकर्त्ता होयबाक कारणेँ हुनको लोकनिकेँ हमर आजीविकाक किछु चिन्ता रहैत छलनि जाहिसँ हम दरभंगामे रहि सकी। संयोग एहन लागल। राधानन्दनझा, पछाति जे बिहार विधान सभाक अध्यक्ष भेलाह, एम्.एल. एकेडमीमे एकादशवर्गक छात्र रहथि। ऐच्छिक रूपमे मैथिलीकेँ मान्यता भेटि चुकल छलैक, ओ चारि-पाँचटा संगीक संग मैथिली विषय राखि लेने छलाह। हुनकर राजनीतिक प्रति रूझान छात्रे जीवन सँ जागन्त भऽ गेल छलनि। मैथिली पढ़यबाक व्यवस्था छलैक नहि, ताहि हेतु ओ अर्द्धवार्षिक परीक्षा होयबासँ पहिनहि आन्दोलनक रूखि अपनाय लेने रहथि। गर्मी छुट्टीक बाद

Scanned by CamScanner

व्यवस्था कऽ देबाक वचन भेटि चुकल छलनि । वोर्ड ऑफ ट्रस्टीक सेक्रेट्री नागेश्वर मिश्र, ओकील रहथि आ चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजक शासी निकायक सेक्रेट्री सेहो । प्रो. जयदेव मिश्र सी.एम्. कॉलेजमे रहबे करथि । नागेश्वर बाबू हुनके कहलथिन जे एक एहन पण्डित ताकि दिअऽ जे मैथिली-संस्कृत आ प्रयोजन पड़ला पर हिन्दीओ पढ़ाय सकथि, काल्हि हमरा उत्तर चाही । जयदेव बाबूकेँ एहि हेतु हम उपयुक्त व्यक्ति बुझैलियनि, किन्तु तेसर दिन, हमरा संग अपन संग टमटमसँ लहेरियासराय लऽ गेलाह । दरभंगामे तावत रिक्शा नहि आयल छलैक । टमटमपर चारि गोटे चढ़ैक, सम्पूर्ण टमटमक भाड़ा आठ आना अर्थात् एक व्यक्तिक भाड़ा दू आना, से जयदेवे बाबू देलथिन ।

एतय दू टा बात कहि दी । नागेश्वरमिश्र व्यक्तित्वमे 'तोहर सरिस एक तोहेँ माधव' छलाह । मैथिल महासभा हो, मैथिली साहित्य परिषद हो, मिथिला कॉलेज हो सबठाम व्याप्त रहैत छलाह, परन्तु गप्प सभक संग हिन्दीएमे करथि । भगवानक पूजा विधिवत नित्य करथि, परन्तु भिनसरे किछु जलपान कऽ लेलाक बाद स्नान-पूजा करथि । एके वर्ष पहिने राजनगर मैथिल महासभामे 'ओकील' शीर्षक कविता पढ़ने रही तकर पहिल पोथी किननिहार ओकीले छलाह, मैथिल महासभाक प्रथम महासचिव पं. कपिलेश्वरमिश्रक बालक आ सम्प्रति श्रीराजेश्वरमिश्र ओकील छथि तनिक पिता पं. दिनेश्वरमिश्र, प्रायशः जतेक ओकील रहथि राम बुझावनझा, जीवछ झा, चतुर्भुज नारायण चौधरी, रामजी चौधरी आदि सब गुदगुदी किनने रहथि, परन्तु नागेश्वर बाबूकेँ ओ कविता अप्रिय लागल रहनि से बात ओहि दिन बुझायल । जयदेव बाबूक संग हमरा देखि भिन-भिना उठलाह । हुनका कहलथिन- मैंने तो आपको कल ही आने को कहा था, आप आज इनको लाये हैं, मैंने तो एक पण्डित को कह दिया है । अब हम दोनो का डिमां स्ट्रेशन लेंगे, जो अच्छा पढ़ायेगा उसे रक्खूंगा । हमरा कहलनि- अपना दरखास्त हेड मास्टर को दे दीजिए । मन संशकित भऽ गेल । जयदेवबाबूकेँ तकर बाद कॉलेज रहनि तेँ चल अयलाह ।

दोसर बात, 1947क सरस्वती पूजाक अवसर पर एम्.एल्.एकेडमीमे कवि-सम्मेलनक आयोजन रहैक ताहिमे किशोरी शरण कर्मशील जे सी.एम्. कालेजक छात्र, बेगूसराय कालेजक पाध्यापक, पछाति एम्.एल्.सी सेहो भेलाह तनिक अनुज रामस्वरूप जे पछाति वीरपुर हाइस्कूलमे एसिस्टेंड हेड मास्टरक पदपर कार्यरत रहिते दिवंगत भऽ गेलाह, उक्त कवि सम्मेलनमे आमन्त्रित कयने रहथि । स्कूलक हॉल खचाखच भरल रहैक । कातेकाते कुर्सी सब रहैक ताहि पर किछु प्रतिष्ठित नागरिक आ किछु शिक्षकक संग झिंगुरबाबू सेहो दर्शक दीर्घामे बैसल रहथि । सौंसे सभाभवनमे चश्मा केवल यैह लगौने रहथि । हमर चश्माक आत्म कथा तावत पुरान नहि पड़ल छल । ध्यान रहय जे आहि समय हिन्दीएमे कवि सम्मेलन होइक । सी.एम. कॉलेजक कवि छात्र जेना

Scanned by CamScanner

बदरीदास विधुर, विनोदानन्दठाकुर, कर्मशील, कामेश्वर सिंह 'मस्त' उपेन्द्र ठाकुर, जगदीपनारायण 'दीपक' –'इन्दु' अमरेन्दु आदि कविता पाठ कयने रहथि । हिन्दी कविता सुनाय देलाक बाद हमरा चश्माक आत्मकथा सुनयबाक आग्रह भेल । एहि मे एकटा पद छैक– 'मत्तगज सन नाक पर चढ़ि कान दुहु धेनिहार छी हम'' एमहर हम कविता पढ़ैत छलहुँ ओमहर छात्र सब उनटि–उनटि झिंगुर बाबू दिस तकैत रहनि । उक्त पंक्तिक बाद झिंगुर बाबू उठि कऽ बाहर चल अयलाह, कारण चश्मा पहिरने एकमात्र वैह रहथि, एमहर तोड़ पर तोड़ ठहाका चलैत रहलैक । हम तहिया नहि चिन्हैत रहियनि । हम आवेदन पत्र दैत कहलियनि नागेश्वर बाबू अपनेकेँ दऽ देबाक हेतु कहलनि अछि ।

आवेदन पत्रमे लिखल अक्षर सुस्पष्ट रहैक से देखैत हमरा ठिकिया कऽ ताकि कहलनि–मैंने कहीं आपको देखा है ? तखन हमर माथ ठनकल । कहलियनि– जी, सरस्वती पूजा दिन कवि सम्मेलनमे हमहु आयल रही, एतबा कहैत हमर दम उपरे रहि गेल । मनहिमन सोचलहुँ यात्रा सफल नहि भेल, किन्तु अक्षरक स्पष्टताक प्रशंसा करैत कहलनि– मैं तो चाहूंगा कि आप हमारे स्टाफमे आ जायँ, मगर बहाली मेरे हाथ में नहीं है, मैनेजिंग कमिटी बहाल करती है उसके प्रेसिडेंट पं. गिरीन्द्रमोहनमिश्र हैं, वहां कोई पैरवी हो, तो कीजिए, बैठकमे मैं आपका पूरा समर्थन करूंगा । हम फक् दऽ निसास छोड़लहुँ ।

कहि चुकल छी जे मैथिली साहित्य परिषदक अध्यक्ष मिसरजी रहथि आ संयुक्त मन्त्री हम रही, संगहि संविधान संशोधन उपसमितिमे सेहो, तेसर रहथि डॉ. जयकान्तमिश्र जे गर्मी छुट्टीमे प्रयाग सँ आयल रहथि आ एकटा बैसक मे आबि मिसरजीकेँ ई कहि कऽ जे अपने विधिवेत्ता छीहे, काकाजी (अर्थात् हम) रहबे करताह, हम पमरियाक तेसर–नहिओ रहब तँ कोनो क्षति नहि, दुर्गापूजा छुट्टीमे पुनः आयब तँ हस्ताक्षर कऽ देबैक । एतबा कहि पिण्ड छोड़ाय चल गेल छलाह । हमरा मिसरजीक सान्निध्यक अवसर फैलसँ भेटि चुकल छल । ओहीदिन साँझमे भेट कऽ सब समाचार सुनाय देलियनि ।

एहि सँ आगाँ की भेल से कहबासँ पहिने मिसरजी पहिले–पहिल कोना चिन्हने रहथि से कहि दी । यद्यपि भूकम्पसँ पहिने हिनक डेरा दिवानी तकियामे एक पोखरि रहैक जकर पछबरिया मोहार पर, सम्प्रति जाहिठाम खाद्यनिगमक गोदाम छैक, बड़का टा बंगला रहैक ताहीमे डेरा रहनि । ध्यातव्य जे एही पोखरिक अतरवरिया मोहारपर कहियो म.म. चित्रधर मिश्र आ कवीश्वर चन्दाझाक आवास रहनि । दछिनवरिया मोहार पर डॉ. श्रीमोहन मिश्र डॉ. श्री जगदीश मोहन मिश्र सब बाल्यकालमे बैड मिन्टन खेलाथि आ छात्रावाससँ विद्यालय ओही बाट धऽ जाइत–अबैत ठाढ़ भऽ देखल करी जाहि कारणेँ हिनका सबसँ परिचय, मैत्री भाव भऽ गेल रहय, किन्तु मिसरजी चिन्हलनि 1936मे जखन राजसँ बनल

Scanned by CamScanner

बड़का विस्तृत परिसरवला क्वार्टरमे डेरा आबि गेल रहनि । पछाति हिनके नाम पर ओहि सड़कक 'गिरीन्द्रमोहन पथ' नामकरण भेलैक । हमर पिताजीकेँ सी.टाइप क्वार्टर रहनि जे अति समीप रहैक । ओहि परिसरमे रंग-विरंगक फूल सबसँ भरल फुलबाड़ी रहैक । पिताजी पूजा करथि ताहि लै फूल, बेलपात, दूबि, तुलसीक व्यवस्थाक भार हमरे छल । अपन डेरामे फूल लगयबाक स्थान बड़ थोड़ रहैक, सेहो नवे छल तेँ जतय-ततय बौआय, करबीर, कनैल, धुथूर आदि ताकि हेरि आनी । एहि बड़का क्वार्टर सबमे अछिन्नरे फुलायल देखि जी सिहाय, मौसमी गेना, तीरा आदि स्थायी गुलाब, ओढ़ूल, उजरा-ललका करवीर, जूही, बेली । बालमन प्रेरित करय अहल भोरे फुलडाली लऽ चोराकऽ फूल तोड़ि आनय बिदा होइ । ओतय फाटक लग ठाढ़ भेल-भेल टाङ दुखाय जाय कतवो सवेर जाइ, गोर अतत्त, पाँच हाथ लम्बा शरीर, टिनोपाल देल खद्धड़ सन उज्जर दप-दप केश, तेहने मोंछ, नाम-नाम डेग दैत मिसरजीकेँ फुलबाड़ीमे एमहर सँ ओमहर टहलैत देखियनि । फाटक धेने एहि प्रत्याशामे ठाढ़ रही जे बूढ़ा जहाँ भीतर जयताह कि किछु फूल झट-पट तोड़ि पड़ायब । जखन अपन टाङ दुखाय लागय तँ होअय- एहि बूढ़ाकेँ टाङो नहि दुखाइत छनि ? चारि दिन एना फाटक लग ठाढ़ देखि, एक दिन लग आबि पुछलनि- की औ बटुक, अहाँके थिकहुँ ? एतय किएक ठाढ रहैत छी ? हाथमे पुलडाली देखैत छी, एतय फूल तोड़ब मनाही छैक । कहलियनि-प्रिन्सिपल साहेबक बालक छी, हुनके पूजा लेल फूल.....कहलनि अच्छा, एमहर आउ, नौकरकेँ सोर कऽ गेटक ताला फोलबा कऽ अपने संग चलैत कहलनि- एक गाछमे सँ बस एकटा कऽ सेहो कात करौटसँ फूल तोड़ि लिअऽ, दोसर तोड़बैक तँ माली बूझि जायत, तखन पकड़ि कऽ गार्डेन सुपरिंटेंडेंक लग लऽ जायत । हमरा किछुए गाछसँ ओ हजारा गेना सबसँ डाली भरि गेल ।

बहरयलहुँ तँ महाराजक माम रहथिन भगवानदत्त झा, हुनक डेरा बी.टाइपमे रहनि, ओहो प्रात: भ्रमणमे बहराथि, हमरा भरल डाली फूल देखि कहलनि- सोआइत प्रेन्सपलकेँ पूजामे एतेक मन लगैत छनि- तेहन-तेहन विलच्छन फूल तोँ लऽ जाइत छहुन ।

कहैत छलहुँ स्कूलक आवेदनक प्रसंग । मिसरजी हमर सब बात सुनि कहलनि- स्कूलक बोर्ड ऑफ ट्रस्टीक सेक्रेटी छथि नागेश्वर मिश्र, अनका लग नहि बजबैक, अहाँकेँ कहैत छी, ओ छथि अंटाह देवता, वावदूक सेहो, कखन की बाजि देताह तकर ठेकान नहि, तेँ हम मीटिंगमे नहि जाइत छी । मैनेजिंग कमिटीक सेक्रेट्री छथि सुरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल, जनैत छियनि ? कहलियनि- जी, हुनक भागिन छथिन कामेश्वर प्रसाद अग्रवाल जे मेडिकलक छात्र छथिन आ कविताक प्रेमी तनिकासँ घनिष्ठता अछि आ सुरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल सेहो हमरा पितासँ 'विवादचन्द्र' पढ़ने रहथिन, तेँ ओहो चिन्हैत

Scanned by CamScanner

छथि। कहलनि मिसरजी – हुनकासँ भेट कऽ हमरा दिससँ कहबनि जे मैनेजिंग कमिटीक बैसक जहिया करथि, हमरा संग कऽ लेथि, हम ओहिमे निश्चित रूपें जायब ।

दोसर दिन तारीख सेहो स्मरणे अछि । अहीं सब कहू, कोना ने स्मरण रहत आ ककराने स्मरण रहतैक? भविष्यक प्रति अथाह चिन्ता सागरमे उबडुब करैत व्यक्तिकें ओहिसँ पार उतरि एक एहन ठोस धरातल भेटि जयबाक शुभक्षण, जाहि धरातल पर अपन अभीप्सित लक्ष्य धरि पहुँचबाक यावन्तो साधन भेटि जाइक से तिथि विसरल जाय सकैत छैक ? 11 अगस्त 1947, भिनसरे प्रातः स्नान कऽ किछु मुँह ऐंठाय पहुचलहुँ सुरेन्द्र प्रसाद अग्रवालक ओतय । ओ गुरूभाइ जकाँ आदर करैत छलाह । देखिते देरी कहलनि– आउ, आउ, आज सबेरे केने से आ गेली ? कोनो खास बात हय ? हम नागेश्वर बाबू, झिंगुर बाबू सँ आरम्भ कऽ मिसरजीक समाद कहि सुनौलियनि, ताहि पर कहलनि– पहिले ई बताउ जे अहाँ कबसे ज्वाइन कऽ सकैछी ? कहलियनि– अपनेक आदेश जखने भेटय तखने सँ, आइसँ तँ आइए सँ ।

ओ भीतर गेलाह आ अपन लेटर हेड पर अंग्रेजीमे एक पत्र लिखि झिंगुर बाबूक नामें दैत कहलनि– अहाँ आजे से तैयार हो के जायब, मगर ऊ झिंगुरबाबू टाइमके बड़ा पक्का छथ । अहाँ सबा दसे बजे पहुँच जाइ, बुझली ?

हमरा पाँखि भऽ गेल, सबा आठ बजैत रहैक । एतेक तेज एहिसँ पहिने साइकिल चलौने होयब से नहि मन पड़ैत अछि । भोजन होइत रहय रग्घू बाबूक संग । कहि चुकल छी जे ओ सब पुबारि पारक लोक, हम पछबारि पारक, तें हमर कयल भानस खयताह नहि, ओना पाकशास्त्रमे हमहू निपुण छलहुँ, अनेक पैघ–पैघ भोजमे अपन निर्देशनमे डालना बनबौने छी, विशुद्ध मैथिल ब्राह्मणक स्वादक अनुरूप हीङ्ग दऽ घृतक फोड़नसँ दालि छौंकने छी । हमर मामा कहथिन– जाहि गृहिणीकें तीमन–तरकारी आ दालिमे फोड़न तथा दूधमे जोड़न देबय आबि गेलैक, बुझि जाउ पाक शास्त्रमे पारंगत भऽ गेल, से हम गृहिणी नहि, गृहपतिओक रूपमे ओ लूरि प्राप्त कऽ चुकल छी । एतन्मूलक 'भोजन–विधान' शीर्षक कविताक दूटा पाँतीक उल्लेख कऽ दैत छी–

पटुआक झोरमे फोड़न पड़य जमाइनिके ।
तँ चीखक इच्छा करथि जमाय मनाइनिके

रग्घू बाबू अथवा मेधा बाबू हमर भनसीया तँ छलाह नहि जे अबिते भानस करबाक हुकुम चढ़ा दितियनि, तें विनम्र भावें कहलियनि– आइतँ सवा दसे बजे जेना–तेना एम.एल. एकेडमी हमरा पहुँचबाक अछि, भऽ सकैछ आइए सँ नौकरी भेटि जाय । जे बात थिकैक, रग्घूबाबू मोतिया खबासकें चूल्हि पजारि, अदहन चढ़ाय देबाक आदेश दैत अपने चटपट स्नान कऽ दालिमे आलू दऽ साढ़े नओ बजे थकुचल आलू साना भात–दालि परसि देलनि । खायब की, भीतर केहन अहलदिली पैसल छल से शब्द द्वारा व्यक्ते नहि कयल

Scanned by CamScanner

जाय सकैछ । 10 मिनटमे फूकि -फूकि भकोसि 10 बाजि 10 मिनटपर लहेरियासराय पहुँचि गेलहुँ । साइकिल लगाय स्कूलक बरामदा पर ठाढ़ भऽ पूब दिस तकैत छी तँ झिंगुर बाबूकेँ गेट लग अबैत देखलियनि । ऑफिसक ताला फोललनि तखन संकेतसँ हमरा बजौलनि । हाथमे चिट्ठी देलियनि । कोनो ऑफीसियल लाम-काफ तँ छलैक नहि, हथौटी चिट्ठी । पहिने शिक्षकक उपस्थिति बही पर हमर नाम लिखलनि । हम मनहिमन 'ओम् गणनान्त्वा गणपतिग्वं' मन्त्र पढ़य लगलहुँ तावत असिस्टेंट मास्टर आबि गेलथिन जे शिक्षकक एवसेंटी चार्ट बनबैत छलथिन । तनिका हमर नाम कहैत कहलथिन- अरविन्दबाबू का क्लास इनके नाम चढ़ा दीजिए और इन्हें समझा दीजिए । तावत तँ स्टाफ रूम गदमद भऽ गेल । पं. महाकान्तझा, हेडपंडित जे रमेश्वरलता सं. विद्यालयक पूर्व छात्र रहथि, अपन पिता पं. गणेशदत्तझाक स्थान पर तीन वर्ष पूर्वहिसँ कार्यरत रहथि, हमरा देखि अतिशय प्रसन्न भेलाह । जाहि अरविन्द बाबूक रूटीन धराओल गेल ओ हिन्दीक शिक्षक रहथि, एम्.ए. करबा लै एक वर्षक छुट्टी पर चल गेल छलाह, एम. ए. कयलाक बाद ओ घुरिकऽ अयबो नहि कयलाह, सुरसंडमे नवे कॉलेज फूजल रहैक ताहीमे नियुक्ति भऽ गेलनि । दोसर हिन्दी शिक्षक रहथि नित्यानन्दप्रसाद सिन्हा जनिका किछुए दिनक बाद सी. एम्. कॉलेजमे भऽ गेलनि तँ एतय चल अयलाह किछु दिनक बाद मारवाड़ी कॉलेज फुजलैक तँ ओकर संस्थापक प्रधानाचार्यक रूपमे बहुत दिन धरि रहलाह ।

हमरा दोसर घंटीसँ क्लास छल, दशम वर्गमे हिन्दी द्वितीयपत्र गद्य-पद्य संग्रह । ओहिना मन अछि, वर्गमे गेलहुँ तँ सब उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेल । अगिला बेंच पर सरस्वती पूजाक अवसर पर भेल कवि सम्मेलन लै आमन्त्रण पत्र लऽ जे छात्र गेल रहथि रामस्वरूप सेहो छलाह, शेषकेँ हम नहि चिन्हैत छलिऐक, किन्तु कवि सम्मेलनमे अधिक गोटे देखनहि छल तेँ चिन्हिते रहय । अगिला बेंच पर बैसल किछु छात्रक नाम पूछि लेलिऐक- महाकान्तझा जे पछाति आर.के. कॉलेज मधुबनीमे साइन्स विभागक प्रोफेसर भेलाह, ब्रजकिशोर गुप्ता, जे पछाति हरिजन कल्याण पदाधिकारीक रूपमे किछु दिन दरभंगोमे छलाह, ताहि समय एक दिन भेट करय आयल रहथि, बनारसी यादव जे हमर समवयस्के सन रहथि, रामस्वरूप बेसी उल्लसित रहथि, पुछलनि-सर, आपकी बहाली हुई है? कहलियनि- नियुक्तिपत्र तो नहीं मिला है, मगर शिक्षक बाला जो रजिस्टर है उसमें मेरा नाम लिखा गया है । इससे लगता है बहाल हो गया हूँ, बेहाल होने का खतरा अभी टला नही है । सब हँसय लागल । महाकान्त अपन पद्य संग्रहक एक पन्ना उघाड़ि हमरा हाथमे दैत कहलनि- यही कविता पढ़ना है, हम कहलियनि- कविता पढ़ना नहीं, पढ़नी है । वर्षा वर्णन रहैक जकर पहिल पंक्ति रहैक- खुले काले घुंघरालेबाल ।

हिन्दीमे हमर एहने हाल जे लोअर प्राइमरी धरि पढ़ने रही, परन्तु स्वाध्यायमे सेक्स्टन ब्लैकक एक जासूसी सिरीज रहैक तकर दर्जनो पुस्तक पढ़िगेल रही, जकर

Scanned by CamScanner

प्रत्यक्ष प्रभाव हमर 'वीर कन्या' नामक उपन्यासमे देखल जाय सकैछ । दोसर बाल्यकालमे धारणा रहय जे दैनिक अखबार जे पढ़ैत अछि से पैघ लोक होइत अछि, तेँ विद्यालयमे आर्यावर्त्त अबैत रहैक से नियमित रूपेँ पढ़ी । पद्यमे मैथिलीशरण गुप्तक भारत-भारती खूब धाङल छल । आरसी प्रसाद सिंहक 'कलापी' कलक्टरसिंह 'केसरी'क 'मराली' दिनकर जीक हूंकार आदि पढ़ने छलहुँ । एहिसँ पूर्व राज स्कूल अथवा कैदराबादमे विशुद्ध संस्कृत पढ़यबाक रहैत छल । हिन्दी पढ़यबाक आइ पहिल अवसर छल । पढ़ि लेब भिन्नबात थिकैक, किन्तु पढ़ल जाधरि गुनल नहि अछि ताधरि पढ़ाओल नहि जाय सकैछ, तेँ पढ़ब-गुनब सहचर शब्द भऽ गेल छैक । महाकान्तक रूखि एहन बुझायल जे ई हमरा अपदस्थ करबाक चेष्टा मे अछि, तेँ सावधान रही । कहलिऐक- सुनते जाओ, आज मेरा पहला दिन है और पहले से मालूम नहीं था कि क्या पढ़ाना है । साहित्य बिना पढ़े पढ़ाना ठीक नहीं है । इसलिए आज व्याकरण पढ़ाऊँगा, चूँकि मैं व्याकरणाचार्य हूँ और शब्दोंकी शुद्धता या अशुद्धता का नियामक व्याकरण होता है । वाक्य बनता है शब्दोंसे और शब्द बनते हैं अक्षरोंसे, इन अक्षरोंके उच्चारण के लिए हमारी वर्णमालामे विस्तार पूर्वक विचार किया गया है । महाकान्त बीचेमे बाजि उठलाह- आज व्याकरण की घंटी नही है । हम लोग किताब नहीं लाये हैं । कहलिऐक- कुछ सीखना चाहते हो या बकवास करना चाहते हो ? सौंसे वर्गक छात्र बाजि उठल- हम सीखना चाहते हैं । आप जो चाहें पढ़ा दीजिए । हम पहिने अल्पप्राण- महाप्राण वर्ण बुझाबय लगलिऐक । वर्ग एकदम शान्त भऽ सुनय लागल । प्रतीत भेल जे छात्र समुदायमे जिज्ञासा जागि गेलैक अछि । हमर पहिल दिनक व्याकरणक पहिल पाठ एहन भेल जे सर्वदाक हेतु उच्च वर्गमे व्याकरण पाठ हमरा कपारमे साटि देल गेल । जनाय दी जे भारतीय आर्य भाषा समूहक प्रत्येक प्रान्तीय भाषाक जननी संस्कृते भाषा थिकैक तैयो प्रत्येक भाषाक किछु मौलिक प्रकृति सेहो छैक । एहि मौलिक प्रकृतिकेँ बुझबा लेल हम पछाति आचार्य किशोरी दास वाजपेयीक 'हिन्दी निरूक्त' क गहन अध्ययनमे प्रवृत्त भेलहुँ ।

अपन साधारण अनुभवक आधार पर अध्यापनक प्रसंग किछु कहि देब ततेक अप्रासंगिक नहि होयत । आब की होइत छैक ताहिसँ तँ अनभिज्ञ छी, परन्तु हमरा सभक छात्र जीवन धरि संस्कृतक अध्यापन वैयक्तिक होइत छलैक, सामूहिक नहि, व्यक्ति विशेषक मेधा अर्थात् धारणाशक्ति भिन्न-भिन्न होइत छैक । कोनो छात्र एकबेर बुझौला पर बूझि जाइत छैक, कोनो छात्र दू बेर, कोनो तीन बेरमे बुझैत छैक आ कोनो-कोनो छात्र बज्र सिलौट होइत अछि जे बारंबार बुझौलो पर हृदयंगम नहि कऽ पबैत अछि । अतः एक-एक छात्रकेँ अपन-अपन क्षमतानुसार अगिला पाठ पढ़यबाक प्रणाली छलैक । हाइस्कूलमे सामूहिक पाठ होइत छैक, जाहि समूहमे एकबेरमे बुझनिहार छात्रसँ लऽ तीनिओ बेरमे नहि बुझनिहार रहैत छैक । किछु अध्यापक अपन धाख जमयबाक हेतु वर्गमे पाण्डित्य प्रदर्शनमे लागि जाइत छथि । फलतः अति मेधावी छात्र, जकर संख्या अनुपातमे

Scanned by CamScanner

बहुत थोड़ रहैत छैक, किछु अंश ग्रहण कऽ पबैत अछि, शेष मन्त्रमुग्ध भेल अध्यापकक भाषण मात्र सुनैत रहैत अछि, किछुओ ग्रहण नहि कऽ पबैत अछि। एहन अध्यापक छात्रक सदाक हेतु श्रद्धा भाजन नहि भऽ पबैत छथि। छात्रकेँ अध्यापकक पाण्डित्यसँ नहि, प्रत्युत जे विषय पढ़ाय रहल छथिन तकर सम्प्रेषणमे कतेक पटु छथि ताहिसँ प्रयोजन रहैत छैक।

कहि चुकल छी जे हिन्दीक दोसर अध्यापक नित्यानन्द प्रसाद सिन्हा सेहो चल गेलाह। देशक स्वतन्त्रता प्राप्तिक अवसर पर देशक विभाजन भेलापर लाहौर पाकिस्तानमे चल गेलैक। प्रो. जगन्नाथ प्रसाद मिश्रक गाम पतोर निवासी महेशशर्मा, हुनक कथनानुसार, लाहौरमे हिन्दीक प्रोफेसर छलाह। देश विभाजनक कारणेँ लाहौरसँ पड़ाय पड़लनि। हुनका ज्ञात भेलनि जे एम्.एल. एकेडमीमे हिन्दीक अध्यापकक पद खाली छैक। हम छात्रावास अधीक्षक रही। ओ एक दिन छात्रावास आबि हमरा अपन परिचय दैत कहलनि– हम साहित्याचार्य, एम्.ए. (हिन्दी) तथा 'प्रभाकर' परीक्षोत्तीर्ण छी, तकर बाद आलंकारिक भाषामे अपन विगत जीवनक उपलब्धि, लाहौरमे भेल संकट आदिक वर्णनसँ हमर हृदयकेँ द्रवित कऽ देलनि। हम हुनक बजबाक छवि छटासँ आकृष्ट भेलहुँ, संगहि मनमे भेल दू गोटे आचार्य छीहे हिनका अयलासँ स्टाफमे तीन गोटे भऽ जायब। झिंगुर बाबूक समीप हिनक खूब प्रशंसा कयलियनि। विपत्तिक मारल छथि, तेँ प्रोफेसरक पदसँ वंचिते भऽ हाइ स्कूलक शिक्षक बनय चाहैत छथि।

पुनः एक आत्मोपलब्धिक चर्चा करय पड़त। हम जहिया छात्रावास अधीक्षक बनाओल गेलहुँ, हमरा स्कूलमे गेलाँ मात्र 6 मास भेल छल। वेतन 36/रु भेटैत छल। छात्रावासमे एक प्रकारक अराजकता छलैक। छूआछूतिक विकृत विचार ताबत धरि समाजकेँ जकड़नहि छलैक। चौकीसब दुजनियाँ रहैक। एक चौकी पर दू गोट छात्र सुतैत छलैक। एकटा अस्पृश्य वर्गक छात्र आबि गेल छलैक जकरा संग एक चौकी पर सूतब, एक पाँतीमे बैसि कऽ खायब, अन्यान्य वर्गक छात्रकेँ स्वीकार्य नहि। हम संघक शाखाक संस्कार ग्रहण कयने रही। सबसँ पहिने प्रधानाचार्यकेँ सहमत कऽ सब चौकीकेँ एकजनियाँ बनबौलहुँ। राइजिंग बेल (भोरे उठयबाक घंटी) अपनहि निश्चित समयपर बजाबय लगलहुँ। सूर्योदयसँ पहिने सबकेँ स्नान करबाय प्रार्थना सभामे ठाढ़ कऽ हाजरी लऽ प्रार्थना गीत गवबाय सामाजिक समरसता पर प्रवचन दऽ सौमनस्यक वातावरण बनौलहुँ। प्रार्थनामे झिंगुर बाबूक एकमात्र पुत्र श्रीउपेन्द्र कुमर अग्रेसर रहथि। एहि सबसँ झिंगुर बाबू हमरापर प्रसन्न रहैत छलाह। एमहर श्री सुरेन्द्र प्रसाद अग्रवाल अपन लोक रहबे करथि, मिसरजीक कोनो बाते नहि। महेश शर्माक नियुक्ति भऽ गेलनि आ एतहु प्रोफेसर साहेबसँ सम्बोधित होअय लगलाह। किछु रंगीन मिजाजक रहथि तेँ किशोर मनकेँ अपन बाग्जालमे फँसयबामे पूर्णरूपेँ सफल भऽ गेलाह। सामान्य छात्रमे लोकप्रिय सेहो रहथि, किन्तु श्रद्धाभाजन नहि, कारण, किछु मेधावी छात्र पाठ्य विषयसँ बहिर्भूत विषयमे ओझरयबासँ सन्तुष्ट नहि रहैत छलनि।

Scanned by CamScanner

एक दिन झिंगुर बाबू शशिकुमारचौधरी नामक छात्रकेँ, जे कर्मक्षेत्रमे आबि जिलान्यायाधीशक पदसँ सेवानिवृत्त भेलाह, बजबाय पुछलथिन– क्या जी शशि कुमार, प्रोफेसर साहेब कैसा पढ़ाते हैं ? शशि कुमार उत्तर देलथिन– सर ! बहुत अच्छा पढ़ाते हैं, इतना अच्छा पढ़ाते हैं कि हमलोग कुच्छ नहीं समझते हैं । ताहि समय धरि मैथिली ऐच्छिक विषय रहैक । साइन्सक छात्रकेँ एडभांस मैथमेटिक्स अनिवार्य भऽ जाइक तेँ तेजगर छात्र ओहि दिस चल जाय । सामान्य मेधाक छात्र मैथिली पढ़य । जखन 1949मे मैथिलीकेँ मातृभाषाक रूपमे मान्यता भेटलैक तँ एकरो आँचर फुजलैक, तथापि अभिभावको वर्गमे मातृभाषाक महत्त्व बुझबाक चेतना नहि आयल रहैक, एखनहु नहि अयलैक अछि, आनो सांविधानिक भाषाक रूपमे स्थान भेटि गेलापर औतैक तकर आशा हमरा नहि अछि । पहिल वर्षमे मातृभाषाक रूपमे मैथिली पढ़बाक हेतु केवल दू गोट छात्र प्रस्तुत भेलाह, तुमौल निवासी सुप्रसिद्ध ओकील कमलाकान्त झाक पुत्र सूर्यानन्द आ हुनक मसियौत श्रीदेवकान्त झा । सूर्यानन्दक जेठ भाय रहथिन दुर्गानन्द झा जे सी.एम. कॉलेजमे हिन्दी ऑनर्सक छात्र रहथि । ओ प्रो. जगन्नाथ प्रसाद मिश्रक अन्धभक्त रहथिन ।

कदाच पुनरुक्तिने हो, तथापि प्रो. मिश्रजीक सम्बन्धमे कहि दी । मिश्रजी पहिने विश्वमित्रमे सम्पादक रहथि । सी.एम. कॉलेज फुजलाक बाद एतय हिन्दीक प्राध्यापक भेलाह । जेहने सुदर्शन स्वरूप तेहने ओजस्वी वक्ता । कहल जाइक जे एकटा सभाभवन भेटि जाय आ मुख्य वक्ताक रूपमे प्रो. जगन्नाथप्रसादमिश्र स्वीकृति दऽ देथि तँ सभामे स्वतः भीड़ जुटि जायत । विषय किछु रहौक, पुस्तकालयसँ लऽकऽ शौचालय धरि, गोवंशक पालन सँ कूकुर पोसबाक आवश्यकता धरि पर मिश्रजी एक घंटा अव्याहत भाषण करैत रहताह आ वाणीक अपन जादूसँ श्रोतावर्गकेँ बान्हि कऽ रखने रहताह । दुर्गानन्दजी मिश्रजी बनबाक आकांक्षा रखैत छलाह तकर अभ्यासो करैत छलाह, हुनका जखन ज्ञात भेलनि जे देवकान्त आ सूर्यानन्द हिन्दी छोड़ि मातृभाषा पत्रमे मैथिली लऽ लेलनि अछि तँ एक दिन स्कूल आबि दूनू गोटेक फज्झति करैत हिन्दीक क्लास जाय कहलथिन, देवकान्त जी बेचारे मुँहसच लोक, हुनका आश्रयमे रहैत, तेँ डरेँ उठि कऽ चल गेलाह, मुदा सूर्यानन्द अड़ि गेलथिन । परिणामतः पहिल वर्षमे हमरा एक मात्र छात्र रहि गेलाह आ हमरा विषयमे प्रथम श्रेणीक अंक प्राप्त कयलनि । श्री देवकान्तजी यद्यपि मैथिली नहि पढ़लनि, आगाँ चलि ओ संस्कृत पढ़लनि आ मगधविश्वविद्यालयक संस्कृत विभागाध्यक्षक पदसँ सेवा निवृत्त भेलाह, किन्तु हुनका हृदयमे मातृभाषाक प्रति आकर्षण अवश्य उत्पन्न भऽ गेलनि जे जीवनक कर्मक्षेत्रमे अयलाक बाद हुनक क्रियाकलापसँ स्पष्ट होइत अछि । विश्वविद्यालयसँ सेवानिवृत्तिक पश्चात पटनाक मैथिली अकादमीक निर्देशकक पद पर काज कयलनि । दर्जन सँ बेसी मैथिलीओमे ग्रन्थ लिखि मैथिलीक निबन्ध विधाकेँ पुष्ट कयलनि । जखन हम साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रतिनिधि भेलहुँ तँ हमर परामर्शी मण्डलक सदस्य रहलाह । सम्प्रति डॉ. श्रीदेवकान्तझा मैथिलीक

Scanned by CamScanner

लेखकक जे शीर्ष पंक्ति अछि, ताहिमे परिगणित छथि । अंग्रेजीमे स्वातन्त्र्योत्तर कालक मैथिली साहित्यक एहन इतिहास लिखलनि जकर वर्ष पुरैत-पुरैत साहित्य अकादेमीकेँ दोसर संस्करण छापय पड़लैक अछि ।

सूर्यानन्दकेँ उत्तम अंक प्राप्त भेलनि तकर प्रभाव आगाँक समयमे पड़य लगलैक । विज्ञान पढ़निहार छात्र मैथिली दिस तेना झुकल जे कोनो कमरामे अँटाबेस कठिन भऽ गेलैक, तखन गैलरीमे मैथिलीक क्लास होअय लगलैक । आब महेश शर्मा मैथिलीक विरोधी आ हमर प्रतिस्पर्द्धी भऽ गेलाह । हिन्दीक ई स्थिति रहैक जे 1961 वा 62 ई.मे एम्.एल्. एकेडमीक एक छात्र अनुपम दास गुप्ता बिहार स्कूल एग्जामिनेशन बोर्डमे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि, रहथि बंगलाभाषी, माय एल्.आर.गर्ल्स स्कूलक प्रधानाचार्य रहथिन । ओ छात्र मातृभाषा पत्रमे बंगला छोड़ि, तथाकथित प्रोफेसर साहेबक वाग्जालमे फँसि, हिन्दी राखि लेलनि, कयलनि तँ बिहार भरिमे फर्स्ट, मुदा हिन्दीमे उत्तीर्णांक मात्र भेटल रहनि । हम जहिया मैथिली पढ़ायब आरम्भ कयने रही तहिया आमक गाछ तर एकटा बेंच लऽ राधानन्दनजी सब बैसल करथि आ जहिया सेवा निवृत्त भेलहुँ ताहि समय उच्चतम वर्गक 300 छात्रमे 200 मैथिलीक छात्र छलाह । आत्म प्रशंसाक द्वारेँ ई नहि कहलहुँ अछि, पहिनहि कहि चुकल छी जे अध्यापककेँ अपन पाण्डित्य प्रदर्शनक मंच वर्गकेँ नहि बनयबाक चाही, प्रत्युत अपन सम्प्रेषणणीयताकेँ छात्रक उपयुक्त बनयबामे सावधान रहबाक चाही ।

अहम्मन्यता कृष्णपक्ष जकाँ जीवनमे अन्धकारकेँ बढ़बैत जाइत छैक आ आत्मगौरवक बोध जीवनमे क्रमशः प्रकाशक वृद्धि करैत छैक । हमरा एहिबातक आत्मगौरव अछि जे अत्यल्पज्ञ रहितहु मैथिलीक शिक्षण-संसार, तथा साहित्य-संसारक आधा क्षेत्रकेँ हमर छात्र लोकनि व्याप्त कयने रहलाह । ओना अन्यान्यो क्षेत्र अवंच नहि अछि, डॉक्टर, इंजीनियर, विधायक, सांसद, मन्त्री, आफिसर, बैंक, सबठाम अपन छात्रकेँ उपस्थित देखैत छियनि, ताहिसँ अयाचित सुविधा प्राप्त होइत रहैत अछि तँ आत्मगौरवक बोध होइत अछि । ई भिन्न बात जे अपन संस्कारवश बहुतो कृतज्ञ बहरयलाह तँ किछु कृतघ्न सेहो । एहन छात्रक हेतु हम सरस्वतीसँ एतबे प्रार्थना कऽ सकैत छियनि जे आबहु हुनका सबकेँ सद्बुद्धि देथुन । सत्य पूछी तँ ओही कृतविद्य छात्र समुदायक प्रभावसँ हम समाज द्वारा आदर पबैत रहलहुँ । अन्यथा हम तँ ओ पितड़िया लोटाक समान छी जाहि पर एहन पालिस चढ़ाओल रहैत छैक जे उपरसँ चानी जकाँ चमकैत रहैत छैक ।

छात्रावास अधीक्षकक रूपमे जे किछु हम प्रयोग कयलहुँ तकरो किछु उल्लेख कऽ दी । असहिष्णुता हमरामे जन्मकालेसँ रहल । असहिष्णुता क्रोधकेँ जन्म दैत छैक, क्रोधः पापस्य कारणम् क्रोध सबसँ पहिने विवेककेँ नष्ट कऽ दैत छैक । बाल्यकालेक असहिष्णुताक एक छोट सन घटनाक उल्लेख करैत छी । उपनयनसँ पहिने उद्योग होइत

Scanned by CamScanner

छैक, उद्योगक दिनसँ आरम्भ कऽ कुमरमसँ एक दिन पूर्व धरि माणवक (बरूआ)कें तेल-उबटन लगाओल जाइत छैक, हमरा ओ सह्य नहि, बहिन लोकनि बादमे कहथि जे बलजोरी तेल उबटन लगाओल जाय तँ हम चुलहासँ छाउड़ बाहर कऽ सौंसे देह-कान-कपार पर औंसि ली । एहन क्रोधक स्वामी हम, यद्यपि अपशब्द, अवाच्य बजबाक लति नहि रहय, छात्रावास अधीक्षक भऽ अयला पर आत्म-मन्थन कयल, क्रोध पर विजय तँ बड़ कठिन साधनासँ होइत छैक, किछु आंशिको शमन हो ताहि हेतु प्रत्येक रवि दिन मौन धारण करय लगलहुँ । काज चलयबाक लेल एक टा सिलेट पेन्सिल रखलहुँ, ओही पर लिखि काजक निष्पादन कयल करी । जँ कोनो छात्र अनुशासन भंग करय आ दण्डनीय अपराध होइक तँ दण्डमे दिन भरि उपवास करबिऐक, ओकरा संग अपनहुँ उपवास कऽ जाइ, जाहिसँ छात्र समुदाय पर नैतिक दबाब पड़ैक । अनकर टाका-पैसा चोरौनिहार कतेको छात्र प्रार्थना-सभामे सार्वजनिक रूपें एहन अपराध स्वीकार कयलक आ आत्म-शुद्धिक लेल उपवास सेहो ।

छात्रावासमे छात्रक संख्या 70-75 रहैक । भोजन हेतु दू टा मेस चलैत रहैक, नवम वर्ग धरिक छात्र एक मेस मे, दशम-एगारहम वर्गक छात्र दोसर मेसमे भोजन करय । प्रातः 7 बजे सँ 9 बजे धरि निचलावर्गक हेतु आ 9.30 बजे धरि उपरका वर्गक हेतु स्वाध्याय काल निर्द्धारित रहैक । भोजनक हेतु स्थान सीमित रहैक तें बालवर्गक भोजन कऽ लेलाक बाद किशोर ओ तरुणवर्गक छात्रकें भोजन भेटैक । हम स्वयं पहिले खेपमे भोजन एहि हेतु कऽ लेल करी जे दूनू मेसक भानसक गुण-अवगुणसँ अवगत भऽ जाइ । बालवर्गक भोजन 9.30 मे सम्पन्न भऽ जाइक जाहिमें झिंगुर बाबूक बालक श्रीउपेन्द्रकुमर सेहो रहथि, तकर बाद 10 बजे धरि ओहि वच्चा सभक संग कैरम बोर्ड खेलाइ जाहिमे एक शिक्षक शिवशंकर चौधरी सेहो आबि जाथि । ओकरा सबकें प्रोत्साहित करबा लेल दूनू शिक्षक हारि जाइ तँ ओ सब बहुत प्रसन्न होअय । उपर वर्गक छात्रकें छुट्टीक बाद कैरम वोर्ड खेलयबा लै भेटैक । छुट्टीक बाद शिक्षक ओ छात्र सब मिलि भॉलीबॉल सेहो खेलाइ । एहि ठामक छात्रावासक व्यवस्थाक विषयमे जिलास्कूलक प्रधानाचार्य प्रेमतोष रूद्रकें कोनो सूत्रसँ ज्ञात भेलनि । ओ गुप्त रूपें निरीक्षण करबाक हेतु एक दिन प्रातः आ एक दिन संध्या कालीन प्रार्थना सभाक निरीक्षण कऽ गेलाह । पछाति जिला शिक्षा पदाधिकारी सेहो भेल छलाह आ दरभंगा जिलास्कूलमे मैथिली शिक्षकक हेतु विज्ञापन भेलैक तँ हमरा आवेदन करबाक आग्रह कयलनि, एहि प्रसंग यथास्थान अवकाश भेटत तँ लिखब ।

किछु छात्रक कहलापर झिंगुर बाबू सबेरमे जे हम सब कैरम खेलाइत छलहुँ ताहि पर प्रतिबन्ध लगाय, कॉमन रूपमे बन्द करबा देलथिन । ओहि समयमे भिड़हा गामक एक बेस सुदर्शन युवक, नाम नहि मन पड़ैत अछि, हमरा सँ जेठे छल होयत, बेस

Scanned by CamScanner

धनाढ्य घरक छल, जकर विवाह आइ.ए.मे पढ़ैत कन्यासँ भऽ गेल रहैक आ पत्नीक भर्त्सना कयलापर प्राइवेटसँ मैट्रिक परीक्षा देबाक उद्देश्यसँ आयल छल। शिवशंकर चौधरी आ हमरासँ ट्यूशन पढ़य लागल। ओ ताहि समयमे 50/रू. दक्षिणामे दैत छल। कैरम बोर्ड बन्द भऽ गेलाक दिनमे जे शिवशंकर बाबू अयलाह आ समाचार बुझलनि तँ कहलनि चलू आइए हम दूनू गोटे मिलिकऽ कैरम बोर्ड कीनि आनी। सैह कयलहुँ। दोसर दनि भोजनक बाद श्रीउपेन्द्रकुमरकेँ, जनिका दुलारसँ उपी कहि सम्बोधित कयल जाइनि, बजबाय हम सब खेलाय लगलहुँ। झिंगुर बाबू स्कूलक बाद गाम चल जाथि, श्री उपी एतहि रहथि। दोसर दिन गामसँ अयलाह आ उपीकेँ अपना कोठलीमे नहि देखि बालेश्वर झा चपरासीकेँ पुछलथिन जे उपी कहाँ छथि ? ओ कहलथिन ओहि भाग कैरम बोर्ड खेलाइत छथि। ओतहिसँ क्रोधान्ध भेल अयलाह आ हमरा पुछलनि– आपने किसकी अनुमतिसे कैरमबोर्ड निकाला ? हमरा बजबासँ पहिने बेटे कहि देलथिन-ई स्कूलक नहि थिकै, पण्डितजी अपने किनलथिनहेँ। चुप्पे घूरि गेलाह। हुनका हमर स्वाभिमानी स्वभावक आभास भेटि गेलनि आ तहिएसँ हमरासँ असन्तुष्ट रहय लगलाह।

प्रार्थना सभामे छात्र सभक द्वारा अपराध स्वीकार कऽ लेबाक प्रसंग कहैत छलहुँ, से एकटा छपरिया छात्र रहय जगदीश नारायण सिंह, रहय भोजपुरी भाषी, मुदा पढ़ैत रहय मैथिली, पछाति पाक्षिक 'वैदेही'मे ओकर एकटा लेख सेहो छपने रहिऐक। एक दिन एकान्तमे प्रार्थना सभाक बाद ओ कहलक-सर, हरिनारायणक जेबीसँ छओ आना पाइ हमही चोरौने रहिऐक। कहलिऐक– काल्हि प्रार्थना सभामे स्वीकार कऽ लिहेँ। कहलक– हेड मास्टर साहेब बूझि जयताह तँ निकालि देताह। हम कहलिऐक जँ निकालि देथुन तँ हम वचन दैत छियौक हमहू छात्रावास छोड़ि देब। दोसर दिन ओ स्वीकार कऽ लेलक। ई घटना 1950क थीक। प्रोफेसर साहेबक कोनो समर्थक छात्र झिंगुरबाबूकेँ कहि देलकनि। झिंगुरबाबू हमरा बजबाय कहलनि– जगदीश नारायण सिंहने चोरी की है, उसको कहिए, होस्टल छोड़ देगा। हम कहलियनि– हम ओकरा आश्वासन देने छिऐक। ताहि पर कहलनि– आप कौन होते हैं आश्वासन देने वाले? कहलियनि– हमरा छात्रावास अधीक्षक बनौने छी, छात्रक चरित्र निर्माणक दायित्व हमरा पर अछि, तेँ हम अधिकारी छी। ओ नहि माननलनि। हम शिवशंकर चौधरीक सहयोगसँ बलभद्र पुरमे फूसक दू कोठली आ भानस घर बला एकटा डेरा ताकि मास लगिते छलैक, छात्रावाससँ त्याग पत्र दऽ देल। ओही दिनसँ झिंगुर बाबूसँ मतभेद भऽ गेल से बहुत दिन धरि चलैत रहल। मुदा जखन मैथिली पढ़निहार अधिकतर छात्रकेँ प्रथम श्रेणीक अंक आबय लगलैक, स्कूलक प्रतिष्ठा बढ़य लगलैक तखन रूखिमे नरमी आबय लगलनि। पछाति तँ ततेक प्रशंसक आ हमर अनुकूल भऽ गेलाह जे मिश्रटोलामे भूमि किनबाक समय 1956मे तथा 1957मे मायक श्राद्धमे बेर पर आर्थिक सहायता दऽ आजीवन कृतज्ञ बनाय लेलनि। प्रतिदानमे हम एतबे कहि सकैत छी जे जनिक अनुशासन-प्रियता सर्व विदित छलनि

Scanned by CamScanner

तनिक अनुशासन बाल्यावस्थामे एक मात्र अपने पुत्र नहि मानैत छलथिन, किन्तु हमर अनुशासनक प्रभाव भविष्यमे माइनिंग इंजीनियरक अत्युच्च पदपर पहुँचबामे सहायक भेलनि । सम्प्रति भारत सरकारक सेवासँ निवृत्त भऽ अन्ताराष्ट्रिय अनेक कोलकम्पनीक सलाहकारक रूपमे, विशेषतः एशियाक देश सबमे भ्रमण करैत दिल्लीमे निवास कऽ रहल छथि । आब एहि अध्यायकेँ एतहि विराम दैत छिऐक ।

पुनः पारिवारिक स्थिति पर अबैत छी । छात्रावाससँ त्याग पत्र दऽ फूसक घरमे अयलाक किछुए दिनक बाद ढंगावाली बहिन भयानक रूपेँ दुःखित पड़ि गेलीह, हुनका चिकित्सा करयबाक हेतु दरभंगा आनय पड़ल । ओमहर पिताजीक मृत्युक बाद खोजपुरमे माय असहज स्थितिमे रहथि । बहिनक परिचर्या हेतु हुनको एही लाथेँ गामसँ लऽ अनलियनि । छात्रावासक जे वेतन सँ अतिरिक्त 10/ टाका भेटैत छल से बन्द भऽ गेल, एमहर घरक भाड़ा 7/रू. से बढ़ि गेल । आर्थिक दबाबक अनुभव नहिए जकाँ एहिसँ पहिने भेल छल । मायक खोजपुरसँ अयलापर पत्नी असमंजसमे पड़ि गेलीह, हुनको आनय पड़ल, भातिज 'मिहिर' गाममे वन-बहेड़ भेल जाइत छलाह, तेँ हुनको पठाय देलथिन । आश्रम गदाल भऽ गेल । आयक एक स्रोत और जे भेल से छल 1948मे पटना आकाशवाणीक स्थापना आ ओहिमे चौपाल कार्यक्रममे मैथिलीक प्रथमे कविसम्मेलनसँ भाग्यवश प्रवेश, जाहिमे तीनमास पर निश्चित रूपेँ अनुबन्ध भेटि जाइत छल जे हिन्दीक वाग्धारा- 'डूबते को तिनके का सहारा' छल संगहि समय- समय पर माय गाम जाथि तँ किछु चाउर-दालि लऽ आनथि, तथापि उधार चलय लागल ।

आकाशवाणीक चर्च कयलहुँ अछि तेँ प्रथम-प्रथम कवि सम्मेलनक प्रसंग एतबा कहि दी जे ओ विशुद्ध मैथिली कवि सम्मेलन रहैक जाहि मे 10 गोट कवि आमन्त्रित छलाह, कविशेखर बादरीनाथझा, मधुपजी, ईशनाथ बाबू, हरिमोहन बाबू, सुमनजी, मोहनजी, गोविन्द चौधरी, किसुनजी, आरसी बाबू आ हम रही । ओना चौपालमे लोकभाषा सम्मेलन होइक जाहिमे मैथिली, मगही आ भोजपुरी कवि सब आमन्त्रित होथि आ एहि तीनू भाषाकेँ हिन्दीक बोली कहल जाइक । एमहर मैथिलीकेँ हिन्दीक चाङुरसँ बाहर करबाक हेतु संघर्ष चलैत रहैक, तेँ बहुतो गोटेक मत रहनि जे एकर बहिष्कार करबाक चाही, किछु गोटे एहि मतक छलाह जे बहिष्कार कयने आकाशवाणी पर तँ प्रभाव किछु नहिए पड़तैक, एहू माध्यमसँ जे प्रचार-प्रसार होइछ ताहूसँ वंचित रहब । ई कोनो बुधियारी नहि होयत ।

एहि क्षेपकक बाद पुनः मूलपर अबैत छी । उधारी खयबासँ कोना त्राण भेटल तकरा **चुटकी आ मुट्ठी** शीर्षक लघुकथामे अन्योक्ति रूपेँ चित्रित कयने छी जे हमर 'दहीक खुँइचा' नामक संग्रहमे संकलित अछि । ओही अवधिमे 'त्रिफला' आ 'वीरकन्या' नामक छोट-छोट दूटा पुस्तको छपौलहुँ । यद्यपि 'गुदगुदी' कविता संग्रहमे जेहन उत्साह

Scanned by CamScanner

बढ़ल छल से एहिमे बनल नहि रहल । तथापि कहि चुकल छी जेँ क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थञ्च चिन्तयेत्' एहि नीतिवाक्यकेँ अपन-जीवन-दर्शनक अंग बनौने रहलहुँ, दोसर हिन्दीमे एक उक्ति छैक- 'तेते पाँव पसारिये जेती लांबी सोर' तेँ तकरा ध्यानमे सतत रखलहुँ । किन्तु हमर व्यस्तता जतेक बढ़ैत गेल भातिज (मिहिर) ततबे बेसी उच्छृंखल होइत गेलाह । दसमवर्ग पास कयने रहथि । हम हुनका एहि संगतिसँ दूर रखबाक लेल बाबूबरही स्कूल पठाय देलियनि । ओतय हमर पिसियौत आ सम्प्रति बहुचर्चित साहित्यकार श्रीहरेकृष्ण झाक पिता पं. श्रीकृष्ण झा हेड पण्डितक संग छात्रावासक अधीक्षक रहथि । छात्रावासमे राखि लेलथिन, आधा फीस सेहो माफ कराय देलथिन । सेंट-अप भेलाह तँ बोर्ड परीक्षाक हेतु शुल्क सेहो पठाय देलियनि । जहिना पिता मालगुजारी चुकयबाक हेतु देल टाकासँ साइकिल किनने चल अयलथिन तहिना ई परीक्षा शुल्कक टाका लऽ विवाहपंचमीमे मायकेँ जनकपुरसँ दर्शन कराय अनलनि । दण्ड सहित परीक्षा शुल्क जमा करबाक समय बाँचल छलैक । पुनः शुल्क देबय कहलनि । हम ऋण-पैंच नहि लेबाक हेतु शपथ खाय चुकल छलहुँ (जाहि पर आइ धरि दृढ़ छी) हाथ खाली छल, हम व्यवस्था नहि कऽ सकलियनि । परीक्षा नहि दऽ सकलाह । आइ अनुभव करैत छी जे ओ हमरासँ पैघ त्रुटि भऽ गेल से क्षोभक कारणेँ ।

आब बाबूबरही सेहो छूटि गेलनि । पिता कहलथिन- गाम पर बैसल रहने जतबो किछु पढ़ने छी से बिसरि जायब, काकाक लग रहि अगिला परीक्षाक तैयारी करब, काका पढ़ाइओ देताह । पिताकेँ उत्तर देलथिन जे काका की पढ़ौताह, अंग्रेजी, हिसाब, भूगोल इतिहास हुनका अपनहु नहि पढ़ल छनि । पिता उठलथिन, हमरा सँ बिनु पुछने-अछने विवाह कराय देलथिन । हम ओही वर्ष पूरक परीक्षामे बैसबाक निश्चय कऽ लेलहुँ अगहनीक समयमे बड़ा दिनक छुट्टी भेलैक, हम सम्पूर्ण परिवारकेँ गाम पठाय रायसाहेब पोखरि, लहेरियासरायमे रहैत छलहुँ, बड़का डेरा छोड़ि एक कोठली लऽ परीक्षाक तैयारीमे लागि गेलहुँ । संयोगवश सुन्दरझा शास्त्री सेहो व्याकरण शास्त्री पासकऽ मैट्रिक परीक्षा देबाक हेतु जनकपुरसँ दरभंगामे डेराक हेतु बौआइत भेट भऽ गेलाह । परिचय भेल, साहित्यिक रुचिक लोक होयबाक कारणेँ दूनू गोटेमे पटरी बैसि गेल, बस संगहि रहि लहेरियासराय चट्टी पर एकटा पाठक जीक होटल रहनि, ताहीमे भोजन करी आ जेना कोनो ढेङकेँ फाड़बाक लेल दू टा कुड़हरि चलौनिहार दूनू भागसँ छओ मारैत छैक तहिना पाठ्य विषयरूपी ढेङसँ चेरा ओदाड़य लगलहुँ । परीक्षा देलहुँ, पहिनहि कहने छी हम द्वितीय श्रेणीक लोक छी, एहूमे दूनू गोटेकेँ द्वितीय श्रेणी भेटल ।

एतहु एक रोचक घटना स्मरण होइत अछि । हम 1953क पूरक परीक्षा देने रही जे पुरना पाठ्यक्रमक अन्तिम परीक्षा रहैक । अगिला वर्षसँ नवीन पाठ्यक्रम लागू भेलैक । हम 1951सँ मैथिलीक परीक्षक बनाय देल गेल रही । जिला स्कूलसँ प्राइवेट परीक्षार्थी

Scanned by CamScanner

रही । टेस्ट परीक्षा ओतहि भेल रहय । जहिया हिन्दी द्वितीय पत्रक परीक्षा छल ताही दिन पटना आकाशवाणीसँ कवितापाठ छल । ताहि समय आइ जकाँ पहिनहि रिकार्डिंगक व्यवस्था नहि छलैक । आर्थिक क्षतिक संभावना रहय । हम जिला स्कूलक प्रधानाचार्यसँ अपन समस्या कहलियनि । ओ कहलनि दोनों पत्र मिलाकर न्यूनतम 72 अंक लाना जरूरी है । अगर प्रथम पत्रमें ही उतना अंक आ जायेगा तो हम सेंट-अप कर देंगे । अगर ऐसा नहीं हो सका तो मैं कोई मदत नहीं कर सकूंगा, मेरी भी कुछ मजबूरी है । प्रथम पत्रमे मुहावरा, श्रुति समभिन्नार्थक शब्द, विपरीतार्थक शब्द आदिक वाक्य प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करबाक प्रश्न सब रहैत छलैक । हम ताहि सभक छन्दोबद्ध उत्तर देलिऐक । फलतः 72क स्थान पर 94 अंक आयल छल, हम सेंट-अप भऽ गेलहुँ ।

ओहि वर्ष जिलास्कूलक परीक्षाकेन्द्र एम्.एल्. एकेडमी भऽ गेलैक । ओहि बीच झिंगुर बाबू हमरासँ असन्तुष्ट रहैत छलाह । प्राइवेट स्कूलमे अर्जित अवकाशक कोनो प्रावधान नहि छलैक, मेडिकल लऽ नहि सकैत छलहुँ, आकस्मिक अवकाश सेहो सीमित, अवैतनिक अवकाश लेने 'सर्विस ब्रेक' क खतरा । घोर संकट छल, तथापि झिंगुर बाबू एकटा रास्ता बाहर कयलनि । कहलनि जे यदि 2 घंटामे परीक्षा दऽ एक घंटा समय बाहर कऽ सकी तँ 'रिलीविंग'मे अहाँक नाम दऽ सकैत छी, तखन छुट्टी लेबाक प्रयोजन नहि रहत । यद्यपि दुइए घंटामे परीक्षा दऽ देब खतरासँ खाली नहि छलैक, तथापि हम स्वीकार कऽ लेलियनि । हमरा एहिसँ तीनटा लाभ भेल, परीक्षा दऽ सकलहुँ छुट्टी नहि लेबय पड़ल, गार्डिंगमे 2/रू. प्रति पाली पारिश्रमिक भेटैत छलैक से भेटल ।

एहूसँ चमत्कृत करयवला विषय ई भेल जे एहू परीक्षामे हम परीक्षक नियुक्त रही ओ एहू केन्द्रक उत्तर पुस्तिका हमरे नामेँ आवंटित छल । तावत केन्द्रित मूल्यांकनक व्यवस्था नहि छलैक । परीक्षकक घर पर उत्तर पुस्तिका पठाओल जाइक । हमर एहि केन्द्रक केन्द्राधीक्षक रहथि सी.एम्.कॉलेजक सीनियर प्रो.आर.सी.पी. । प्राइवेट स्कूलक प्रधनाचार्य केन्द्राधीक्षक नहि बनाओल जाइत रहथि । मैथिलीक परीक्षा सम्पन्न भेलाक बाद हमरा बजबाय पुछलनि-मैथिली की कॉपियाँ आपके नाम से आवंटित है, आप 'हैण्ड टू हैण्ड' (हाथे हाथ) ले लेंगे या डाक पार्सलसे भेजना पड़ेगा ? हम कहलियनि- मैं तो खुद इसमें परीक्षार्थी हूँ । ओ चौंकि उठलाह । कहलनि-आप इतना मुझसे जूनियर होते हुए भी मजाक करते हैं ? कहलियनि नहीं सर, मैं आपसे मजाक करूंगा ? सच कह रहा हूँ । फेर कहलनि- यह कैसे हुआ ? हम कहलियनि-यह तो बोर्ड जाने ।

पुनः हम एक क्षेपक कहब । प्रो. सीनियर आर.सी.पी एके पबाइ लोक रहथि । हिनका प्रसंग अनेक चुटुक्का लोकमे प्रचलित छलनि । ई असामान्य रूपक झक्की आ शक्की मिजाजक लोक रहथि, ताहू लऽकऽ बुद्धिजीवी वर्गमे बहुचर्चित लोक रहथि । हुनका अनके पर नहि, अपनो पर विश्वास नहि छलनि । बोर्ड सबटा प्रश्नपत्र ट्रेजरीमे

Scanned by CamScanner

पठाय दैक । परीक्षासँ एक घंटा पूर्व केन्द्राधीक्षक द्वारा अधिकृत व्यक्ति ट्रेजरीसँ प्रश्न पत्र लऽ आनय, मुदा हिनका ककरो पर विश्वास नहि, तेँ नित्य अपनहि जाथि । ऑफिससँ तीनटा अखबार अपना बैगमे लऽ लेथि । ओतय सील्ड पैकेट भेटनि । हैंड बैगमे एकटा लम्बा चौड़ा तौलिया सेहो रहनि । पहिने पैकेटकेँ बेराबेरी तीनू अखबारमे लपेटथि तकर बाद तौलियाकेँ दोबड़ कऽ ओहिमे लपेटथि तखन अपना बैगमे बन्द करथि, रिक्शा पर बैसलाक बाद जेना वानर अपना बच्चाकेँ पेटमे साटि लैत अछि तेना सटने आबथि । कुर्सी पर आबि पहिने अपने झाड़थि जोर-जोरसँ झाड़ि दफ्तरीकेँ कहथिन -अखबार सबको झाड़ो । नीचा ताकि पुछथिन- इसमें क्वेश्चन पेपर नहीं न था ? एहि सत्रक प्रश्न पत्रक पैकेट झिंगुर बाबूकेँ धराय दोसर सत्रक प्रश्न पत्रक पैकेटकेँ आयरन सेफमे राखि ताला लगाया हैण्डिल पकड़ि एकटा लात अड़ाय बाहर दिस घिचथिन तखन झिंगुर बाबूकेँ पुछथिन- 'सेफ' ठीक से बन्द हो गया न? जरा आप भी ठीकसे देख लीजिये ।

पहिल पालीक उत्तर पुस्तिका सब तँ परीक्षक लोकनिकेँ ओही दिन डाक अथवा रेल पार्सलसँ पठाय देल जाइनि । दोसर पालीक उत्तर पुस्तिका सबकेँ आठ बजेराति धरि बैसि, सील-मोहर कराय, स्ट्रांग रूममे रखबाय, दूटा अलीगढ़क बड़का ताला लगाय, पाँच मिनट धरि झकझोरि कऽ देखि लेथिन तखन रिक्शा मङबाय डेरा बिदा होथि, मेडिकल (आब कर्पूरी) चौक पर आबि मनमे सन्देह होइनि जँ कदाच स्ट्राँग रूमक ताला ठीक सँ नहि बन्द भेल हो? तेँ रिक्शा घुमाय पुनः आबि दूनू तालाकेँ झकझोरथि।

झिंगुर बाबू दोसरे दिन हिनकासँ अकच्छ भऽ गेलाह । स्टाफ रूममे चर्चा कयलथिन । हमरा सभक स्टाफमे क्राफ्ट टीचर रहथि मोहिनीमोहन बनर्जी, हुनका बूझल रहनि जे प्रो. साहेब सर्पभयसँ त्रस्त रहैत छथि । ओ झिंगुरबाबूकेँ आश्वस्त कयलथिन जे काल्हिसँ हम एकर उपाय कऽ देब । बड़का हॉलमे लकड़ीक देवाल जकाँ बनाय एक कोनमे कार्यालय रहैक । हॉलमे परीक्षा केन्द्रक प्रत्येक कमरामे परीक्षार्थीमे वितरण हेतु उत्तर पुस्तिका सब गनि गनि कऽ राखल जाइक । ओहि दिन कार्यालयमे प्रो. साहेब प्रश्न पत्र गनिगनि कऽ रखबामे झिंगुर बाबूक संग व्यस्त रहथि । मोहिनीमोहन बनर्जी अयलाह, हॉलमे जाइत देरी जोरसँ चिचिआय उठलाह मास्टर साहेब, हॉलमे बहुत बड़ा साँप है । साँप ? प्रोफेसर साहेब साप शब्द कानमे पड़ैत देरी कुर्सीसँ फनैत बरण्डापर अबैत झिंगुर बाबूकेँ 'आप सँभाल लीजियेगा' कहैत स्कूलक अङनइमे आबि ठाढ़ भेलाह । दोसर दिनसँ ट्रेजरीसँ प्रश्न पत्रक पैकेट आनि रिक्शे परसँ झिंगुर बाबूक हाथमे धराय विज्ञान भवनक वरण्डा पर जाय बैसथि । नगर निगम कार्यालयसँ दक्षिण भूमि कीनि मकान बनायब आरम्भ कयलनि, लिंटर धरि बनि चुकल छलनि, एक दिन ओहि ठाम एकटा हरहरा साप कोम्हरहुसँ आबि गेलैक, ओकरा देखि जे पड़यलाह से घूरि कऽ ओहि भूमि पर सुनैत छी नहि गेलाह । एहन रहथि प्रो. सीनियर आर.सी.पी । सेवा निवृत्तिक बाद

Scanned by CamScanner

साँझमे प्रायशः नित्य प्रो. पुरुषोत्तम झाक ओतय जाथि । यदा कदा हमहू जाइ । हमरा देखैत देरी 1953 क ओ परीक्षार्थी आ परीक्षक वला हमर घटना हुनका सुनयबेटा करथिन, तकर बाद पूछथि- उसके बाद क्या हुआ ?

सीनियर आर.सी.पी जे प्रश्न जीवन भरि करैत रहलाह, सम्भवतः से प्रश्न अहूँसभक समक्ष आयल हो । हम ओही राति पहलेजाक ट्रेन पकड़लहुँ आ पटना बोर्ड ऑफिस पहुचलहुँ । अक्षयबट श्रीवास्तव डाइरेक्टर रहथि । भेट कऽ समस्या समक्ष रखलियनि । पहिने तँ हमरा पर हुड़ुकलाह -बगैर टर्म्स और कंडीशन देखे आपने स्वीकार कैसे कर लिया ? हम कहलियनि- मैंने सब कुछ देखा, गौरसे देखा, उसमें लिखा है कि अगर आपका पाल्य या कोई सम्बन्धी परीक्षार्थी हो तो आप परीक्षकता स्वीकार नहीं करें, मगर आप अगर खुद परीक्षार्थी हों तो स्वीकार न करें, ऐसा कहीं नहीं है । मैं क्या जानता था कि जिस केन्द्रमें मैं परीक्षा दूंगा वहाँ की उत्तर पुस्तिकाएँ मुझे भेजी जायेंगी? परीक्षताक अनुबन्ध प्रपत्र मङबाय नियम कानूनकेँ दू-तीन बेर पढ़ि, कनेक ठंढा होइत कहलनि- भई तुम कहते तो ठीक ही हो, मगर ऐसा भी हो सकता है, ऐसा कभी सोचा ही नहीं गया होगा । अच्छा किया पहले इनफॉर्म कर दिया । खैर इस बार रिजाइन कर दो । अगर तुम बेईमान होते तो चुपके से कॉपियाँ देख लेते, इन हजारों कॉपियों में कौन देखने जाता ?

ओ उत्तर पुस्तिका प्रधान परीक्षक प्रो. जयदेव मिश्रकेँ गेलनि । जखन ओ सी.एम. कॉलेजसँ पटना कॉलेज चल गेल छलाह । गर्मी छुट्टीमे दरभंगा अयलाह तँ पुछलनि को- एग्जामिनर लिस्टमे अहूँक नाम छल, मुदा अहाँक ओतय सँ ने स्पेसीमेन 10 टा कॉपी गेल ने परीक्षित उत्तर पुस्तिके ? पुनः कहलनि-अहाँक स्कूल सेंटर सँ किछु कापी हमरो गेल छल, ओहि मे एकटा विलक्षण कॉपी भेटल, बुझायल कोनो पण्डित परीक्षा देने होथि । गणितमे तँ शत प्रतिशत अंक देल जाइत छैक साहित्यमे अवैध भऽ जइतैक । मन तँ भेल चुप्पी साधि ली, किन्तु हुनका प्रश्नक उत्तर देबाक छल, अगत्या कहय पड़ल जे हमरा परीक्षकता छोड़य पड़ल । एहि बेर हमहू परीक्षा देलिऐक अछि । ताहि पर डबल चुटकी नोंसि नासिकागत करैत कहलनि- यैह, यैह, हमर अनुमान सोड़हो आना सही छल ।

पुनः मूल बिन्दु पर आबी । बचकुन जे पढ़ब छोड़लनि से छोड़िए देलनि । हम शाहगंज लहेरियासराय मे नव मकान लऽ परिवारकेँ लऽ अनलहुँ । एहि सबसँ पहिने जीवनमे बहुत पैघ एक घटना भऽ गेल छल । 1950 मे छात्रावास अधीक्षक रहबे करी । ओहू वर्ष सरस्वती पूजामे नाटकक आयोजन कयने रही । एही मध्य 1948 मे हमर प्रथम सन्तान आयुष्मती योगमायाक बाद एक बालकक जन्म भेल छलैक । सरस्वती पूजासँ दू दिन पूर्व मायक चिट्ठी लऽ गामसँ एकटा आदमी आयल । ओहि चिट्ठीमे लिखल छलैक बौआ बड़जोर दुक्खित पड़ि गेल अछि, पत्र देखैत गाम आबि जाउ ।

Scanned by CamScanner

ताहि समय यातायात एतेक सुविधाजनक नहि छलैक । गाम जाय तुरन्त घूरि सकब से सम्भव नहि छल । एमहर पूजा आ नाटक दूनू ठानल छल । हमर बच्चाभाइ अपनहु होमियोपैथी चिकित्सा करैत छलाह, सुयश छलनि । हम छात्रावासमे एकटा छात्र रहय कुलानन्दमिश्र, रहय बड़ उच्छृंखल, मुदा वीर बहादुर, दुष्कर सँ दुष्कर काज करबामे पैर पाछु नहि करय । एकर उच्छृंखलताक कनेकटा नमूना कम मनोरंजक नहि होयत । सन्ध्याकाल छात्र सभक स्वाध्यायक समय एकटा छात्र शिकाइत लऽकऽ आयल– सर, कुलानन्द बहुत हल्ला करता है । जाय कऽ देखलिऐक– छात्रावासक बरण्डापर एमहर सँ ओमहर कूदैत, दूनू हाथ फरकबैत जोर–जोर सँ रटि रहल अछि– हेलते–हेलते हेलताः । पुछलिऐक यह क्या कर रहे हो? कहलक लता शब्दको याद कर रहा हूँ, टास्क है, कल सुनाना है । पुछलिऐक– कूद कूद कर इतने जोर से चिल्ला क्यों रहे हो ? कहलक– बैठकर पढ़ते हैं तो ऊंघी लग जाती है और कमजोर से पढ़ने पर याद नहीं होता है, इसलिए घूम–घूम कर जोर–जोर से याद करना पड़ता है । ताही कुलानन्दकेँ चिट्ठी आ टाका दऽ कऽ खोजपुर जाय कहलिऐक । तावत दोसर छात्र जकर पिता बाबू बरहीमे सरकारी दातव्य आयुर्वेदिक औषधालयमे वैद्य रहथिन, ओ कहलक सर, हमहू जाउ ? बाबूजीकेँ संग लेनहि जयबनि । परामर्श नीक बुझायल । राजनगरक ट्रेन भाड़ा छओ आना रहैक । दूनू छात्रकेँ भोरुके ट्रेनसँ पठा देलिऐक । दोसरे दिन पूजा आ नाटक रहैक । पूजा स्थलक सजाबटि आ नाटकक स्टेज रिहर्सल (पूर्वाभ्यास) करयबाक छल । दोसर, संस्कृत विद्यालयक छात्रावासमे सरस्वती पूजा ठनने रही सेहो छोटे स्तरपर करैत अयलहुँ अछि, एखनहु कइए रहल छी, तकरो व्यवस्थामे लागि गेलहुँ । एक बात जनाय दी जे हम मृण्मूर्तिक स्थापना नहिकऽ पुस्तकेक मन्दिर जकाँ पैघ पुस्तक पर क्रमशः छोट पुस्तकक शृंखला बनाय पुस्तकेक पूजा करैत छी, सरस्वतीक चित्र लगाय दैत छियनि । हमर मानसिकताक अनुमान लगाओल जाय सकैछ ।

पूजाक दिन अपन कोठलीमे सान्ध्य आरती कऽ एकटा मोमवत्ती जराय छोड़ि आयल रहिऐक । एमहर नाटकक पात्र सभक मेक–अप अपनहि करैत छलहुँ, ताहिमे व्यस्त रही, तावत एकटा विद्यार्थी दौड़ल आबि कहलक सर आपके कमरासे धूआँ निकल रहा है । दौड़ि कऽ गेलहुँ, देखेत छी किछु पोथी जरि चुकल अछि आ किछुमे आगि सुनगि रहल छैक । ओ मिझबैत रही तखने खोजपुरसँ घूरल दूनू छात्र आबि गेल रहथि । हम दूनूक मुखाकृतिए सँ अनिष्टक आशंकाक अन्दाज लगाय कहि देलिऐक– अभी कुछ नहीं, सबेरे बात करेंगे । एक दिस वज्राघातक आशंका, दोसर दिस दायित्वक मन पर दबाब । सामूहिक क्रिया कलापक दायित्वक समक्ष वैयक्तिक समस्या गौण पड़ि जाइत छैक । हम छातीकेँ वज्रसन बनाय नाटकक आयोजनमे लागि गेलहुँ । ओहू मानसिक स्थितिमे हम नहि कहैत छी, लोकक मन्तव्य छलैक जे नाटक पूर्ण सफल रहल । पुनः कनेकटा क्षेपक ।

Scanned by CamScanner

साहित्य अकादेमी द्वारा अपन प्रतिनिधित्वकालमे कोलकातामे एक विचारसंगोष्ठी छल । हमर परामर्शी मण्डलक अत्युत्साही अनन्य सदस्य मूलतः नाटककार श्रीअशोकझाक मिथिला विकास परिषद सहयोगी संस्था छल । सम्पूर्ण दारोमदार श्रीअशोकझा पर, परन्तु विचारसंगोष्ठीक दिन हुनक पत्नी डॉ. श्रीमती शैलझा 'डायलसिस' पर एक अस्पतालमे जीवन आ मृत्युसँ संघर्ष करैत छलथिन । दहोदिससँ विचार संगोष्ठी मे भागलेनिहार विद्वान साहित्यकार कोलकाता पहुँचि गेल रहथि । आब स्थगित कोना कयल जाय । दोसर दिस जखन रेलगाड़ीक इंज़िने फेल तँ गन्तव्य धरि कोना पहुँचल जाय । परन्तु श्रीअशोक़झाक असीम धैर्य देखि सब विस्मय-विमुग्ध रहि गेलाह । हमरा ओहिकाल ओतेक दिनक घटल उक्त घटना मन पड़ि गेल । किछु गोटे ई हो टिप्पणी कयलनि जे श्रीअशोकजी नटकिया छथि, फोंसरीकेँ भोकन्नर कहि कऽ प्रचारित कऽ रहलाह अछि । हम आ डॉ. श्रीफूलचन्द्रमिश्र 'रमण' विचार संगोष्ठी समाप्त भेलापर अस्पताल जाय श्रीमती शैलकेर जिज्ञासा कऽ अयलियनि । ओ स्वस्थ भेलीह ।

मूल विषय पर घुरैत छी । एहि दूनू छात्रक संग वैद्यजी खोजपुर गेलाह, औषधि आदि जे उपचार सम्भव छलनि से कयलथिन, परन्तु भोर होइत-होइत बच्चा दम तोड़ि देलकैक । आब एहि दूनू छात्रक स्थिति परम असमंजसमे पड़ि गेलैक । सोझे बिदा भऽ जाइत अछि से नहि बनैक, ने रहत से बनैक । अन्ततः बच्चा भाइ ओकर अन्त्येष्टि कऽ घुरलाह तखन दूनू गोटे बाबूबरही आबि वैद्यजीक ओतय भोजन कऽ साँझुक ट्रेनसँ घूरल ।

ओहि बालकक निधनकबाद 1951मे दोसर कन्या सावित्रीक जन्म भेलैक । एहि कन्याक प्रसंग विशेष कहबाक धैर्य नहि रहत । कन्या होइतो पुरूषार्थी छलि । हमर मायक सब गुण छलैक । ओहने संयमी, ओहने परिश्रमी, खढ़ खढ़कऽ घर-गृहस्थीकेँ जोड़बाक प्रवृत्ति, किन्तु शरीरसँ पूर्ण स्वस्थ कहियो नहि रहलि । हमर जमाय श्रीमहेन्द्र झा, जनिकर पारिवारिक नाम 'भोला' से स्वभावोसँ सर्वथा भोलानाथे । सावित्री अपन श्रमसँ सासुरक पुश्तैनी जथाजाल सोझरौलनि, बलभद्रपुर लहेरियासराय मे जहिया सीमेंट लै सरकारी -'परमिट' आवश्यक छलैक ताहि कष्टकर समयमे दुमंजिला मकान बनबौलनि । विधाता सेहो वाम रहलथिन । प्रथमे सन्तानमे एहन दुर्योग भेलैक जे ओ तँ नहिए रहलैक, दोसर सन्तान होयबाक सम्भावनो नहि रहलैक । पुरातन विचार रखनिहार हम दसम वर्ग धरि शिक्षा दूनू बहिनकेँ दियौने रहिऐक । भविष्योमे सन्तान विहीने रहब से सोचि आगाँ पढ़य लागलि सेहो एकसर नहि, जेठ बहिनकेँ सेहो प्रोत्साहित कऽ संग लऽ दूनू बहिन एम्. ए.पी-एच्.डी. धरि कयलक । एकर शोधक विषय रहैक 'आचार्य सुमनक गद्य' किन्तु विधाताकेँ हमरा बुढ़ारीमे दोसर डांग लगयबाक छलनि । ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी 2005मे अकाल कवलित भऽ गेलि । हमर जमाय 2008मे उक्त शोध प्रबन्धकेँ 'आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' क गद्य गरिमा' नामसँ प्रकाशित कराय स्मृति तर्पण कयलनि अछि जे हमर मर्म

Scanned by CamScanner

पर भेल घाव पर मलहम लगयबाक काज कयलक अछि । ई जमाय सम्प्रति स्टेट बैंक सेवासँ सेवानिवृत्त जीवन बिताय रहल छथि ।

1956 मे माय प्रतिदिनक खर्चोटा बही लिखैत रहथि । ताहिमेसँ मकान भाड़ाक टोटल कऽ एकदिन देखबैत कहलनि एतेक टाकामे तँ अपन जमीन भऽ गेल रहैत । जखन नौकरी करैत छी तखन तँ सब दिन बाहर रहहि पड़त, तेँ ई चेष्टा करू जे कतहु किछु जमीन भेटि जाय जाहि पर अपन एकटा फूसोक घर भऽ जाय । पिताजी जँ चाहितथि तँ बहुत सुविधामे भूमि उपलब्ध कऽ सकैत छलाह, किन्तु नगरमे अपन स्थायी निवास बनाय ली, तकर कल्पनो नहि भेल होयतनि । अपना भाड़ाक घरमे रहबाक कहियो प्रयोजने ने पड़लनि । हमरो ध्यानमे ई बात नहि आयल छल । माय द्वारा सचेत कयला पर ध्यानमे आयल, हम सचेष्ट भेलहुँ । एकरो समग्र वृत्तान्त अरुचिकर भऽ जायत तेँ संक्षेप मे एतबे कहि दी जे स्कूल छल लहेरियासराय मे आ घर बन्हलहुँ मिश्रटोला, दरभंगामे, जखन लहेरियासरायमे भूमि सुलभ छलैक । मिश्रटोलाक प्रति तीनटा आकर्षण छल, पहिल साहित्यिक वातावरण । लहेरियासराय पुस्तकभण्डारक पटना शाखा दिस उन्मुख भऽ गेलाक कारणेँ ओतय साहित्यिक वातावरण समाप्तप्राय छलैक । ओकील मुख्तार, मोकदमेबाज सब तथा रोगी आ डाक्टर सभक हेतु उर्वर रहि गेल छलैक । दोसर आकर्षण छल मैथिली साहित्य परिषदक प्रथम प्रधानमन्त्री शशिनाथ चौधरीक निवास । एहि चौधरी परिवारसँ कोनो पुरान सम्बन्ध सेहो रहल अछि । बाल्यकालेसँ पिताजीक संग बदरीनाथ चौधरी, वैद्यनाथ चौधरी आदिक आङनमे भोज खाय अबैत छलहुँ । वैद्यनाथ चौधरीकेँ काका कहैत रहियनि । विशेष बात ई जे मिश्रटोला शाकद्वीपिय ब्राह्मण लोकनिक निवास थिकनि । मैथिल ब्राह्मणमे मिश्र उपाधिधारी हम पहिल लोक छी जे एतय बसलहुँ । तेसर मुख्यत: सुमनजी दरभंगामे छलाह संगहि मिर्जापुरमे पिताजीक अनेक छात्र यथा प. वासुदेवझा जनिक सुपुत्र डॉ. श्रीश्यामानन्द झा विद्यमान छथि, हरिकान्तझा, बैजू मिश्र 'देहाती' आदि छलथिन । हमर बच्चा भाइक बालसंगी सुभद्रझाक दू गोट बहिनक विवाह मिर्जापुर छलनि । अर्थात् बाल्यकालसँ एतहि रहलाक कारणेँ अपन मित्रवर्ग, अन्यान्यो गतातक लोक छलाह तेँ सामाजिकताक बोध दरभंगामे होइत छल ।

घर बनौलहुँ फूसेक । एहिमे तीन दिससँ साहाय्य-सहयोग प्राप्त भेल । डरहारक छात्र समुदाय एकसय बाँस काटि, छीलि-छालि गाड़ी पर लादि पहुँचा देलनि । ओही गामक सहपाठी गंगाप्रसादझा सारिल शीशोक बड़ेरी देलनि । बाबू कृष्णनन्दन सिंह 53 बलही खढ़ अपन तारालाहीक खढ़ोरिसँ पठबाय देलनि जाहिमे बैलगाड़ीक भाड़ा टा लागल । प्लिन्थ आ बीच घर ओ चारू कोनपर पाया एक नंबर ईंटाक देलिऐक । 22/रु. हजार उत्तम ईंटा भेटल छल जे सुनैत छिऐक 50-55 सय रूपैयेँ सम्प्रति भेटि रहल छैक । छओ चारवाला पैघ-पैघ चारि कोठलीक घर बन्हायल । 1957क श्रावण शुक्ल

Scanned by CamScanner

सप्तमी, जाहि दिन सात सकारक योग रहैक, घरवास लेल । एतय अपन सौभाग्यक सम्बन्धमे उल्लेख करब । जाहि भूमिखण्ड पर बसलहुँ से सम्पूर्ण 16 कट्ठा छलैक । हम तँ गरीब ब्राह्मण, हाइस्कूलक शिक्षक रही, तीन गोटे सी.एम. कॉलेजक वाणिज्य विभागक प्रोफेसर लोकनि रहथि । सब पक्का कोठा ठोकलनि । एक दिन हमरे देखौलापर गीताभवन बनयबाक हेतु बाबू चन्द्रधारी सिंह भूमि देखबाक हेतु झिंगुर बाबू, नागेश्वर मिश्र, दिनेश्वर मिश्र सभक संग दिग्घी पर अयलाह सेहो प्रातः भ्रमणक क्रममे, तँ सबसँ पहिने हमरे कुटीर पर पैर देलनि । चन्द्रधारी बाबूकेँ हमरा दलान पर देखि तीनू गोटे आश्चर्यचकित रहि गेलाह । हम सौभाग्यक बात एहि हेतु कहलहुँ जे बाबू चन्द्रधारीसिंह सन सन्त, त्यागी, समाजक उपकारी व्यक्तिक आशीर्वाद सेहो एहि घड़ारीकेँ भेटल छैक ।

आब एकटा दुर्भाग्यक विषय सेहो सुनल जाय । 1757मे बिहार प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनक अधिवेशन मुंगेरमे भेल छलैक । मित्रप्रवर रामकृष्ण झा 'किसुन' तथा भाइ श्रीचन्द्रभानु सिंहक आग्रहपर हमहू सदस्यक रूपमे मुंगेर गेल रही । ओतय हमर एक मित्र कामेश करुण रहथि । हिन्दीकविसम्मेलनक अनेक मंचपर संग रहल छलहुँ, तेँ हुनक विशेष आग्रह रहनि । मुंगेरक सिगरेट फैक्ट्रीक अतिविशाल सभागारमे ओ सम्मेलन भेल छलैक । हिन्दीक कवि-साहित्यकार लोकनिमे पारस्परिक केहन आन्तरिक ईर्ष्या, कलह, प्रतिस्पर्द्धा छलनि, तकर नग्न-नृत्य ओतहि देखबामे आयल । राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकरक प्रतिद्वन्द्वी रहथिन ब्रज किशोर नारायण । कार्य समितिमे हिनक समर्थकक संख्या बहुमतमे छलनि, तेँ उक्त अधिवेशनक अवसर पर कवि सम्मेलनक अध्यक्षताक हेतु ब्रज किशोर नारायण मनोनीत छलाह । ई बात दिनकरजीकेँ सह्य नहि । दुर्योगवश कवि सम्मेलन दिन ब्रजकिशोर नारायणकेँ 104 डिग्री ज्वर भऽ गेलनि । विश्वास छलैक जे आब नहि आबि सकताह । किन्तु समर्थक सब स्ट्रेचर पर लादि अन्तिम समयमे उठाकऽ लऽ अनलकनि । दिनकरजीक समर्थक सब दु:खित पड़ि जयबाक समाचार सुनि प्रसन्न आ निश्चिन्त छल । अकस्मात स्ट्रेचर पर आनल देखि, कवि सम्मेलनकेँ भण्डूल करबाक षड्यन्त्र रचलक । दस हजार कुर्सी अँटयबला ओहि हॉलमे खचाखच लोक भरल छलैक । कविता पाठ आरम्भ भेलैक । दू गोटे कविता पढ़लनि, तेसर ठाढ़ भेलाह कि बिजलीक लाइन काटि देलकैक । घुप्प अन्हार भऽ गेलैक, कोलाहल मचि गेलैक । बिजली फेल तँ माइक फेल । ओहि अन्हारमे रूद्रजीक स्वर कोलाहल पर नियन्त्रण कऽ लेलकैक । रुद्रजी गाबि रहल छलाह-

'जल रहा दिया मजार पर'

क्रमशः अन्हारोमे वातावरणकेँ शान्त होइत देखि दिनकरजीक समर्थक सब रुद्रजी जहाँ कहथिन 'मजार पर' आकि हॉलक चारूकातसँ पर्र, पर्र, पर्र शब्द ध्वनित होअय लगैक । एहन-एहन महान कवि आ हुनका सभक कलुषित एहि प्रकारक 'किरदानी' हमरा मनकेँ

Scanned by CamScanner

तीत बनाय देलक । एकाएक मनमे उचाट लागि गेल । हम रातिए मे श्रीचन्द्र भानुजी आ किसुनजीकेँ कहि मुंगेर घाटमे जहाज पकड़लहुँ आ दरभंगा बिदा भऽ गेलहुँ । हम मुंगेरसँ जहिए बिदा भेलहुँ ताही दिन मायकेँ ज्वर भऽ गेलनि । घुरलहुँ तँ देखलियनि ओछाओन पकड़ने छथि । माथ दुखाइत, टाङ टटाइत, एकबेर पेट पर जे घाव भेल रहनि जकर ऑपरेशनक चर्चा कयने छी, से छोड़ि ज्वरमे पड़ल देखबाक अवसर जीवनमे कहियो नहि भेल । अयलहुँ तँ पड़ले छलीह, किन्तु शरीर लटिकऽ मात्र 48 घंटामे आधा सन भऽ गेल छलनि, तथापि उठि कऽ बैसि गेलीह । हम माथ छुलियनि तँ कनेक छकछक छलनि । पुछला पर कहलनि अहाँ ओमहर गेलहुँ आ ओही दिन धाह भऽ गेल । हम 6.30 बजे घुरले रही । नित्यकृत्य कऽ चौबटिए पर परेशबाबू एक डॉक्टर रहथि, हुनका बजाय अनलियनि । ओ गरीबनेबाज डाक्टर रहथि । एकटा रोगीकेँ कमसँ कम दस मिनटमे देखथिन आ दवाइ लिखबामे सोचैत-सोचैत पन्द्रह मिनटसँ कम समय नहि लगनि । कमसँ कम दामवला दवाइ लिखथिन । दवाइ लिखि प्रयोग कोना करब से दू बेर बुझबथिन आ बुझलक वा नहि से दू बेर कहाय लेथिन । दू टा दवाइ लिखलनि आ कहलनि- अभी वार्ली पिलाकर नं-1 दवा पिला दीजिए । ब ुखार अभी थोड़ा है, इसी से ठीक हो जायेगा । अगर फिर बुखार चढ़े तो ठीक बारह घंटे बाद नं. दो दवा दीजियेगा, अगर बुखार नहीं चढ़े तो नहीं दीजियेगा । वार्ली पीलनि आ अपने बाड़ीमे भराठ माँटि पर पाँच सात टा भाँटाक गाछ रोपने रहथि से खूब फड़ल छल । पत्नी भानस करैत छलीह । माय अपने बाड़ीसँ दू टा भाँटा तोड़ि अनलनि आ पुतोहुकेँ दैत कहलथिन- दू टा भटबड़ तरि दियनु, बतहूकेँ नीक लगैत छनि । भोजन पर बैसलहुँ तँ सोझाँमे बैसल रहलीह । स्कूल फुजले रहय तेँ पुछलियनि- हम स्कूल जाउ ? कहलनि- हम आब ठीक छी । अहाँ जाउ, अहाँक कपारपर बहुत जंजाल अछि । हुनक यैह अन्तिम वाक्य हमर कान सुनि सकल । स्कूलमे पढ़ाइ बन्द छलैक, वार्षिक परीक्षाक तैयारी चलि रहल छलैक । छुट्‌टी भेला पर नित्य कमर्शियल चौक पर पान खाय किछु बजारक काज रहैत छल तँ से करैत डेरा घुरैत छलहुँ । ओहि दिन पानक दोकान लग आबि साइकिलसँ उतरलहुँ अवश्य, मुदा मनमे भेल जे माय ठीक होइतीह कि नहि से चिन्ता छोड़ि पान खयबामे जे पाँच मिनट गमायब से किएक ? लगले बिदा भऽ गेलहुँ । डेरा पर अबैत छी तँ मायक बाक् बन्द भऽ गेल छलनि, आँखिक पल फूजल रहनि जे हमरा देखलाक बाद बन्द भऽ गेल छलनि । हमरा पक्षमे पौत्रक मुँह देखबाक लालसा लेनहि चल गेलीह ।

पूस कृष्ण चतुर्थी रहैक । हम किं कत्तर्व्य विमूढ़ भऽ गेलहुँ, परन्तु गताती लोकक सम्पर्कमे रहबाक जे आकर्षण दरभंगामे घर बन्हबौलक से फलीभूत भेल । समाचार भेटैत देरी काकाजी माने बैद्यनाथ चौधरी, पं. वासुदेव भाइ लोकनि सन्नद्ध भऽ गेलाह । एक दू गोटे सन्देहो व्यक्त कयलथिन- पूसक जाड़ छैक, अन्हरिया पक्ख छैक, राति-बिरातिमे नहि जाय भिनसरे श्मशान जायब ठीक होइत, मुदा काकाजी कहलथिन

Scanned by CamScanner

जाबत तैयारी होयत आ श्मशान घाट पहुँचब तावत चारिए दण्डकबाद इजोड़िया भऽ जयतैक, भरि राति लाश पड़ल छोड़ब उचित नहि होयत । प्रकृति सेहो संग देलक, चकाचक इजोड़िया, ने हवा ने कुहेस, 3 बजे रातिमे श्मशानसँ घुरैत गेलहुँ । स्कूलसँ घुरैत काल जे पान खयबाक इच्छाकेँ दमित कयने छलहुँ से तेरहदिन राखय पड़ल । सामान्यतः अपन धोती अनका खीचय नहि दैत छिऐक । स्नान कऽ धोती खीचि बाहरक ओसारा पर चारक बातीमे खूँटकेँ खोंसि पसारि दैत छलिऐक, सुखयलापर माय कोंचिआय यथास्थान राखि दैत छलीह । श्मशानसँ घुरलाक बाद धोतीकेँ पसारले देखि धैर्यसँ बान्हल अश्रुधारा कोसीक तटबन्ध टुटलापर जेना तीव्र गतिसँ बहय लयैत छैक तहिना बहय लागल । धोती समटि कऽ रखबाक चौंकि एखन धरि ओहिना रहैत अछि आ मायक स्मृति विजलौता जकाँ माथमे चमकि उठैत अछि । एकरो उल्लेख कऽ दी जे दैनन्दिन जीवनमे उपयोग मे आबयबला प्रत्येक वस्तुकेँ रखबाक सुनिश्चित स्थान बना कऽ रखलापर कोनो वस्तुकेँ तकबामे ने समयक अपव्यय होइत छैक जे व्यर्थ मानसिक तनाव होइत छैक । पं. छबिनाथ पाण्डेय लिखित 'जीवनकला' पुस्तकसँ हम ई शिक्षा ग्रहण कयलहुँ । ई अंश उद्धृत करैत हमरा गीतकार श्रीरवीन्द्र (रवीन्द्रनाथ ठाकुर)क पंक्ति स्मरण भऽ आयल–

छनमे छनाक भेलइ दाइगे
गेलइ पेटीके कुंजी हेड़ाइ गे । अस्तु ।

मायक श्राद्ध खोजपुर जाय कयलियनि । बहेड़ाक बन्धु लोकनि चुमाओन एकत्र कऽ मधुपजीक हाथेँ पठाय देने रहथि । श्राद्धमे ऋण-पैंच नहि कयलहुँ । महाराजक दिससँ किछु साहाय्य प्राप्त भेल छल । छात्रमे श्रीरामदेवझा आ चपाही मसियौतक पितियौतक पुत्र मदनजी, जे हमरा संग रहि पढ़ैत छलाह, सेहो गेल रहथि ।

श्राद्ध सम्पन्न कऽ दरभंगा बिदा भेलहुँ तँ बच्चा भाइ गह्वरित भऽ गेलाह । चलबाक काल कहलियनि- हम दरभंगामे अपन घर बनाय लेने छी । माय जा धरि जीबैत रहलीह तावत धरि भू- सम्पत्ति सँ थोड़ बहुत अन्न लऽ जाइत छलीह । आब हमरा यदि दुर्योगवश अन्न-वस्त्रक कटमटी होयत तखने किछु लेबाक हेतु आयब अन्यथा सरस्वतीक अनुकम्पा बनल रहलनि तँ हम निर्वाह कऽ लेब । अहाँ भूमिक उपजा खाइत रहू, मालगुजारी हम पठबैत रहब, किन्तु भूमि एकोबीत बिकाय नहि से ध्यान राखब । परन्तु ओ समय समय पर दूकट्ठा चारि कट्ठा बेचहु लगलाह । हमरा पहिल कन्यादानमे तँ नहि, मुदा दोसर कन्यादानमे ओ जे बेचने रहथि तकर बाँचल आधा हिस्सा बेचय पड़ल छल । ओ जाधरि जीबैत रहलाह अर्थात् 1989 धरि एको चुटकी अन्न गामसँ नहि अनलहुँ ।

एमहर भातिज अर्थात् बचकुन, प्रसिद्ध मिहिरजीकेँ विवाहदान भऽ गेल छलनि,

Scanned by CamScanner

उपार्जनक कोनो स्रोत नहि, मैट्रिको नहि पास रहथि, ताहि स्थितिमे जेना-तेना खादी भंडारमे जोगाड़ धराय देलियनि, किन्तु स्थान देलकनि गंगापार मगधमे आरा दिस कोनो छोटसन स्थानमे । पाँचे-सात मासमे मन अकछि गेलनि, छोड़ि पड़ाय अयलाह । ओही समयमे ग्रन्थालयक संस्थापक हमर अग्रज हितचिन्तक मित्र श्रीरमेन्द्र नारायण चौधरी प्रसिद्ध रमणीबाबू सरकारी सेवाकेँ लात मारि प्रेसक व्यवसाय कऽ रहल छलाह । प्राथमिक शिक्षाक हेतु मैथिलीकेँ मान्यता भेटल छलैक, तेँ मैथिली पुस्तक प्रकाशनमे अपनाकेँ झोंकि देने रहथि, हिनका अपना प्रेसमे राखि लेलथिन । रमणी बाबूक प्रसंग आगाँ कहब । किछु वर्ष एतय रहलाह, रहथि हमरे संग, खाथि पीबथि रहथि, किन्तु अर्जन की करथि से ने कहथि ने हम पुछियनि । किछु वर्षक बाद ग्रन्थालय छोड़ि लहेरियासराय पेपर हाउस चल गेलाह । ओकर संचालक रहथि सूर्यनारायण झा । ओ ललितनारायणमिश्रक अनुगामी कट्टर कांग्रेसी रहथि । हुनक पेपर हाउस सरकारी कार्यालय सबमे विभिन्न प्रकारक रजिस्टर, अन्यान्य सामग्रीक सप्लाइ करनि । हुनक माध्यमसँ मिहिरकेँ सेहो ललित बाबूसँ सम्पर्क भेलनि । समस्तीपुर बमकाण्डमे सूर्यनारायण झा सेहो मारल गेलाह । सूर्यनारायण झाक सम्पर्कमे रहि मिहिर ततबा अर्जन कयलनि जे मिश्रटोलेक हनुमान गंजमे भूमि लऽ किछु अंश पक्का तथा किछु अंश खपरैल मकान बनबाय सपरिवार रहय लगलाह आ मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन नामसँ अपन प्रकाशन ठाढ़ कयलनि । मिथिला विश्वविद्यालयक संस्थापक कुलपति पदपर डॉ. मदनेश्वर मिश्र अयलाह जे ललित बाबूक अनन्य मित्र रहथिन । ताही सूत्रसँ मिहिरकेँ सेहो मदनेश्वर बाबूसँ सम्पर्क भेलनि तेँ मैथिलीक पुस्तक ओ प्राचीन पत्र-पत्रिका सभक सप्लाइ करबाक योग लागि गेलनि । संगहि कविता-कथा आदि लिखय लगलाह 6-7 टा पोथी सेहो प्रकाशित भेलनि । हमरा संग विद्यापति पर्व सबमे हास्य-व्यंग्य कविताक माध्यमसँ लोकप्रियता प्राप्त कयलनि । किन्तु 2000 ईमे दुर्भाग्यवश अकाल कवलित भऽ गेलाह । हिनक अनुज श्रीकलानाथ मिश्र प्रसिद्ध टुनटुन सम्प्रति खोजपुरक घराड़ीकेँ आबाद रखने छथि । खोजपुरक बहुतो भूसम्पति छिन्न-भिन्न भऽ गेलनि । हमरो जतबा अंश बाँचल अछि तकर उपभोग वैह कऽ रहल छथि । मिहिरक सन्तान करीब-करीब अपन अंश बिड़हा चुकल छथिन । अस्तु ।

हमरा जेठि कन्याक कन्यादान उपस्थित भेल । एहि प्रसंग किछु स्मरणीय घटना सब अछि । हमर जेठ जमाय डॉ. रामदेव झा एम्.एल्. एकेडमी, लहेरियासराय सँ 1955 मे जीव विज्ञान विषय लऽ मैट्रिक प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेल रहथि । मधुपजीकेँ कन्यादान करबाक रहनि । ई यद्यपि विज्ञानक छात्र रहथि तथापि साहित्यिक प्रवृत्ति ओ मैथिलीक प्रति आकर्षण अंकुरित भऽ गेल छलनि । हिनक कर्मठताक एके मात्र उदाहरण पर्याप्त होयत जे स्कूल जीवनक चारि वर्षमे ई विद्यालयसँ एको दिन अनुपस्थित नहि रहलाह जाहि हेतु हिनका तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्रीकृष्ण सिंहक हाथेँ पुरस्कार सेहो प्राप्त छनि । हिनका मातृभाषाक प्रति आकर्षण ओ कर्मठतासँ सुमनजी, मधुपजी लोकनि परिचित

Scanned by CamScanner

छलाहे । एक दिन मधुपजी हमर वासापर शाहगंज पहुँचलाह आ हमरा कहलनि– कबिलपुरक ई बालक हमरा कन्याक हेतु ठीक कऽ दिअऽ । हम चटपट स्नान संध्यावन्दनकऽ मायकेँ मधुपोजी लै भानस करय कहि, दूनू गोटे कबिलपुर गेलहुँ । हिनक पिता रुग्ण आ अशक्त भऽ गेल रहथिन । मधुपजीक परिचय दैत कथा उपस्थापित कयलियनि । हुनक ओ वाक्य ओहिना स्मरणे अछि । कहलनि हम केवल जन्मदाता छियनि, हमरो भार हिनके पर छनि । धर्मक पिता अपने छियनि, हमर इच्छा अछि जे बी.ए. पास कयलाक बादे विवाहदान करथि । हम ताहि पर कहलियनि अपनेक स्वास्थ्य ठीक नहि रहैत अछि, तेँ मनमे सेहन्ता हो जे जेठ बालक थिकाह, अपना अछैत ई शुभ कार्य अपना आँखिएँ देखि ली... बीचेमे टोकैत कहलनि– ओहन पिता हम नहि जे मनोरथ पुरयबाक हेतु असमयमे बेटाक गर्दनिमे ढोल लटकाय दियनि । मधुपजी हुनक उत्तरसँ सन्तुष्ट होइत कहलनि चलू, एहन स्वच्छ हृदयक लोकसँ हठ करब उचित नहि ।

कबिलपुरसँ घुरैत बारह बाजि गेल । डेरा अयलहुँ तँ माय पुछलनि कतय गेल रही जे एतेक अबेर भऽ गेल ? सब वृत्तान्त कहलियनि, ताहिपर कहलनि– केहन सुशील आ मेहनतिया छैक । किछु दिनक बाद तँ अपनो कन्यादान करहि पड़त, अपने ई काज कऽ लेब । 1957 मे माय दिवंगता भऽ गेलीह । अगिला वर्ष हिनक पिताक सेहो देहान्त भऽ गेलनि । ई हमरा मायक श्राद्धमे खोजपुर गेल छलाह । हमहू हिनक पिताक श्राद्धमे महापात्र सभक अनुचित माङसँ निस्तार देअयबामे उपस्थित रहलियनि । 1959मे ई मैथिली ऑनर्समे विश्वविद्यालयमे प्रथमश्रेणीमे स्वर्ण पदक लऽ उत्तीर्ण भेलाह । हम ओही वर्ष हिनक पिताक इच्छानुरूप कन्यादान कयल । एहि प्रसंग विस्तारसँ अन्यत्र लिखि चुकल छी जाहिमेसँ एक छोटसन रोचक अंशक उल्लेख कऽ दैत छी । हिनक देयादमे जीबछ झा एक प्रतिष्ठित ओकील रहथिन । एकदिन कबिलपुर गेलहुँ तँ अपन दलान पर बैसल ओकील साहेब परिहास कयलनि । घटना ई भेल छलैक जे ओझा श्रीरामदेवझाक अनुज श्रीबलदेवझा, जे अभिनय कलामे पूर्ण पटु छथि, हमर छात्र ओहो रहिए चुकल छलाह । हुनक विवाह हम अपन ढंगावाली वहिनक जैधीसँ करौने छलियनि । ताहीदिस संकेत करैत ओकील साहेब हमरा कहलनि– औ पण्डितजी ! अहाँ हमरा गामक वर सबकेँ ठकि कऽ वियाह करयबामे परिकि गेलहुँ अछि ? हम उत्तरमे कहलियनि– ओकील साहेब ! हम अपनेक गामक नस्ल सुधार कऽ रहलहुँ अछि ।

ओकील साहेबकेँ हमर उत्तर छक् दऽ लगलनि । ओ हमरा स्कूलक प्रबन्ध समितिक सदस्य सेहो छलाह । ओ झिंगुर बाबूकेँ जाय हमर शिकाइत कयलथिन ई कहि जे अहाँक ओहि ठामक शिक्षक अमरजी बड़ा मुँहफट्ट छथि, हमरा मुँह लागल जबाब दऽ देलनि । झिंगुर बाबू हमरा कहलनि जे अहाँकेँ बूझल नहि अछि जे जीबछ झा ओकील मैनेजिंग कमीटीक मेम्बर छथि ? हम कहलियनि मास्टर साहेब, ओकील साहेब

Scanned by CamScanner

जखन अपन दलान पर रहैत छथि तखन मैनेजिंग कमीटीक मेम्बर नहि, हमर समधि रहैत छथि आ हमरा संग जखन परिहास (मजाक) कयलनि तखन हम शिक्षक नहि, चन्द्रनाथमिश्र अमर छलहुँ । बीस-पचीस वर्षक बाद ओकील साहेब भेट भेला पर कहलनि अहाँ जे कहलहुँ नस्ल सुधार कऽ रहल छी से तहिया अनसोहाँत लागल छल, मुदा आब रामदेवक धीया पूताक जे बोली-बानी सुनैत छिऐक तँ वास्तवमे अहाँक कहल यथार्थ बुझाइत अछि ।

कहि चुकल छी जे माय हमरा पक्षमे पौत्रक मुँह देखबाक लालसा लेनहि दिवंगता भऽ गेलीह । शास्त्रीय वचन छैक- 'अपुत्रस्य गतिर्नास्ति', परन्तु वर्त्तमान युगमे हमरा विचारेँ जेना रामभद्र ओ वीरदत्त एक समयमे युगानुरूप दशकर्म पद्धतिसँ षोड़श संस्कारकेँ समटि दश संस्कारमे समाहित कऽ देलथिन, आजुक धर्मशास्त्री सब पुत्रीकेँ पुत्रक समान अधिकार देबा पर विचार करथु ।

हमर छोटि कन्याक जन्मसँ समयक अन्तराल बहुत पैघ भऽ गेल छलैक, तेँ विशेषतः हमर बहिन लोकनिकेँ बेसी अभिखेद छलनि । हमर गुर्माहा पचाढ़ीक विपन्न कर्णकायस्थ परिवारक, किन्तु जेहने मेधावी तेहने श्रमशील चन्द्रमोहन चौधरी नामक छात्र रहथि जे अध्यवसायक बलसँ सेंटजीवियर्स कॉलेजमे डिमांस्ट्रेटर, पछाति प्रोफर भेलाह आ राँचीमे अपन सुन्दर भवन बनाय रहैत छलाह । आचार्य रमानाथ झाक अनुज बोधनाथझा राँचीमे इण्डियन नेशन-आर्यावर्त्तक प्रतिनिधि रहथि, ओ विद्यापतिस्मृतिपर्व मनौने रहथि, जाहिमे हमहू आमन्त्रित रही । ताहीक्रममे राँचीमे चन्द्रमोहनसँ भेट भेल । ओ आयोजककेँ दुराग्रह कऽ विश्राम लेल अपन आवासपर लऽ गेलाह । छात्रजीवनमे थोड़-बहुत सहायता कयने छलियनि, तेँ बेसी निकट रहथि, प्रसंगवश पारिवारिक चर्चाक क्रममे पुत्रक अभावक चर्चा चलि गेलैक, ओ कहलनि अपन टीपनि पठाय देबाक लेल, किन्तु हमर टीपनि भ्रमवश फाड़िकऽ फेकि देल गेल छल से कहलापर कहलनि- सर ! कोनो फूलक नाम लियौक । हमरा मुँहमे जे नाम आबि गेल से कहि देलियनि, फूलक नाम स्मरण नहि अछि, ताही आधारपर बहुतो किछुक संग ईहो कहलनि 37म वर्षक आयुमे अपनेक घरमे पुत्ररत्नक जन्म होयतैक ।

हुनकर कहल सर्वथा सत्य भेल । हमर 37म वर्ष छल तँ बालकक जन्म भेलैक । आह्लादित भऽ हुनका पत्र लिखि देलियनि । ओ बड़ा दिनक छुट्टीमे गाम अयलाह तँ हमर भेट कयलनि आ बालकक टीपद प्रतिलिपि कऽ लऽ गेलाह आ विस्तृत टीपनि बनाय पठाय देलनि । ओ टीपनिमे स्पष्टतः लिखल छैक जे 32-33म वर्षक आयु मध्य सांघातिक ग्रहयोग छनि, उचित समय पर समुचित ग्रहशान्ति कराय लेल जाय । बात बहुत पुरान भऽ गेलाक कारणेँ विस्मृत भऽ गेल । दुर्दैववश ठीक ओही वयसमे मोटर साइकिलसँ दुर्घटना साधारण होइतो आघात एहन भेलनि जे सातमास ओछाओन धेने रहय

Scanned by CamScanner

पड़लनि । ओहिक्रममे ज्योतिर्विद डॉ. श्रीकालीकान्तमिश्रसँ टीपद देखौला पर चन्द्रमोहनक लिखल मनपड़ल, जँ तदनुसार पूर्वहि ग्रहशान्ति कराय देने रहितियनि तखन ई परिया नहि भोगय पड़ैत । ज्योतिषीजीक हार्दिक सहयोगसँ प्राण बाँचि गेलनि, किन्तु पैरसँ कज्जी तँ भइए गेलाह । ज्यौतिषी जीक कृतज्ञता ज्ञापित कऽ हुनक सहयोगक मूल्यकेँ घटाबय नहि चाहब, किन्तु ओ केहन कृतज्ञ लोक छथि तकर उल्लेख बिनु कयलेँ मनमे सन्तोष नहि होयत, तेँ पुनः एक क्षेपक कहैत छी ।

ज्योतिर्विद **श्रीकालीकान्तमिश्रजी**, संक्षिप्त संबोधित नाम श्रीकाली बाबू रहीमपुर संस्कृतमहाविद्यालयमे प्रधानाचार्यक पद पर कार्यरत रहथि । हमर बालक खगड़िया स्टेट बैंकमे योगदान कयनहि छलाह । महाविद्यालयक आर्थिक कार्यकलाप एही बैंकसँ होइत छलैक तेँ श्रीकालीबाबूकेँ बराबरि जाय पड़ैत छलनि । हमरो तावत धरि हिनकासँ व्यक्तिगत परिचय नहि छल, तखन हमरा बालककेँ होयबाक कोन सम्भावना ? पहिने जाइत छलाह तँ सामान्य रूपेँ घंटाक घंटा काज होयबामे लागि जाइत छलनि । जखन हमर बालक गेलाह तखन संस्कृतज्ञ परिवारमे उत्पन्न भेलाक कारणेँ हमर बालक हिनक वेष-भूषा आ तेजोमय स्वरूप देखि, आकृष्ट भऽ हिनक काज यथाशीघ्र कऽ देलथिन । तहियासँ ई जा धरि रहलाह, श्रीकालीबाबूक काज ससम्मान यथाशीघ्र सम्पदित कऽ देथिन । ई कोनो बड़ पैघ उपकार नहि छलैक, किन्तु एतनी टा काज लेल जेहन कृतज्ञता देखौलनि जे जखन ई दुर्घटना ग्रस्त भऽ ओछाओन पकड़ने छलाह तखन श्रीकालीबाबू विजया दशमीक दिन अपराजिताक पूजा कऽ, अपराजिता लेने पूजाक आसनसँ उठलापर ओही रूपमे हमर आवास पर आबि आशीर्वाद दऽ गेलथिन । ई महामनीषी जखन हमरा सन अति सामान्य व्यक्तिसँ माथ ठोकि आशीर्वाद मङैत छथि तँ हमरा रोमांच भऽ जाइत अछि । शत-शत लक्ष्मीवानक मस्तक हिनक चरण पर नत होइत रहैत छनि । संस्कृतज्ञ समाज हिनक योग्यता आ विनम्रतासँ अपनाकेँ धन्य मानैत अछि । अस्तु ।

पुनः मूल विषय पर अबैत छी । चन्द्रमोहन जहिना पुत्ररत्न कहने रहथि तहिना हुनक कहल सत्य भेल । कविशेखर बदरीनाथ झाक एकावली परिणयमे एकठाम राजा तुर्वसुक उक्ति अयलनि अछि 'पुत्रवानमे भेलहुँ हम मूर्द्धन्य' से यदि हमहू कही तँ अत्युक्ति नहि होयत । आजुक घोर कलियुगमे कतेको मनीषीक पुत्र सभक पिताक प्रति व्यवहार देखल अछि, ताहि स्थितिमे हम वस्तुतः भाग्यवान छी । पुत्र श्रीशम्भुनाथ मिश्र इंटर धरि विज्ञानक छात्र रहलाह । प्रथम श्रेणी सब परीक्षामे भेटैत रहलनि । हम मातृभाषाक अन्धभक्त, पुस्तक संचय जे किछु से मैथिलीक तथा संस्कृतक । हमरा मनमे भेल जे हिनका यदि विज्ञानक शिक्षा देयबैत छियनि तँ ई सब पुस्तक निरर्थक भऽ जायत, तेँ स्वेच्छया यदि मैथिली पढ़थि तँ एहि दिस प्रवृत्त होथि । स्मर्त्तव्य जे हमर जेठ जमाय सेहो मैट्रिक धरि जीव विज्ञानक छात्र रहथि । ईहो स्नातक कक्षामे आबि मैथिली विषय

Scanned by CamScanner

लेलनि आ विश्वविद्यालयमे प्रथम श्रेणी ओ प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि, स्नातक प्रतिष्ठामे प्रथम होयबाक कारणेँ स्नातकोत्तर कक्षामे सरकारी छात्रवृत्ति सेहो भेटलनि तथा स्नातकोत्तर परीक्षामे सेहो प्रथम श्रेणी प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि । यद्यपि अध्यापनमे कतहु जीविका नहि भेटलनि, किन्तु स्नातक होइते भारतीय स्टेट बैंकमे जीविकापन्न भऽ गेलाह । छब्बीसम वर्ष बीति रहल छनि । प्रोन्नति भेटलापर बैंकमे स्थानान्तरण अवश्यम्भावी, तेँ बृद्धपिताक सुविधाकेँ ध्यानमे राखि प्रोन्नतिकेँ ठोकरबैत दरभंगेक विभिन्न शाखामे चक्कर मारि रहल छथि । दू गोट पौत्र छथि । हम तँ नाम रखलियनि श्री आदित्यनाथ तथा श्री विभूतिनाथ, किन्तु ई दूनू 'नाथ' केँ तोड़ि फेकि देलनि आ 'भूषण' शब्द जोड़ि लेलनि अर्थात श्रीआदित्यभूषण आ श्रीविभूतिभूषण भऽ गेलाह । हमर तँ आकांक्षा अछि जे सरस्वतीक एहन कृपा आ गुरु जनक आशीर्वाद प्राप्त होइन जे कुलभूषण आ देशभूषण होथु ।

कन्या पक्षमे छोटि कन्याक विषयमे उल्लेख कऽ चुकल छी । जेठि आयुष्मती डॉ० योगमाया झाकेँ तीन गोट पुत्र आ तीन गोट कन्या छथिन । हमर जेठ दौहित्र श्रीकृष्णदेव झा एम्.एस्-सी. उच्च वर्गक लोकक जे उपेक्षा छैक तकर फलस्वरूप कोनहुना शिक्षा विभागमे योग्यताक प्रतिकूल जीविकापन्न छथि । दोसर दौहित्र डॉ० श्रीशंकरदेव झा एम्.ए., एल्.एल्.बी. पत्रकार छथि, संगहि पिताक साहित्यिक उत्तराधिकार ग्रहण कऽ कथा, कविता, समीक्षा आदिमे कलम भाँजि रहल छथि । समीक्षा ओ अनुसन्धान क्षेत्रमे युवा साहित्यकारक पीढ़ीक अग्रिम पंक्तिमे परिगणित छथि । साहित्य अकादेमीक नवोदय योजनाक अन्तर्गत प्रकाशित 'सन्धि-समास' कथासंग्रह पर एहि वर्ष अर्थात् 2009क लेल लखनउ स्थित भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा पं० प्रताप नारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान प्राप्त कयलनि अछि । तेसर दौहित्र श्री विजयदेव झा एम्.ए. इंगलिश) पत्रकार छथि जे 'पायोनियर' पत्रिकाक राँची शाखामे कार्यरत रहैत विगत लोकसभा चुनावमे उत्तम रिपोर्टिंगक हेतु एवार्ड पौलनि अछि । दौहित्रीमे आयुष्मती ममता झा एम्.ए. (मैथिली) प्रखण्ड महिला विकास पदाधिकारीक पद पर कार्यरत छथि । दोसर दौहित्री आयुष्मती डॉ० कविता झा एम्.ए. (संगीत आ समाजशास्त्र) तथा संगीत प्रभाकर कयने छथि । तेसर दौहित्री आयुष्मती विद्यामिश्र एम्.ए. (इतिहास) अपन अपन परिवारमे स्नेहिल स्थान बनौने छथि । दौहित्री पुत्री आयुष्मती सुश्री शिल्पी इंजीनियरिंगमे पढ़ि रहल छथि । शेष चि. तूलिका, चि. प्राची, चि. जूही, चि. छवि, चि. कुसुम दौहित्रपुत्र चि. प्रशान्त आदि वयसक अनुरूप कक्षा सबमे पढ़ि रहल छथि । ई भेल पारिवारिक इतिवृत्ति ।

साहित्यिक-सांस्कृतिक ओ अन्यान्य गतिविधि

कहि चुकल छी जे पिताजीक जीवनसँ उदासीनता, मायक मोहभंग तथा जेठभायक क्रियाकलापक प्रतिफल ई भेल जे सत्रहमे वर्षमे हमर विवाह कराय देल गेल जाहि द्वारेँ अल्पे वयसमे हमरा भविष्यक प्रति अतिसंवेदनशील बनाय देने छल । जीवन

Scanned by CamScanner

यात्राक हेतु कोन प्रशस्त पथ पकड़ब उचित होयत से निश्चित नहि कऽ पाबि रहल छलहुँ, तेँ साहित्य, संगीत, कला, वैद्यक आ कृषि कर्म एहि सब दिस मन छिछिआइत रहैत छल। अन्ततः जीवन यापन लेल साहित्य सेवाक प्रसादेँ ब्राह्मणोचित शिक्षणवृत्ति भेटि गेल। जीवनक लक्ष्य मातृभाषाक उन्नति पर केन्द्रित रखलहुँ। एहि मध्य अनेक लाभप्रद पद प्राप्तिक अवसर-आयल, यथा नवकलेवरमे पटनासँ पुनः प्रकाशित 'मिथिला मिहिर'क सम्पादकक पद, कन्यादान मैथिली फिल्ममे प्रवेश करबाक सुयोग, मैथिली साहित्यकारक प्रौढ़ पीढ़ीमे अतिलोकप्रिय कवि डॉ० श्रीविद्याधर मिश्रक पिता राष्ट्रवादी विचारधाराक प्रखर समर्थक पं० रामेश्वर मिश्रक असामयिक निधन भऽ गेलाक कारणेँ महारानी अधिरानी रमेश्वर लता संस्कृत महाविद्यालयमे रिक्त पदक हेतु तत्कालीन प्रधानाचार्य विद्यावाचस्पति पं० उपेन्द्र झा हमरा समाद देलनि जे लोक कहैत छैक 'बापक लगाओल थिकह' से यदि अहाँ अभ्यर्थी होइ तँ आबि सकैत छी। वेतनमानमे आकाश-पतालक अन्तर, मास्टरसँ प्रोफेसर अर्थात् अध्यापक शब्दमे 'प्र' उपसर्ग लगलापर बढ़ल पदक गरिमा सेहो छलैक, किन्तु निर्द्धारित लक्ष्यसँ च्युत होयबाक खतरा सेहो छलैक। साहित्य रचना तँ हमर आनुषंगिक क्रिया-कलाप छल, मुख्य रहय महाविद्यालयसबमे छात्रक संख्या जुटायब जाहिसँ मातृभाषाक अभ्युन्नति लेल सैन्य जुटायब, से जतेक स्कूलमे रहि सम्भव छल ततेक ओतय नहि। तेँ कोनो प्रलोभन मनकेँ विचलित नहि कयलक।

हम जाहि समय साहित्य क्षेत्रमे प्रवेश कयने छलहुँ ताहि समय धरि मैथिलीक स्वतंत्र अस्तित्वक संघर्ष चलिए रहल छलैक। तथाकथित हिन्दीक समर्थक लोकनि एहि भाषाकेँ हिन्दीक बोली मात्र मानैत छलथिन। हमर साहित्य क्षेत्रमे अयबाक समय एहिसँ पूर्वक पीढ़ीमे साहित्य रत्नाकर मुंसी रघुनन्दन दास, कविशेखर बदरीनाथ झा कुमार गंगानन्द सिंह, कविवर सीताराम झा, पं० त्रिलोकनाथ मिश्र, म.म. डॉ. उमेश मिश्र, नरेन्द्रनाथ दास, ज्यौतिषी बलदेव मिश्र, राजपण्डित बलदेव मिश्र, जयनारायण झा विनीत, बाबू भोलालालदास, पुलकित लाल दास 'मधुर', नरेन्द्र नाथ दास, हरेकृष्ण दास मुख्तार, बाबू गंगापति सिंह, आनन्द झा न्यायाचार्य, आचार्य रमानाथ झा, जयनारायण मल्लिक, दामोदर लाल दास, कवि चूड़ामणि पं० काशीकान्त मिश्र मधुप, डॉ० कांचीनाथ झा 'किरण', प्रो० ईशनाथ झा, प्रो० हरिमोहन झा, आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन', प्रो० तन्त्रनाथ झा, डॉ० सुभद्रझा, महावैयाकरण दीनबन्धु झा, प्रबोधनारायण झा, बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', हरिनन्दन ठाकुर सरोज, काशीनाथ ठाकुर 'कलेश', आरसी प्रसाद सिंह, वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन', उपेन्द्रनाथझा 'व्यास', कुलानन्दझा 'कुलेश' प्रभृति एकदिस रचनात्मक, दोसर दिस मैथिलीक स्वतन्त्र भाषात्व सिद्ध करबाक संघर्षात्मक, तेसर दिस शब्दकोषक संकलनात्मक क्रियाकलापमे सन्नद्ध छलाह।

बहुतो दिनधरि विद्यापतिकेँ बंगलाक नहि, प्रत्युत मैथिलीक कवि सिद्ध

Scanned by CamScanner

करबाक चेष्टामे विद्वान ओ साहित्यकार लोकनिक ऊर्जा खर्च होइत रहलनि । ताहिमे बंगाली विद्वानलोकनि धन्यवादक पात्र थिकाह जे अपन दाबा तँ छोड़बे कयलनि, संगहि मैथिलीक प्राचीनतम गद्यग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर'केँ प्रकाशमे अनबाक, विद्यापतिक जनकण्ठमे छिड़िआयल पदावलीक संकलन, सम्पादन ओ प्रकाशन आदि अनुष्ठानमे पूर्ण योगदान कयलनि । अन्तमे एतेक धरि जे साहित्य अकादेमीमे मैथिलीकेँ प्रवेश नहि भऽ सकितैक यदि स्वनामधन्य डा० सुनीतिकुमार चटर्जी ओहि समितिमे नहि रहितथि ।

मुदा ताड़परसँ खसल बबूर पर आबि अँटकल जे लोकोक्ति अछि तकरे सार्थक करैत हिन्दीक समर्थक लोकनि मैथिलीकेँ हिन्दीक उपभाषा बनयबाक चेष्टामे हिन्दीक पाठ्यपुस्तक सबमे प्रथम स्थान दऽ विद्यापतिकेँ उदरसात् करबाक षड्यन्त्र करैत रहलाह । ध्यान रखबाक थीक जे ताड़केँ ने झोंझ होइत छैक ने काँट, बबूर एहि दूनूसँ सम्पन्न रहैत अछि । तकरे फलस्वरूप स्वतन्त्रता प्राप्तिक 56 वर्ष धरि अहिंसक संघर्षरत रहलाक बाद मैथिली भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान प्राप्त कऽ सकल अछि । अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटलाक बाद हम पंच ठाकुरक उद्भावना कयलहुँ जे डॉ० श्री वैद्यनाथ चौधरी 'बैजू'केँ कहलियनि । प्रथम ज्योतिरीश्वर ठाकुर मैथिलीकेँ आधार भूमि दऽ सुप्रतिष्ठित कयलनि, तखन विद्यापति ठाकुर एकरा समलंकृत कयलनि, तत्पश्चात् ब्रजमोहन ठाकुर कलकत्ता विश्वविद्यालयमे पाठ्यविषयक रूपमे प्रतिष्ठापित करयबामे सचेष्ट भेलाह, तकर बाद कर्पूरी ठाकुर सांविधानिक अधिकार देअयबाक हेतु बिहारविधान सभामे प्रस्ताव पारित करबौलनि, अन्तमे डॉ० श्री सी.पी. ठाकुर लोकसभासँ प्रस्ताव पारित कराय न्याय्य अधिकार देआय सम्पूर्णता प्रदान करौलनि । अतः मैथिली भाषा-साहित्यक इतिहासमे ई पाँचो ठाकुर सदा अमर रहताह । एकर उल्लेख एहि हेतु नहि कयल अछि जे श्रेय लेबाक भूख अछि, प्रत्युत ऐतिहासिक तथ्यक अपलाप नहि हो । एहन दीर्घकालिक संघर्षमे सम्पूर्ण समाजक योगदान रहिते छैक । स्वातन्त्र्य संग्राम समक्षे अछि, कतेक बलिदान एहिमे भेल से सब जनैत छी, तथापि महात्मा गाँधीक नाम सर्वोपरि लेल जाइत छनि । ताही तरहेँ मैथिली भाषाक अस्तित्वक प्रसंग भेल संघर्षमे तीन व्यक्तिक विशेष योगदान हम मानैत छियनि, 1. बाबू भोलालालदासक, यद्यपि जीवनक आरम्भिक कालमे मैथिलीक प्रति कोनो विशेष आकर्षण नहि रहनि, किन्तु साहित्य रत्नाकर मुंसी रघुनन्दन दासक बुझौलापर जे अन्तर्दृष्टि भेटलनि से हिनका संघर्ष करबाक प्रेरणा स्रोत भेलनि । एक पत्रकारक रूपमे मैथिलीक सेवाक्षेत्रमे प्रवेशकयलनि आ विद्यापति जयन्ती मनयबाक आग्रह समाजसँ कयलथिन । ई एहन दूरदर्शी दृष्टि छलनि जे एहि भाषाकेँ न्याय्य अधिकार प्राप्त करयबामे, जनजागरणमे सबसँ अधिक सहायक शस्त्र सिद्ध भेल । संगहि पटना विश्वविद्यालयक पाठ्य विषयक रूपमे मैथिलीकेँ स्थान देअयबाक लेल तत्कालीन उपकुलपति डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हासँ फाँड़ बान्हि भिड़ि गेलाह । ध्यातव्य जे ताहि समय माध्यमिक शिक्षाक नियन्त्रण सेहो पटने विश्वविद्यालय करैत छलैक । हास्य सम्राट् प्रो० हरिमोहन झा सन लोकप्रिय साहित्यकार

Scanned by CamScanner

कें पीठ ठोकि अखाड़ा पर भोलेबाबू अनलनि, जे तेहन तीक्ष्ण हास्य-व्यंग्य लऽ उतरलाह जे जन-जनमे मैथिली पढ़बाक रुचि जगौलनि । आइओ हुनक रचना लोक तकने फिरैत अछि । भोलाबाबू कविक रूपमे अपन प्रतिभाक विकास पर ध्यान नहि देलनि, किन्तु परम्परासँ चल अबैत भक्ति ओ श्रृंगारक धाराकेँ युगानुरूप मोड़बाक अनुरोध करैत एक 'नमूना' कवि सभक समक्ष रखने छलाह यथा–

भूमिकम्प छी प्रबल विश्वविप्लवकारी हम
छी अति प्रखर तरंग रुढ़ि-गिरि रजकारी हम
दावानल प्रज्वलित दासता क्षयकारी हम
झंझानिल सम छी स्वतन्त्रता रवकारी हम
अन्यायी सत्ताक छी प्रलय गगन सम अति विषम
हमरहि लघु हुंकारसँ महाप्रलय होइछ नियम । आदि

यदि आत्म विकासेकेँ जीवनक लक्ष्य बनबितथि तँ महाकवि लाल दास, साहित्यरत्नाकर मुंसी रघुनन्दन दास आदिक पंक्तिमे अपनाकेँ सुप्रतिष्ठित कराय सकैत छलाह, किन्तु से नहि कऽ मातृभाषाक अस्तित्व रक्षाक समरमे कूदि पड़लाह, ताहिमे सर्वस्वधरि अर्पित करबासँ पैर पाछु नहि कयलनि। हम जाहि पंक्तिक चर्चा कयलहुँ अछि तकर आधार ई जे जीवनक अन्तिम समयमे 'मैथिलीकृति केतु' नामक महाकाव्यक रचना करबामे प्रवृत्त भेल छलाह जकर अपूर्ण अंश 'बाबूभोलालालदास रचनावली'क प्रथम खण्डमे प्रौढ़ साहित्यकार, लोकप्रिय गीतकार स्वाध्यायनिरत रचनाकार, श्रीफूलचन्द्र झा 'प्रवीण' उद्धृत कऽ भोलाबाबूक कवि रूपकेँ उजागर कयलनि अछि । ई हो सूचित कऽ दीजे हमर बालक श्रीशम्भुनाथ मिश्र एम्.ए.क परीक्षाक आठम पत्रमे 'मैथिली दधीचि बाबू भोलालाल दास' नामसँ अनुसन्धान मूलक निबन्ध लिखलनि जकर पुस्तकाकार प्रकाशन 'कर्णामृत' पत्रिकाक यशस्वी सम्पादक श्रीराजनन्दन लाल द्वारा भऽ चुकल छनि ।

भोलाबाबूक प्रसंग एक रोचक संस्मरण मन पड़ि गेल अछि तकरो उल्लेख अरुचिकर नहि होयत । हिनक एकमात्र पुत्र जगदीशप्रसादकर्ण अंग्रेजीमे एम्.ए. छलथिन । सत्तरिक दशकमे एम्.एल्. एकेडमीमे अंग्रेजी शिक्षकक रूपमे नियुक्त भेलथिन, तकर बाद भोलाबाबू लहेरियासरायक बलभद्रपुरक अपन आवासमे सुस्थिर भऽ रहय लगलाह । मैथिलीक गतिविधिक सूचना प्राप्त करबा लै यदा-कदा स्वदेश सान्ध्य-गोष्ठीमे सुमनजीक आवासपर आबि जाइत छलाह । एक दिन प्रसंगवश आग्रह कयलियनि– अपने तँ मैथिली सेवामे सम्पूर्ण जीवन लगा देलिऐक । आब ओहि संघर्षक संस्मरण लिखि दितिऐक तँ भविष्यक हेतु प्रामाणिक दस्तावेज भऽ जइतैक । खिन्न होइत कहलनि– हमर जीवन सदा अस्थिर रहल । घर कोसिकन्हामे छल । जेहो किछु छल होयत कागत-पत्र से सब कोसी माइ उदरसात् कऽ लेलनि, कोन आधार पर किछु लिखू ?

Scanned by CamScanner

हम जखन दरभंगामे घर बनायब आरम्भ कयल तँ मिश्रटोलामे कालीमोहन साहक मकानमे भाड़ा पर रहैत छलहुँ। कालीमोहन साहुक एकमात्र बालविधवा पुतोहु टा वंशमे बाँचि गेल छलथिन। ओ बूढ़ी ओही मकानमे पूवदिस रहैत छलीह। हमर मायसँ हेम-छेम भऽ गेलनि तँ हुनका खण्ड दिस गेलथिन तँ एकटा शीशा लागल आलमारीमे सुन्दर सुन्दर जिल्द बान्हल पोथी सब देखलथिन। प्रसंगवश हमरा लग चर्चा कयलनि। हमरा जिज्ञासा भऽ गेल। एक दिन हम हुनक पुस्तकालय देखबाक इच्छा व्यक्त कयलियनि तँ लऽ गेलीह। ओही पोथी सबमे भोलाबाबू द्वारा सम्पादित सम्पूर्ण फाइल जिल्द बन्हबाओल देखलियनि। लोभ भऽ गेल, माङि बैसलियनि, ताहिपर कहलनि भागवतक पोथी जँ एकरा बदलामे दी तँ हम बदलि लेब। हम हुनका श्रीमद्‌भागवत पुस्तक देलियनि, ओ हमरा 'मिथिला'क फाइल दऽ देलनि, संगहि 'भारती'क फाइल स्वाध्यायक हेतु प्रो० शैलेन्द्र मोहनझासँ अनने छलियनि, दूनू फाइल देलियनि तँ संस्मरण नामसँ पुस्तक लिखलनि जाहिमे पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेशक वृत्तान्त छनि।

पत्रकारिताक इतिहास लिखबाक क्रममे 'भारती'क फाइल यथाशीघ्रे आपस कऽ देलनि, किन्तु 'मिथिला'क बेरमे आइ-काल्हि करय लगलाह। एमहर हमर लेखन क्रममे गतिरोध होअय लागल तँ स्कूलसँ छुट्टीक बाद स्वयं गेलहुँ हुनक आवासपर। संकुचित होइत मिथिलाक फाइल भीतरसँ आनि एकटा फाटल पन्नाक टुकरी देखबैत कहलनि एक दिन पढ़ैत रही, ई अबोध पौत्र लगमे खेलाइत छल, लघुशंका करय जा गेलहुँ ताही बीच ई एहि पन्नाकेँ फाड़ि देलकैक। एक हम छी जे एकटा पुर्जी धरि सुरक्षित नहि राखि सकलहुँ आ एक अहाँ छी जे एतेक सुन्दर फाइल बन्हबाय रखने छी। तेँ संकोच होइत छल जे फाटल अंश देखि अहाँ मनहिमन की कहब ? रच्छ रहल एकेटा पन्ना फाड़लक। हम कहलियनि– एहि लेल संकोच की ? पारदर्शी पन्नीसँ पन्नाकेँ साटि देबैक, ताहि पर विहुँसैत कहलनि ठीक कहलहुँ– पुल्लिंगकेँ स्त्रीलिंगे एकठाम जोड़ि सकैत अछि, पन्नाक दू खण्डकेँ पन्नीक एके खण्ड पर्याप्त होयत। एहन विनोदी रहथि मैथिलीदधीचि बाबू भेलालाल दास।

ध्यान रखबाक चाही जे जखन कोनो पैघ बंगला बान्हल जाइत छैक तँ ओहिमे बड़ेरी, धरनि, खाम्ह, खम्हेली, कोड़ो, बाती, जौड़, खढ़ सब वस्तुक समुचित स्थान आ समुचित उपयोग कयले पर बंगला ठाढ़ भऽ पबैत छैक। एहिमे सबसँ ऊपर राड़ी खढ़े रहैत अछि, किन्तु धरनिकेँ अपन कान्ह पर उठाय रखनिहार बिचला घरक खाम्हक मोटाइ तथा लम्बाइ ओरियानीमे लागल खम्हेली सबसँ अधिक राखहि पड़ैत छैक। ताही दृष्टिएँ हम दोसर महत्त्वपूर्ण योगदान आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क मानैत छियनि, जे विकासक मार्गमे सर्वत्र पसरल ईंटा रोड़ा, कंकड़, काँट-कूस सबकेँ साफ करबाक हेतु सर्वस्व झोंकि देलनि। कलकत्ता विश्वविद्यालय जहिया मैथिलीकेँ पाठ्य विषयक रूपमे मान्यता

Scanned by CamScanner

देलकैक तहिया पुस्तकक अत्यल्पता छलैक । क्रमशः लेखक लोकनि लिखय लगलाह, किन्तु प्रकाशकक सर्वथा अभाव रहलाक कारणेँ अपन पेट काटिओ कऽ प्रकाशित करैत रहलाह । साहित्यक भण्डार भरबाक चाही एहि उद्देश्य सँ आचार्य सुमन अपन प्रेस स्थापित कयलनि । अपन पुस्तक, पत्रिका आदि जे छपलनि से तँ छपबे कयलनि संगहि शताधिक साहित्यकारक पुस्तक अपने घाटा उठाय छपैत रहलथिन, आ साहित्यक भण्डारकेँ समृद्ध करबामे जीवन खपा देलनि । भाषाधार प्रान्तक निर्माण–प्रक्रियाक क्रममे जखन काका कालेलकर दरभंगा आयल रहथि तँ दरभंगाक टाउन हॉलमे बुद्धिजीवी लोकनिक एक विशाल सभा आयोजित भेल छलैक । डॉ० सुभद्र झा ओही सभामे काका कालेकरक ई कहलापर जे सम्पूर्ण बिहारक मातृभाषा हिन्दी थिकैक, उठिकऽ मैथिलीमे भाषण करय लगलाह, जाहिमे ठेंठ मैथिली शब्दक प्रयोग करय लगलथिन, ताहिपर काका कालेलकर कहि उठलथिन– आप क्या बोलते हो, मेरी समझ में नहीं आ रहा है तँ डॉ० झा कहलथिन– अपन मातृभाषामे बाजि रहल छी । कालेलकर साहेब कहलथिन– मगर मैं नहीं समझ पा रहा हूँ । डॉ० झा अंग्रेजीमे पुछलथिन जकर अर्थ छलैक– अहाँकेँ के कहलक जे बिहारक मातृभाषा हिन्दी थिकैक ? हुनकर उत्तर रहनि जे सरकारी पंजीमे लिखल छैक आ पटनामे सुशिक्षित लोक सब कहलनि ।

डॉ० सुभद्र झा अपन अक्खड़ स्वभावक अनुरूप कहलथिन– हाय रे काका कालेलकर ! एतेक भाषा जननिहार, एहन विशिष्ट भाषाविद् ! औ सभासद लोकनि, जे हमर भाषण बुझलिऐक से सब हाथ उठाउ। अस्सी प्रतिशत हाथ उठि गेलैक । ताहि दिस संकेत करैत कहलथिन– अहाँकेँ क्यौ कहि देअय जे एहि हॉलक रंग लाल छैक तँ मानि जयबैक ? ताहिपर कालेलकर साहेब पूछि बैसलथिन– कितने दैनिक पत्र आपकी इस भाषामे है ? सब सभक मुँह ताकय लगलथिन, उत्तर ककरो लग नहि रहनि । सुमनजी मनहिमन ओतहि दैनिक पत्र प्रकाशित करबाक संकल्प लऽ रहल छलाह । हमर डेरा ताबत लहेरियासरायमे छल । ओकर प्राते भेट करय अयलियनि तँ मनक उद्विग्नता व्यक्त करैत अपन इच्छा व्यक्त कयलनि । ताहि पर कहलियनि जे अर्थबल तँ अपनकेँ तेहन नहि अछि, जनबल कतेक अछि तकर अनुमान लगयबाक हेतु गोटेक मास धरि नित्य साँझमे हमरा लोकनि बैसल करी जे कतेक गोटे संग दऽ सकैत छथि तकर अनुभव प्राप्त भऽ जाय । एहि प्रकारेँ स्वदेश सान्ध्यगोष्ठी आरम्भ भेल । ईहो आमा माइक खिस्सा बहुत पैघ अछि जकर विस्तारमे जायब बहुत सम्भव नहि अछि, एतबे कहि सन्तोष करैत छी जे सुमनजी एकेबेर नहि, दू–दू बेर अपनाकेँ झोंकने रहलाह आ इतिहास रचि गेलाह ।

मिथिलाक सर्वशक्तिमान मिथिलेश ताहि समय अंग्रेजीमे इण्डियननेशन आ हिन्दीमे आर्यावर्त्त दैनिक चलाय रहल छलाह जकर धाख सम्पूर्ण बिहार पर छलैक । ओ यदि चाहितथि तँ चुटकी बजबैत मैथिलीमे ओही ठामसँ दैनिक प्रकाशित कऽ सकैत

Scanned by CamScanner

छलाह किन्तु मन उन्मुनयबो ने कयलनि, प्रत्युत हुनके संरक्षकतामे मिथिला क्षेत्रक प्राचीनतम संस्था मैथिल महासभा 'भाषाधार प्रान्त निर्माण आयोग'कें मिथिला राज्यक हेतु एक स्मार पत्र पठाय काँच बड़रकें नहसँ खोंटि जेना कोनो अज्ञानी भयंकर घाव बनाय लैत अछि, तेहने काज कयलक । मैथिलीकें गीड़ि जयबाक प्रयत्नमे लागल विरोधी वर्ग भाषाक आधार भूमिकें खण्ड-पखण्ड करबाक षड्यन्त्रमे लागि गेल, पूवमे अंगिका आ पच्छिममे बज्जिका नामसँ मैथिलीएक उपभाषाकें स्वतन्त्र भाषाक रूप देबाक आन्दोलन ठाढ़ कयलक जे एखनहु चलि रहल अछि । सरकारी जनगणना रिपोर्टमे 1901मे जतय एक करोड़सँ बेसी संख्या अंकित छल, से अन्तिम जनगणनामे किछु लाखपर आबि गेल अछि ।

सुमनजी 80-81मे जखन दोसर बेर दैनिक स्वदेश चलबैत छलाह ताहि समय डॉ० श्रीजगन्नाथ मिश्र बिहारक मुख्यमंत्री रहथि । मैथिलीकें सरकारी विज्ञापन भेटय लागल छलैक । एही बीच डॉ० मिश्रक संरक्षकतामे पाटलिपुत्र टाइम्स दैनिक सौंसे बिहारकें आन्दोलित कयने छल जकर कुप्रभाव आर्यावर्त्त पर पड़लैक । एमहर डॉ० मिश्र पटनाक चेतना समितिक मंचसँ मैथिली दैनिकक हेतु एकटा शिगूफा छोड़लनि, सुमनजी आकण्ठ कर्जमे डूबल हकमि रहल छलाह । सुमनजी ओहि शिगूफाक भरोसें शिथिल भऽ गेलाह, परन्तु बिहारमे द्वितीय राजभाषाक रूपमे उर्दूकें प्रतिष्ठापित कयनिहारसँ मैथिलीक हितक काज करबाक आशा करबे हमरा सभक भ्रान्ति भेल, ओतँ नहिए दैनिक बाहर कयलनि, ओकरे भरोसे 'स्वदेश' सेहो बन्द भऽ गेल ।

भाषाक आधार भूमिकें विखण्डित करबाक प्रयत्न आरम्भ भेल तँ एही कलमसँ युवक वृन्दसँ अनुरोध करैत किछु पंक्ति लिखायल जकर किछु अंश उद्धृत करबाक लोभ भऽ गेल अछि, पंक्ति छल-

दल बान्हि घटा कारीकारी अछि उमड़ि रहल
आ घुमड़ि रहल, ओ लय बिजुरिक तरुआरि
मनहि मन गुम्हड़ि रहल अछि, सावधान भय जाउ,
अरे रे ! पहुँचल आब बिहाड़ि, भरल नभ,
धूलि-धूसरित प्रकृति अहुरिया काटि रहल अछि
आगाँ पैर उठयबासँ पहिनहि सतर्क भय जाउ
धरातल फाटि रहल अछि ।

मिथिलाक युवक सावधान नहि भेलाह, मैथिली तँ डॉ० श्रीवैद्यनाथ चौधरीक अदम्य उत्साह आ सबल अहिंसक आन्दोलनसँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान पाबि गेल तें तेसर इतिहास पुरुषमे हम हिनक नाम अंकित करैत छियनि, किन्तु मिथिलाक पृथक राज्य आन्दोलनक नाम पर अरण्य रोदन भइए रहल अछि । अस्तु ।

Scanned by CamScanner

मैथिली साहित्य परिषद् पहिने मैथिल महासभाक प्रशाखाक रूपमे ओकर अंग मानल जाइत छल, किन्तु मैथिल महासभाक परिधि हरिसिंह देवीय पंजी व्यवस्थाक संकुचित सीमा अर्थात् मैथिल ब्राह्मण ओ कर्णकायस्थ धरि ओकर सदस्य भऽ पबैत छलाह । मैथिली तँ सब जातिक भाषा थिकैक । सब जातिक प्रवेश भऽ सकैक, तेँ मैथिली साहित्य परिषद् महासभासँ पृथक् भऽ गेल आ ई घटना घटित भेल सुल्तानगंजमे । कुमार कीर्त्यानन्द सिंहक अध्यक्षता तथा शशिनाथ चौधरीक मन्त्रित्वकाल धरि एकर मुख्य कार्यालय ओतहि छल, जाहि अवधिमे शशिनाथ चौधरी मिथिला मैथिलीक विवरणात्मक 'मिथिला दर्शन' नामक ग्रन्थ लिखलनि । साहिंत्य परिषद् द्वारा प्रकाशित ई प्रथम पुस्तक छल जे आब अप्राप्य अछि । एही मैथिली साहित्य परिषदक प्रधानामंत्रीक रूपमे बाबू भोलालाल दास पाठ्य विषयक रूपमे मैथिलीओकेँ स्थान देबाक हतु संघर्षरत भेल रहथि आ अन्ततः 1939मे एहिमे सफलतो भेटलनि । स्वीकृति भेटैत देरी परिषद हिनका हाथसँ छीनि, एक वर्गविशेष अपना हाथमे लऽ लेलनि आ आन्तरिक संघर्ष आरम्भ भऽ गेलैक । यद्यपि स्वीकृति भेटलासँ कोनो विशेष आर्थिक लाभक सम्भावना नहि छलैक तथापि यल्लब्धं तल्लभं धरि लोक उतरि आयल छल ।

एहने कटु-तिक्त वातावरणक समयमे हम साहित्यक्षेत्रमे प्रवेश कयने छलहुँ । आरम्भमे मैथिली-हिन्दी दूनू भाषामे कविता आ कथा लिखबा लै कलम घसैत रही, किन्तु मैथिलीकेँ अपन ने कोनो मंच छलैक ने आंशिक रूपेँ मिथिला मिहिरकेँ छोड़ि कोनो पत्रिके । मिथिलामिहिरक स्थिति एहने रहैक जे प्रो० हरिमोहन झाकेँ बाध्य भऽ लिखय पड़ल छलनि–

हे मिहिर ! फोउ आग्नेय नेत्र, बरसाउ तेज वैभव विशाल,
सूतलि, सितहलि, सिहरलि मिथिलापर तानू स्वर्णिम रश्मिजाल,
सप्ताश्व एहन अड़ियल कियैक टसकै अछि रथ नहि एक बीत ?
छी वर्त्तमान बनबैत अहाँ जकरा से ससरल चिर अतीत । इत्यादि ।

जखन प्रौढ़ो लेखक जँ किछु लिखैत छथि तँ ककरो सुनाय देबाक उत्कण्ठा भऽ जाइत छनि तखन अति आरम्भिक समयमे छपयबाक उत्सुकता रहैत छल होयत प्रायः से कहबाक प्रयोजन नहि । हिन्दीमे अपेक्षाकृत बेसी मंच छलैक, तेँ अधिक ठाम जयबाक अवसर भेटैत छल । आर्यावर्त्तक रविवारीय परिशिष्टांक कमसँ कम चारि टा प्रकाशित होइते छलैक, जाहिमे समय-समय पर कविता, कथा छपैत रहैत छल, किन्तु हिन्दी साहित्यक अध्ययन किछु नहि कयल छल । कहि चुकल छी जे स्कूलमे हमरा हिन्दीक अध्यापक अरविन्द बाबूक रुटीन पहिले दिनसँ धराय देल गेल छल । पहिल दिन कोन तरहेँ पिण्ड छोड़ौलहुँ तकरो चर्च कऽ चुकल छी, तेँ दोसर दिनसँ स्वाध्याय कऽ पाठ्य विषय पर टिप्पणी लिखि लऽ जाइ । स्वाध्याय कालमे जे पूर्णतः बोधगम्य नहि होअय

Scanned by CamScanner

से कमला नेहरू पुस्तकालयक परिसरमे प्रो० जगन्नाथ प्रसाद मिश्रक आवास पर जाय फड़िछाय आबी । हुनको जाहि ठाम संचर लागि जाइनि तकरा स्पष्ट करबाक हेतु कहथि जे पुस्तक भण्डारमे अच्युतानन्द दत्त रहैत छथि, हुनकासँ बूझि लेब । अच्युतानन्द दत्त वैह रहथि जे 'बालक' मासिकमे हमर पहिल हिन्दी कविता छपने रहथि जकर उल्लेख सेहो कऽ चुकल छी । एही प्रकारेँ प्रो० मिश्रक आवास पर आबाजाही बढ़ि गेल । हुनक आवासपर हिन्दीक नवतुरिया कवि सभक जमघट लगले रहैक । ओही वर्ष अर्थात् 1949 ई.मे मैथिलीकेँ मातृभाषाक रूपमे अध्यापन हेतु स्वीकृति भेटलैक । एकरे चर्चाक क्रममे प्रो० मिश्रजीक आवासपर विचार भेलैक जे एकटा एहन संस्थाक संगठन होयबाक चाही जकरामंच पर हिन्दी तथा मैथिली दूनू भाषाक साहित्यकार संग बैसथि । प्रो० मिश्रजी रहथि यद्यपि हिन्दीक विद्वान, किन्तु मैथिलीक विरोधी नहि रहथि । हमरा संग मैथिलीऐमे गप्प करथि । हिन्दीक समर्थक रहल होथु, किन्तु अन्यान्य लोक जकाँ प्रत्यक्ष रूपमे मैथिलीक विरोध करैत कतहु नहि देखलियनि, प्रत्युत मैथिलीक पाठ्य पुस्तकमे स्वनामधन्य रामलोचन शरण पुस्तक भण्डारसँ जे अष्टम-नवम वर्गक हेतु मैथिली पुस्तक प्रकाशित कयने रहथि ताहिमे हुनक लेख सेहो संकलित कयने छलथिन ।

रामलोचन शरणहुक प्रति हमरा श्रद्धा अछि, हुनको साहचर्य भेटल अछि । हुनको मातृभाषा मैथिली रहनि जकरा आइ राजनीतिक कारणेँ बज्जिका नाम देल गेल अछि । रामलोचन शरणक मैथिलीप्रेम एहीसँ उजागर छनि जे ओ रामचरित मानसक मैथिलीक अनुवाद कयने छथि तथा सबसँ पहिने प्रेस ठाढ़ कयलनि तँ तकर नाम विद्यापति प्रेस रखलनि । विद्यापति नामपर पंचांगक निर्माण कराय प्रतिवर्ष छपैत छलाह । भोलाबाबू जे 'मिथिला' तथा 'भारती' दू गोट मासिक पत्र सम्पादित कयलनि सेहो छपैत छलनि । पं० विद्यानाथ रायक तत्परतासँ जे मिथिलाक्षरांकन समिति बनल आ मिथिलाक्षरक काँटा बनल, जकर उपयोग भोलाबाबू 'मिथिला' मासिकक अन्तिम अंक सम्पादकीयमे कयलनि । दुर्गा सप्तशती पुस्तक छपल, सत्यनारायणपूजा पद्धति छपल ताहि सबमे रामलोचन शरणक अमूल्य योगदान रहलनि । हम एही सेवा सबकेँ ध्यानमे राखि साहित्य अकादेमीक अपन कार्यकालमे हिनका पर विनिबन्ध लिखयबाक प्रस्ताव पारित कयल । महाकवि श्रीमार्कण्डेय 'प्रवासी' लिखबाक भार गछलनि, परन्तु एहि पंक्तिक लिखबाक समय धरि ओ प्रस्तुत नहि भऽ सकल अछि ।

ओहि समयमे चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजक प्रिन्सिपल विश्वमोहन कुमार सिन्हा रहथि, हुनके अध्यक्षतामे नवीन संस्था संघटन हेतु बैसक भेल, नाम राखल गेलैक विद्यापतिगोष्ठी । निर्णय लेल गेलैक जे प्रत्येक मासक अन्तिम रवि दिन एकर बैसाड़ हो, स्थायी अध्यक्ष प्रो० जगन्नाथ प्रसाद मिश्र, मन्त्री श्री कामेश्वर सिंह 'मस्त', सहायक मन्त्री श्री अनन्तविहारी दास 'इन्दु' कार्यालय कमला नेहरू स्मारक पुस्तकालय, लहेरियासराय

Scanned by CamScanner

स्थिर भेल । नवीनतम रचना सदस्यता शुल्क मानल गेलैक । ताहि समयमे सी.एम्. कॉलेजमे रामलोचन शर्मा कंटक, जनिकर तारा पर उत्प्रेक्षासँ भरल मैथिलीमे कविता मिथिलामिहिरमे प्रकाशित भेल रहनि जे बहुचर्चित भेलनि, प्रो० सुरेन्द्र मोहन, प्रो० पुण्यानन्द दास आदि साहित्यकार लोकनि रहथि, यदाकदा मासिक बैसकमे भाग लेथि । संयोगवश आरसीबाबू, किरणजी, यात्रीजी, कुलानन्द 'नन्दन' सेहो पहुँचि जाथि । कलक्टर सिंह 'केसरी' प्रिन्सिपल भऽ समस्तीपुर चल गेल छलाह । प्रसंगतः एकरो उल्लेख कऽ दी जे ताहि दिनुक बिहारमे जे कोनो नव कॉलेजक स्थापना होइक ओहि हेतु सी.एम्. कॉलेजहिसँ प्रिन्सिपल भऽ गेल करथि । जेना कलक्टर सिंह 'केसरी' समस्तीपुर, अरुणकुमार दत्त आर.के. कॉलेज, मधुबनी, परमाकान्त चौधरी, दानापुर, सुरेन्द्रनाथ झा दुमका, पुरुषोत्तम झा गोड्डा, एक मात्र पुरुषोत्तम बाबू घूरिकऽ सी.एम्. कॉलेज अपन पुरना स्थान चल अयलाह । ईहो सूचित कऽ दी ताहि समय पी-एच.डी. उपाधिधारी बहुत थोड़ व्यक्ति होथि, आइ काल्हि जकाँ एहि उपाधिक अवमूल्यन नहि भेल रहैक ।

हमरा मनमे एक विचार आयल । भोलाबाबूक अपील कयलाक बाद ठाम-ठीम विद्यापति जयन्ती मनायब आरम्भ भऽ गेल रहैक । विद्यापति गोष्ठीक एक बैसकमे हम प्रस्ताव रखलियनि जे विद्यापतिक जन्मभूमि विस्फी, सिद्धिभूमि भवानीपुर तथा निर्वाणभूमि ताहि दिनक बाजितपुर जे आब विद्यापति नगर कहबैत अछि, एहि तीनू स्थानक गोष्ठी क्रमशः प्रति वर्ष साहित्यिक यात्रा करय । गोष्ठीक अध्यक्ष प्रो० मिश्रजी एहि प्रस्तावक बहुत सराहना कयलनि आ 1950मे कातिक धवल त्रयोदशीक दिन हम सब दस गोटे संगमे पाथेय बान्हि प्रो० मिश्रक नायकत्वमे कमतौल रेलवे स्टेशन उतरि ओतयसँ पैदल विस्फी जाइत गेलहुँ । एहिसँ विद्यापति-साहित्यक कतबो मन्थन भेल हो, किन्तु ऐतिहासिक ई साहित्यिक यात्रा सर्वप्रथम विद्यापति गोष्ठीए आरम्भ कयलक आ ई क्रम आगाँ बढ़ैत गेल 1951मे गोष्ठी भवानीपुरक साहित्यिक यात्रा कयलक । किंवदन्तीक अनुसार साक्षात् शिव एही ठाम विद्यापतिकेँ दर्शन देलथिन जे छद्म रूपमे विद्यापतिक भक्तिभावनाक प्रसादेँ उगनानाम धराय टहलू बनि संग रहैत छलथिन तथा 1952 मे जाहिठाम विद्यापतिक निर्वाणक समयमे गंगा माता स्वयं घुसुकि कऽ आबि दर्शन देने छलथिन ताहि निर्वाणभूमिपर शिव मन्दिर बनल छनि, एहि तीनू जन्मभूमि, सिद्धिभूमि तथा निर्वाणभूमिक साहित्यिक यात्रा सम्पन्न कयलक । एहि सब यात्राक समाचार ताहि समयक आर्यावर्त्त आदि अनेक दैनिकमे छपल अछि । बाजितपुर रेलवे स्टेशनक नाम बदलि कऽ विद्यापति नगर राखल जाय सेहो प्रस्ताव विद्यापति गोष्ठीए सर्वप्रथम उपस्थित कयने रहय । आइ विद्यापतिनगर रेलवे स्टेशने नहि, अपितु बिहार सरकारक प्रशासनक एकांश सेहो अछि । क्षेत्र सेहो विकासक पथ पर अग्रसर अछि ।

एही मध्य गोष्ठी सहकारिताक आधार पर मिथिलांचलस्थ मैथिली ओ हिन्दीक

Scanned by CamScanner

नव पुरान कवि सभक एक कविता संग्रह प्रकाशित करबाक निर्णय लेलक । हमर आन्तरिक उद्देश्य ई प्रमाणित करबाक छल जे मैथिलीभाषी कहियो हिन्दीक विरोधी नहि रहलाह जखन कि मैथिली मातृभाषा होइतो कतिपय हिन्दीक अन्ध समर्थक विरोध करैत रहलाह अछि । ओना हिन्दीक कट्टर समर्थक लोकनिक मैथिलीविरोधी गतिविधिसँ क्षुब्ध भऽ डा० जयकान्त मिश्रक परिवार प्रयागसँ तथा बाबूसाहेब चौधरी तथा हुनक अनुयायी लोकनि कलकतासँ हिन्दीक विरोधमे स्वर मुखर कयलनि, किन्तु विशेष प्रभाव अन्यत्र नहि पड़लैक । कारण कतोक मैथिली लेखक हिन्दीओक भण्डारक श्रीवृद्धि करैत रहलाह आ अपन परिचिति सेहो बनौलनि, यथा यात्रीजी, राजकमल, श्रीमार्कण्डेय प्रवासी, डॉ० श्रीबुद्धिनाथ मिश्र आदि । बाबूसाहेब चौधरी तँ एतेक धरि कहथिन जे हिन्दीमे जँ प्रशंसा करैत अछि तँ कर्णकटु लगैत अछि आ मैथिलीमे गारिओ पढ़ैत अछि तँ ओतेक अप्रिय नहि लगैत अछि । संग्रह हेतु सहयोग राशि मात्र 5 रु. राखल गेल छल । बुन्देँ–बुन्देँ घैल भरबामे तीन वर्ष लागि गेल तथापि घैल नहि भरि सकल । कविता तँ 57 गोटे पठौलनि परन्तु टाका सब गोटे नहि पठाय सकलाह ।

किछु गोटे एहनो बहरयलाह जे एहि योजनासँ सहमत नहि रहथि, जेना समस्तीपुरक पद्मश्री पोद्दार रामावतार 'अरुण' मुजफ्फरपुरक श्यामनन्दन 'किशोर' आ राजेन्द्र प्रसाद सिंह । संग्रहक नाम राखल गेलैक 'विद्यापति के देशमे' । किछु टाका आबि गेल छल जे 166 पृष्ठक पोथीक लेल ऊँटक मुँहमे जीरक फोड़न छल । शेखरजीक प्रसिद्ध हिन्दी नाटक तमाशा पाण्डुलिपिएमे छलनि, तखने हम अपन स्कूलमे सरस्वती पूजाक अवसरपर मंचन कयने रही जे बहुत सफल भेल छल । विश्वनाथ मिश्र नर्त्तक प्रस्ताव देलनि जे एहि नाटककेँ टिकट पर टाउन हॉलमे खेलायल जाय आ ओहिसँ भेल आयसँ विद्यापति के देशमे छपाओल जाय । गोष्ठी एकत्र राशिसँ टिकट छपौलक, टिकट पर ईहो अंकित छलैक जे टिकट किननिहारकेँ पश्चात् एक कवितासंग्रह सेहो उपहारमे भेटतनि । 192 रु. मात्रओहि टिकटसँ आय भेल । विश्वनाथ मिश्रक छोट सन कलामंच पर ओकर पूर्वाभ्यास (रिहर्सल) तथा टाउन हॉलमे मंच बनयबेमे ओ राशि खर्च भऽ गेल, 'गोनू रहलाह घरे', प्रत्युत टिकट छपयबामे गोष्ठीक जे टाका लगलैक सेहो घाटा लागि गेलैक । एहि प्रसंग विद्यापति के देशमे जे एहि कलमसँ गोष्ठीक संक्षिप्त इतिहास हिन्दीमे लिखायल तकरा पढ़ि, विशेष जानल जाय सकैछ, जे एहि पुस्तकक परिशिष्टमे देल गेल अछि । आब सक्रिय रूपमे ने विद्यापति गोष्ठी अछि ने नवरत्न गोष्ठी । नवरत्न गोष्ठीक नामसँ करीब 40 गोट पुस्तक छपि चुकल अछि तथा विद्यापति गोष्ठीसँ 12 गोट । एहि प्रकाशन सबमे छपाइ लेखक अपने खर्च करैत छलाह, हम प्रेसक झंझटसँ लेखककेँ त्राण दैत रहलियनि अछि जे एखनहु चलि रहल अछि । पछिले किछु वर्ष पहिने अंग्रेजी साहित्यक गम्भीर अध्येता, साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद पुरस्कारसँ पुरस्कृत प्रो. श्रीमुरारिमधुसूदन ठाकुरक प्रसिद्ध 'विश्वदर्शन' यात्रा संस्मरण एही गोष्ठीसँ प्रकाशित भेलनि अछि ।

Scanned by CamScanner

नवरत्न गोष्ठीक प्रसंग एक घटनाक उल्लेख छूटि गेल, तकर उल्लेख कऽ दी। गोष्ठी 'नवरत्नग्रन्थमाला'क पहिल पुष्प हमर 'गुदगुदी' कविता संग्रह, दोसर मथुरानन्द चौधरी 'माथुर'क खण्डकाव्य 'कृषक', तेसर पं० राघवाचार्यक कवितासंग्रह 'वनकुसुम' छपल छलनि। गोष्ठीक मन्त्री हम रही, हमरा बिनु किछु सूचना देनहि एक दिन 'चतुरानन' नामसँ 'कला' नामक उपन्यास गोष्ठीक चारिम पुष्प कहि छपाय माथुरजी (दोस्त) हमरा देलनि। सूचित कऽ दी जे माथुरजी कम्यूनिष्ट पार्टीक सक्रिय सदस्यक रूपमे पार्टीक पटना शाखा कार्यालयमे रहैत छलाह। पोथी पटनेमे छपल छलैक। प्रकाशकमे नवरत्न गोष्ठीक नाम देखि पुछलियनि– दोस्त ! ई चतुरानन के थिकाह ? उत्तर देलनि– हमही छद्म नामसँ छपौलहुँ अछि। हम कहलियनि मन्त्री हम छी, कमसँ कम हमरा पूर्वसँ सूचना तँ रहबाक चाही। उक्त विचार धाराक लोकक स्वभावक अनुरूपे उत्तर देलनि– नवरत्न गोष्ठी कोनो लौंग सुपारी नहि थिकैक जे कोनो व्यक्तिविशेष अपना जेबीमे राखि लेत। दोस्तक उत्तरसँ क्षोभ भेल, प्रतिक्रियामे हम 'कला' उपन्यासकेँ गोष्ठी ग्रन्थमालासँ खारिज करैत चारिम पुष्पक रूपमे अपन तीन विधा कथा, कविता आ एकांकीक छोट सन पोथी 'त्रिफला' नामसँ छपाय लेलहुँ।

ध्यातव्य जे 'कला' उपन्यासक वास्तविक लेखक थिकाह कम्यूनिष्ट पार्टीक शिखरस्थ नेता, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री चतुरानन मिश्र जे ताहि समय राजनीतिक कोनो विशेष कारणेँ भूमिगत छलाह। जखन प्रकट भेलाह आ माथुरजीक किरदानी ज्ञात भेलनि तँ हिनका पार्टीसँ निष्कासित कऽ देलथिन। पूर्वहि कहि चुकल छी जे दोस्त अर्थात् माथुरजी बहुत प्रतिभा-सम्पन्न लोक रहथि जे छात्रावस्थेमे 'कृषक' नामक खण्ड काव्य लिखि छपाइओ लेने रहथि, संगहि 'कानन कन्या' नामक महाकाव्य लिखि रहल छलाह, जकर बहुतो अंश धारावाही रूपमे मिथिला-मिहिरमे सुमनजी छपनहु छलथिन। उक्त काण्डक भण्डाफोड़ भेलापर माथुरजी लाजेँ देश छोड़ि नेपाल तराइ चल गेलाह। ओतहि एक विद्यालयमे शिक्षक रहथि। किछु-किछु लिखितो छलाह, किछु प्रकाशित कयलनि। अपन गाम पंचोभ जाइत-अबैत यदा-कदा दर्शनो देथि, तथापि सम्पर्क अतिक्षीण रहल। ओहि महाकाव्यक की भेलनि तकर किछु पता नहि चलल। हुनक गाममे हमर बहुतो छात्र संगहि मित्र वर्गोक संख्या थोड़ नहि। एमहर सूचना भेटल जे माथुरजी दिवंगत भऽ गेलाह। मनमे बड़ कचोट भेल जे मैथिली एक प्रतिभावान व्यक्तिक साधनासँ वंचित भऽ गेल।

तेसर संस्था जाहिसँ हम सम्बद्ध रहलहुँ से थीक **अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्** जकरा प्रसंग पहिनहु चर्च कऽ चुकल छी। 1944 ई.क मनीगाछीक अधिवेशनमे पहिले कविता पाठ कयने छलहुँ, 1946मे संयुक्त मंत्री, 1951क अधिवेशनमे जकर स्वागताध्यक्ष एम्.एल्.एकेडमीक प्रधानाचार्य स्वनामधन्य झिंगुर कुमर रहथि।

Scanned by CamScanner

अध्यक्ष निर्वाचित भेलाह सुविख्यात समाजवादी नेता पं० रामनन्दन मिश्र तथा प्रधानमंत्री किरणजी (एक बात स्पष्ट कऽ दी जे स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद मन्त्री पदमात्र मिनिस्टर सभक हेतु आरक्षित भऽ गेलनि आ सभक मन्त्री सचिव कहाबय लगलाह)। ओहिमे हमरा प्रचार सचिव बनाओल गेल। 1957 मे बहेड़ा अधिवेशनमे हम महासचिव निर्वाचित भेलहुँ जखन पं. हरिनाथ मिश्र जे ताहि समय बिहार सरकारमे मन्त्री रहथि ओ अध्यक्ष निर्वाचित भेल रहथि। हरीबाबू स्वेच्छा कोषसँ 1500/ रु. परिषद्कें देलथिन। ताहिसँ पहिने नागेश्वर मिश्र ओकीलक प्रयासें श्रीनिवासमल बेरौलिया सी.एम्. साइन्स कॉलेजक पूब आठ-दस फूट चाकर आठ धूर जमीन परिषदकें देने छलथिन। ओकर चौड़ाइ ततेक संकीर्ण छलैक जे कोनो संस्थाक हेतु भवन बनब असम्भव छलैक। ओ भूमि 800/-मे बेचि दिग्घीक पछबरिया मोहारपर 2000/रु. मे दू कट्ठा बारह धूर जमीन शुकदेव मिश्रसँ परिषदक हेतु किनलहुँ जाहिमे किछु शुकदेव मिश्रकें अपनभैयारी बँटबारामे टुकरी-टुकरीमे बँटल छलनि। बाबू चन्द्रधारी सिंह गीता भवनक हेतु भूमि किनलनि तँ टुकरी सब हुनक सुविधाकें ध्यानमे राखि हुनका हस्तान्तरित कऽ देल गेलनि। ई सब काज कार्यसमितिक अनुमतिसँ भेलैक। शेष सल्लग भूमि परिषद कें छैके जाहि पर वर्त्तमान महासचिव डॉ० श्रीगणपतिमिश्र घेरि-घारि एक टा एस्बेस्टस छतवला मकान बनबौने छथि। पहिने ई क्षेत्र सुनसान छलैक, आब सघन वस्ती भऽ गेलैक अछि। तथापि ओ भवन अरक्षित रूपमे अछि, केवल सरकार दिससँ पोलिंग बूथ रूपमे उपयोग होइत छैक। तें मैथिली साहित्य परिषदक नाम सरकारी सिरिस्तामे अंकित छैक। प्रसंगवश मनक विषाद सेहो व्यक्त कइए दी, जाहिसँ मन हल्लुक भऽ जाय। यद्यपि संसारमे के अछि जे अपनाकें स्वच्छ छविक नहि मानैत हो ? जे जतेक फूसि बजैत अछि से ततेक जोर दऽकऽ सत्यवादी होयबाक घोषणा डेग-डेग पर करैत रहैत अछि। सन्त तुलसीदासक उक्ति छनि 'जा की रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी'। नीतिकार कहैत छथि– 'आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः आइ सम्पूर्ण देश भ्रष्टाचारक पाँकमे कोन रूपें धसि रहल अछि से सभक समक्षे अछि। जे जतेक भ्रष्टाचारी से ततेक पैघ पण्डित, कारण आत्मवत् सबकें देखनिहार वैह सब अछि। तथापि किछु स्पष्टीकरण आवश्यक प्रतीत भेल। पूर्वहु कहने छी, पुनः दोहरबैत छी जे ठाढ़ होयबाक लेल अपन छोट सन भूमिक टुकरी आ रौद-वर्षा सँ शरीरक रक्षाक हेतु माथपर बाँस आ खढ़सँ बनल चार जहिया भऽ गेल अर्थात् 1957 ई. सँ उधार-पैंच ककरोसँ नहि लेल। नीतिकारक कथन छनि– 'योऽर्थेशुचिः स हि शुचिः न मृद्वारि शुचिः शुचिः' अर्थात् जे लेन-देनमे पवित्र अछि सैह वस्तुतः पवित्र अछि, छिट्टा भरि माँटि आ घैल भरि पानिसँ हाथ धोअब असली शुचिता नहि थीक।

पण्डित गिरीन्द्रमोहन मिश्रक अध्यक्षतामे जे परिषदक संविधान बनलैक ताहूमे ई विधान छलैक जे एक मुश्त 25/ टाका देनिहार आजीवन सदस्य, 101/ टाका नगद अथवा ततबा मूल्यक पुस्तक आदि सम्पत्ति देनिहार पोषक सदस्य तथा 1001/ टाका वा

Scanned by CamScanner

सम्पत्ति देनिहार संरक्षक सदस्य कहौताह । हम बेराबेरी तीनू प्रक्रिया पूर कयने छी जे शपथ पुरस्सर कहि सकैत छी, किन्तु आइ परिषदक सिरिस्तामे हम जँ किछु छी तँ परिषदक भूमि बेचि अपन जेबी भरनिहार । एकरा अहम्मन्यता नहि, भविष्यकेँ दृष्टिमे राखि वस्तु स्थितिक उल्लेख मानल जाय ।

1957क बहेड़ाक अधिवेशनक बाद 1959मे मधुबनीमे परिषद्क अधिवेशन भेलैक । अग्रिम अधिवेशनक अध्यक्षक निर्वाचन कार्यसमिति करैत छलैक । कार्यसमितिक एहि कार्यक हेतु बैसक हमरे मिश्रटोला स्थित पर्णकुटीमे भेल छलैक । बाबू कृष्णनन्दन सिंह, परिषदक संरक्षक छलाहे, संगहि साहित्यकारोक संरक्षक रहथि । अपनहु साहित्य रचनामे रुचि रखैत छलाह । भर्तृहरिक नीति शतकक अनुवाद, स्वधा-स्वाहा-वषट्कार, सीतारामायण दू खण्डमे (मौलिक ग्रन्थ) प्रकाशित छनि । सामन्ती युगक अन्त भऽ रहल छलैक, जमीन्दारी उन्मूलन बिल पास भऽ चुकल छलैक । ओही अवधिमे ई अपन पितामह बाबू हरिनन्दन सिंहक नाम पर हरिनन्दन सिंह स्मारक ट्रस्ट बनौने छलाह जाहिसँ समय-समय पर व्याख्यानमाला आयोजित होइत छलैक, 200/रु.क पुरस्कार दैत छलथिन । मधुपजी, मणिपद्मजी, एहि पंक्तिक लेखक सेहो उक्त पुरस्कार पाबि चुकल छथि । हुनका सम्मानक भूख सेहो छलनि । परिषदक विकासक प्रसंग हमरा किछु विशेष आश्वासन देने रहथि । एहिसँ पहिने जकर उल्लेख कऽ चुकल छी जे पं. रामनन्दन मिश्र समाजवादी नेता राजनीतिक पुरुष रहथि, परिषदक कार्यमे कोनो रुचि नहि, तत्कालीन अध्यक्ष पं. हरिनाथ मिश्र सेहो राजनीतिके नहि अपितु बिहारक मन्त्रिमंडलमे रहथि, रुचि रखितो ततेक व्यस्त रहथि जे समय भेटबे ने करनि । बाबू साहेब एक तँ निश्चिन्त रहथि संगहि साहित्य ओ साहित्यकारक अनुरागी व्यक्ति छलाह । सुमनजी, मधुपजी, शंकरमिश्र आदिसँ परामर्शकऽ हम हिनक नाम अग्रिम अधिवेशन लेल प्रस्तावित कयलियनि । किरणजी विरोध कऽ देलथिन । मत विभाजनक जखन प्रस्ताव अयलैक तँ अपनाकेँ अल्पमतमे पाबि किरणजी 'वाकआउट' कऽ गेलाह । हमर सक्रियताकेँ देखैत बहुतो गोटेक इच्छा रहनि जे एक बेर पुनः हमरा राखल जाय, मुदा अधिवेशन दिन किरणजी हमर प्रतिस्पर्द्धामे डॉ. कीर्त्यानन्द कुमरक नाम प्रस्तावित कऽ देलथिन । दूनू दिससँ गरमागरम बहस भेलैक । वातावरण विषम होइत देखि नवनिर्वाचित अध्यक्ष बाबू कृष्णनन्दन सिंह सभाकेँ स्थगित कऽ कहियो दोसर दिन दरभंगेमे करबाक घोषणा कऽ देलथिन । एकरा अमर सिंह कुमर सिंहक संघर्ष कहल गेलैक ।

ओ स्थगित बैसक पं. त्रिलोकनाथ मिश्रक संयोजकत्वमे रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालयमे आयोजित भेलैक । किरणजी सन्नद्ध भऽ आयल रहथि । एतहु हमरा पक्षमे बहुमतक आभास पाबि हंगामा भेलैक । अध्यक्ष कटुता बढ़ैत देखि मध्यम मार्ग अपनबैत डॉ. श्रीकृष्णमिश्रकेँ मनोनीत कऽ देलथिन । श्रीकृष्णमिश्रक पितियौत नैयायिकजी

Scanned by CamScanner

परिषदक एक वैतनिक कार्यकर्त्ता रहथि। कार्यालयक संचालनक भार हुनके रहनि। लक्ष्मीश्वर पब्लिक पुस्तकालयक कोठलीमे एक आलमारी, दू गोट रैक, दू टा कुर्सी, दू टा बेंच, आगरा मैथिल महासभाक अधिवेशनक अवसर पर आगरा जेलसँ 20 x 10 हाथक दरी कीनल गेल रहैक, से दरी छलैक। एकर अतिरिक्त परिषदसँ प्रकाशित गद्य कुसुमांजलि, गद्य कुसुम माला, मेघनादवध, विरहिणी ब्रजांगना, मैथिल डाक, धातुपाठ आदि पुस्तक रहैक। भूमिक दस्तावेज सहित नैयायिकजीकेँ चार्ज दऽ देलियनि। हमर अनन्य हितचिन्तक उपेन्द्रनाथ झा व्यास सतत पत्राचार करैत रहैत छलाह। ओ एक पत्रमे लिखने रहथि– साहित्य साधनाक विषय थिकैक, संगठन, संस्थाक संचालन आदि साधनामे व्यवधान अनैत छैक। हमरा प्रसन्नता भेल जे अहाँ परिषदक भारसँ मुक्त भऽ गेलहुँ।

हम ताहिसँ पहिनहि हिन्दीमे एकटा कविता लिखने छलहुँ–

मैं काम करता जाऊंगा।
जीवन की बाधाओं का कत्लेआम करता जाऊँगा।
जीवन में मिलनेवालों का मैं स्वागत करता आया हूँ,
मरने की हुई जरूरत जब मौके पर मरता आया हूँ,
परवाह न मुझको है तेरी मग पर डग भरता जाऊँगा। इत्यादि

किन्तु परिषद दिनानुदिन रुग्ण होइत गेलैक, एकरा चिकित्सकक आवश्यकता रहैक, अपन भूमि छलैक ताहि पर भवन निर्माणक प्रयोजन छलैक, तेँ आगाँ चलि डॉ. श्रीगणपति मिश्रकेँ महासचिव साम्प्रतिक मिथिलाक विद्वन्मुकुटमणि (आब) महोपाध्याय, डॉ. आचार्य प्रवर श्रीजयमन्त मिश्रकेँ अध्यक्ष तथा इंजीनियर श्रीरामचन्द्र चौधरीकेँ कोषाध्यक्ष बनाय परिषदक वागडोर धराय देल गेलनि। सम्प्रति जे स्थिति छैक तकर चर्च पहिनहि कऽ चुकल छी। परमादरणीय श्रीजयमन्त बाबू वार्द्धक्य ओ शारीरिक असमर्थता संगहि कार्य समितिक उदासीनता-अकर्मण्यता आदि देखैत किछु पूर्वहि अध्यक्ष पदसँ त्याग पत्र दऽ देने छथिन। प्रत्यक्षक हेतु प्रमाणक आवश्यकता नहि होइत छैक। 1968 वा 69मे सरिसवमे परिषद्क अधिवेशन भेल छलैक जाहिमे एहि संस्थाक इतिहास लिखयबाक चेष्टा भेलैक। डॉ. श्रीशंकरकुमार झा महासचिवक आग्रह तथा कवि मित्र पं. भवनाथझाक अनुरोध पर हथोड़ि-पथोड़ि जतय जे किछु सूत्र भेटल ताहि आधार पर एक संक्षिप्त इतिहास लिखि चुकल छी जे ओहिठामक स्मारिकामे प्रकाशित अछि।

1948मे सुमनजी 'स्वदेश' मासिक प्रकाशित करय लगलाह तहियासँ हम अपन अल्प योग्यता तथा यथा- योग्य क्षमतासँ 'स्वदेश' दैनिक दूनू बेरक प्रकाशन धरि संग पुरैत रहलियनि। नीति वचन छैक– 'कीटोऽपि सुमनः संगात् आरोहति सतांशिरः' अर्थात् सुमन (फूल)क साहचर्यसँ कीड़ा-मकोड़ा सेहो सज्जनक माथपर चढ़ि जाइत अछि, हमर जे

Scanned by CamScanner

किछु सफलता से उक्त वचनक दृष्टान्त मानल जाय सकैत अछि । एहि श्रद्धासँ अभिभूत भऽ 1959मे जखन सुमनजीक आश्विन शुक्ल पंचमी तिथिकेँ पचासम जन्मदिन उपस्थित भेलनि तँ विशेष रूपेँ जन्मदिन मनयबाक हेतु विश्वनाथमिश्र नर्तक आ शेखरजीक संग बैसि विचार कयल । विद्यापतिक 'जय जय भैरवि गीतपर प्रथम-प्रथम भावनृत्य प्रस्तुत कयनिहार विश्वनाथमिश्र सुमनजीक 'साओन-भादव'पर नवो रसमे भावनृत्य प्रस्तुत करबाक हेतु गोटेक मास पूर्वाभ्यास कयलनि ।

सुमनजी रहथि अतिशय संकोची लोक । हुनका यदि हुनक जन्मदिन विशेष रूपसँ मनयबाक आयोजन भऽ रहल छनि से ज्ञात होइतनि तँ कतहु गुप्तवासमे चल जइतथि । ओना अपन प्रशंसा साधारणतः सबकेँ नीक लगैत छैक, किन्तु सुमनजी प्रशंसा सुनि असहज भऽ उठथि । तेँ स्थान राखल गेल मैथिल महासभा भवन, बलभद्रपुर, लहेरियासराय, संयोजक भेलाह गोविन्द चौधरी ओकील (एकर उल्लेख गोविन्द चौधरी स्मृति ग्रन्थमे सेहो कयने छी) ओ स्वयं आबि एक विशेष आयोजनक नाम कहि आमन्त्रित कयने रहथिन । हमरे जन्मदिनक आयोजन अछि से ज्ञात नहि रहलाक कारणेँ सुमनजी अपनहु बहुत गोटेकेँ हकारि कऽ लऽ गेल छलथिन । आयोजन आरम्भे भेलैक नवो रसक भावनृत्यसँ, से देखि कनेक माथ ठनकलनि आ जखन प्रशंसात्मक भाषण आरम्भ भेलैक तँ पाछाँ दिस घुसकैत-घुसकैत एक कोनमे चल गेलाह । जखन अन्तमे अपना किछु बजबाक आग्रह भेलनि तँ हमरा आ विश्वनाथजीक दिस तकैत मुखमण्डल आरक्त भऽ गेलनि । कहलथिन— हमरासँ 'छल' कयल गेल । आइ बुझायल जे साहित्यमे नवे गोट रस नहि दसमो रस होइत छैक 'निर्लज्जता' जकर मूर्त्तरूप हम छी । देवता पाथर होइत छथि तेँ अपन प्रशंसा सुनि लैत छथि, हम सदेह सुनैत-सुनैत पाथर भऽ गेल छी, तेँ कोना बाजू, की बाजू ! अन्तमे अपने लिखल 'जन्मदिन' शीर्षक कविताक अंश—

गणक गुनथि ग्रह वर्षप्रवेशक शुभ सूचक अवदात
किन्तु गनी हम पलक जीवनक बीतल अछि कत तात
संचित आयुकोषसँ होइछ श्वास-श्वास व्यय हन्त ।
वर्ष प्रवेशक हर्ष-अमृतमे घोरल विषमय अन्त

हम जे सुमन जयन्ती 1959मे आरम्भ कयल से हुनक जीवनक अन्तिमवर्ष धरि जेना लोक कबुला कयल चौठचन्द्र, छठि आदि पावनि कोनहु स्थितिमे करिते टा अछि तहिना मनबैत रहलहुँ । एखन तँ अपन प्रशंसा दसगोटेक मुँहसँ सुनबाक लेल मूल्यांकन सभाक छद्म रूपमे ककरो द्वारा आयोजन करबैत अछि । एहने सभाक प्रतिक्रिया एहि कलमसँ व्यक्त भेल छल—

सम्मानक जेँ भूख तेँ मूल्यांकनक प्रयास
जागल लेखक बन्धुमे, बाजथु तुलसीदास

Scanned by CamScanner

आगाँ किछु विस्मयकारी घटना सभक चर्च करब जकर भुक्तभोगी वा प्रत्यक्षदर्शी छी । सुमनजीक चर्च चलि रहल अछि तेँ हिनका सँ सम्बद्ध एहि घटनाक उल्लेख एतहि करब उपयुक्त प्रतीत भेल ।

मेष संक्रांतिक प्रात (जकरा बासि पावनि कहल जाइत छैक) अपना सभक ओतय श्रेष्ठजन कनिष्ठकेँ गत रातिएसँ कुल देवताक सीर लग राखल जलसँ जुड़बैत छथिन अर्थात् आशीर्वाद दैत छथिन । बाल्यकालक एहन जुड़यबाक स्मरण एखनहु भऽ जाइत अछि जखन माय सुतलेमे भोरे जुड़ाबथि तँ फुरफुराकऽ उठि जाइ । माता-पिता जाधरि जीबैत रहथि, जुड़बैत रहथि । दुनू गोटेक परोक्ष भऽ गेला पर ओहि दिनसँ भोरे बड़का भाइक डेरा पर चल जाइ आ आशीर्वाद लऽ आबी । ईहो कहि दी जे बड़का भाइ सेहो हमर मायसँ जुड़यबाक हेतु आयल करथि । 1964मे बड़का भाइक देहान्तक बाद ई प्रश्न आयल तँ सुमनजीक आवासपर जाय लगलहुँ, अपने तँ जुड़ाइए देथि, किन्तु हुनकासँ पहिने हुनक धर्मपत्नी आह्लादिकऽ चानि ठोकि देथि । हुनका हमरा प्रति ततेक स्नेह भाव रहनि जे संयोगवश स्वदेश सान्ध्य गोष्ठीमे अनुपस्थित रहय पड़य तँ तकर बाद दोसर दिन कहथि– काल्हि अहाँ नहि अयलिऐक ? पुछियनि– से कोना बुझलिऐक ? कहथि एको बेर हहारो नहि सुनलिऐक तँ बूझि गेलिऐक जे आइ अमरजी नहि छथिन ।

2002क फाल्गुन कृष्ण सप्तमीक राति सुमनजी दिवंगत भऽ गेलाह । ओहि वर्ष जूड़शीतल अयला पर मन बहुत उदास रहय । ऊपर जयबाक सीढ़ीक नीचाँ नित्य जकाँ ओहू दिन पूजाक सराइ-भाजन मँजैत छलहुँ आ मन एही भावनामे डूबल रहलाक कारणेँ अश्रुसिंचित आँखिमे सुमनजीक रूप झिलमिलाइत रहय । ऊपर मंजिलमे सुमनजीक गुरु आ हमर सहदेव भाइक भातिज श्रीसुभद्र झा रहैत छलाह । हुनक एक बालक गत राति दिल्लीसँ आयल रहथिन, ओ ऊपरसँ आबि ओही क्षणमे एकटा पैकेट दैत प्रणाम कऽ कहलनि– केन्द्रीय मन्त्री श्री संजय पासवान अपनेकेँ पठौलनि अछि । उत्सुकता प्रबल भऽ उठल । हाथ माँटिमे लेभड़ल छल, झट हाथ धोय ओहि पैकेटकेँ फोललहुँ । देखैत छी महात्मा गान्धी जकाँ उघाड़े शरीर, दहिना हाथमे कलम लेने सुमनजीक अनुपम चित्र छल, जे सम्प्रति पूजा स्थान लग जे टेबुल अछि ताहि पर विराजमान अछि, सूर्यकेँ अर्घ्य दऽ प्रत्यह फूल ओहि चित्रपर चढ़ाय दैत छियनि । विस्मय एहि हेतु भेल जे जखन भावाभिभूत भेल छी ताही क्षणमे अनपेक्षित व्यक्ति द्वारा अप्रत्याशित रूपेँ ई चित्रकोना हमरा भेटि गेल ? श्री संजय पासवान कहियो एम्.एल्. एकेडमीक छात्र छलाह, ओ प्राय: सुमनजीक प्रति हमर श्रद्धा भावसँ परिचित छथि, तेँ सुमनजीक एक मात्र पुत्र डॉ. श्री ब्रजेन्द्र झाकेँ नहि पठाय हमरा पठाय देलनि । श्री ब्रजेन्द्रजी एक दिन एहि चित्रकेँ देखि विस्मित भऽ गेलाह । हमरा ओहिदिन ई चित्र पाबि विश्वास भऽ गेल जे भावनामे अपार शक्ति होइत छैक । अन्यान्यो साहित्यकार बन्धु ओहि चित्रसँ मूक आशीर्वाद प्राप्त करैत

Scanned by CamScanner

छथि। हमर अनुजमित्र अभियन्ता श्री अशोककुमार ठाकुर प्रायशः नित्य ओहि चित्रकेँ प्रणाम कऽ श्रद्धा भाव व्यक्त करैत छथि।

संस्कृतिसँ सम्बद्ध एक प्रदूषणक चर्च करैत छी। पाश्चात्य वात्याचक्रमे पड़ल हमर देश केहन आत्म विस्मृत भऽ गेल अछि जे अपन पितरक जन्मदिवस मनबैत अछि। बाबू भोलालाल दास तुलसीजयन्तीक अनुकरणमे विद्यापति जयन्ती मनयबाक अपील 1929मे 'मिथिला मासिक पत्रिकाक माध्यमसँ कयलथिन तँ राजपण्डित बलदेवमिश्र अपन धर्मशास्त्रानुसार जयन्ती शब्दक स्थान पर स्मृतिदिवस कहबाक आग्रह कयने रहथिन। जयन्ती वा जन्म दिवस देवताक मनाओल जाइत छनि, तेँ रामनवमी, जानकीनवमी, कृष्णाष्टमी, राधाष्टमी आदिक विधान छैक। पितरक स्मृति दिवस हुनक भारतीय पंचांगक अनुसार मृत्यु तिथिमे मनाओल जाइत छनि। प्रगतिवादी लोकनि अंग्रेजी तारीख दिन ई कहि मनबैत छथिन जे तिथि मन नहि रहैत छैक, ओ झंझट कतेक उठाबओ, तेँ सोझ-साझ तिथि अंग्रेजीए तारीख होइत छैक। ई प्रवृत्ति हमरा जनैत बुद्धि ओ आत्मामे समायल पराधीनताक द्योतक थीक। हम जनैत छी जे हमर ई कथन अधिकांश लोकके अनर्गल-अनटोटल लगतनि, तथापि नैतिक दृष्टिएँ उल्लेख करब हम उचित कर्त्तव्य मानैत छी।

वैदेही समिति, एहि संस्थासँ सम्पर्क एहि प्रकारेँ भेल। पहिने स्पष्ट कऽ दी जे एकर संस्थापक प्रो. कृष्ण कान्त मिश्र सँ केहन सम्बन्ध अछि। नागपुर यात्राक प्रकरणमे हम म.म. डॉ. उमेश मिश्रकेँ भाइजी कहि चर्च कयने छियनि। बहुतो व्यक्तिकेँ जिज्ञासा भऽ सकैत छनि भाइ जी कोना ? जिज्ञासाक पूर्त्ति सुनू। कृष्णकान्त बाबूक पितामह म.म. जयदेव मिश्र मिथिलाक महान वैयाकरण रूपमे ख्यात छथि। व्याकरण शास्त्रमे 'परिभाषेन्दु शेखर' नामक एक विशिष्ट ग्रन्थपर हिनक टीका सम्पूर्ण संस्कृतज्ञक संसारमे प्रसिद्ध छनि। हिनका तीन विवाह, प्रथम हमर पिताक वैमात्रेय बहिनसँ खोजपुर, एहिमे कोनो सन्तान नहि। दोसर विवाह बिन्ही, जाहिमे दू बालक उमेश मिश्र तथा रमेश मिश्र हिनका हम सब मिश्री भाइ कहैत छलियनि। हिनके बालक थिकथिन श्रीरघुनन्दन मिश्र प्रसिद्ध हीराबाबू, जे सुप्रतिष्ठित अधिवक्ताक रूपमे मधुबनीमे छथिन। ई व्याकरणक शास्त्री कऽ अंग्रेजी पढ़य लगलाह, बी.ए. कयलाक बाद विधिशास्त्र पढ़बाक प्रेरणा हमही देलियनि। भाइजीक मातृकमे एक तँ माम नहि छलथिन, दोसर कुडोरिमे रहलाक कारणेँ म.म. जयदेव मिश्र काशीसँ अपन गाम गजहराक बीचमे खोजपुर रहलाक कारणेँ अपनहु खोजपुरेकेँ सासुर बुझैत रहलाह आ भाइजी सब मातृक। तेसर विवाह बेल्हबाड़ छलनि जाहि पक्षमे डॉ. प्रो. श्रीकृष्ण मिश्र एक मात्र पुत्र छलथिन। एकर अतिरिक्त म.म. जयदेव मिश्र हमर पिताजीक गुरु ओ अभिभावक सेहो रहथिन। काशीमे पढ़ैत रहथि तखने हमर पितामह गिरिधारी मिश्रक देहान्त भऽ गेल रहनि। मिथिला राज्योपार्जक महेशठाकुरक

Scanned by CamScanner

अग्रज मेघ ठाकुर मध्यप्रदेशक एक राज्य जगदलपुर रहैक, तकर दानाध्यक्ष रहथि । हुनकर सन्तान लोकनि एखनहु जगदलपुर, रायपुर, मांडला आदि ठाम बसल छथिन । हुनके वंशज प. गम्भीरनाथ ठाकुर काशीमे म.म. जयदेव मिश्रक मित्र मण्डलीमे रहथिन, हुनके प्रयासेँ हमर पिताजीक प्रथम विवाह प. गम्भीरनाथ ठाकुरक कन्यासँ भेल रहनि । एही सब कारणेँ म.म. जीक परिवारसँ घनिष्ठता, जे एखन धरि बनल अछि ।

प्रो. कृष्णकान्त मिश्र इतिहासमे एम्.ए. कयलाक बाद प्राय: 1949मे सीतामढ़ी कॉलेजमे प्राध्यापक भेलाह । एहि परिवारकेँ मैथिली भाषाक प्रति बहुत बेसी अनुराग, तकर मूल कारण काशीमे म.म. मुरलीधर झासँ विशेष सम्पर्क, तेँ मिथिलामोदमे म.म. डॉ. उमेश मिश्र छात्रावस्थेसँ लेख आदि लिखैत छलाह । डॉ. जयकान्त मिश्र एही कारणेँ अपन शोधक विषय मैथिली साहित्यक इतिहासकेँ रखलनि, संगहि 'मैथिली समाचार' पाक्षिक पत्र प्रयागसँ प्रकाशित करैत छलाह । कृष्णकान्त बाबूक अनुज श्रीरमाकान्तमिश्र सरकारी प्रशासनिक सेवामे रहैत नन्हे भाइ नामसँ 'बटुक' नामक बाल मासिक प्रकाशित करैत रहथि । पछाति समयाभाव भेलापर अनुज डॉ. सुधाकान्त मिश्रकेँ भार दऽ देलथिन । एहि समस्त परिवारक अविस्मरणीय योगदान छैक । एही लसेढ़क कारणेँ कृष्णकान्त बाबू सीतामढ़ीसँ 1950क 26 जनवरीसँ पाक्षिक वैदेही आरम्भ कयलनि । 10 अंकक बाद एहि पाक्षिकक सम्पादन भार हमरा देलनि । पछाति एकरा मासिक बनाय देल गेलैक । बीच-बीचमे सैद्धान्तिक मतभेदक कारणेँ अनेक बेर छोड़बाड़ करैत बहुतो दिन धरि सम्पादन करैत रहलहुँ । पत्रकारिताक इतिहासमे विस्तारसँ विवेचन कयने छी । एतबे कहि विराम लेब जे एहि पत्रिकाक सम्पर्क हमरा आत्मविकासमे बहुत योगदान कयलक ।

मैथिल महासभासँ हमरा साक्षात् सम्पर्क 1946मे राजनगर अधिवेशनसँ आरम्भ भेल जे एक तरहेँ आइ धरि अछि । किन्तु आब ई संस्थे मृतप्राय ओ काल बाह्य भऽ गेल अछि । एहिमे आधा लोकतंत्र छलैक । दरभंगाक राजगद्दी पर जे रहताह से एकर आजीवन अध्यक्ष होयताह से एकर संविधानमे अंकित रहैक । 1910 ई.मे महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह एकर स्थापना कयने रहथि । ध्यातव्य जे 1905मे बंगभंग आन्दोलनक कारणेँ सम्पूर्ण देशमे एक प्रकारक राष्ट्रिय चेतना सुगबुगाय लागल छलैक । ओहि युगमे समाजमे जातीय संगठनक माध्यमसँ राष्ट्रिय चेतना जगाय, राष्ट्रिय आन्दोलनकेँ सबल बनयबाक धारणा छलैक । भिन्न-भिन्न जातिक प्रबुद्ध वर्ग एहि दिशामे अग्रसर छलाह । तकरे देखादेखी एहू संस्थाक जन्म भेल रहैक । जावत धरि महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह 1929 धरि जीबैत रहलाह एकर अध्यक्ष रहलाह । तकर बाद राजगद्दी पर महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह बैसलाह तँ संविधानक अनुसार एकरो अध्यक्ष भेलाह । ताहि समय राष्ट्रिय आन्दोलनकेँ सबल बनायब उद्देश्य छलैक, आब जातिकेँ गोलबन्द कऽ विधानसभा, लोकसभा धरि पहुँचबाक सीढ़ी बुधियार लोकनि बनौने छथि । कामेश्वरसिंहक समयमे

Scanned by CamScanner

राजगद्दीए समाप्त भऽ गेलैक । तथापि हिनक मृत्युक बाद हिनक भातिज क्रमशः कुमार जीवेश्वर सिंह, कुमार शुभेश्वर सिंह अध्यक्ष होइत रहलथिन । परन्तु जखन मिथिलेशे नहि तँ मैथिल महासभा की ?

पूर्वमे भारत भरिमे छिड़िआयल-पसरल मैथिल ब्राह्मण लोकनिकेँ ई गौरव छलनि जे हमरो जातिमे एहन सर्वविध सम्पन्न लोक छथि, तेँ मिथिलेश आकर्षण केन्द्र छलाह आ तकरे प्रदर्शनक हेतु आगरा, अजमेर, अड़ाइ डंगा आदि स्थानसँ महासभाकेँ अधिवेशनक आमन्त्रण भेटैत छलैक । महासभामे एक विषय निर्द्धारिणी समिति होइत छलैक जकर सदस्यता शुल्क 6/ रु. निर्द्धारित रहैक । कार्यसमितिक सदस्यक निर्वाचन ओ अधिवेशनक अवसर पर प्रस्ताव उपस्थापनक निर्णय एही समिति द्वारा भेल करैक । राज दरभंगा ओहि समितिमे अपन बहुमत बनाय रखबाक हेतु अपना दिससँ सदस्यता शुल्क जमा कऽ लोककेँ मनोनीत कऽ लैत छल, जाहिमे एक नाम हमरो रहैत छल ।

कहि चुकल छी जे मिथिलेश हमरा चीन्हय लगलाह तकर प्रतिफल हमरा अजमेरमे भेल अधिवेशनमे भेटल, जकर चर्चा भऽ सकत तँ यथा स्थान करब । से अवसर आबि गेल अछि । एहूमे आत्म प्रशंसाक किछु गन्ध भेटत । तथापि सत्य अनुद्घाटित नहि रहय तेँ उल्लेख कऽ रहल छी । ओना पं. गिरीन्द्रमोहन मिश्र अपन संस्मरणात्मक ग्रन्थ 'किछु देखल : किछु सुनल'मे 'मिथिला मिहिर'क जन्म कथाक प्रसंगमे किछु संकेत कयने छथि ।

1954मे मिथिलामिहिर बन्द भऽ गेल रहैक । अजमेर महासभाक अधिवेशनमे अलीगढ़ निवासी 'वीर लॉक' ताला फैक्ट्रीक मालिक वीरदत्त मिश्र सदलबल पहुँचल रहथि । हमरा हुनकासँ 1957मे कलकत्तामे आयोजित विद्यापति स्मृति पर्वक अवसर पर परिचय भेल छल । ओ ओतय हमरा स्वर्णपदकसँ पुरस्कृत कयने छलाह । ओ महासभाक विषयनिर्द्धारिणी समितिमे मिथिलामिहिरक पुनः प्रकाशनक हेतु एक प्रस्ताव उपस्थित कयलथिन । राय बहादुर शिवशंकर झा महासभाक महासचिव रहथि, ओ हुनका दिस तकलथिन ता राजपण्डितजी कहि उठलथिन जे मिथिला मिहिरकेँ महासभासँ कोनो सम्बन्ध नहि छैक । मिथिलेश कोनो विशेष कारणसँ क्षुब्ध भऽ ओकर प्रकाशन बन्द कराय देने छथिन । ओ हुनक वैयक्तिक निर्णय थिकनि, भऽ सकैछ एहि प्रस्ताव पर क्रुद्ध भऽ जाथि, तेँ ई प्रस्ताव नहि राखल जाय सकैत अछि । वीरदत्त मिश्र बैसक सँ बाहर अयलापर उदास होइत कहलनि– मैं खास कर यही प्रस्ताव देने के लिए आया था, मगर बड़ी निराशा हुई । हम कहलियनि– खुला अधिवेशनमे प्रवासी मैथिल दर्शक दीर्घामे अहाँ आगाँमे बैसब आ अवसर पाबि किछु बजबाक चेष्टा करब । यदि भऽ सकत तँ हम अहाँक सहायता करब ।

ई स्पष्ट कऽ दी जे रायबहादुरक सहोदरे बहिनमे बड़का भाइक विवाह रहनि,

Scanned by CamScanner

तेँ हमरासँ कखनहु परिहास कऽ लेथि । ओहि दिन सभा आरम्भ भेलैक तँ कहलनि खाली पाते टा ओछाबय अयलहुँ अछि कि किछु काजो करबैक ? हे लिअऽ कार्यवाही लिखैत जाउ । तेँ हम अध्यक्षक आसनक समीपक पंक्तिमे बैसल रही । प्रस्ताव सब उपस्थित होअय लगलैक । अवसर देखि वीरदत्त मिश्र जहाँ ठाढ़ भेलाह, कहनहि छी जे बड़का भाइक बाघ सन कल्ला छलनि, ओ ततेक जोरसँ डपटि देलथिन जे वीरदत्त मिश्र सकपकाय गेलाह । डपटब सुनि महाराज पूछि बैसलथिन– की बात छैक ? हमरा अवसर भेटि गेल, उठिकऽ कहलियनि– श्रीमान, प्रवासी बन्धु सभक कहब छनि जे मिथिला मिहिर जाधरि प्रकाशित होइत छल तँ ओकरा माध्यमसँ हमरा लोकनिकेँ मिथिलासँ सम्पर्क बनल रहैत छल, बन्द भऽ गेलापर अन्धकार बुझाइत अछि, बीचमे महाराज बाजि उठलथिन– ओकर ग्राहक अछिए नहि, दुइओ सय ग्राहक भऽ जाय तँ फेर बाहर कयल जाय सकैत अछि ।

वीरदत्त मिश्र 502/ टाका बाहर करैत कहलथिन– 251 ग्राहकक शुल्क हम जमा करैत छी, ग्राहकक नामक सूची पछाति पठाय देब । टाका तँ नहि लेल गेलनि, मुदा महाराज रायबहादुरकेँ कहलथिन– राय बहादुर, एकरा टीपि लेल जाय, संगहि राजपण्डितजीकेँ कहलथिन– हम एतयसँ पुनः दिल्ली चल जायब, अपने दिल्ली होइत दरभंगा घूरल जाय । तकर बाद 1960क 10 सितम्बरसँ इण्डियननेशन प्रेससँ नव साज-सज्जाक संग मिहिर प्रकाशित होअय लागल । यैह थीक मिथिला मिहिरक पुनर्जन्मक कथा ।

मैथिल महासभाक प्रसंग कहि रहल छलहुँ । आब एक तँ ने ओ देवी, ने ओ कराह, ताहिपर राजकुमार शुभेश्वर सिंहकेँ एहिसँ कोनो रुचि नहि, समाजकेँ एहिसँ कोनो लाभ नहि । रायबहादुरक बाद प्रो. पुरुषोत्तम झा महासचिव भेलाह । जा धरि महासभामे जीवनक संचार छलैक ताधरि छात्रकेँ छात्रवृत्ति देल जाइत छलैक । आब सेहो उपाय नहि रहलैक । एमहर आबिकऽ महासभा ई काज करैत छल जे मकरन्दानुसारि गणनासँ जे पंचाङ्ग मिथिलामे प्रचलित छलैक (यद्यपि आब एहूमे विघटन देखि पड़ैछ । बहुतो गोटे बनारसी पंचाङ्गसँ विवाह दान करय लागल छथि तथापि) तकर निर्माण विभिन्न ज्यौतिषी अपन-अपन गणनाक अनुसार बनाय छपबैत रहथि, अनेक पाबनि दूदिना भऽ जाइक । एहना स्थितिमे समाज असमंजसमे पड़ि जाय । एके गामक एक टोलमे आइ जितिया पाबनि तँ दोसर टोलमे दोसर दिन । पंचाङ्गकार लोकनिकेँ परस्पर मोंछक लड़ाइ भऽ जाइनि तेँ प्रो. हरिमोहन झाकेँ लिखय पड़ल रहनि–

हे पण्डित आबहु दया करू, जितिया पाबनि लै नहि झगड़ू

एहि घोंघाउजसँ बचबाक लेल महासभा पंचाङ्गकार लोकनिकेँ यात्रा खर्च दऽ बजबैत छलनि, धर्मशास्त्रीलोकनि सेहो आहूत होइत छलाह । सर्वसम्मतिसँ निर्णयक पश्चात् पंचाङ्ग छपबैत जाइत छलाह । एक विषयक उल्लेख कऽ दी जे राजदरभंगाक पंचाङ्ग

Scanned by CamScanner

दृश्य-गणनानुसार बनैत छलैक । जयपुरसे वेधशाला छलैक, तकरासँ सम्पर्क कऽ जयनारायण झा ज्यौतिषी ओकर निर्माण करैत छलाह । सोतिपुरामे प्रायशः ओकरे उपयोग होइत रहैक । राज जखन बिलटि गेल तँ ओकर स्थान लेलक कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय । हम चारि वर्षक वयसमे जाहि तख्तपर बैसल महाराजाधिराजकेँ राखी देने छलियनि, जकर उल्लेख कऽ चुकल छी, ताहि पर अनेक सभा-समितिक आयोजनमे एहि बुढ़ारीमे बैसबाक सुयोग लागल अछि । डॉ. श्रीरामकरण शर्मा जखन संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति भेलाह तखन विश्वविद्यालय पुनः पंचाङ्गक प्रवर्त्तन कयलक । भारतीय नव वर्ष वस्तुतः चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथिसँ आरम्भ होइत अछि । हम सब भारतीय कहयबामे हीनताक बोध करैत छी, इण्डियन कहायब गौरवास्पद प्रतीत होइत अछि । एही आत्मविस्मृतिक कारणेँ पहिली जनवरीकेँ नव वर्षारम्भ मनबैत छी आ ओहि दिन अंग्रेजक दासताक विष वृक्षकेँ सुरक्षित रखबाक हेतु बताह भेल रहैत छी । दृश्य गणनानुसार पंचाङ्ग एही तिथिसँ आरम्भ होइत छलैक । विश्वविद्यालय सेहो किछु दिन ओही तिथि सँ आरम्भ कयने रहय, परन्तु पछाति किछु सामाजिक विषमताक अनुभव भेलैक तँ अन्यान्ये पंचाङ्ग जकाँ श्रावणे माससँ छापय लागल तथा महासभा द्वारा आयोजित सभामे सेहो सम्मिलित होअय लागल ।

किन्तु आइ तँ विश्व हस्तामलक भऽ गेल अछि, तीन आङुर चाकर छओ आङुर नाम चलित-दूरभाष यन्त्र पर स्वेदशक कोन कथा, न्यूयार्क हो वा लन्दन, बीजिंग हो वा मास्को जतय कतहु अहाँक समाङ होथु, अपन कोठलीमे बैसल हुनकासँ भरि इच्छा गप्प कऽ सकैत छी । (इच्छा होइत अछि एहि प्रसंग एक व्यंग्य-विनोदक उल्लेख कऽ दी, किन्तु प्रसंगसंगत नहि रहलाक कारणेँ महासभाक प्रसंग कथ्य पूर्ण भेलाक बाद मनोरंजनार्थ उल्लेख कऽ देब) मोबाइल फोन जकाँ दोसर यन्त्र अछि कम्प्यूटर, अपन छोट सन कायामे स्वर्ग, मर्त्त्य, पाताल सबकेँ समेटने अछि । तीन चारि वर्ष पूर्व प्रख्यात साम्यवादी नेता, हमर प्रशंसक वरीय मित्र भोगेन्द्र झाक सुपुत्र श्री विनयकुमार झा कम्प्यूटरपर ग्रहस्थितिक गणना कऽ पंचाङ्ग बनौलनि आ विश्वविद्यालयसँ प्रकाशित पंचाङ्गकेँ अशुद्ध घोषित करैत पटना उच्च न्यायालयमे एकर विरुद्ध याचिका दायर कऽ देलथिन । न्यायालय एकर संज्ञान लऽ महासभाकेँ पंचाङ्ग निर्माण हेतु अन्तिम निर्णय होयबा धरि बैसक करबा पर रोक लगा देलकैक । महासभा वर्षमे ईहो जे एकटा बैसक करैत छल ताहिसँ मुक्ति पाबि गेल ।

हम कने आगाँ बढ़ि गेलहुँ । कहि रहल छलहुँ राजकुमार शुभेश्वर सिंहकेँ कोनो रुचि नहि, आ पुरुषोत्तम बाबू वार्द्धक्यक कारणेँ अशक्त भऽ गेल छलाह । हम मैथिली साहित्य परिषदक कोनहुना इतिहास लिखि गेल छलहुँ, तेँ हमरे आग्रह कयलनि जे महासभाक इतिहास लिखि दिअऽ, परन्तु आधार सामग्रीक रूपमे एकटा चिट-पुर्जी पर्यन्त

Scanned by CamScanner

नहि ? यदि मिथिला मिहिरक पुरान सम्पूर्ण फाइल भेटि जाइत, जे सुमनजीक लग छलनि, परन्तु मैथिली साहित्यक इतिहास लिखबाक क्रममे सुमनजीसँ डॉ. जयकान्त मिश्र जे लऽ गेलथिन से अन्तकाल धरि आश्वासने दैत रहलथिन, घुरौलथिन नहि। हमरा कम सँ कम अपन रचना जहियासँ छपय लागल तहियासँ 1954 धरिक अंक अवश्य छल। हमर कन्या सावित्री जखन सुमनजीक गद्य साहित्यपर अनुसन्धान करय लगलीह तँ सब हुनका देलियनि, सेहो कोनो ओस्ताद अनुसन्धान कयनिहार वा करौनिहार टपा लेलनि। एक तँ छात्रावस्थेसँ विजया सेवी, दोसर बृद्ध भऽ गेलाक कारणसँ बिसरभोर होयब स्वाभाविके, तथापि पत्रकारिताक इतिहास लिखबाक क्रममे अन्यान्यो पत्र-पत्रिका सबमे महासभा प्रसंग जे किछु देखल छल, ताही सबसँ झोरिझारि जे जतय भेटल एक खाका तैयार कयल। यद्यपि ताहि समयक अनेक मुखर व्यक्ति यथा– त्रिलोचन झा, बेतिया, चन्द्रशेखर मिश्र, हरिनगर, रामेश्वर उपन्यासक प्रणेता जीवछ मिश्र, नवटोल, आदिक विस्तृत व्याख्यान सब भेटल, किन्तु ताहि सभक उद्धरणसँ पुस्तकक काया मोटाय जइतैक, एम्हर संक्षिप्त विशेषणक सीमा रेखा सेहो खीचि देल गेल छल, तेँ जैह जतबा अँटि सकल ताही सबकेँ समेटि-बटोरि जे जानल से सानल। ओहो पाण्डुलिपि बहुत दिन झूलैत रहल। 1998मे साहित्य अकादेमी द्वारा 'लेखकसँ साक्षात्कार' कार्यक्रममे एकर उल्लेख नहि देखि ओहि आयोजनमे प्रो. भक्तिनाथ सिंह ठाकुर समाजकेँ आश्वासन देलथिन जे शीघ्रे छपत। तदनुकूल 1999मे एकरो 99क फेरीसँ त्राण भेटलैक।

पुरुषोत्तम बाबू चलबा-फिरबासँ सर्वथा असमर्थ भऽ गेल छलाह, तेँ महासचिवक पदभारसँ मुक्ति चाहैत छलाह। एक विशेष बात ई जे मिथिला-मैथिलीसँ सम्बद्ध विषयपर किछुओ विचार करबाक मंच देनिहार प्राचीनतम संस्था महासभे छल। लहेरियासरायक बलभद्रपुर महल्लामे एकर पचासो लाखक सम्पत्ति छैक, चारु दिससँ घेरल-घाड़ल 8-9 कट्ठा भूमि ताहिमे एक अपन भवन छैक। बीसम शताब्दीक आरम्भिक तीन-चारि दशक धरि युगानुरूप बहुतो सामाजिक विकासमे योगदान छैक। हमरा तकरे ममत्व, तेँ कनेक सक्रिय भेलहुँ। मिश्रा एण्ड को०क संस्थापक दीनानन्द मिश्रक अपन आवास एकर समीपेमे छनि। सम्प्रति जे भवन छैक तकर निर्माणमे सबटा श्रम हिनके छलनि। एहि सब स्थितिकेँ देखैत पुरुषोत्तम बाबू हिनके सुपुत्र श्रीचतुरानन मिश्रकेँ महासचिवक भार देबाक इच्छा व्यक्त कयलनि। हमरो उपयुक्त बुझायल। हुनक सहमति लेबाक हेतु पुरुषोत्तम बाबू हुनका बजबाय कहलथिन– लोक लोककेँ कहैत छैक बापक लगाओल थिकह ? से महासभाक ई परिसर, ई भवन अहाँक बापक एक तरहेँ लगाओल थिकनि। तेँ महासभाक महासचिवक दायित्व देबाक विचार भऽ रहल छैक, की स्वीकार करबैक ? श्रीचतुरानन मिश्र स्वीकार करैत भविष्यमे बहुत किछु करबाक आवश्वासन देलथिन। तखन अध्यक्षक प्रश्न पर विचार भेल जे संस्थाकेँ पूर्णतः लोकतान्त्रिक बनयबाक हेतु नव संविधान बनाओल जाय, तत्काल जेँ खड़ौरे अध्यक्ष रहैत आयल छथि,

Scanned by CamScanner

तेँ महाराज महेश ठाकुरक वंशधर प्रो० भक्तिनाथ सिंह ठाकुरकेँ अध्यक्षक पद लै राजी कयल जाय । ओ दू टा शर्त्त राखि देलनि, पहिल महारानी कल्याणीकेँ संरक्षक बनाय दियनि जाहि हेतु हुनकासँ दस हजार टाका आनि देबाक प्रयत्न हम करब, दोसर एहि पंक्तिक लेखक उपाध्यक्षक भार स्वीकार करथि ।

महासभामे उपाध्यक्षक कोनो पद नहि छलैक, हमरा एकरा पुनरुज्जीवित करबाक छल तेँ हम मानि गेलियनि । संविधानक पुनरीक्षण हेतु एक उपसमिति बनलैक । से सब भेलैक, किन्तु पहिनहि कहलहुँ जे समाजकेँ एहिसँ कोनो लाभक आशा नहि छलैक, तेँ उदासीन छले, आबहु कोनो आकर्षण नहि भेलैक । बहुतो गोटेक विचार छलनि जे मैथिल महासभा नाम छैक आ मिथिलामे बसनिहार सब लोक मैथिल थीक तेँ सब वर्गक लोककेँ प्रवेश करबाक हेतु मार्ग प्रशस्त कयल जाय, किन्तु से कयलापर एकर मूल उद्देश्ये पर आघात होइत छलैक । किछु परिवर्त्तन भेलैक ताहिसँ काजमे काज एतबे भेलैक जे कतोक वर्षसँ प्रसिद्ध राजनेता ओ अधिवक्ता तथा हमर पूर्व छात्र रामाश्रयराय अढ़ाय हजार वार्षिक भाड़ा पर महासभाक भवनमे पब्लिक स्कूल चलबैत छलथिन, जखन कि 2500/मासिको पर एहन परिसर सहित भवन सस्ते छलैक । ने भाड़ा बढ़बैत छलथिन, ने मकान छोड़ैत छलथिन । लोकमे चर्चा छलैक जे आब छोड़बो ने करथिन । किन्तु टार-मटोर करैत मकान खाली कऽ देलथिन । भवन जीर्ण भऽ गेल छलैक, छत चुबैत छलैक, तकर मरम्मति भेलैक, परिसरमे पानि लागि जाइत छलैक तेँ माँटि भराइ भेलैक, किन्तु जीवनक संचार नहि भऽ सकलैक ।

एमहर प्रो. भक्तिनाथ सिंह ठाकुर कैन्सरसँ पीड़ित छलाह, तेँ त्यागपत्र दऽ देलथिन । महारानी कल्याणी सँ संरक्षकता शुल्क सेहो नहि भेटि सकलनि, ताहू हेतु मनमे ग्लानि छलनि । आब ओहो संसार त्यागि चुकलाह । एकटा बात आरो जनाय दी जे भवन ओ परिसरक परिष्कार भेलाक बाद विवाह आदि शुभ कार्य पर दू चारि गोटे किछु-किछु टाका दैत रहलथिन जाहिसँ पण्डित सभा आयोजित होइत रहलैक, आब सेहो आय बन्द छैक । 2003 ई.सँ साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक संयोजक रहलाक कारणेँ कार्यभार बढ़ि गेल, हमरो पलखति नहि भेटल । पहिने किछु सूचना भेटिओ जाइत छल, आब सेहो नहि भेटैत अछि । राजग सरकारक अन्तिम स्थितिमे एहि कलमसँ किछु पाँती लिखायल छल तकर दू पाँती उद्धृत कऽ दी–

'जनिका पर छल बेसी आशा
से बहरयला फोंक बताशा'

ई दूनू पाँती महासभा पर सेहो सटीक बेसैत छैक । चलल छलहुँ संस्थामे जान फूकय आब लूटि कऽ खयबाक कलंकक टीका लगौने बुझिए ने रहल छी जे हम मैथिल महासभासँ सम्बद्धो छी वा नहि । बार्द्धक्यक कारणेँ हमहू चलबा-फिरबासँ असमर्थ भेल

Scanned by CamScanner

जाय रहल छी । हमरा तँ विफलताक स्वाद भेटि गेल, तथापि महासभाक इतिहासक अन्तमे जे 10 वर्ष पूर्व लिखि चुकल छी तकर उल्लेख करैत एहि अध्याय सँ विराम लेबय चाहैत छी । महासभाक इतिहासक अन्तिम अनुच्छेद– 1999

''लोक नव संस्था बनबैत अछि । ई एक गोट प्राचीन संस्था थीक जकरा अपन भूमि छैक, भवन छैक, बैंकमे खाता छैक, यदि किछु नहि छैक तँ से थिकैक उत्साही समर्पित कार्यकर्त्ता । सब मानैत आयल छी जे 'संघे शक्तिः कलौ युगे' प्रजातान्त्रिक एहि युगमे यदि ऊर्जावान्, सच्चरित्र ओ समाज कल्याणक भावनासँ नेतृत्व देनिहार युवकवृन्द आगाँ आबथि आ मृतप्राय एहि संस्थामे पुनः शक्ति संचार करथि तँ एहि संस्थाक माध्यमसँ मिथिला-मैथिलीक हेतु बहुत किछु कयल जा सकैत अछि ।'

मनहूस करयवला प्रसंग कहि गेलहुँ । पाठक लोकनिक मन सेहो तीत भऽ गेल होयत । ई प्रकरण समाप्त भेलाक बाद विनोदार्थ मोबाइलक प्रसंग कहब, से वचन देने छी तेँ तकर उल्लेख करैत छी ।

हे ब्रह्मा बाबा, दोहाइ ओइ पारक

हे लोक पितामह ! अहाँकेँ किछु सुझाव दी से हमर ढिठपनी होयत । कारण अहाँ सन दोसर वैज्ञानिक के ? अहाँ सूर्यक समान अक्षय अणुभट्ठी बनौलहुँ जकरा हेतु यूरेनियम आदि कोनो इन्धनक प्रयोजन नहि । अनादिकालसँ जरैत आयल अछि आ अनन्तकाल धरि जरैत रहत ।

अहाँ सन इंजीनियर राजदक लालटेन जराइओ कऽ ताकल जाय सकैछ ? आकाश गंगासँ लऽ भागीरथी गंगा धरिक एहन सुनियोजित व्यवस्था ककरो सँ सम्भव छलैक ? तीन भाग तरल जल आ ताहि मे एक भाग गोल-मोल ठोस धरती गेन जकाँ दहाय रहल अछि ।

अहाँ सन प्रबन्धक तीनू लोकमे डुब्बी मारि हथोड़नहुँ भेटत ? जीवमात्रकेँ जीबा लेल चाहिऐक वायु । अहाँक अद्‌भुत प्रबन्धन-जतहि जीवक नाक ततहि वायुक निःशुल्क सप्लाइ ।

अहीं कहू अहाँ सन विद्वान दोसर के ? अहाँकेँ चारिटा मुँह आ चारूमुँह सँ चारूवेदक उद्‌घोष, जाहि वेद सबमे एहि पांचभौतिक सृष्टिक सब रहस्यक मर्मक उद्‌घाटन मन्त्र ।

एतेक होइतो क्रमशः बढ़ैत मानव समुदायक आवश्यकता दिस ध्यान नहि दैत छिऐक से किएक ? अहाँक बनाओल ई मनुक्ख समय-समय पर नव मॉडल बनबैत रहैत

Scanned by CamScanner

अछि । देखिऔ जे साइकिल मॉडलमे नहि किछु फुरलैक तँ कोनो हैण्डिल केँ गुजराती महींसक सींग जकाँ मोड़ि देलकै तँ कोनो हैण्डिल अरना पाड़ाक सींग जकाँ छतनार बना देलकै जाहि सीट पर लोक पोन रोपि बैसैत छल ताही साइकिल पर आब पोन उठौनहि सरसरयाल भागल जाइत अछि । आ अहाँ करोड़ो वर्ष पहिने जे मॉडल बाजारमे उतारल ताहिमे कोनो सुधारक मादे सोचिते ने छिऐक, से किएक !

जखन चलबा लै टाङ, काज करबा लै हाथ, देखबा लै आँखि, सुनबा लै कान, तीत-मिट्ठ बुझबा लै जीह, चिबयबा लै दाँत, कतेक गनाउ, की-की करबा लै कोन-कोन अंग नहि देने छिऐक । हे ब्रह्मा बाबा ! आजुक जमाना मे दूटा वस्तु नितान्त आवश्यक भऽ गेल छैक । ई मच्छड़ माँछी अहीं ने बनौने छी ? ई मच्छड़ जाति भारतीय किछु नेता जकाँ सतत अपन ब्लड टंकी भरबाक फिराकमे रहैत अछि आ माँछीक उपद्रव दऽ की कहू, पूजा-तर्पणमे दुनू हाथ बाझल रहैछ तखने ई माँछी सब पीठ पर कबड्डी कबड्डी खेलाय लगैत अछि । जखन मालो-जाल केँ देने छिऐक तँ मनुक्खो केँ एकटा नाङड़ि देबाक कृपा करियौक । दोसर, परिवारक पालन हेतु कोन परिवार अछि जाहि परिवारक लोक परदेशी नहि छैक ? मन चिन्तामे डूबल रहैत छैक । तेँ कान लग एके टा प्राकृतिक मोबाइल फोनबला मानव-मॉडलक आविष्कार करू । दोहाइ ओइ पारक ।

जँ हमर नेहोरा पर कान-बात नहि करब तँ मानव जाति ततेक चुस्त चलाक भऽ गेल अछि जे जेना एहि बेरुक चुनावमे हमरा सभक सब दल, सब गठजोड़मे फिट रहनिहार सदाबहार प्रिय नेता रामविलास पासवानक नाम निशान मेटा देलकनि तहिना संसारसँ अहाँक नाम मेटा देत से जानि राखू ।

आब टेस्ट-ट्यूबमे मनुक्ख बच्चा जनमयबाक लूरि विकसित कऽ चुकल अछि, अहाँ केँ के पूछत ?

रसगुल्ला पर माछक झोर 1972क समय, पूर्णियाँक कला भवन, विद्यापति स्मृति समारोह । मधुपजी, सुमनजी, यात्रीजी, मायानन्द, रवीन्द्र आदि अनेक कविगणक जमघट । डा० मदनेश्वर मिश्र पूर्णियाँ कालेजक प्रधानाचार्य । हुनक अनुज प्रो० श्रीरामेश्वर मिश्र प्राध्यापक । नव रतन हाता मे बनल हिनके मकानमे हमरा सभक आवास । भोला पासवान शास्त्री बिहारक मुख्यमंत्री समारोहक उद्घाटक तथा लक्ष्मी नारायण 'सुधांशु मुख्य' अतिथि ।

ध्यान देबाक बात जे 1954मे भाषाधार प्रान्त निर्माण हेतु एक आयोग बनल छलैक । काका कालेलकर ओहि क्रममे दरभंगा अयलो छलाह । ओही समयमे भाषाक आधार पर मिथिलाकेँ सेहो पृथक राज्य बनयबाक चर्चा चलि गेलैक । परन्तु ओ चर्चा ओहने भेलैक जेना मुँहमे भेल काँच बड़रकेँ जँ क्यौ खोंटि दैत छैक तकर कुपरिणाम

Scanned by CamScanner

स्वरूप मुँह फूलि कऽ तुम्मा भऽ जाइत छैक । नहि खोंटने दू चारि दिनमे छुटि जइतैक से मासो लागि जाइत छैक, सैह भेलैक । ओ स्वप्न तँ आइओ सपने अछि, बीचमे मैथिली भाषा साहित्यक प्राचीनता, रचनाक निरन्तरता आदिकेँ दृष्टिमे राखि, सुधांशुजी प्रभृति एक चक्रचालि रचलनि । पूर्व-दक्षिण क्षेत्र ओ पश्चिमक क्षेत्रमे क्रमशः अंगिका आ बज्जिका नामसँ दू गोट भाषाक टेस्ट ट्यूब देनिहार बनलाह जकरा डॉ० ग्रिअर्सन मैथिलीक बोलीक रूपमे छिकाछिकी आ मधेसी कहने छथिन ।

एहि तरहेँ मैथिलीभाषी क्षेत्रकेँ विभाजित कऽ मिथिला भाषाधार प्रान्त होयबाक जड़िकेँ कमजोर करबाक प्रयासमे लागि गेलाह । ओहि दिनुक समारोहमे भीषण भाषण जे भेलैक से तँ भेबे कयलैक जे बेस झमटगर कवि सम्मेलन भेल छलैक जाहिमे मैथिलीक होइत प्रगतिक आभास सेहो भेलनि । ओना भाषाधार प्रान्त निर्माणक प्रसंग जे होयबाक छलैक से भऽ गेल रहैक । ओकर आगिओ मिझा गेल रहैक ।

विद्यापति-स्मृति-पर्वक संग किछु जिह्वा लोलुप आ किछु रंगीन मिजाजक साहित्यकार-कलाकारक कारणेँ प्रत्यक्षतः माछ-भात तथा प्रच्छन्न रूपेँ बोतल अनिवार्य अंग बनि गेल छैक । से ओहू दिन भोजनमे माछ-भात आ दही-रसगुल्ला तोपि देबाक व्यवस्था रहैक । आचार्य सुमनजी दुद्धा वैष्णव । जाहि भानस घरमे माछक स्पर्श होइक ओहि भानसघरमे बनल कोनो खाद्य पदार्थ हुनका ग्राह्य नहि । हुनका लेल कोनो भिन्न व्यवस्था आयोजककेँ करऽ पड़ल रहनि ।

समारोह समाप्त होइत-होइत स्वभावतः अबेर भइए जाइत छैक । जहियासँ सांस्कृतिक कार्यक्रम मंच पर जोर पकड़लकै तहियासँ तँ कार्यक्रम भोर धरि होइते रहैत छैक । कलाकार लोकनि मंच धैलनि आ साहित्यकार लोकनि लेल एगारह बजेक बाद पंघति लागि गेलनि । हम सब भोजन पर बैसलहुँ । मैथिलक भोजमे परसबाक काल जे और लेबाक दुराग्रह आ ताहिपर ललकारा चलैत छैक से होइत होइत बारह सँ बेसी बाजि गेल रहैक । थाकल लोक पातपर घंटा भरिसँ अधिक कालसँ बैसल-बैसल अकछा गेल छल । दही रसगुल्लाक तोपम तोपक बाद आब उठैत जाइ से जिज्ञासा भेला पर देखल गेल जे सबकेँ भोजन कयल भऽ गेलनि केवल यात्रीजी पात पर दू टा रसगुल्ला रखने किछु लेबाक बाट ताकि रहल छलाह । मधुपजी कहलथिन- की हौ यात्री, रसगुल्ला नहि चलैत छह तँ छोड़ि दहक । आब बैसल-बैसल डाँड़ दुखाइत अछि ।

यात्री जी उत्तर देलथिन- कहू भला, पात पर आयल रसगुल्लाकेँ छुता कऽ उठि जाउ ?

मधुपजी कहलथिन तँ खा जाह, रखने किएक छह ? यात्रीजीक उत्तर रहनि- एहि पर कनेक माछक झोर पड़ि जयतैक तखन खयबै । सब चकित, सब अकछायल,

Scanned by CamScanner

भेलैक जे परिहास करैत छथि । मुदा यात्रीजी झोर लेबा लै अड़ले रहलाह । भनसीया आ परसनिहार सब हाथ धो रंगारंग कार्यक्रम देखऽ चल गेल छल । तैयो जा धरि भनसीयाकेँ ताकि आनल नहि गेलैक आ माछक झोर रसगुल्ला पर ढारल नहि गेलनि ता धरि अगत्या सबकेँ बैसल रहऽ पड़लैक ।

मणिपद्मजीक ठहाका ओना एहि प्रसंग अनेक गोटे अनेक ठाम व्यंग्य विनोदक क्रममे मौखिक ओ लिखितोरूपमे चर्चा करैत रहलाह अछि । तथापि घटनाकेँ कनेक फड़िछाकऽ कहि देबऽ चाहैत छी । गोपालगंज एक बहुपरिचित स्थान अछि, जे आइ जिला सेहो भऽ गेल अछि, मुदा ई घटना जिला होयबासँ बहुत पहिलुक थीक जहिया 'हाउ दू राइट करेक्ट इंगलिश' पुस्तकक प्रणेता राजेन्द्र प्रसाद सिंह प्रसिद्ध आर.पी. सिंह गोपालगंज कालेजक प्रिंसिपल रहथि । मातृभाषाक परम अनुरागी । बेस धूमधामसँ विद्यापति स्मृति पूर्वक आयोजन प्रतिवर्ष करथि । हम सब अर्थात् श्रीमायानन्द मिश्र, सोमदेव, मणिपद्म, मधुपजी, मिहिर आदि कवि लोकनि प्रतिवर्ष गेल करी । साफ़ बात किएक ने कही, आर्थिक दृष्टिएँ खगल सरस्वती पुत्र सबकेँ बड़आदर, बड़ सम्मान ओ दमगर लिफाफ विदाइमे भेटल करनि । दस-बारह बेर तँ अवश्य गेल होयब ।

मैथिलीभाषी तँ ओहि ठाम नौकरी-चाकरी कयनिहार मात्र लोक, तेँ श्रोतामे एकछाहा भोजपुरी भाषी लोकनि । तथापि पंडाल 6 बजे सँ 12 बजे राति धरि लोकसँ गजगज भरल रहय । मन्त्र-मुग्ध श्रोता आदिसँ अन्त धरि भाषणसँ लऽ कविता, गीत सब सुनैत शान्त बैसल रहय । आइ जाहि घोर असांस्कृतिक कार्यक्रमकेँ सांस्कृतिक कार्यक्रमक नाम पर चलाओल जा रहल अछि आ जकर वर्चस्विता साहित्यिक कार्यक्रमकेँ खानापुरी टा करबाक स्थितिमे आनि कऽ राखि देलक अछि से स्थिति नहि उत्पन्न भेल छलैक, यद्यपि रवीन्द्र-महेन्द्रक जोड़ी मंचपर अवतरित भऽ चुकल छल, किन्तु शालीनताक हत्या नहि भेल छलैक ।

गोपालगंजमे कोनो चुनचुनमिसर नहि छलाह जे तऽरलसँ लऽ तरल माछधरि स्वादि-स्वादि कऽ समागत कलाकार ओ साहित्यकार लोकनिक सत्कार हेतु रान्हि कऽ परसितथि । तेँ भोजनक व्यवस्था होटलमे रहैत छलैक । गोपालगंज कोनो पूर्ण विकसित नगर नहि छलैक जाहि ठाम उत्तम कोटिक होटल रहितैक, तखन सामान्यमे जे सबसँ नीक रहैत छलैक ताहिमे व्यवस्था कयल जाइक ।

एक बेरुक गप्प थीक । मंच ततेक जमि गेलैक जे श्रोता उठबाक नामे नहि लैक । राति 12 बजि गेलैक । मधुपजी मणिपद्मजी, मिहिर, सोमदेव आदि 7-8 गोटेकेँ भोजन करयबा लेल कार्यकर्त्ता एक होटलमे लऽ गेलाह । 12 बाजि गेलाक कारणेँ होटलक कर्मचारी सब अलसा गेल रहैक । भोजनमे कचौड़ी, आलू पड़ोरक तरकारी अमड़ाक अँचार आ रसगुल्ला रहैक । जाड़क मास रहलाक कारणेँ दहीक व्यवस्था नहि

Scanned by CamScanner

रहैक । तरकारी ठोरकें भकभका रहल छलैक तथापि श्रीसोमदेव जी तेसर बेर परसन मङलथिन तँ लोहिया पोछि-पाछि कऽ दू खण्ड आलू आ कनेक रस प्लेटमे खसा देलकनि, रस की रहैक लोहियामे चारूकात लागल मसाला मात्र । श्रीसोमदेवजी टोकलथिन– अय, परबल कहाँ दिया ! छौंड़ा उत्तर देलकनि– परबल नहीं है । हम ताहि पर कहि उठलिऐ– हे ! भगवान जखन बेटाक जन्म दैत छथिन तखन ओहो दूटा आलूक संग एक टा पड़ोर दैत छथिन । मणिपद्मजीक ठहाका पर सौंसे होटल गुंजायमान भऽ गेल ।

पहुँचि तँ गेलहुँ मुदा गोपालगंजेक एक दोसर संस्मरण अछि । गोपालगंजमे जहिया स्मृति पर्व रहैक ताहिसँ एक दिन पूर्व सिन्दरीमे सेहो पर्वक आयोजन रहैक । ओहिमे डॉ. श्रीलक्ष्मीकान्त मिश्रजी सेहो आहूत छलाह । श्रीमायानन्द सेहो सहरसासँ आयल रहथि । आइ सिन्दरी आ काल्हि गोपालगंज पहुँचब संभव नहि बूझि पड़ल । गोपालगंज अनेकबेर गेल छलहुँ । सिन्दरीक पहिल यात्रा छल । डॉ. नागेन्द्रझाक अनुज श्रीराजेन्द्र सिन्दरीमे पढ़ि रहल छलाह जे हमर छात्र रहथि । ओ बहुत आग्रह पूर्वक पत्र लिखने रहथि जे हमरा लोकनि जे किछु मैथिलीभाषी छात्र छी सैह सब मिलि कऽ एहि पर्वक आयोजन कयलहुँ अछि । तें अपने अवश्य आयल जाय । एक तँ सिन्दरी जयबाक लालसा, दोसर प्रिय छात्र श्रीराजेन्द्रक आग्रह, तें ओतहि जयबाक निश्चय कयने रही ।

सिन्दरीमे जखन श्रीमायानन्दसँ भेट भेल तँ ओ पूछि बैसलाह– काल्हि तँ गोपालगंजमे सेहो आयोजन छैक । अपनेकें पत्र नहि अछि ? कहलयिनि– अछि तँ हमरो, मुदा एक नव जगह देखबाक लोभ, दोसर श्रीराजेन्द्रक प्रबल आग्रह, तें एकरे प्राथमिकता देलिऐक । श्रीमायानन्द कहलनि– अरे राम ! गोपाल गंज तँ हमरा सभक पुरान जजमनिका थीक । प्रिंसिपल साहेबक आवेश श्रीउदय बाबूक मैथिली प्रेम आ ताहि संग गोपालगंजक ओ विलक्षण पान से कोना छोड़ि देबैक ?

हम कहलियनि– से तँ मानलहुँ, मुदा भगवान मनुक्खकें पाँखि नहि देलथिन आ हवाइजहाज अपना सबकें उपलब्ध नहि, तखन कोना पहुँचबै ? उत्तर देलनि– हम कनेमने भँजियौलिऐक अछि । जँ हम सब साढ़े दसो बजे धरि रातिमे साहेबगंज पहुँचि जाइ तँ समय पर पटना पहुँचि सकैत छी चारि बजे भोरमे जे जहाज महेन्द्रूसँ खुजैत छैक ताहि सँ पहलेजा घाट आ ओतय सँ गोपालगंजक बस भेटैत छैक । अबेरो सबेर पहुँचल जाय सकै छै ।

हम कहलियनि– हम सब कोनो भी.आइ.पी. तँ छी नहि जे एना हुरथुरमे चटपट कार्यक्रम समाप्त कऽ उठि कऽ विदाइओ भऽ जाइ । श्रीमायानन्द कहलनि– अपने तैयार होइअइ तऽ हम कोनो जोगाड़ धराबय लै प्रयासमे लागी । कहलियनि– धराउ जोगड़ जँ भऽ जाय तँ चलब किएक नहि । ओ जोगाड़ धरयबालै चल गेलाह । घुरलाह बेस उल्लसित भेल । कहलनि जोगाड़ भए गेलैक । डॉ. एल.के. मिश्राकें कतहु आन ठाम

Scanned by CamScanner

जयबाक छनि । ओ साहेबगंज बाटे एकर बादे बिदा होयताह । हम दूनू गोटे हुनके संग ओही कारसँ साहेबगंज धरि चलि सकैत छी ।

हम कहलियनि– ओ तँ गद्यात्मक सत्रमे छथि आ हम दूनू गोटे पद्यात्मक सत्रमे छी, जे बादमे होयतैक । तखन ई संभव होयत ? उत्तर देलनिऽ हँऽ तकरो जोगाड़ धराय लेलिऐ । सबसँ पहिने हम अपन कविता सुनाय देबै आ तकर बाद अपनेक काव्य पाठ भए जयतैक, कवि सम्मेलन होइत रहतैक, हम सब चलि देब ।

ओना अपन कविता सुना कऽ अनकर बिनु सुननहि मंचसँ उतरि जायबकेँ हम शिष्टताक अनुकूल नहि मानैत छी, सोझ शब्देँ कही तँ अशिष्टता बुझैत छिऐक, किन्तु विवशतामे बात मानि लेलियनि । फूसि किएक कहू, किछु लिफाफक लोभ सेहो एहन अशिष्टता करबामे साधक तत्त्व रहल ।

पूर्व योजनानुसार तहिना कयल । डॉ. मिश्रजीक संग साहेबगंज पहुँचि गेलहुँ । हुरथुर करैत ट्रेन सेहो भेटि गेल । महेन्द्रू घाटमे जहाज भोंपा बजा रहल छल । छुटैत–छुटैत जहाज सेहो पकड़ा गेल । 6.40 मे पहलेजा पहुँचि गेलहुँ । सुनल छल जे पहलेजासँ अनेक बस भेटि जाइत छैक, मुदा एतऽ कहलक जे डाइरेक्ट गोपालगंजक बस एतऽ सँ नहि छैक । एहि ठामसँ छपरा चल जाउ, ओतऽ सँ बस भेटि जायत । छपराक बस भरल जाइत छलैक । हड़बड़ा कऽ ओहिमे पैसलहुँ सीट भेटि गेल । ओ लोकल बस घिसियौड़ कटबैत 11 बजे छपरा पहुँचौलक । छपरामे पता लागल जे डाइरेक्ट गोपालगंज बस नहि जाइत छैक । एतऽ सँ सिवान चल जाउ, ओतऽ सँ गोपालगंजक बस भेटत ।

आब निराशाक मेघ मनक आकाशकेँ आच्छादित करऽ लागल । रातिओमे हबर–दबरमे भोजन की करब, गिड़ने छलहुँ । सामग्रीक त्रुटि नहि छलैक, अपने हड़बड़ी पैसल छल । रातुक जागरण तँ छले, जहाज पर दतमनि कऽ खालीए पेटमे एक कप चाह घटोसने छलहुँ । स्नानकेँ के पूछय, पैखाना जयबौक सुविधा नहि भेटल छल, मुदा करितहुँ की । सिवानक बस भेटि तँ गेल मुदा ओ तुरन्त चलै छी से कहैत 12.30मे चलल जे 3 बजे सीवान पहुँचौलक । पित्तेँ मन आँट भऽ गेल छल । गोपालगंजक बसमे प्रवेशो करब कठिन छल तथापि 'जहाँ सुइ ने समाय तहाँ फार घोंसिआय' कहबीकेँ चरितार्थ करैत घोंसिअयलहुँ । ओ लेने लेने सूर्यास्त होइत होइत गोपालगंज उतारलक । बस स्टैण्डसँ रिक्शा कऽ प्रिंसिपल साहेबक डेरा पर झलफल होइत पहुँचलहुँ । ओ हमरा दूनू गोटेकेँ देखि विस्मय–विमुग्ध । चेहरा मरचुन्नी भऽ गेल छल, मुँह पर हवाइ उड़ि रहल छल । बहुत आदर सँ आतिथ्य कयलनि । विस्मयक आभास नहि लागऽ देलनि, मुदा चपरासीकेँ कहलथिन कने मल्लिकजी केँ बजा अनहुन । हमरा लोकनि हाथ मुँह धोलहुँ । श्रीमायानन्द यात्राक सविस्तर वृत्तान्त सुना देलथिन । फरवरीक मास छलैक । साँझमे स्नान करब उपयुक्त नहि बुझायल । माथ धोलहुँ कपड़ा बदललहुँ । ताबत आलूक भुजिया,

Scanned by CamScanner

कचौड़ी, हलुआ जलपान लै आबि गेल । जलपान कयलहुँ से हट्ठासँ छूटल बड़द जेना नादिमे सानी हपसि कऽ खाइत अछि तहिना । तावत मल्लिकजी आबि गेलाह । हुनका देखिते जेना हुनकापर हुड़कैत पूछि देलथिन– अँय औ मल्लिकजी ! कार्यक्रम स्थगित भऽ गेलैक से सूचना नहि देलियनि ?

जी, हम चारिम दिन टेलिग्राम पठा देलियनि सैह उत्तर छलनि । आब हमरा दूनू गोटेक स्थितिक अनुमान कयल जाय सकैछ ।

साहित्य अकादेमी– एहिमे जखन मैथिलीक प्रवेश भेलैक तखन ओकर आभास मात्र लागल, प्रक्रिया क्रमशः फड़िछाय लागल । प्रथम मैथिली प्रतिनिधि अकादेमीमे भेलाह आचार्य रमानाथ झा । पहिल पुरस्कार भेटलनि सतलखा वासी पं. यशोधर झाकेँ 'मिथिला वैभव' नामक पुस्तकपर । सुनिलऐक दर्शनक ग्रन्थ थिकैक । आइ धरि देखबोक सौभाग्य नहि भेल अछि, तखन पढ़बाक गप्पे की । एमहर हमर कनिष्ठ मित्र इंजीनियर श्रीअशोककुमार ठाकुर बहुत प्रयत्नसँ अकादेमीक कार्यालय जाय ओकर छाया प्रति करबाय अनलनि अछि । वचन देने छथि जे पढ़य लेल देताह । एक दिन स्वदेश सान्ध्यगोष्ठीमे सुमनजीक आवासपर रही तँ एक बृद्धजन अयलाह आ सुमनजीकेँ एक कात लऽ जाय अग्निश्च वायुश्च भेल तुरुछि–तुरुछि कऽ किछु कहलथिन आ ओम्हरे सँ चल गेलाह । सुमनजी घूरिकऽ अयलाह तँ पुछलियनि– ई के छलाह ? कहलनि– आहि ! नहि चिन्हैत छियनि, यैह थिकाह साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत ग्रन्थ मिथिला–वैभवक प्रणेता पं. यशोधर झा । पुछलियनि– ललकि–ललकि बजैत छलाह । उत्तर देलनि– रमानाथबाबू पर आक्रोश छनि । फेर प्रश्न– कथी लै ? कहलनि जाय दिअऽ, प्रश्न अनुत्तरित रहल । पछाति अनेक गोलंजर सुनना गेल । अवांछनीय विषयक उल्लेख समुचित नहि । हमरा हिनका प्रति एहने श्रद्धा अछि जे हिनक चित्र पुरस्कार रूपमे भेटल अछि, जकरा सिरमा लग देबाल पर लटकाय रखने छी ।

तकर पश्चात पुरस्कृत भेलनि पुस्तक सब क्रमशः शीर्ष साहित्यकार व्यासजी, यात्रीजी, मधुपजी, सुमनजीक **दुइ पत्र, पत्रहीन नग्नगाछ, राधाविरह आ पयस्विनी** । जखन मणिपद्मजीक नैका बंजारा पुरस्कृत भेलनि तँ हुनका नामक संग पुरस्कार विजेता विशेषण लगाओल जाय लगलनि । हमरा जनैत ई विशेषण अनुपयुक्त थीक । साहित्य अकादेमी कोनो रणभूमि नहि थिकैक । एहिसँ ओहि वर्ष अन्यान्य पुस्तक जे सूचीमे छल होयतैक ताहि सब साहित्यकारक प्रति अपमानक गन्ध ध्वनित होइत छैक ।

रमानाथबाबू संयोजक पदपर दोसर कार्यकालक बीचमे दिवंगत भऽ गेलाह । शेष अवधिसँ लऽ दू बेर जयकान्त बाबू प्रतिनिधि भेलाह । ध्यातव्य जे परामर्शदातृ समितिक शेष नओ सदस्य निर्वाचित नहि होइत छथि, संयोजक अपन मनोनुकूल व्यक्तिकेँ मनोनीत कऽ लैत छथि । उपर्युक्त दूनू व्यक्ति दू–दू बेर अर्थात् चारि बेर समितिक चयन कयलनि ।

Scanned by CamScanner

1983मे जखन सुमनजी प्रतिनिधि निर्वाचित भेलाह तखन अपन समितिमे दूनू बेर हमरो सन्निवेश कयलनि । तावत धरि कमला–कोशी, बागमती–गंडकीमे बहुत पानि बहि गेल छलैक । सुमनजीक कार्यकाल धरि एक व्यक्ति दू बेर धरि प्रतिनिधि भऽ सकैत छलाह । तकर बाद साहित्य क्षेत्रमे राजनीतिक क्षेत्र जकाँ धक्कम–धुक्की आरम्भ भऽ चुकल छलैक, तेँ अकादेमी कांउसिल ओहिमे संशोधन कऽ एके व्यक्तिकेँ एक बेर कांउसिलक सदस्य होयबाक सीमामे बान्हि देलकैक । ओही अवधिमे अर्थात् 1983मे हमर 'पत्रकारिताक इतिहास' पुरस्कृत भेल । दस वर्ष परामर्शदातृ समितिक सदस्य रहलाक कारणेँ अकादेमीक गतिविधिसँ परिचित भेलहुँ । शपथ पूर्वक कहि सकैत छी जे आरम्भमे ई पुरस्कार हमरो सन तुच्छ रचनाकारकेँ भेटि सकैत छैक तकर स्वप्नो नहि देखने छलहुँ । सुमनजीक आन्तरिक इच्छा छलनि जे हुनका बाद हम एकर प्रतिनिधित्व करी, तेँ जयकान्त बाबूकेँ कहनहु छलथिन तथा ओ अग्रिम बेर हमर नामक अनुशंसा करबाक वचन सेहो देने छलथिन ।

ई जनाय दी जे साहित्य अकादेमीसँ कोनो भाषाक अधिकतम सात गोट संस्था सम्बद्ध भऽ सकैत अछि से परामर्शदातृ समितिक अनुशंसा पर । सम्बद्धे संस्थाक अनुशंसापर प्रतिनिधि सेहो निर्वाचित होइत छथि । हमरा जनैत सुमनजीक समय धरि मैथिलीक मात्र तीन गोट संस्था प्रयागक मैथिली समिति, कलकत्ताक मिथिला सांस्कृतिक परिषद तथा दरभंगाक वैदेही समिति अकादेमीसँ सम्बद्ध छल । परिणामतः जयकान्त बाबू आ कृष्णकान्त बाबू दूनू भाय जकरा चाहितथि तकरा प्रतिनिधि बनाय सकैत छलाह । तेँ जयकान्त बाबूसँ वचन भेटि गेलापर सुमनजी विश्वस्त ओ आश्वस्त भऽ गेल छलाह । सुमनजी आब प्रयास नहि करथि तेँ जयकान्त बाबू डॉ. श्रीरामदेवझाकेँ एक पत्र लिखि हमर नामक अनुशंसाक पुष्टि कऽ देलथिन । तकर बाद एक दिन एकान्तमे सुमनजी हमरा कहलनि जे हमर बाद अकादेमीमे प्रतिनिधित्व करबाक हेतु अहाँ मानसिक रूपसँ प्रस्तुत रहू । जयकान्त बाबू अहाँक नामक अनुशंसा करबाक वचन दऽ देलनि अछि । जयकान्त बाबूकेँ हमरा प्रति जे निषेधात्मक धारणा छलनि तकरा स्पष्ट करैत हम कहलियनि– जयकान्त बाबू हमरा नामक अनुशंसा कथमपि नहि कऽ सकैत छथि । जयकान्तबाबूसँ हमरा केहन सम्बन्ध से स्पष्ट कऽ चुकल छी । सम्बन्धमे कनिष्ठ मुदा वयसेँ ज्येष्ठ तथा विद्यामे श्रेष्ठ होइतो लौकिक शिष्टाचारक उल्लंघन हमरा संग कहियो नहि कयलनि । सभा–समितिक मंचो पर भेट भेलापर चरण स्पर्श पूर्वक प्रणाम करबामे संकोच नहि होइत छलनि । हमरो मैथिलीक हेतु जे महान अवदान छनि ताहि प्रति पूर्ण सम्मान अछि । ओ जाहि शून्यसँ मातृभाषाक आधारभूमिकेँ ठोस धरातल बनयबाक लेल सन्नद्ध भेलाह से कोनो महाकाव्य, नाटक, उपन्यास आदि मौलिक रचनासँ बेसी श्रमासाध्य कार्य छल । एहि हेतु मैथिलीक कोनो हितचिन्तककेँ हुनका प्रति कृतज्ञ होयबाक चाहियनि, तथापि सूर्यकेँ जगतक–आत्मा कहल गेलनि अछि, किन्तु जँ हुनका नग्न आँखिसँ देखबनि तँ

Scanned by CamScanner

आँखि आन्हर भऽ जायत । तहिना सत्यकेँ उद्घाटित भऽ गेलापर लोक विवेकक आँखि गमाय बैसैत अछि । हम से अपराध कही वा धृष्टता कयने छियनि । हम पत्रकारिताक इतिहासक भूमिकामे आचार्य मल्लिनाथक एक उक्ति 'नामूलं लिख्यते किंचित् नानपेक्षितमुच्यते' उक्ति केँ दोहरौने छियनि । 'मैथिली समाचार' पाक्षिक जे ओ प्रकाशित करैत छलाह ताहि हेतु केन्द्रीय सरकारसँ एक लाख टाकाक अनुदान प्राप्त करैत छलाह, ओहि पत्रिकाक स्वरूप केहन रहैत छलैक से सबकेँ जनले-बुझले अछि । तटस्थ भावसँ हम तकर समीक्षा कयने छियनि । हम समाजसँ वंचना कोना करितिऐक ?

जाहि कांउसिलक बैसकमे अग्रिम प्रतिनिधिक निर्णय होइतैक ताहि समय सुमनजी अस्वस्थ छलाह । परिवारक लोक सहित हमरोलोकनि जयबासँ मना करैत रहि गेलियनि, ओहू स्थितिमे ओ चले गेलाह । कांउसिलक बैसकमे संस्था सबसँ अनुशंसित नामक सूची समक्ष देल गेलनि तँ विस्मित रहि गेलाह । अपन धारणा खण्डित भऽ गेलनि, हमर धारणाक परिपुष्टि भऽ गेलनि । तखन जे प्रतिनिधि निर्वाचित भेलाह से नाम पहिने मैथिली साहित्य संसारमे प्रश्नवाचक चिह्नक संग पसरल– ई के ? अन्तर एतबे छल जे पहिने सुर शब्दक संग इन्द्र शब्दक सन्धि छल, नवीनमे सुर शब्दक संग ईश्वर शब्दक सन्धि भेल, छल दूनू गुण सन्धिए । गुणमे सेहो एतबे अन्तर जे पहिलमे चन्द्रमाक गुण दोसरमे शुक्रताराक, परन्तु दूनूक अर्थ एके सुरेन्द्र गेलाह, सुरेश्वर अयलाह । किमधिकं विज्ञेषु ?

एक क्षेपक मन पड़ि गेल अछि । हरिपुर गौरीदास टोलमे हमर पिताजीक एक शिष्य रहथिन सुन्दरलाल झा । व्याकरण तँ सिद्धान्त कौमुदीओ पूरा नहि पढ़ि सकलाह, परन्तु नैष्ठिक कर्मकाण्डी रहथि, ताहि प्रसादेँ सिंहबाड़ मन्दिर पर पुजेगरीक स्थान भेटि गेल रहनि जे जीविकाक आधार भेलनि । हुनक जेठ बालक मैट्रिक पास कयलथिन आ एकटा प्राथमिक स्कूलमे शिक्षक भऽ गेलथिन । वासभूमि बहुत संकीर्ण छलनि । दलानक ओसाराक ओरियानीक पानि अनकर खेतमे खसैत रहनि । इच्छा होइनि जे ई खेत अपन भऽ जाइत तँ वास खुसफैल भऽ जइतय । ओहि भूमिक मालिकक बेटा बागड़ रहैक, तेँ विवाह नहि होइक । ताहि समय बेटी पर टाका गनाय किछु लोक एहन काज करय । ओहि बागड़क विवाह एहने ठाम ठीक भेलैक । हड़बड़मे एक दबंग लोकक हाथेँ ओ जमीन भरना धऽ बेटाक विवाह कराय लेलक । भरना छोड़यबाक उपाय नहि भेलैक तँ बेचय चाहलक । सुन्दरलालझाक बालक ओ कबाला कराय लेलनि, किन्तु भरनादार जमीन छोड़बे ने करनि । अदालत गेलाह, सातवर्ष लड़लाक बाद डिग्री भेटलनि । डिग्री भेटत तकर आशा नहि छलनि । गामसँ डिग्री भेटबाक समाचार लऽ एक आदमी आठ बजे रातिमे सिंहबाड़ अयलनि । सुन्दरलाल भाइ ताहि काल आरती करैत छलाह । आरतीक थार लेने मन्दिरसँ बहरयलाह तँ आदमी कहलकनि– सरकार, परनाम,

Scanned by CamScanner

जमीनवला मोकदमा जीत गेली । सुन्दरलाल भाइ हमर पिताजीक अनन्य भक्त रहथिन । मोकदमाक क्रममे अनेक बेर दरभंगा आबि पिताजीकेँ दुखनामा सुनाय जाथिन । डिग्रीक समाचार सुनि हर्षातिरेकमे थार लेलनि 12 बजे रातिमे हमर पिताजीक डेरा पर आबि केबाड़ पीटय लगलथिन । पिताजी ओतेक राति कऽ हड़बड़ाय कऽ केबाड़ फोललथिन । सुन्दरलाल भाइ, जे अयलापर दण्ड प्रणाम करथिन से प्रणाम कथी लै करथिन, खूब जोरसँ ठहाका दैत कहलथिन– मोकदमा जीति गेलहुँ, गुरुजी, हम मोकदमा जीति गेलहुँ आ एतबे बजैत सड़क पर दौड़य लगलाह । अनपेक्षित हर्ष सेहो लोकक़ेँ उन्मत्त बनाय दैत छैक । उन्मत्त लोक कखन की करत, की बाजत से के जनैत अछि । ई अनटोटल क्षेपक एहि क्रममे मन पड़ि गेल जे साहित्योक क्षेत्रमे किछु लोक अभड़लाह जे अप्रत्याशित सम्मान पाबि मधुपजी सन साधकक प्रसंग कहथिन जे आब ओ मड़ुआक पुत्ती डेङाय रहल छथि । किछु पोथीक भूमिकामे फूसिक पथार देखि दंग रहैत अछि मन ।

पहिनहु कहि चुकल छी, पुनः कहैत छी जे डॉ. श्रीसुरेश्वरझा हमर प्रशंसक मित्र रहलाह अछि । हमर 'बिदागरी' उपन्यास जहिया प्रकाशित भेल रहय, बिनु कोनो परिचयक प्रथम समीक्षा हिनके लिखल अन्तर्देशीय पत्रमे भेटल छल, जाहिमे स्पष्ट संकेत छल जे कन्यापक्षक प्रति वरागत पक्षक रुच्छ व्यवहारक वर्णन तँ कथा साहित्यमे बहुतो आयल अछि, किन्तु कन्यो पक्षक लोक वर पक्षक संग वंचना करैत छथिन से एहीमे भेटल, संगहि साइकिल पर विदागरी कराय कन्याक चारित्रिक दृढ़ता देखायब निश्चित रूपेँ एक प्रगतिशील डेग भेल अछि ।

हमरा हिनकासँ घनिष्ठता भेल स्वदेश सान्ध्यगोष्ठीमे । हमर उत्कर्षक साक्षी राजनगर आ कोचीन दूनू ठामक यैह छथि जकर चर्च यदा-कदा लोकक समक्ष करैत देखलियनि अछि । सम्मान टाका जकाँ ककरो अप्रिय नहि लगैत छैक । ई 'अमर-अर्चना'क संयोजन कऽ जे सम्मान हमरा देयौलनि से हमरा आजीवन हिनक कृतज्ञ बनाय देलक । ई भिन्न बात जे एक अनुपयुक्त व्यक्तिकेँ सम्मानित करबाक पश्चात्ताप होइत होइनि । पश्चात्ताप तँ पश्चात् कालेमे होइत छैक, किन्तु ताहिमे हमर दोष नहि । साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रतिनिधिरूपमे बहुत किछु गतिशीलता अनलनि । ई जतेक काज कयलनि ततेक एहिसँ पूर्व नहि भेल छलैक ।

हिनकर उत्तराधिकार भेटलनि पहिने हमर छात्र, पछाति जमाय, सतत साधनारत साहित्यकार डॉ.श्रीरामदेव झाकेँ । एमहर विचारधाराक दृष्टिएँ बाम-दहिनमे विभाजित साहित्यकारक दलसँ प्रधानमंत्री डॉ.श्रीमनमोहन सिंह जकाँ हिनको डेग-डेग पर अड़ंगा लगैत रहलनि, तथापि गतिशीलता बनौने रखलनि । कवीश्वर चन्दाझा रचित मिथिलाभाषा रामायण तथा लालदास प्रणीत रमेश्वर चरित रामायणक पुनः प्रकाशन सन महत्त्वपूर्ण काज हिनके समयमे सम्पादित भेल ।

Scanned by CamScanner

हिनक पश्चात् हमर नामक अनुशंसा भेल । ईश्वर साक्षी छथि, हमरा आभास मात्र नहि होअय देल गेल । आब हमरा नामक कोनो औचित्यो नहि छल, जखन हमर छात्र एहि पदपर चल गेल छलाह । दस वर्ष पूर्व उचित मानलो जाय सकैत छल । ताहूपर विडंबना ई छल जे जनिका आङुर पकड़ाय साहित्य-मंचपर प्रतिष्ठापित कयने छलियनि, जे लिखित रूपमे हमरा अपन साहित्यिक गुरुक रूपमे स्वीकार कऽ चुकल छथि तनिका (हुनक कथनानुसार) बिनु कोनो सूचना देने हमर प्रतिस्पर्द्धामे ठाढ़ कयल गेलनि । ओ उपयुक्त लोक छथिहो, किन्तु ताहि हेतु हमरापर अक्षम होयबाक आरोप लगाय हुनक नाम प्रस्तावित कयल गेलनि । वस्तुतः हमरा सन अल्प ओ संक्षिप्त ज्ञान रखनिहारक हेतु उपयुक्त नहि छल । अन्ततः हमरा ओ ढोल अपन गराँमे लटकाबय पड़ल ।

एक दिन हमर वरीय ओ आदरणीय मित्र पण्डित श्रीगोविन्द झा हमरा आवास पर अयबाक कष्ट कयलनि । ई सर्वथा मौलिक दृष्टि रखनिहार चिन्तक कोटिक साहित्यरथी छथि । मैथिलीसँ तिलमात्रो रुचि रखनिहार व्यक्ति हिनक कर्त्तृत्व ओ व्यक्तित्वसँ अपरिचित नहि छथि । कोल्हुआड़क महंकार जकाँ विद्यापति सेवा संस्थानक अध्यक्ष पद पर बैसाओल हमरा सन अक्षम अधिकारीसँ विद्यापतिक जन्मभूमि विस्पीक विकाससँ सम्बद्ध एक विशिष्ट योजनापर विचार कऽ ओकर कार्यान्वयन हेतु एक पत्र लऽ आयल छलाह । मन्तव्य ई जे मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान देअयबाक संघर्षकेँ लक्ष्य धरि पहुँचयबामे विद्यापति सेवा संस्थान अग्रणी रहल, तेँ ईहो काज करबामे समर्थ होयत । नमस्कार-पातीकबाद परिहासक स्वरमे कहलनि— सुनैत छी अहाँक ओतय नित्य दरबार लगैत अछि । हम कहलियनि— अकादेमीक ढोल जे गरदनिमे लटकल अछि, हम ताहीमे अस्तव्यस्त छी, बीचमे टोक दैत कहलनि— अहाँ जकरा ढोल कहैत छिऐक से वस्तुतः पारिजातक माला थिकैक, बहुत भाग्येँ प्राप्त होइत छैक । वस्तुतः भाग्ये हमरा संग देलक, अन्यथा हमर निर्वाचन पर जे कटिबद्ध भऽ चारू कातसँ प्रहार भेल, जाहिमे आत्मीय लोके सब, किछु प्रत्यक्ष तँ किछु प्रच्छन्न रूपेँ लागल छलाह । निर्वाचन रद्द करबाक हेतु अभियान चलल, साम्प्रदायिक ओ मुसलिम विरोधी होयबाक प्रमाण सब हमर रचना सबसँ ढूँढल गेल, साहित्य अकादेमीकेँ पठाओल गेलैक, ताहि सबसँ ई हमरा पारिजातक बदला कबाछुक पातक माला सन प्रतीत भेल । कबाछु देहमे कुचकुच्ची लगबैत छैक, ई क्रियाकलाप मनमे कुचकुच्ची लगबैत रहल । एहि सबसँ मन खिन्न छले, ताहूसँ अधिक ई जे जे कोनो कार्यक्रम साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित करैत रहलहुँ ताहि सब पर लिखित रूपेँ सार्वजनिक समाचारपत्रमे कटु-तिक्त टिप्पणी छपैत रहल । आब ओहि सभक खोध-बेध करब समुचित नहि बुझैत छी । अपटुलोकक बुतेँ जेहने भऽ सकतैक तेहने ने होयतैक । तथापि कार्यकालक अन्तमे हम एक श्वेत पत्र प्रकाशित कयल जकरा एहि पुस्तकक परिशिष्टमे देखल जाय सकैछ जाहिसँ जे ढोल हमरा लटकाओल गेल ताहिपर रागक अनुसार एक ताल, तीनताल आदि बाजल अथवा आल्हामे

Scanned by CamScanner

जेना ढोलक पीटैत छैक तेना पीटल गेल से ज्ञात भऽ सकत । टिप्पणीकारक हम आभारी छियनि । कबीर दास बहुत पहिनहि कहि गेल छथि–

निन्दक नियरे राखिए आंगन कुटी छबाय

अनेक अंशमे हम अपनाकेँ भाग्यवान बूझैत छी से माता–पिताक तपस्यासँ वा गुरुजनक आशीर्वादसँ अथवा पूर्वजन्मक सुकृतिक फल भऽ सकैत अछि, एहि जन्ममे कोनो तेहन सत्कर्म वा तपस्या नहि कऽ सकलहुँ अछि । पिताजीक संरक्षण कालमे जाहि स्तरक जीवनयापन कयल, ताहिसँ उच्च स्तरक कहियो आकांक्षा नहि रहल । कोनो पद–प्रतिष्ठा पयबाक सेहन्ता सेहो मनमे कहियो नहि पोसलहुँ । एक मात्र इच्छा भेल जे मातृभाषाक किछु सेवा कऽ सकी, सेहो प्रो. जयदेव मिश्र स्वेच्छासँ संग लऽ जाय एहन स्थान पर सुप्रतिष्ठित कराय देलनि जे मनोवांछित जीविका भेटि गेल । साहित्य अकादेमीमे सेहो अनायास प्रवेश भऽ गेल । एहू विषम वातावरणमय युग से आज्ञानुवर्त्ती पुत्र भेटि गेलाह ।

लोक कहैत छैक जे भगवान जे करैत छथिन से नीके करैत छथिन । सुमनजीक तुरन्त बाद साहित्य अकादमीक पद भेटि जाइत तँ ई सुयोग नहि लगितय । 1954मे साहित्य अकादेमीक स्थापना भेल छलैक जकर 50म वर्ष स्वर्णजयन्ती वर्ष 2004मे पड़लैक, जाहि अवसपर पर अनेक नव–नव कार्यक्रम आयोजित भेलैक, जाहिमे मैथिलीओक साहित्यकार बन्धु सभकेँ सहभागी होयबाक अवसर भेटलनि । हमर कार्यकालमे अकादेमीक अध्यक्षक रूपमे डॉ. श्रीगोपीचन्द नारंग सदृश उदारमना उच्च विचारक लोक भेटि गेलाह । संयोग एहन जे कांउसिलमे गोरहाक जेठ, माने वयसमे सबसँ जेठ होयबाक कारणेँ अध्यक्ष सहित कार्यसमिति ओ कांउसिलक सदस्य ओ कार्यालयक कर्मचारी लोकनि एहि अल्पज्ञक बहुत आदर करैत छलथिन । नारंग साहेबक कृतज्ञ तँ रहबे करबनि आजीवन जे विद्याददाति विनयम् एहि उक्तिक साक्षात् प्रतिमूर्ति छथि । एखनहु समय–समयपर दूरभाषपर कुशल जिज्ञासा करैत रहैत छथि । दोसर श्री एम्.एच्. वेंकटेश्वरन्साहेबक जे जेहने श्रद्धावान् तेहने विशाल हृदयक लोक छथि । ओ हमरा डॉक्टर साहेब कहि सम्बोधित करैत छलाह । हम बारंबार टेकियनि जे मैं तो होमियोपैथी गोली बाँटने वाला भी डाक्टर नहीं हूँ, आप मुझे लज्जित नहीं करें । ताहि पर एक दिन कहलनि– मुझे आपके बारे में एक दिन डॉ. गंगेश गुंजन जी से बात हुई, उन्होंने कहा वे खुद डॉक्टर नहीं हैं, डॉक्टरों के डॉक्टर हैं, उनकी रचनापर कई लोगों ने डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की है । एक वर्षक बाद मैथिली क्षेत्रमे होइत किच्–किच्सँ मन ततेक खिन्न भऽ गेल जे त्यागपत्र देबाक विचार मनमे आयल । वेंकटेश्वरन साहेबसँ प्रक्रिया पुछलियनि । कहलनि– आप घबरा क्यों रहे हैं डाक्टर साहब ! यह मैथिलीमे ही नहीं, सभी भाषाओं में ऐसे ही कुत्ते भौंका करते हैं । आप आँख मूंदकर अपना काम निकालते चलें ।

Scanned by CamScanner

शारीरिक शिथिलताक कारणें हम एकसर यात्रा करबासँ अपनाकें असमर्थ बूझि एक सहायक कें संग लऽ जाइत छलियनि । गोवामे कांउसिलक बैसक छलैक । माझिल दौहित्र श्रीशंकरदेव संग छलाह । दिल्लीसँ हवाइ जहाजसँ जयबाक छलैक, तें वेंकटेश्वरन् साहेबकें कहलियनि, ओ कहलनि इसका कोई प्रावधान नहीं है । पुनः कहलियनि– मैं तो बिना सहारा के रह ही नहीं पाता हूँ और साथ में नाती है, उसका क्या करूंगा ? कहलनि– नाती यहाँ होटलमे ही रहेगा और आप मुझे ही अपना बेटा मान लें, मैं साथ ही चल रहा हूँ, आपको कोई कष्ट नहीं होने दूंगा । एतेक उच्च पदपर रहितो ओ हमर अटैची अपने उघैत गेलाह आ उघैत अयलाह । गोवामे जाहि होटलमे रहलहुँ, एकटा परिचारिका हमर सबसँ छोटकी दौहित्रीक बतारी छलि । ओकरा प्रायः कहि देलथिन । ओ चाह, जलपान, भोजन हमरा अपन कोठरीमे पहुँचा जाय आ जतेक बेर आबय, अबैत जाइत पैर छूबि प्रणाम करैत कहय मेरे दादाजी भी आपकी उम्रके थे, मुझे आपकी सेवा करते हुए हर बार उनकी याद आ जाती है । बाबा ! आप जब कभी गोवा आयें, इसी होटलमे टिकें, आपकी पोती हमेशा आपकी सेवा में तत्पर रहेगी । होटलसँ बिदा होयबाक काल हवाइ अड्डा पहुँचयबा लै टूरिस्ट 'बस' अयलैक ओ हमर अटैची लऽ हमरा बसमे बैसाय, प्रणाम करैत हाथ जोड़ने कहलक– बाबा, फिर आइएगा । हम कहलिऐक अब भगवान के घर जाऊंगा कि तुम्हारे होटलमे आऊंगा ? ओ च्च च्च करैत जीह कूचि, दूनू हाथें अपन कान छुबैत बाजलि– ऐसी बात मत बोलो बाबा ! फेर पैर छूबि प्रणाम कऽ बससँ नीचाँ उतरि ठाढ़ि भऽ गेलि । बस तुरन्त फूजि गेलैक ओ टाटा करैत हाथ डोलबैत रहलि, ओकर आँखिमे ढबकल बुन्द बाहर भेलैक आ हमर आँखि सजल भ' गेल, 'बस' समुद्रक कातेकात वेगसँ बढ़ि रहल छल ।

साहित्य अकादेमीमे तेसर व्यक्ति जे प्रभावित कयने रहथि से सुमनजीक कार्य कालमे मैथिलीक प्रभारी उपसचिव छलाह श्रीरमेश भसीन । ओ मैथिलीमे बहुत रुचि रखैत छलाह । हमरा प्रायः स्वतन्त्रता संग्रामकालीन काव्य संकलनक हेतु साहित्य अकादेमीसँ एक अनुबन्ध भेटल छल । हम समय पर कार्यक सम्पादन करबाक अभ्यासी रहलहुँ अछि, किन्तु खपरैल बंगलावला घर जीर्ण भऽ गेल छल, तकर आधा अंश तोड़ि पक्का बनयबामे व्यस्त छलाहुँ । एक तँ प्राचीन रचना सेहो राष्ट्रवादी चेतनाक, जकर मैथिलीमे अत्यल्पता छलैक, तकरा सबकें झोरिकऽ तकबाक हेतु समयक अपेक्षा रहैक, दोसर आधा घर उजड़ल रहलाक कारणें स्थानक संकीर्णता । ईटा, बालु, गिट्टी, लोहा, सीमेंट जुटाउ आकि पत्र–पत्रिका, पुरान कविता संकलन सभक अनुशीलन करू । एहि सब कारणसँ पाण्डुलिपि तैयार करबामे समय लागि गेल । भसीनसाहेब 'रिमाइण्डर' पठौलनि । उत्तरमे किछु और समय बढ़यबाक आग्रह करैत लिखने रहियनि– गृह निर्माण कार्यमे व्यस्त रहने के कारण समय नहीं मिल रहा है । ताहि पर भसीन साहेब लिखलनि– काम पूरा करने के लिए समय मिलता नहीं है, समय निकालना पड़ता है । हम तकर

Scanned by CamScanner

उत्तरमे लिखलियनि– नामसे भले आप भसीन हैं मगर काम में पूरा मशीन हैं । हमरो हुनकर कथन प्रेरणा देने छल आ हुनको हमर उक्ति चमत्कृत कयने छलनि । हमर प्रतिनिधि निर्वाचन मे ओ बहुत सजग रहलाह । किन्तु खेदक बात जे हम प्रतिनिधि भऽ दिल्ली पहुँचलहुँ ताहिसँ किछुए दिन, मास नहि, सेवा निवृत्त भऽ गेल छलाह ।

चारिम व्यक्ति छथि श्रीब्रजेन्द्र त्रिपाठी । ई विश्वविश्रुत संस्कृत विद्वान ओ राष्ट्रभाषा हिन्दीक उन्नायक पण्डित विद्यानिवास मिश्रक कोनो सम्बन्धसँ भातिज होइत छथिन । कविहृदय त्रिपाठीजीकेँ हम पत्राचारमे व्यंग्यात्मक शैलीक प्रयोग करैत छलियनि, ई तकर अन्यथा बोध नहि करथि, प्रत्युत कहथि मैं तो आपको गार्जियन के समान मानता हूँ । यद्यपि सम्प्रति ई उपसचिवक पदपरसँ बदलि 'समकालीन' नामक अकादेमी पत्रिकाक सम्पादक बनाय देल गेलाह अछि, तथापि दूरभाषपर यदा-कदा एखनहु स्मरण करैत रहैत छथि जे हिनक उदारहृदयक परिचायक थिकनि । ध्यातव्य जे ई पुनः पूर्व पद पर आबि गेलाह अछि । फ्रायड आ मार्क्सक अनुयायी एक कुसंस्कृत व्यक्ति सेहो भेटलाह, किन्तु हुनक नामोल्लेख कऽ कलमक नोंककेँ अपवित्र करबासँ बँचले रहब श्रेयस्कर मानैत छी ।

एहि अध्यायकेँ समाप्त करैत एतबा उल्लेख कऽ दी जे पिताजीक संग विभिन्न रजबाड़ामे जयबाक तथा राजकीय सुख-सुविधाक उपभोग करबाक सुयोग भेटल छल जे जीवनक आरम्भिक काल छल, ताहि कालमे मानसिक कोनो प्रकारक तनाव नहि भेल । जीवनक अन्तिम काल खण्डमे साहित्य अकादेमीक सहयोगेँ ओहिना भारतक विभिन्न नगर, महानगर सबमे जयबाक ओ राजसी सुख-सुविधाक उपभोग करबाक सौभाग्य प्राप्त भेल । अन्तर एतबे जे ई यात्रा सब तनावसँ भरल रहल । एहि अवधिमे दू गोट अभिखेद मनकेँ सर्वदा कचोटैत रहत जे अश्रुकण आ गंगापुत्र सन कथाक प्रणेता मनमोहन झाक प्रस्तावित कथासन्धि तथा लोकप्रिय सोनदाइक पत्र सन कविताक रचयिता, कन्यादान फिल्ममे संग देनिहार मित्र प्रवर गोपालजी झा 'गोपेश'क 'कविसन्धि' कार्यक्रम प्रस्तावितेरहि गेल, अपेक्षित सहयोग ने सरिसबसँ भेटल ने पटनासँ । आब ई दूनू मैथिलीरत्न इहलीला समाप्त कऽ चुकल छथि तेँ साश्रु श्रद्धांजलि अर्पणेसँ सन्तोष करय पड़त ।

मनमोहन बाबूक गंगापुत्र पुरस्कृत भेलनि अछि ताहिसँ किछु सन्तोष भेल मुदा जीवनकालमे नहि किछु भेलनि तकर कचोट हुनक बालक सेहो व्यक्त कयलनि अछि ।

अन्यान्यो कतिपय संस्थासँ सम्बद्ध रहबाक सुयोग लगैत रहल यथा **मैथिली अकादमी, पटना** । एकर स्थापना भेलैक तँ अध्यक्षक आसन पर आसीन भेलाह स्वनामधन्य ओ सम्पादनकला मूर्द्धन्य आर्यावर्त्त दैनिक पत्रक प्रधान सम्पादक श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार । ओ हमरा बहुतो स्नेह दैत रहलाह । अकादमीक प्रकाशन उपसमितिक सदस्य सबमे एक नाम हमरो रखलनि आ किछु सुझाव सेहो मङलनि । अपन अल्प अनुभव ओ सीमित ज्ञानक अनुसार यथा प्राचीन साहित्यकार लोकनिक व्यक्ति ओ कर्तृत्व

Scanned by CamScanner

पर ग्रन्थ लिखबायब, एक वृहत् शब्दकोष संकलित करबाय ओकर प्रकाशन करायब, वर्त्तमान शताब्दीक कवि लोकनिक कविता संकलन करायब, एहिना अन्यान्य विधा सभक प्रसंग जे किछु फूरल से सब कहलियनि । ओ तँ स्वयं प्रबुद्ध छलाह, हम केवल मन पाड़ि देने होइयनि से सम्भव । तदनुसार योजना बनल, तकर कार्यान्वयन भेल । मैथिली पत्रकार मूर्द्धन्य म.म. मुरलीधरझा पर विनिबन्ध हमरेसँ लिखबौलनि, कविता संकलनक सम्पादक मण्डलमे स्थान देलनि, जीवन झा रचनावली प्रकाशित करबौलनि जाहिमे सबटा श्रम तँ डॉ. श्रीरामदेवझाकें छनि, अलंकारक रूपमे हमर नाम जोड़ल अछि । शब्दकोष संकलनमे हमरासँ किछु अक्षर पर सहयोग माङल गेल छल, जहाँ धरि स्मरण अछि सात सय शब्दक सूचीक संगहि हमर एक शिष्या डॉ. श्रीमती अनमोल मिश्र आचार्य सुमनक साहित्य पर शोधकार्य करैत छलीह तँ हमरासँ समय-समय पर सहायता लैत छलीह, हुनका हम सुमनजीक पद्य साहित्यमे प्रयुक्त शब्दावलीक सूची सेहो बनाबय कहलियनि, सेहो सूची पठबाय देने रहियनि । एहिसँ अतिरिक्त हमर कोनो विशेष योगदान नहि अछि । यदि भूमिकामे तकर उल्लेख रहैत तँ नीक लगितय ।

ऋचालोक-एकटा हमर अनुज मित्र छथि श्री श्रीमन्त पाठक । हम जखन 'निर्माण' हिन्दी साप्ताहिकक सम्पादन करैत छलहुँ तँ ओही निर्माण प्रेसमे अपन एक 'हिमकण' नामक हिन्दी कविता संग्रह छपयबाक उद्देश्यसँ एक युवक अयलाह । ओना प्रेसक अन्यान्य कार्यसँ हमरा कोनो सम्बन्ध नहि छल । हम तँ केवल निर्माण साप्ताहिकक काज देखय स्कूलसँ छुट्टी भेलाक बाद गेल करी । प्रसंग चलि रहल अछि तें एहू प्रसंग किछु चर्चा कऽ दी । मिथिला केसरी बाबू जानकीनन्दन सिंह जखन पुरना दरभंगा जिला अर्थात् मधुबनी ओ समस्तीपुर सहित क्षेत्रक जिला परिषदक चेयरमैन रहथि तँ एहि हिन्दी साप्ताहिकक प्रकाशन आरम्भ कयने रहथि । यदुनन्दन शर्मा प्रलयंकर, प्रेमचन्द्र शास्त्री पहिने सम्पादक रहि चुकल छलथिन । कोनो कारण विशेषें हुनका सबसँ पटरी नहि बैसल रहि सकलनि तँ हमरा एकर भार देबाक हेतु बजौलनि । एक तँ हिनक बालक उमाशंकर सिंह, जयाशंकर सिंह आ भातिज विजयशंकर सिंह लोकनि हमरा स्कूलक छात्र छलथिन । दोसर श्रीनारायण दास जखन दरभंगा क्षेत्रक सांसद रहथि तँ लहेरियासरायसँ 'पंचायतीराज' नामक साप्ताहिक बाहर करैत रहथि । कुलानन्द 'नन्दन' जे आर्यावर्त्तक उपसम्पादक पदसँ छुट्टी लऽ एकर सम्पादक पद पर आयल रहथि । यात्रीजी ओहि समय एतहि रहैत छलाह, हुनके अनुरोधपर नन्दनजी (ई मैथिलीक कथाकार रहथि) पंचायती राजमे 'चुम्मन चौधरी की चिट्ठी' नामक व्यंग्य स्तम्भ आरम्भ कयने रहथि । यात्रीएजी ओ स्तम्भ लिखैत छलथिन । आठ दस अंकक बाद यात्रीजी दरभंगासँ चल गेलाह । नन्दन जी एहि स्तम्भकें लऽ फटोफट्टमे पड़ि गेलाह तँ हमरा कहलनि– यात्रीजी मिर्जापुरी लोटा छथि जकर पेन स्थिर नहि रहैत छैक । आब अहाँ संग नहि देब तँ हम विपत्तिमे पड़ि जायब । तखन हम बतहू मिसर, बलभद्दरपुर नामसँ ओ स्तम्भ लिखैत रही जे बाबू

Scanned by CamScanner

जानकीनन्दन सिंह, सुनैत छी, रुचिसँ पढ़ैत छलाह । एही सब सूत्रकेँ पकड़ि बाबू साहेब हमरा निर्माणक सम्पादनक भार देबय चाहैत छलाह । हम शर्त्त रखलियनि जे जँ चारिओ पृष्ठ मातृभाषाक पृष्ठ एहिमे दिऐक तँ हम स्वीकार करब । बाबू साहेब स्वीकार कऽ लेलनि । अमर-अर्चनामे श्रीपूर्णेन्दु कुमार चौधरी एहि प्रसंग चर्चा कयने छथि । निर्माणमे हम बतहू मिसर की बहक नामसँ व्यंग्य स्तम्भ सेहो आरम्भ कयने छलहुँ ।

बीचमे फेर ई क्षेपक आबि गेल । कहय लागल छलहुँ ऋचालोकक विषयमे पुन: ताहि पर अबैत छी । श्रीश्रीमन्त पाठकक कवित्व प्रतिभा ओ लेखन पटुतासँ बहुत प्रभावित भेलहुँ । यद्यपि राष्ट्रभाषाक रूपमे हम सब दिन हिन्दीक समर्थक रहलहुँ अछि, तथापि एहन विलक्षण शब्द शिल्पीकेँ मातृभाषा दिस सेहो मोड़बाक चाही से मनमे आयल । पाठकजीसँ कविता संग्रह छपयबाक क्रममे प्रायश: नित्य भेट घाट होइत रहल । हमरा स्कूलसँ घुरबाक कालक बाटेपर ई अपन शॉर्टहैण्ड ओ टाइप राइटिंगक इन्स्टीट्यूट चलबैत छलाह । तमाकू सेहो खाइत छथि । सम्पर्क जोड़बामे आ आत्मीयता स्थापित करबामे तमाकू सन दोसर कोनो वस्तु नहि होइत अछि । भनेँ डाक्टर लोकनि एकर कतबो दुर्गुणक वर्णन करथुन, मुदा क्वचित् हुक्का, क्वचित् थुक्का, क्वचित् नासाग्रगामिनी'क रूपमे 95 प्रतिशत लोककेँ ग्रस्त कयने छैक । हम घुरतीमे यदा-कदा ओतय अँटकि जाइ । एहि सम्पर्कसँ मैथिली दिस उन्मुख भेलाह । ईहो एक संस्थाक जन्म देलनि, नाम रखलथिन 'ऋचा लोक' एहि संस्थासँ पिण्डारुछक हमर एक प्रिय कवि छात्र इन्द्रनाथ झा 'इन्दु'क कविता संग्रह धूप-दीप छपलनि । एही श्रीमन्त पाठकक अनुज थिकथिन डॉ. श्रीशिवाकान्त पाठक, जे मैट्रिक परीक्षा पासकऽ उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक हेतु दरभंगा आबि गेलाह आ मैथिलीमे एम्.ए.पी-एच्.डी.कऽ संस्कृत महाविद्यालयमे मैथिलीक प्राध्यापक पदसँ सेवा निवृत्त भेलाह अछि । इन्द्रनाथ जी आ पाठकजीक परिवारसँ ततेक आत्मीयता रहल जे हमर एक मात्र पुत्र श्रीशम्भुनाथक जन्म अस्पतालमे भेल रहनि तँ इन्द्रनाथ जी, श्रीशिवाकान्त दूनू गोटे अस्पतालमे भरिराति जागल रहथि । श्री श्रीमन्त पाठक पछाति विश्वहिन्दू परिषद्क सक्रिय कार्यकर्त्ताक रूपमे अनेक एकल पाठशालाक संगठनमे लागि गेलाह आ श्रीशिवाकान्त पाठक इन्स्टीट्यूट चलबैत रहलाह । हिनके सुपुत्र थिकथिन 'लावनि परक दीप' कविता संग्रहक प्रणेता युवा साहित्यकार सह पत्रकार श्री अमलेन्दु शेखर पाठक एम्.ए. ।

ई एमहर आबि अपन पुरान संस्थाकेँ पुनर्जीवित कयलनि । ल.ना. विश्वविद्यालयक संस्थापक डॉ. मदनेश्वर मिश्रकेँ एकर अध्यक्ष आ उपाध्यक्षक रूपमे हमर नाम मनोनीत भेल । एकरो मासिक बैसकमे सदस्यताक रूपमे अपन नव रचना लऽ किशोर, तरुण, युवक, बृद्ध सभक संगम होइत छल । कुलपति मदनेश्वर मिश्र पूर्ण रुचि लैत छलाह । सम्प्रति ऋचालोककेँ लोक परिहासमे 'घिचालोक' कहैत छैक, स्थिति तेहने छैक ।

Scanned by CamScanner

अध्यक्ष दिवंगत भऽ गेलाह, श्री शिवाकान्त पाठक सेवा निवृत्त भऽ गेलाह, श्रीअमलेन्दु शेखर पाठक दैनिक जागरण तथा आकाशवाणी, दरभंगाक उद्घोषणामे अस्त व्यस्त रहैत छथि। हँऽ डॉ. श्रीविद्याधर मिश्र स्वयं श्रीअमलेन्दु, श्रीधरम, श्रीअविनाश, श्रीकैलास प्रसाद आदि एहि ऋचालोकक निर्विवाद उपज थिकाह । 'धूप-दीप', 'ध्वंस पर्व', 'मोलायम पाथर' आदि कविता संकलन एकर उपलब्धि थिकैक। विशेष बात ई जे श्रीधरम आ श्रीअविनाश साहित्यक फुनगीपर पहुँचि गेल छथि, दिल्लीमे डंका पर चोट दऽ रहल छथि। हमरा साहित्य अकादेमी गेला पर श्रीअनिल मिश्र जे सम्प्रति मैथिली-भोजपुरी अकादेमी दिल्लीक उपाध्यक्ष पद पर छथि, ईहो हमर छात्र रहल छथि, हमर स्वागतार्थ एक गोष्ठी आयोजित कयने रहथि ओहीमे फराकेसँ श्रीधरम केर दर्शन सँ नयन जुड़ौने रही। एतेक उच्च पदस्थ साहित्यकार हमरा सन अदना मातृभाषा सेवीसँ की शिष्टाचार करितथि ?

विद्यापति सेवा संस्थान–

एहि संस्थानमे एखन धरि अध्यक्ष रूपमे आचार्य सुमनक देहावसानक बाद हमरे नाम चलैत अछि। पहिनहि कहि चुकल छी जे कीटोऽपि सुमनः संगात् आरोहति सतां शिरः। ई संस्था साहित्यिक क्रिया कलापकेँ तेसर स्थानपर रखने अछि। एकर महासचिव डॉ. श्रीवैद्यनाथ चौधरी प्रसिद्ध 'बैजू' एक जुझारू मातृभाषा सेवीकेँ हम एहि रूपमे गणना करैत छियनि। हिनका प्रसंग पहिनहु कहि चुकल छी। आरम्भेमे हम हिनका मिथिलाक सुभाषघिसिंग कहने छियनि। हिनके संघर्षक फल थीक जे आइ दरभंगामे रेलगाड़ीपर बैसैत छी आ बम्बइ, पूना, दिल्ली, अमृतसर, कलकत्ता पहुँचि जाइत छी। सुविधाक उपभोग आपामर जनता कऽ रहल अछि, किन्तु दरभंगा धरि बड़ी लाइन अनबामे मारि सबसँ बेसी यैह खयने छथि। हिनक दोसर अवदान अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक चिरवांछित ओ चिर प्रतीक्षित प्रवेश थीक। ई अवदान हिनका मैथिली भाषाक इतिहासमे अमर बनाय देने छनि। हमरे भाग्यमे छल, तेँ हमरे नामेँ लॉटरी फूजल आ हमरे अध्यक्षता कालमे ई उपलब्धि भेटलैक से भिन्न बात, वस्तुतः एहिमे हमर कोनो विशेष योगदान नहि अछि। श्री बैजू सेहो हमरा गुरुदेव कहैत छथि। ध्यान रहय जेना शपथ खयबाक हेतु बहुतोकेँ जनउ सुलभ बुझाइत छैक तहिना शपथ खयबा लै बहुतो गोटे गुरु केँ सेहो मानैत छथि।

संस्कृत भारती

कहिचुकल छी जे अनुशासन पालन ओ समयनिष्ठाताक प्रवृत्ति जे हमरा जीवनमे आबि सकल ताहिमे मुख्यकारक तत्त्व रहल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघक शाखा। हमरा ई कहैत कनेको दोच नहि भऽ रहल अछि जे भारतीय संस्कार, संस्कृति, धर्म, कला, जीवन-पद्धति, कर्मकाण्ड, धार्मिक ग्रन्थ आदि-आदि एखन धरि जतवा अंश बाँचल अछि तकर संरक्षण मात्र दू गोट संस्था कऽ रहल अछि-राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ तथा गीताप्रेस

Scanned by CamScanner

गोरखपुर। यद्यपि पाश्चात्य जीवनपद्धति स्वीकार करबाक हेतु देशमे जेहन प्रचण्ड बिहाड़ि बहि रहल अछि जे कहल नहि जाय सकैछ जे ईहो दूनू संस्था कतेक दिन प्रतिरोधमे ठाढ़ रहि सकत। तथापि संघ कोनो मोर्चाकेँ छोड़ने नहि अछि। एकर शखा-प्रशाखाक प्रसार विद्याभारती, संस्कृत भारती, संस्कार भारती सेवा भारती, विज्ञान भारती आदि विभिन्न नामसँ समाजकेँ भारतीय जीवन मूल्यसँ जोड़ि कऽ रखबाक अथक प्रयास मे लागल अछि। एहिमे सँ दू गोट प्रशाखासँ हम संपृक्त रहलहुँ।

संस्कृत सन शुद्ध, सरल, सुगम, पुच्छ विषाण रहित पशु समान उत्पन्न मनुष्य सन जन्तुकेँ सम्पूर्ण मनुष्य बनयबामे समर्थ संस्कृत भाषा, संसारक प्रचीनतम ज्ञान-विज्ञानक भण्डार रहितहु अपने जन्मभूमिमे उपेक्षित उपहासक विषय बनल अछि। ज्ञानलव दुर्विदग्ध जन संस्कृतकेँ कूपमण्डूक बुझिते नहि कहितो छथिन, किन्तु संस्कृत भारती एहि संस्कृतकेँ पारस्परिक सम्भाषणक भाषा बनयबा लै सम्भाषण शिविर लगबैत अछि, अभ्यासवर्गक व्यवस्था करैत अछि। दरभंगामे श्री रत्नमोहन नामक एक प्रशिक्षक अयलाह। हमरा सम्पर्क भेल, एहन सहस्रशः प्रशिक्षक सम्पूर्ण भारत मे पसरल छथि आ साधना कऽ रहल छथि। हँऽ साधना कऽ रहल छथि, कारण एहिकार्यमे लागल व्यक्तिकेँ जीवन-यापन हेतु कोनो मानदेय नहि भेटैत छनि। जाहि ठाम कार्यरत रहैत छथि ताहि ठामक किछु सम्भ्रान्त परिवारक लोक भोजनक व्यवस्था करैत छथिन। मान-अपमानक भेद नहि राखि विभिन्न सातगोटेक ओहि ठाम सातो दिन भोजन करैत संस्कृत सम्भाषण शिविर चलबैत रहैत छथि। स्वयं संस्कृत छोड़ि आन भाषा नहि बजैत छथि। एहि संसर्गमे अयलापर संस्कृतमे भाषण करबाक क्षमता तँ नहि किन्तु सम्भाषणमे किछु प्रगति अवश्य भेल। रत्नमोहन आब डॉ. श्री रत्नमोहन झा भऽ राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानमे प्राध्यापक छथि। हिनकर बाद श्री राघवजी नामक प्रशिक्षक अयलाह। हुनको हमरासँ सम्पर्क रहलनि। ओ काशी हिन्दू विश्वविद्यालयसँ स्नातकोत्तर परीक्षामे सर्वोच्च स्थान प्राप्त कयलनि। सम्प्रति की करैत छथि, कतय छथि से ज्ञात नहि अछि। एहन-एहन रत्नकेँ समाजमे उदित होइत देखि मनमे आशाक संचार होइत अछि।

एहि संस्कृत भारतीक महासचिव प. श्रीचमूकृष्ण शास्त्री एक बेर दरभंगा आयल छलाह। देवीदत पोद्दारक सौजन्य सँ महात्मा गान्धी महाविद्यालयमे हुनक संस्कृत भाषण सुनबाक सुअवसर भेटल छल। झंझावात जकाँ ओजोमय संस्कृत वाणीक वर्षा दोसर ठाम सुनबाक सेहन्ता एखनहु लगले अछि।

संस्कार भारती

स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद देशक कोनो क्षेत्र बाँचल नहि अछि जाहिमे आधुनिकता तथा प्रगतिशीलताक नामपर विकृति नहि आयल हो। संगीतक प्रति भारतीय मान्यता रहल अछि सद्यः प्रीतिकरो रागः। संगीत स्वर कानमे पड़ल, सहसा चित्त ओहि दिस आकृष्ट

Scanned by CamScanner

भऽ गेल ई थिकैक संगीतक प्रभाव । अपना देशमे संगीत एक शास्त्र मानल जाइत अछि । एकरा शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, सुगम आ लोकगीत आदि अनेक श्रेणीमे बाँटल गेल छैक । कहल जाइत छैक जे एहन मनुष्य एहि भूमिपर नहि भेटत जकरा गुनगुनायब आ कानय नहि अबैत होइक । भारतीय संगीत तँ समय आ मास (ऋतु) पर्यन्तक निर्द्धारण कयने अछि । ते ँ कहल जाइत छैक 'साँझ पराती भोर वसन्त, तखने बुझल बुडित्वक अन्त' भारतीय मनीषा कोनो विषय एहन नहि अछि जकर तात्त्विक विवेचन-विशेषणकऽ तकर चरम परिणति पर नहि पहुँचल हो । कनेक अश्लीलता छैक, तथापि जीजाँतिकऽ उद्धृत करब अपेक्षित भऽ गेल । हमरा गाममे छलाह एक व्यक्ति सीताराम बाबू हुनके मुहे ँ सुनल अछि-'अपन बहु पदनी, अनकर बहु पद्मिनी, ठीक तहिना स्वतन्त्र भारतमे जन्म लेनिहारमे अधिकांश लोकके ँ भारतीयता विकृत आ विदेशी सब वस्तु परिष्कृत प्रतीत होइत छैक । फलतः योग तिरस्कृत, रोग पुरस्कृत भऽ रहल अछि ।

एहने स्थिति चित्रकलामे देखल जाइछ । चित्र आब विचित्र भऽ गेल अछि । देखैत छिऐक, किछु बोध नहि होइत अछि तँ अपन अज्ञान पर अपने खौंझ उठैत अछि । चित्रके ँ देखिकऽ हँसू अथवा कानू से किछु नहि बुझाइत अछि । ककरो एहि प्रसंग पुछियौकतँ समक्षमे नहिओ, परोक्षमे अलबौकक टाड़ी विशेषणसँ अलंकृत करत ।

कविताक स्थिति यैह अछि जे विद्यापति, गोविन्द दास, लक्ष्मीनाथ गोसाँइ, कबीर, सूर तुलसी, मोरा, रहीम, रसखान, विहारी आदिक पद्य शताब्दी बितलाक बादो जनकण्ठक हार बनल अछि, आधुनिकतावादी लोकनिक पद अपनो कण्ठमे समाय लै प्रस्तुत नहि रहैत छनि ।

एही विकृति सभक परिहार हेतु संस्कार भारती अनवरत संघर्षशील अछि । अन्तिम प्रतिफल तँ भविष्यक गर्भमे छैक । बेसी आशान्वित नहि छी ।

दरभंगाक शृंगार गोशाला

कखनहु ध्वंस सेहो भविष्यक सुखद निर्माणक संकेत सिद्ध होइत अछि । 1934क ओ कहियो नहि बिसरय बला भूकम्प जहि प्रसंग राजपण्डित बलदेव मिश्र । रचित पद-

सीतामढ़ी, जनकपुर, बेतिया, मोतिहारी नगरी ?
जीर्ण-शीर्ण मधुबनी भेल पुनि दरभंगा सगरी

दरभंगाक ध्वंसक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि । निश्चित रूपसँ कहल जाय सकैछ जे यदि ओहन विनाशकारी भूकम्प नहि भेल रहैत तँ दरभंगा नगरक जे विकसित स्वरूप आइ हम सब देखि रहल छी, होइत वा नहि निश्चत नहि कहल जाय सकैत छल ।

Scanned by CamScanner

महाराधिराज कामेश्वर सिंह ताहिसँ मात्र 5 वर्ष पूर्व दरभंगाक राजगद्दी पर आसीन भेल छलाह । मात्र 27 वर्षक वयस छलनि । पिता द्वारा अर्जित ताहि दिनुक उनतीस करोड़ टाका बैंकमे जमा छलनि । सम्पत्तिक अनुमान तँ एहीसँ लगाओल जाय सकैछ जे 1962क चीनी आक्रमणक सन्दर्भमे राष्ट्र रक्षाक हेतु एगारह मन सोना चाउर-दालि जकाँ तराजू पर तौलि कऽ भारत सरकार केँ राज दरभंगा द्वारा देल गेल छलैक । जे सोना आइ काल्हि सत्रह-अठारह हजार रु. मे दस ग्राम भेटि रहल छैक । सन्त बिनोबाकेँ भूदान यज्ञमे एक लाख बीघा भूमि देल गेल छलनि । एहन ऐश्वर्यवान आ आधुनिक दृष्टि सम्पन्न, अपन उठन्त वयसमे नगरकेँ विकसित करबाक इच्छा रहलो होयतनि, किन्तु हिन्दीमे एक टा लोकोक्ति छैक 'चोरों ने किया हमारा काम' से भूकम्प अनेरे सम्पूर्ण नगरक पुरान भवन सबकेँ भूमिसात् कऽ एकर पुनर्निमार्णक बाट प्रशस्त कऽ देलकनि । नगरक नवनिर्माण राज दरभंगाक परिसर मे जे विशाल भवनसँ लऽ छोट-छोट क्वाटर सब बनल, दरभंगाक टावर, गोलबाजार, जाहिमे अन्न-वस्त्र, फल-फूल अन्यान्य जीवनोपयोगी वस्तुतँ कहियो नहि बिकायल । हँऽ एखन शिक्षण संस्थानक पूर्ति कऽ रहल अछि । ई सब अपन स्थान पर रहओ । दू गोट संस्था एहि नगरक शृंगारक थीक, हम एकरा सैह बुझैत छी । ताहिमे पहिल थीक गोशाला ।

ओना भूकम्पसँ पहिने कतय छल से हमरा ज्ञात नहि । एकर एकशाखा गंगवाड़ामे एखनहु छैक । अनुमान करैत छी पहिने मुख्यालय ओतहि छल होयतैक जे नगर सँ सटले छैक । भूकम्पक बाद नगरक नव कायाकल्प होअय लगलैक तँ एकरा मिर्जापुरमे स्थानान्तरित कऽ देल गेलैक । एक समय छलैक जहिया गोपाष्टमीक अवसर पर विशाल आयोजन होइत छलैक । ओहिमे मिथिलेश, राजा बहादुर विश्वेश्वर सिंह, हुनक भागिन कन्हैयाजी लोकनि निश्चित रूपसँ आबि गो पूजन करैत छलाह । छात्रवस्थामे बंगालक क्रेष्टोबाबूक यात्रा पाटीक दल अबैत छलैक आ सप्ताह भरि प्रदर्शन होइक । हजारक हजार दर्शकसँ परिसर भरल रहैत छलैक । देशक विख्यात सन्तलोकनि यथा राधेश्याम कथावाचक, बिन्दुजी महाराज, बच्चू सूर आदिक आगमन आ संगीत सम्पुटित प्रवचन होइक । गोपालनक प्रतिस्पर्द्धा होइत छलैक । नगरक चारू भागक दूर-दूर धरिक गाय पोसनिहार गृहस्थ लोकनि अपन-अपन गाय-बच्छा-बाछीक शृंगार पटार कऽ प्रदर्शनीमे अनैत छलाह । सबसँ नीक पोसल गायकेँ प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार भेटैक । गाय पोसबाक प्रवृत्ति केँ प्रोत्साहन होइक । ओ सब अपना आँखिसँ देखल, अपन कानसँ सूनल अछि ।

बाल्यकालमे एहि सबमे बहुत रुचि रहय । बिन्दुजी महाराजक सुकण्ठसँ हुनक अपन रचल गीत सूनि आनन्द विभोर भऽ जाइ । बिन्दुजीक विशेषता रहनि जे ओ ध्वनि विस्तारक यन्त्र (लाउडस्पीकर) पर नहि बाजथि तैयो पाँच-सात हजारक उपस्थिति लोककेँ सुनबामे असुविधा नहि होइक । बच्चू सूर श्रुतधर रहथि । एकबेर जे वाक्य सूनि लितथि से हुनक स्मृति पटल पर अमिट भऽ जाइनि । जन्मान्ध रहथि । ताबत धरि ब्रेल

Scanned by CamScanner

लिपिक आविष्कार नहि भेल रहैक तथापि अपन मेधाशक्तिक प्रसादेँ कोनो सुयोग्य व्यक्तिसँ रामायण, श्रीमद् भगवद्गीता, श्रीमद् भागवत आदि अनेक धार्मिक ग्रन्थ पढ़बाय तकरा एकाग्रचितसँ सूनि कण्ठस्थ कऽ लेने छलाह । अपने जन्मान्ध रहथि, तेँ सूरदासक सम्पूर्ण रचनासँ कोनो एक पदकेँ प्रतीक मानि ओहि पर आधारित प्रवचन करैत वेद-पुराण-उपनिषद सभक उद्धरण दैत प्रतीक पदक एहन विशद ओ सुस्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत करथि जकर आनन्दमे निरक्षरो श्रोता डुबकी लगबैत आदिसँ अन्त धरि बन्हायल बैसल रहि जाय । अपन किशोरावस्थामे दू तीन बेर हुनक प्रवचन सुनबाक अवसर भेटल छल ।

बच्चूसूर शतावधानी रहथि, एक सय व्यक्ति क्रमशः हुनकासँ प्रश्न करनि आ संख्याक अनुक्रमसँ सभक उत्तर बच्चू सूर करैत छलथिन । विलक्षणता ई रहनि जे ओ प्रश्न कर्त्ताकेँ उत्तर देबासँ पहिने पुछथिन-आपके प्रशन का उत्तर गद्यमे दूँ या पद्यमें ? सूनल नहि, देखल कहि रहल छी एक व्यक्ति समस्यापूर्ति लै कहलकनि-

भैंस की सींग पै गदहा नाचे

सूरजी तुरन्त कहलथिन-बड़ी कृपा है मुझ पर आपकी । ऐसा श्रोता जीवनमे दूसरा नहि मिला । ऐसा सरल सवाल करने वाले आपका पहले मैं अभिनन्दन करता हूँ, साधुवाद देता हूँ । आपका सवाल है भैंस की सींग पर गदहा नाचे ।

अनहोनी भी सच हो सकती गर बगुला रामायण बाँचे
आप बजायें ढोलक, जमकर भैंस की सींग पर गदहा नाचे

उपस्थित श्रोता पाँच मिनट धरि थपड़ी बजबैत रहल, प्रशनकर्त्ताक अपन सन मुँह भऽ गेलनि । हमरा प्रवचनक क्रममे हुनक अगाध पाण्डित्य आ एहन प्रत्युत्पन्नमतित्व देखि मनमे भेल जे हिनके संग रहि सकितहुँ तँ कतेक नीक होइत । एही गोशाला प्रांगणमे ओ आयोजन भेल रहैक । यद्यपि ताहि समय धरि कविता तविता करबाक कोनो प्रवृत्ति नहि भेल छल । आइ आत्म-विशलेषण करैत छी तँ प्रतीत होइत अछि जे प्रायः अवचेतन मनक कोनो कोनमे नुकायल नैसर्गिक कवित्व प्रतिभा अवश्य छल जे हुनका संग चल जयबाक हेतु उत्प्रेरित कयने होयत जे बादमे आबिकऽ प्रस्फुटित भेल ।

दरभंगानगरक शृंगार तँ छले, बिहारक गौरव सेहो छल । किन्तु राज दरभंगाक पतनक बाद एकर ह्रास सेहो चरम पर पहुँचि गेलैक । लहेरियासरामे जीविका रहितो एतहि घर बनयबाक आकर्षण एकटा इहो छल जे मिश्रटोलासँ सटले शुद्ध दूध उपलब्ध होयत । एहि गोशालेकेँ अकूत सम्पत्ति छलैक, से बहुत अंश एकर संचालक लोकनिक लोभ कही, बैमानीक बुद्धि कही बिड़हा गलैक । स्थिति एहन भऽ गेलैक नामटा रहि गेलैक गोशाला किन्तु एकटा बाछी पर्यन्त नहि रहलैक । एक प्रबुद्ध समाज सेवी छलाह यमुना चौधरी, ओ बिहार सरकारक पशुपालन विभागमे कार्यरत रहथि । पंचगव्य पर विशेष

Scanned by CamScanner

अध्ययन करबाक हेतु बिहार सरकार हुनका स्विटजरलैण्ड पठौने छलनि । घुरला पर बिहार पिजड़ा पोलक पदाधिकारीक पद पर स्थापित भेलाह । सेवा निवृत्तिक बाद मनमे बहुत किछु मनसूवा लऽ दरभंगा अयलाह जे पंचगव्य चिकित्सा केन्द्रक स्थापना एहि गोशालामे करब आ निःशुल्क सेवा दऽ समाजमे गव्य चिकित्साक प्रचार-प्रसारक संग गोवंशक संवर्द्धन हेतु काज करब । किन्तु एतय अयलापर 'ने ओ देवी, ने ओ कराह एकर दुर्दशाक मूल कारणक अन्वेषण आ तकर निराकरण करबालै नगरक किछु गोटेसँ एक-एक सय टाका सदस्यता शुल्क लऽ एक समिति बनौलनि ताहिमे संग देलथिन संस्कृतक प्रोफेसर डॉ. श्रीजयशंकर झाजी । ई धर्मनिष्ठ समाज सेवी छथि धर्म कार्यमे बहुत रुचि रहैत छनि । नियमित रूपेँ गीता जयन्तीक भव्य आयोजन करैत छथि ।

गोशालाक हेतु नव-नव सदस्य सभक बैसाड़ कयलनि । सुसंयोगसँ हमरो ओहिमे सम्मिलित होयबाक अवसर भेटल । गोशालाकेँ दुर्दशासँ त्राण देअयबाक हेतु समिति संघटित होयत तकर नामकरण पहिने गोशाला निर्माण समिति प्रस्ताव रखलनि हम गोशाला पुनरुद्धार समिति रखबाक विचार उपस्थित कयल जे सर्व सम्मति सँ स्वीकार्य भेल । समिति क्रियाशील भेल । तेहन-तेहन अजोद्ध करव्याध सभक मुँहमे पड़ल छल जे अनेक वर्ष धरि बेचारे यमुना चौधरी उच्चन्यायालय आ पशुपालन विभागक चक्कर कटैत, दौड़ लगबैत चौधरीजी दिवंगत भऽ गेलाह । पहिने हम ओहि महान आत्माक प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करैत आगाँ बढ़ैत छी । तदुत्तर डॉ. श्रीजयशंकर झाजी बीड़ा उठौलनि । बिहार मे जखन राजग सरकार सत्तासीन भेल तखन एहू अभगलीक दिन फिरलैक अछि । गोशालाक पुनरुद्धार भेलैक अछि । जतय एक चोत गायक गोबर दुर्लभ भऽ गेल छलैक ततय पुनः किछु लगहरि गाय सब सेहो अयलैक अछि । गाड़ी पटरी पर आबि गेलैक । गीतागायक गोपालक भगवान श्रीकृष्णचन्द्रसँ प्रार्थना करैत छयनि जे श्री जयशंकर झाजीक साधनाकेँ सफल करथुन जाहिसँ दिवंगत यमुना चौधरीक स्वप्न साकार होइनि । पंचगव्य चिकित्सा केन्द्र बनि सकय । गोवंशक क्षरणसँ भारतीय कृषि व्यवस्थामे जे संकट उपस्थित भऽ रहल अछि तकर अन्त भऽ सकय, दरभंगाक एहि शृंगारमे चमक आबय, धमक आबय आ देश, समाज ओहिसँ लाभान्वित होअय । गो ग्राससँ अनुचित लाभ लेनिहार लोकनिकेँ भगवान सद्बुद्धि देथुन ।

कामेश्वरीप्रिया पूअरहोम

दोसर संस्था थीक कामेश्वरी प्रिया पूअर होम । एहू संस्थाक जन्मक कारण एक अति दुखद घटनाक फलस्वरूप भेलैक । महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक धर्मपत्नी श्रीमती राजलक्ष्मी मीराबाइ जकाँ आजीवन उपेक्षिता रहलीह । मीरे जकाँ श्रीकृष्णक आराधना करैत पर्याप्त गीतक रचना कऽ मनकेँ शान्त रखने रहलीह । हमर पिताजी एकटा सन्तति राजलक्ष्मीजीकेँ भऽ जाइनि से सतत कामना करैत रहैत छलथिन । महाराजकेँ

Scanned by CamScanner

दोसर पत्नी कामेश्वरी प्रियाक असमय निधन भऽ गेलाक कारणेँ बहुत पैघ आघात भेलनि। राजमाता जीबैत छलथिन, राजरानी चल गेलथिन। ओहि शोकसागरसँ सन्तरण हेतु महाराज कामेश्वरी प्रिया पूअर होमक स्थापना कयलनि।

ई संस्था अनेक प्रकारक चिकित्सासँ साधनहीन, धनहीन, नेत्रहीन लोकक सहायता करैत अछि, ताहूमे सबसँ अधिक आँखिक रोगक चिकित्साक हेतु एहि संस्थाक ख्याति छैक।

विश्वविख्यात नेत्ररोग विशेषज्ञ डॉ. पहबाक सहयोगसँ एहि क्षेत्रमे ई संस्था प्रतिवर्ष सबसँ पहिने नेत्रदान यज्ञ आरम्भ कयलक। अपन-जन्मकालसँ आइ धरि एहि संस्थाक माध्यमसँ लक्षाधिक लोक लाभान्वित भेल होयत। जहियासँ नेत्रदान यज्ञ आरम्भ होइत छलैक, एक प्रकारक उत्सवक वातावरण बनि जाइक। पूअर होमक देखादेखी आब अनेक ठाम एहि प्रकारक आयोजन होयबाक समाचार सब समाचारपत्र सबमे पढ़ैत रहैत छी। श्रीरमेन्द्र नारायण चौधरीक कार्यकालमे एहि संस्थाकेँ अनेक पुरस्कार सेहो भेटलैक, विदेशसँ सेहो अनेक यन्त्र आदि अनुदानमे अबैत रहैत छैक। सबसँ पैघ अवदान एहि संस्थाक ई छैक जे आँखि सन अनमोल अंगक चिकिल्सा जे निर्धन व्यक्तिक सामर्थ्यसँ बाहर छैक, ताहि सब व्यक्तिकेँ चश्मा सेहो मङनीये मे भेटैत रहलैक अछि। एहि प्रकारेँ ई संस्था एहि नगरक हमरा जनैत शृंगार थीक।

एही परिसरमे प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र, होमियोपैथी चिकित्सा केन्द्र, अन्धविद्यालय सब चलि रहल छैक। एहि संस्थाक प्रसादेँ कतेको व्यक्तिक रोजगार चलैत छैक। आँखि दाँत आदिसँ सम्बद्ध अनेक दवाइ, चश्मा, दाँत बनौनिहार आदिक दोकान छैक। जलपान, चाह, पान, तमाकू आदिक दोकान छैक जाहिसँ बाहरसँ चिकित्सा करयबाक हेतु आयल लोककेँ आन ठाम बौआय नहि पड़ैत छैक। एही परिसरमे एक पब्लिक स्कूल चलैत छैक। छोटसन खेलक मैदान छैक। समय-समय पर छोट सन समितिक बैसाड़क सुविधा निःशुल्क प्राप्त होइत छैक। एकर अवस्थिति रेलवे स्टेशनक समीप रहलासँ लोककेँ आरो सुविधा रहैत छैक।

व्यक्ति आ पदक दृष्टिसँ अति लघु होइतो हमर आयाम बहुत विस्तृत रहल। सबकेँ एहिमे समेटि सकबामे अपनाकेँ अक्षम पाबि रहल छी। एक लघु लोककथा मन पड़ल। एक व्यक्तिक ओतय कोनो अलबटाह पाहुन अयलथिन जे जीवनमे कटहर खयबाक कोन कथा, देखनहु ने रहथिन। पाहुनक समक्षेमे घरबैयाकेँ अपना गाछसँ एकटा पैघ, एकटा छोट पाकल कटहर अयलनि। हुनका ओकर गमक अभिभूत कऽ देलकनि। पाहुनकेँ कवर्गक स्थान पर टवर्गक उच्चारण होइत छलनि। पूछि बैसलथिन- ई टी ठीक ? (ई की थीक) डम डम टरैए। घरबैया ओ छोटका कटहर सोझाँमे राखि कहलथिन- फाँड़िकऽ खाउ तँ बूझि जयबैक। ओ फाँड़िकऽ कमरी खाय लगलाह।

Scanned by CamScanner

घरबैया ओहिमे 'को' (कोआ) देखबैत कहलथिन– कमरी नहि, को खाउ । पाहुन ताबत किछु कमरी नोचि खा चुकल छलथिन, को सेहो खयलनि । तखन बाजि उठलथिन– टमरी ठाइ छी सेहो मिट्ठ, टो ठाइ छी टो ओ मिट्ठ, टी ठाउ आ टी नड़ाउ से टिछु फुरबे ने टरैए ।

हमर स्थिति ओही पाहुन सन अछि । कनिकर चर्चा करू आ कनिकर नहि । ई स्पष्टीकरण दैत एतबे कहब जे जनिकर चर्चा व्यक्तिगम रूपेँ नहि कऽ सकलियनि अछि सेहो हमर स्मृतिपटलपर अंकित छथिहे । किछु खास व्यक्तिक चर्चा करैत छी ।

रामकृष्णझा 'किसुन'सँ नाटकीय परिचय

1946 क प्राय: पूजाक अवकाश छलैक । पं. रामकृष्ण झा 'किसुन' ओहि समय विलियम्स उच्चमाध्यमिक विद्यालयमे अध्यापक छलाह । मैथिली साहित्य परिषद द्वारा संचालित परीक्षामे भाग लेबाक हेतु दरभंगा आयल छलाह । हमर आवास महारानी अधिरानी रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालयसँ व्याकरणचार्य कऽ साहित्य पढ़ि रहल छलहुँ तेँ महाविद्यालयक छात्रावासमे छल । छात्रावस्थेमे हम मैथिली साहित्य परिषदक उपमन्त्री निर्वाचित भेल छलहुँ । डॉ. सुभद्रझाजी फ्रांस चल गेल छलाह, तेँ महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाजी परीक्षा मन्त्रीक भार वहन कऽ रहल छलाह । दरभंगाक परीक्षा केन्द्रक केन्द्राधीक्षक हमरे बनाओल गेल छल ।

पूजावकाश रहलाक कारणेँ सब छात्र गाम चल गेल रहथि । परीक्षा संचालित करबाक हेतु एक मात्र हम छात्रावासमे रहि गेल छलहुँ । स्वभाव आ संस्कारवश भिनसरे अण्डरवीयर आ अधकट्टी गंजी पहिरने झाड़ू दऽ रहल छलहुँ । ई काज आजीवन करैत अयलहुँ अछि, एखनहु करैत छी । सहसा एक गोरनार, दीप्त मुख मण्डल, कारी भौर केश, सिन्दूर तिलकित भाल, पानसँ रङल ठोर, जर्दाक सुगन्धसँ गमगम करैत श्वास, मटकाक कुर्त्तामे चमचम करैत शरीर एक व्यक्ति अबिते कहलनि– एजी सुनते हो ? मुझे मिथिला मिहिरके सम्पादक सुरेन्द्र झा 'सुमन' ने भेजा है । इस विद्यालयमे एक परीक्षा होने वाली है । मैं वही परीक्षा देने आया हूँ । तीन–चार दिन ठहरना है । मुझे ठहरने के लिए जगह मिलेगी ?

हुनक दीप्त मुखमण्डल प्रथमे दृष्टिपातमे आकर्षित कऽ लेलक । हमरा ईहो बुझबामे भाङठ नहि रहल जे हमर वेष–भूषा देखि हिनका हमरा प्रसंग छात्रावासक टहलू होयबाक भ्रम भेलनि अछि । हमरा कुतूहल सूझल । कहलियनि– एँह् सरकार ! जगहक कोन कमी छैक । अहाँके की नाँ भेल आ कहाँसँ अयलहुँहेँ ? हुनक उत्तर छल– रामकृष्णझा 'किसुन' नाम है और सुपौल से आया हूँ । किसुनजी सुमनजीक टेल्हकेँ पेटी

Scanned by CamScanner

आ ओछाओनवला मोटा राखि देबय कहलथिन । ओ मोटा राखि चल गेल । हम कहलियनि- हम अपनेकेँ एकटा कोठलीए दऽ दैत छी । ओ कहलनि - मुझे तीन-चार दिन लगेंगे । मेरा छोटा-मोटा काम होगा सो भी कर दोगे तो जाते समय तुझे खुश कर दूँगा । हम अत्यन्त अन्तरंग मित्र तन्त्रनाथ मिश्र प्रसिद्ध छीतनबाबूक कोठली फोलि देलियनि, ओकरा झाड़ि-बढ़ारि होलडॉल उठाय चौकीपर रखैत हुनकर आज्ञा लऽ फोलि कऽ पसारि देलियनि । स्नान करबा लै बाल्टीमे पानि भरि, धोती खीचि, पसारि, लगेमे हलुआइ दोकान छलैक, पूरी जिलेबी जलपान लै आनि देलियनि । जलपान कऽ जाइत काल कहलनि- सूख जानेपर धोती रख देना । मैं कभी आ सकता हूँ । 2 बजेसँ परीक्षा छलैक । केन्द्रमे व्यवस्था करबा लै उत्तर पुस्तिका, प्रश्नपत्र आदि लऽ केन्द्रपर चल गेलहुँ । प्रो. आनन्दमिश्र, कामेश्वरझा 'कुसुम' आदि सेहो अत्तमाक परीक्षार्थी रहथि । हम ताबत धरि 'चश्माक आत्मकथा' कविता लिखि कऽ लोकप्रियता प्राप्त कयने छलहुँ, चश्मा लगयबाक प्रयोजन नहि भेल छल । उत्तर पुस्तिका वितरित करैत किसुनजीक सीट लग पहुँचलहुँ, ओ चकुआइत हमरा आकृतिसँ छात्रावासमे टहल टिकोरा कयनिहारक आकृति मिलाबथि आ घबड़ायल जाथि । परीक्षा दऽकऽ प्राय: सुमनजीक डेरापर चल गेलाह से एक घंटापर घुरलाह । हम अपन कोठलीमे बैसि उत्तरपुस्तिका सबकेँ सील कऽ रहल छलहुँ ।

किसुनजी कोठलीक मुँहथरिपर आबि धखाइत बजलाह- हम भीतर आबि सकैत छी ? ध्यातव्य जे एहिसँ पहिने हमरा मैथिलीमे हुनका बातक उत्तर देलो पर हिन्दीएमे गप्प करैत छलाह, एहिबेर पहिले पहिल मैथिलीमे बाजल छलाह । हम कहलियनि- आउ, अवश्य आउ । भीतर आबि कहलनि- हमरासँ आइ बड़ भारी गलती भए गेलैक, हम अपनेकेँ नहि चीन्हि सकलहुँ, तेँ ई भयंकर अपराध भए गेलैक । हम कहलियनि- अपने-तपने किछु नहि, पहिल सम्बोधन कयलह 'तुम' आब ओहिमे कोनो परिवर्तन नहि होयबाक चाही । हमरा ई कहबाक आधार छल । हम मिथिलामिहिरक नियमित पाठक छलहुँ आ मिहिरमे हिनक हिन्दी आ मैथिलीओमे कविता छपैत रहैत छलनि तेँ नामसँ पूर्ण परिचित छलहुँ । हम हुनक दूनू पाँखुड़ पकड़ि अपन चौकीपर बैसाय लेलियनि । वस्तुत: ओहि दिन हमर चौकीपर नहि, अपितु हृदयक आसनपर बैसि रहलाह से आजीवन बैसले रहलाह, कतेक हुनक बाँहि हम पुरलियनि आ कतेक हमर बाँहि ओ पुरलनि तकर गणना नहि भऽ सकैछ । हुनक देहावसानक बादो ओ स्थान आइ धरि आक्रान्त अछिए । परीक्षाक दिन भेल अपराधक मार्जन हेतु जखन हिन्दीक पहिल कविता संग्रह 'आओ गायें' प्रकाशित करय लगलाह तँ ओकर भूमिका हमरासँ लिखबौलनि जे हमर पहिल भूमिका छल । हुनक देहावसानसँ हमर एकटा डेन टूटि गेल । पूर्वांचलमे बढ़ैत मैथिली आन्दोलन ठमकि गेल, ताहिमे गति अननिहार ओहन दक्ष पुरुष दोसर नहि भेलाह ।

Scanned by CamScanner

एक नहि, अनेक मंचपर, एक बेर नहि, शताधिक बेर हिन्दी–मैथिली कार्यक्रममे दूनू गोटे एकत्र भेल होयब । मैथिली साहित्य परिषद हो अथवा विद्यापति स्मृति पर्व, बिहार माध्यमिक विद्यालय शिक्षक संघ हो वा बिहार प्रान्तीय पुस्तकालय संघ, बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन हो वा तुलसी जयन्ती, मैथिलीक विकासक प्रश्न हो वा संस्कृत संरक्षणक, सर्वत्र दूनू गोटे एक संग आ एकमत रहलहुँ । सहर्षा जिलाक साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक संघटनक किसुनजी प्राण छलथिन । पहिल परिचयक बाद पत्राचार द्वारा दूनू गोटेक सम्बन्ध दृढ़सँ दृढ़तर होइत गेल । हमर बड़का भाइ ओ छलाह, हुनक बड़का भाइ हम छलियनि । एहन व्यावहारिकतामे पटु लोक हमरा जीवनमे दोसर क्यौ नहि भेटलाह ।

हमरा दूनू गोटेक व्यक्तिगत सम्बन्धमे एक गोट मनोरंजक घटना घटित भेल, तकरो उल्लेख अप्रासंगिक नहि होयत । 23 अप्रैल 1967 क मिथिला मिहिरमे एकटा कविता किसुनजीक छपलनि, शीर्षक रहैक 'निवेदित' । कविताक स्वरूप छलैक–

हम की करू ?
हमर प्रेम फोटोक ओ फ्रेम तँ नहि थिक
जे फोटोक पुरान भऽ गेलापर, वर्षाक टघारसँ,
दिबाड़ वा उचरिनक चटलासँ
दूरि भेल फोटोकेँ हटा कऽ
दोसरमे फिट कऽ देल जाइत अछि ।
हम की करू ?
हमर प्रेम पिकासोक कलाकृति तँ नहि थीक
जे संरचनाक प्रक्रियासँ रूपायित होइत अछि
आरम्भिक क्षणसँ 'फिनिशिंग टच' धरि
नियोजित यथार्थकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि ।
हम की करू ?
हमर प्रेम कोनो एहन वस्तु नहि थिक
जे हम कीनि कऽ, पौरि कऽ ओरिया कऽ
भारमे साँठि दी, बेनमे पठा दी
की उपहारमे अर्पित कऽ नैवेद्य जकाँ उत्सर्गि दी ।
हम की करू ?
हम स्वयं नहि निश्चयत: बुझैत छी
जे हमर प्रेम संगति की विसंगति

Scanned by CamScanner

स्थापित थिक की संभाव्य, पजेबा थिक की पजेबाक माटि ।
हम की करू ?
हम स्वयं नहि बुझि पबैत छी,
तेँ हम अपन प्रेम जे अवश्य हमर 'हम' थिक
हमर समग्र सत्ता, से हम अहाँक लग
निवेदित करैत छी, अपन समस्त ज्ञान, समस्त ज्ञानवत्ता ।

एहि कविताकेँ पढ़लाक बाद हमरा की फूरल की नहि, हम प्रणिवेदित शीर्षकसँ एकटा कविता लिखलहुँ जे 14 मइ 67मे छपल, जकरा 'प्रेम: एक परिभाषा' शीर्षकसँ अपन कविता संग्रहमे समाहित कयने छी । एहि कविताक स्वरूप छैक:-

हमर प्रेम की थिक से हमरा धरि बूझल अछि,
हम मात्र हम ही छी, अहं केर छूति नहि,
प्रेमकेँ विसंगति हम मानल नहि जीवनमे
संगति थिक प्रेम जे समाज बीच रखने अछि ।
हमर 'हम'
पुत्र, पिता, मित्र, भाय, बन्धु, पति, शिक्षक ओ छात्र
आदि रहि कऽ समाज बीच सब किछु बनैत अछि ।
सब किछु बनबामे बहुत किछुक काज छैक
अत: ताहि सब किछु लै करितो जोगाड़ अछि ।
पिताकेर प्रेम सौंस नारिकेर पुत्र हेतु
ऊपरसँ सक्कत आ रुच्छ सन लगैत अछि,
भीतरमे सजल, तरल, दुग्धोज्जवल कोमल फल
खयले पर बुझल जाय, व्यर्थ स्वाद कहने की ।
पुत्रकेर प्रेम पिताकेर हृदय-घृतक हेतु
रौद थीक, देखलासँ लगले पघिलि जाइछ ।
शिक्षक केर प्रेम शुद्ध भुल्ली कुसियार बुझू
देखबामे ठेङा सन, देखि चौंकि उठी,
मुदा जँ जँ चिबबैत जाउ, मधुरइ बुझैत जाउ ।
मित्रकेर प्रेम पानि-चिन्नी केर रूप स्वत:
आपसमे मिललासँ भिन्नता समाप्त तुरत ।
भाय-बन्धु केर प्रेम डोरी आ डोल बनल

Scanned by CamScanner

तृषित जे समाज तकर तृषा मेटा दैत अछि ।
जीवन थिक साइकिल,
पति-पत्नी केर प्रेम 'क्रैंक-चेन' बनल
साइकिलकेँ आगाँ घिचैत अछि ।
किन्तु जे समग्र रूप प्रेमक हम देखल से
दूध मध्य अन्तर्हित नेनुक समान अछि
मथलासँ फक्क दऽ कऽ ऊपर अलगि जाइछ
लाख यत्न कयलोपर मिश्रित नहि होइत अछि ।

एहि कविताक प्रकाशनक बाद नारद गोत्रीय लोकनि मुड़ाओल मोंछमे मटियातेल लगबय लगलाह जे आब बझल दूनू मित्रमे । तकर कारण छलैक जे 1957-58मे एक पद्यमय शास्त्रार्थ तथाकथित प्रयोगवादी ओ परम्परावादीक मध्य 'मिथिला दर्शनक मंचसँ घनघोर रूपमे भेल छलैक । ओहि क्रममे बहुतो महारथी अपन-अपन कलम भँजने रहथि । हमरो 'तथाकथित प्रयोगवादीक प्रति' तथा 'घिनबय चाही तँ घिना लिअऽ' शीर्षक दू गोट कविता छपल छल । पछाति भाइ किसुनजी नवतावादी सभक पक्षधर भऽ गेलाह । ओही पृष्ठभूमिमे किछु झलिबज्जा लोकनिकेँ विश्वास भऽ गेल छलनि जे आब दूनू मित्रमे खूब मचत । परन्तु 8/6/67क लिखल किसुनजीक एक पत्र भेटल जकर एकमात्र शब्दकेँ छाँटि अविकल रूप एतय प्रस्तुत कऽ रहल छी ।

सुपौल 8/6/67 स्वस्ति श्री बड़का भाइकेँ गोड़ लगैत छिऐनि । अपना 'निवेदित'क प्रत्याख्यानमे प्रणिवेदित पढ़ि हँसी लागल । तुरन्ते एकटा कविता फुरायेल, मुदा से अपनहि नीक नहि बुझना गेल । कथ्य एतबे जे कबीर लुच्चा छल जे कहियो कहने छल- प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय, राजा परजा जेहि रूचे, सीस देइ लेइ जाय । प्रणिवेदितक यैह मान्यता अभिव्यक्त भेल अछि । जे, से, हम कबीरक सिद्धान्त मानि कऽ लिखने छी निवेदित आ तोँ भाइ सरिपहुँ कबीरकेँ काटि क्रान्ति कयलह अछि । हर्ष ई जे भाइ क्रान्ति कयलनि अछि । कविता नीक लागल । मइ-जून 67क वैदेहीक सशक्त सम्पादकीय बड़ रूचिगर छह । साहित्यकारक मूल्य स्थापना आ राजनेताक वंचकतापर खूब चोटगर लिखलह अछि । साहित्य परिषदक की सब होइत छैक ? आरो सब कुशल किने ? हम सपरिवार सानन्द छी । पत्र दैह । तोरे किसुन ।

तकर बाद हमरा दूनू गोटेक बीच केहन मधुर सम्बन्ध रहल से हमर लिखल 19 जुलाइ 1970 क मिथिला मिहिरमे प्रकाशित 'अश्रुतर्पण' सँ ज्ञात कयल जाय सकैछ ।

एक साधारण वित्तक ब्राह्मण परिवारमे जन्म भेल छलनि । परीक्षाक नामपर प्रायः व्याकरण शास्त्री आ मैथिली साहित्य परिषदक 'उत्तमा' परीक्षोत्तीर्ण छलाह । एक हाइ

Scanned by CamScanner

स्कूलमे सहायक शिक्षकक पद पर काज करैत छलाह । जीवनक आदिए कालमे मातृविहीन भऽ गेल रहथि । बृद्ध ओ चिररूग्ण पिताक सेवा, अनुजक शिक्षा एक बाल-विधवा बहिनक पालन, कोसीक विभीषिकासँ पीड़ित घर-दुआर, खेत-पथार, एकमात्र दुलारू भागिन (प्रो. श्रीमायानन्द मिश्र)क अभिभावकत्वक भार वहन तथा अपना संग लागल दरिद्रतासँ घोर संघर्ष छलनि । एहि चतुर्मुखी प्रहारसँ बँचबाक लेल एक दिस स्कूलक नौकरी, दोसर दिस कौलिक जीविका पौरोहित्यक निर्वाह, तेसर दिस अर्थोपार्जन हेतु पुराण वाचन, ताहिपर चारिम साहित्य साधना सेहो । साहित्य सर्जनाक संग नव-नव प्रतिभाकेँ प्रोत्साहन ओ मार्गदर्शनमे सतत संलग्न रहैत छलाह । हिनका सन कठिन स्थितिमे रहनिहार कतेको प्रतिभा कुमहड़क बतिया जकाँ आङ्कुर देखबिते सड़ि गेल अछि, परन्तु ई अपन अद्भुत प्रतिभा, अनुपम शील, अद्वितीय कर्मनिष्ठता ओ असाधारण आत्मबलक प्रसादेँ जतहि रहैत छलाह ततहि सबपर व्याप्त भऽ जाइत छलाह ।

26 जनवरी, गणतन्त्र दिवसपर सुपौलमे एक सार्वजनिक राष्ट्रिय मेला लगयबाक स्वप्नकेँ साकार कऽ ओहि मेलासँ भेल आयकेँ नगर विकास कार्यमे खर्च करबाक विचार हिनके मस्तिष्कक उपजा छलनि । ओ मेला आबहु, लगैत अछि । सर्वप्रथम एही मेलामे टिकट पर होइत कवि सम्मेलनमे 18 वर्ष धरि हम जाइत रहलहुँ । किन्तु हिनक देहावसानक बाद, जे आब चालीस वर्ष पूरि रहल अछि, की हालं छैक से हमरा ज्ञान नहि ।

सावधान ई कतेक रहैत छलाह तकर अनेक उदाहरण हमरा लग अछि; तकर दूटा मात्रक दृष्टान्तक उल्लेख करैत छी । 1957 मे हम अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक महामन्त्री निर्वाचित भेलहुँ । ओहि कार्यकारिणी समितिक एक सदस्य किसुनजी सेहो रहथि । संविधानक अनुसार लगातार तीन बैसकमे बिनु सूचनाक जे सदस्य अनुपस्थित रहताह तनिक सदस्यता स्वतः समाप्त भऽ जयतनि, से नियम छलैक । दू गोट बैसक भऽ गेल छलैक, किन्तु परिस्थिति विशेषवश तेसरो बैसकमे उपस्थित होयबामे असमर्थ भऽ गेलाह तँ तुरन्त क्षमा प्रार्थना पूर्वक अपन विवशता कार्य समितिकेँ लिखि पठाय दैत छलथिन ।

समयनिष्ठतामे सेहो अद्वितीये रहथि । वर्षमे एक बेर नहि, अनेक बेर, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, वनमनखी, मुरलीगंज आदि विभिन्न स्थानमे विभिन्न आयोजन स्वयं करैत, अनका प्रोत्साहित कऽ करबैत रहैत छलाह आ ताहि सबमे हमर उपस्थितिकेँ अनिवार्य मानैत छलाह । हुनका नीक जकाँ बूझल छलनि जे झिंगुर कुमरजीक सदृश समयनिष्ठ आ कर्मठ व्यक्तिक प्रशासनमे हमरा काज करय पड़ैत अछि । अतः आमन्त्रण पत्रमे आवश्यकतावश रेलवेक टाइम टेबुल सेहो लिखि दैत छलाह जाहिसँ हमरा कोनो असुविधा नहि हो । निश्चित रूपेँ कहल जाय सकैछ जे हिनक असामयिक निधनसँ मैथिली भाषा-साहित्यक अपार छति भेलैक ।

Scanned by CamScanner

भवितव्यता केहन प्रबल होइत छैक तकर निदर्शन छलाह 'किसुन'जी । एहेन सतर्क सावधान ओ व्यावहारिक होयतहु हिनका पेन्सिलीन सुइसँ घातक प्रतिक्रिया होइत छलनि से अन्त समयमे कहब विसरि गेलनि जे प्राण घातक सिद्ध भेलनि ।

हिनक उदार ओ विशाल सहृदयताक एक घटनाक उल्लेख करैत छी । मातृहीन हिनक भागिन मैथिली मंचक अति लोकप्रिय कवि श्रीमायानन्द मिश्र जे मधुर कवि तँ छथिहे, जे उद्घोषकक रूपमे हिनक लोकप्रियता हिनक कवित्व प्रतिभोकेँ पाछू छोड़ि देने छलनि, से श्रीमायानन्द जखन प्रवेशिका परीक्षोत्तीर्ण भऽ गेलाह तँ किसुनजी आगाँ शिक्षाक हेतु दरभंगा पठाय देलथिन, हिनक स्थानीय अभिभावकक रूपमे हमरे नाम महाविद्यालयमे अंकित कराय अनलथिन । एतहि श्रीमायानन्दकेँ प्रसिद्ध कथाकार ललित, सुप्रसिद्ध समीक्षक प्रो. श्रीरमाकान्त मिश्र तथा सदा विवादित चरित्रक हेतु बहुचर्चित साहित्यकार राजकमलसँ साहचर्य भेलनि । ललितक पिता चन्द्रशेखर मिश्र हमर बंगट भाइ रहथि । बंगट भाइ राजस्कूलमे अंग्रेजीक सुपरिचित शिक्षक रहथि । हुनका 5-6 टा कन्या छलथिन । अपने शाहखर्ची छलाह । एक मात्र बेटा ललित, तेँ बेसी दुलारू छलथिन । आश्रम गदाल रहनि आ अनियन्त्रित पारिवारिक खर्च । तेँ हाथ सतत खगले रहैत छलनि । यद्यपि अंग्रेजी ट्यूशन पढ़निहार छात्रक धरोहि लागल रहैत छलनि, तथापि बाजारमे विवाह योग्य पढुआ सभक मूल्य दिनानुदिन चढ़ल जाइत छलैक ।

जेहने सुदर्शन भाइ किसुनजी छलाह तेहने भागिन सेहो । एमहर बंगट भाइ सेहो बड़ सुन्दर रहथि, हुनक सब धीया-पूता सुन्दरताक वरदान लेनहि जन्म लेने छलनि । बंगट भाइ कन्यादानक हेतु श्रीमायानन्दकेँ पसिन्न कयने रहथि । श्रीमायानन्दक आवाजाही ललितक कारणेँ छलनिहेँ, संगहि एक कन्याकेँ परस्पर नैसर्गिक आकर्षणक स्थिति सेहो भऽ गेल छलनि । बंगट भाइ घटकैतीक हेतु हमरा कसिकऽ पकड़लनि । हमरा दूध-माछ दूनू बाँतर । एम्हरो भाइ, ओम्हरो भाइ, संगहि नीक जकाँ बूझल जे बंगट भाइ नीक वर -विदाइ करबाक स्थिति नहि छथि । पछाति हमरा अयश होयत, तेँ छिटकय चाही, किन्तु तेना भऽ गछारलनि जे हमरा सुपौल जाय पड़ल । अन्तर्द्वन्द्वमे पड़ल हम स्पष्टरूपेँ सब बात किसुनजीकेँ कहि देलियनि जे भाइ ! कन्या सुदर्शना, सुलक्षणा गृहकार्य आदिमे निपुणा छैक, किन्तु वर -बिदाइ मनोनुकूल देबाक स्थितिमे बंगट भाइ नहि छथि, तेँ पछाति हमरा 'जँ किछु बजता नारद बाभन दाढ़ी धय घिसिआय' नहि भोगय पड़य । भाइ कहलनि जखन पूर्व राग उत्पन्न भऽ गेल छैक तखन वर-बिदाइक लोभेँ दूनू आत्माक प्रति विरोध करब दूनूक जीवनकेँ बेरवाद करब उचित नहि होयत । जाह, हमरा ई कुटमैती स्वीकार अछि । यद्यपि सम्बन्ध भऽ गेलाक बाद किसुनजीक पिता हमर खूब गंजन कयलनि जे हम कान मूनि अबधारि लेलहुँ ।

Scanned by CamScanner

दीनानाथ पाठक बन्धुसँ परिचय

चाणक्य महाकाव्यक प्रणेता दीनानाथ पाठक 'बन्धुसँ पहिल परिचय । 1961 क दिसम्बर, आठ बजे रातिक समय । अविस्मरणीय शीत लहरीक प्रकोप । ताही समय माघक वर्णन करैत एहि कलमसँ लिखायल किछु पंक्ति–

'पन्द्रह दिनसँ धिया-पुताकेँ रौदक छैक सेहन्ता,
माघ ! तोरा डरसँ सटकल छथि बड़-बड़ आइ बजन्ता,
बर्फक बरखा ! तोँ भारतकेँ आइ बनौलह लन्दन'

तेँ अविस्मरणीय शीतलहरीक प्रकोप । घरक खिड़की–फड़की, भूर–भार सब बन्द कयने किछु मित्रक संग चाहक चुस्की लऽ रहल छलहुँ । चाहक केटली उतारलाक बादो आगि तपबाक लोभेँ स्टोव जरिते सनसनाय रहल छल । तावत बाहरसँ ध्वनि आयल–अमरजीक डेरा एहे छनि ? यद्यपि सोर कयनिहार चारि–पाँच हाक मारने छलाह । किन्तु स्टोवक सनसनाहटि आ गप्पक रसमे आबाज भीतर नहि आबि पबैत छलैक ।

जिंजिर खट खटयलैक, बैसल लोकमे भूकम्प सन भेल, ओहि डोलम डोलमे जनिका लगीच पड़लनि से उठि कऽ केबाड़क बिलैया फोललनि । पाँच फीट किछु इंच लम्बा गोर–नार काया, बेस ठाढ़ नाक, घनगर भहुँ, छगरा आँखि, खुटिआयल दाढ़ी अवस्थाक धूमिल रेखा मुखमण्डल पर एकदम स्पष्ट, एक व्यक्ति बाहर ठाढ़ छलाह । भीतर आबि अपन परिचय देबय लगलाह ।–

हम मुंगेर जिला रहैत छी, (ताबत बेगूसराय जिला नहि भेल छलैक) दुनही नामक बस्ती छैक, ततहि हमर जनम भेल अछि । मिड्ल स्कूलमे शिक्षक छी । हम अपन नाम बन्धु रखने छी, मुदा पिता हमर नाम दीनानाथ पाठक रखने छथि, वस्तुतः हम दीन अनाथ छी । अपनेक प्रसंग हमर मित्र चन्द्रकान्त झा ''नवेन्दु' हमरा बहुत किछु कहलनि । ओ आर्यावर्तक संवाददाता सेहो छथि । आर्यावर्त्तमे अपनेक एक कविता पढ़ने छलहुँ जकर एकटा पाँती छलैक ''भले न कोई रहे हमारा, मैं तो अपना हो जाता हूँ'' एही भावनाक अनुसार हमहू सभक बन्धु बनल छी । नवेन्दुए जीसँ ज्ञात भेल जे अपने मैथिलीक एकान्त सेवी छी, तेँ हम अपनेक दर्शनार्थ आबि गेलहुँ । हमहू टूटल–फूटल शब्दमे एक इतिहास पुरुष 'चाणक्य'पर एक काव्य लिखलहुँ अछि । अपने जखन समय दी, किछु अंश अपनेकेँ सुनाबी । जँ काजक होइक तँ एकरा प्रकाशमे अनबाक किछु युक्ति धराय देल जाय, यदि ताहि योग्य नहि होइक तँ निरर्थक एकरा रखने कोन फल तेँ फाड़ि कऽ फेकि देबैक । अबेर भऽ गेल छलैक, मित्र लोकनि चल जाइत गेलाह ।

हम हुनक कथन स्तब्ध भेल सुनैत रहलियनि । ओ अपन आर्थिक असमर्थता,

Scanned by CamScanner

एहि काव्यक प्रकाशनार्थ कतोक साहित्यकार लोकनिसँ सम्पर्क, सर्वत्र वाचनिक प्रोत्साहन, ठाम-ठामक अनुभव आदिक वर्णन क्रममे संस्कृत, मैथिली, हिन्दीक पद्य, श्लोक आदि उद्धृत करैत रहलाह । हम कहलियनि- मैथिलीमे पाठकक बहुत अल्पता छैक । साहित्यकार पाठक सेहो आङुरे पर गनल छथि । एक हमर मित्र छथि मुजौनाक कवि, श्रीश्रीमन्त पाठक, दोसर पाठक एण्ड सन्स पुस्तक विक्रेता, तेसर पाठक प्रो. रमाकान्त पाठक जनिका मातृभाषापर बेसी ध्यान नहि छनि, तेँ तेसर पाठक अहाँसँ परिचय प्राप्त कऽ बहुत प्रसन्नता भेल । मैथिलीकेँ गोटेको हजार पाठक भेटि जाथिन तँ एकर प्रगतिकेँ क्यौ रोकि नहि सकैत छैक । अच्छा ई कहू जे अहाँक ई खण्डकाव्य थीक की प्रबन्धकाव्य ?

हम एगारह सर्ग मे लिखने छी, नायक थिकाह 'चाणक्य', विभिन्न छन्दक प्रयोग भेलैक अछि, तखन एकरा जे मानल जाइक । हम कोनो काव्य शास्त्रक विद्वान नहि छी । स्फूर्तिमे जे आयल से खड़रने गेलहुँ । एगारह सर्गक नाम सुनि पहिने घबड़यलहुँ जे एकरा सुनबामे समय बाहर करब कठिन होयत । ताहूमे अपरिचित, एकदम नवसिखुआ, की-कहाँ, अकर-दकर दड़रने होयताह । अस्तु, एखन स्थालीपुलाक न्यायसँ दू-चारि ठामसँ किछु पद सुनि लैत छियनि सन्तोषार्थ, पछाति देखल जयतैक । एतबा मनहि-मन सोचि कहलियनि- अच्छा, समस्त तँ बादमे बाहर करब, ताबत ठाम-ठीमसँ दू-चारिपद सुनाउ ।

बन्धुजी उत्सुक होइत कहलनि- पहिने आरम्भे सुनल जाय । भीतर जाय एक पाहुनक सूचना दऽ सुनय बैसलहु । बन्धु जी सस्वर शुरू कयलनि -

रवि सम दीप्त, अनल सन दाहक, पवि सम कठिन कठोर,
कोनो गूढ़तम भाव-मग्न चिन्तासँ आत्म-विभोर
अंग-अंगसँ चूबय टप-टप सुदृढ़ आत्मविश्वास
पाटलिपुत्रक जनपथ पर के घूमि रहल गत-त्रास ?
चन्दन-चर्चित भाल, कृष्णतन, नेत्रक रक्तिम कान्ति
उतरि रहल की मनुज-सिंहमे क्रान्ति अधिष्ठित शान्ति ?
कटितट शुभ्र वसनसँ बान्हल छोट अङौछा एक,
आयल की संयमक छाँहमे त्यागक संग विवेक ?

ओजगुणसँ ओतप्रोत पदक प्रवाह सूनि चकित भऽ गेलहुँ, मनक ई भ्रान्ति मेटाय गेल जे कोनो अखरकट्टू कविक पालाँ पड़ि गेल छी । ओहि व्यक्तिक ओ मलिन आकृति ताहि भीतरमे नुकायल एहि रूपक उद्दीप्त प्रतिभा मन्त्रमुग्धकऽ देलक । ध्यानेने रहल जे कतेक राति बीति गेल । किछु सर्ग सूनि गेलहुँ, मन अतृप्ते रहि गेल । मनहिमन सोचैत

Scanned by CamScanner

रहलहुँ जे एहन-एहन प्रतिभाशाली गुप्त साधक जखन मैथिलीक सेवामे संलग्न छथि तँ निश्चित रूपेँ मैथिलीक प्रगतिकेँ रोकि रखबाक सामर्थ्य आब ककरोमे नहि छैक। एहन समुज्ज्वल-प्रतिभासम्पन्न महाकविक परिचयसँ मन प्रफुल्लित भऽ गेल। अन्तमे हुनकासँ पाण्डुलिपि राखि देबाक आग्रह करैत कहलियनि- हम एकरा सम्पूर्ण पढ़ि लेब, तखन जेना जे भऽ सकत से हम अवश्य करब। भोजनादिसँ निवृत्त भऽ विश्राम कयलनि, प्रातः चलैत काल कहलनि आब हम फरबरीक अन्तमे आयब।

दोसर बेर फरबरीक अन्तमे नहि आबि मार्च 1962मे अयलाह। पेटक गड़बड़ीक कारणेँ एहि बेर आरो खिन्न छलाह। मित्र 'नवेन्दु' जी संग छलथिन। दरभंगा अस्पतालमे भर्ती भेलाह। जुलाइ धरि पड़ल रहलाह। समय-समयपर स्कूलसँ घुरैत काल 10-5 मिनट बैसि हाल-चाल पूछि लैत छलियनि। एहिसँ पहिने पाण्डुलिपि पढ़ि कतहु कतहु जे संशोधन अपेक्षित बुझायल से कऽ चुकल छलियनि। एक दिन एकर चर्चा कयलियनि तँ कहलनि।

'जाहि जनपदमे हमर जन्म भेल अछि, ओ जनपद एकर महत्त्व बूझि सकत वा नहि ताहिमे सन्देह अछि आ जाहि परिवारमे जन्म लेने छी ओ परिवार निकट भविष्यमे एकरा प्रकाशित कऽ सकत ताहि योग्य नहि अछि। एतय रहला उत्तर हमरा विश्वास अछि जे कहियो ने कहियो निश्चित रूपेँ ओ शुभक्षण आबि सकैत छैक जे मातृभाषा प्रेमीक दृष्टिपथपर आबि जयतनि, हम रही वा नहि।' एहि उक्तिसँ प्रतीत भेल जेना हुनका अपन जीवन-लीला पर जवनिकापातक पूर्वाभास भऽ गेल छलनि।

एक दिन स्कूल पर एक बृद्ध व्याकुलचित्त, दहोबहो नोरसँ नहायल हमर भेट करैत कहलनि हम दीनानाथ पाठकक पिता थिकियनि। डाक्टर सब कहैत छथि जे हिनका 'कैन्सर' छनि। हम से सूनि सन्न रहि गेलहुँ। ता धरि एहि रोगक चिकित्सा विकसित नहि भेल छलैक। अन्तमे निर्णय लेल गेल जे कोनो प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रमे राखल जाइनि। अक्टूबरमे एक पत्र भेटल- रोसड़ामे एक प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र छैक ओहीमे छी, क्रमहि अनुकूल भऽ रहल अछि।

22 जनवरी 1964मे एक पत्र भेटल। एहि अन्तरालमे कोनो सूचना नहि प्राप्त भेल छल, उपरमे लिखल छलैक 'दुनही'। उत्सुकता पूर्वक पत्र पढ़ैत गेलहुँ, अन्त होइत-होइत उत्सुकतापर तुषारपात भऽ गेल। बन्धुजी आब एहि संसारमे नहि छथि। किन्तु हुनक महाकाव्यक पाण्डुलिपि हमरा लग छनि। जाहि दृढ़ विश्वाससँ ओ एकरा हमरा लग छोड़ि गेलाह तकर पालन करब हमर दायित्व भऽ गेल। मैथिलीमे प्रकाशकक केहन अभाव छैक से सब जनिते छी, पाठ्य ग्रन्थक निर्द्धारण केहन विलक्षण भऽ रहल अछि, ताहूसँ बेसी गोटे अनवगत नहि छी। हम स्वयं लक्ष्मीपात्र छी नहि, एहि दायित्वक निर्वाह कोना होयत ताहि चिन्तामे पड़ि गेलहुँ। अनेक प्रयास कयल, एको टा उदार व्यक्ति नहि अभड़लाह। ताहू समय

Scanned by CamScanner

'वैदेही'क सम्पादन करैत छलहुँ, जाहि क्रममे एकांकी विशेषांक कथा विशेषांक आदि प्रकाशित भऽ चुकल छल। अन्तमे वैदेही समितिक सर्वेसर्वा मन्त्री प्रो. कृष्णकान्त मिश्रकेँ महाकाव्यांकक रूपमे 'चाणक्य' महाकाव्यक प्रस्ताव देलियनि ओ से स्वीकार कयलनि।

तकर बाद पेपर हाउस, लहेरियासरायक संस्थापक सूर्यनारायण झासँ एकर री-प्रिंट कऽ पुस्तकाकार देबाक आग्रह कयलियनि। ओ कागत देलनि, प्रेस तथा समयक असुविधाक कारणेँ जे स्वरूप चाहैत छलहुँ से नहि भऽ सकल, तथापि सुप्रसिद्ध चित्रकार उदयकान्त चौधरी मुखपृष्ठक हेतु 'चाणक्य'क चित्र बनाय देलनि। जेना तेना पुस्तक रूपमे सेहो ई आबि गेल। ततबे नहि, साहित्य अकादेमीक पुरस्कार प्रतिस्पर्द्धामे प्रमुख स्थान भेटि गेल छलैक। रमानाथ बाबू तकनीकी कारण लगाय छाँटि देलथिन। आइ-जेना मैथिलीमे पुस्तकक वर्षा होइत छैक से स्थिति ताहि समय नहि छलैक। ओहिवर्ष अकादेमी पुरस्कारसँ मैथिली वंचित रहि गेल। तकनीकी कोनो तेहन पैघ त्रुटि नहि छलैक, यदि रमानाथ बाबू उदार दृष्टि रखितथिन तँ 'चाणक्य' पुरस्कृत भऽ सकैत छलैक। सन्तोषार्थ हुनक पिताकेँ किछु आर्थिक साहाय्य प्राप्तिक यश हमरा भेटि जाइत। आचार्य रमानाथ झाक प्रति हम अपन आदर भाव पहिनहि व्यक्ति कऽ चुकलहुँ अछि। सिन्हा साहेबक प्रसंग अपन एक लेखमे एक सूक्ति' दोषा वाच्या गुरोरपि'क उल्लेख स्वनाम धन्य डॉ. अमरनाथ झा कयने छथिन। ओकरे अनुसरण करैत हम कहबाक धृष्टता करब जे किछु मामलामे रमानाथ बाबू कनेक अनुदार रहथि। मराठा सब बहुत पहिनेसँ बम्बइकेँ मुंबइ लिखैत छलाह, रमानाथ बाबू दरभंगाकेँ देखाउससँ दड़िभंगा लिखय लगलाह। मैथिलीक प्रकृतिक विरुद्ध' ओ हमरा कहल' सनवाक्य प्रयोग आरम्भ कयलनि मिथिला मिहिर जखन नव साज-सज्जाक संग पटनासँ प्रकाशित होअय लागल तँ लेखन शैली (वर्त्तनी)केँ लऽ जे विवाद पूर्वसँ आबि रहल छलैक ताहिमे समन्वय स्थापित करबाक हेतु किछु विशिष्ट व्यक्ति बैसि कऽ एक स्वरूप निर्द्धारित कयलनि। तदनुरूप वर्तनीकेँ मिथिला मिहिर अपनौलक तँ अपन कट्टरताक कारणेँ रमानाथ बाबू ओहिमे अपन रचना देब स्वीकार नहि कयलथिन। महाराजक आदेशसँ सम्पादकीय टिप्पणी लगाय हुनक लेख छापल जाय लगलनि, जखन एक आधकेँ छोड़ि अन्यान्य हुनक अनुयायी ओकरा स्वीकार कऽ लेलथिन। जँ मैथिलीक प्रगति अभीष्ट छलनि तँ कट्टरताकेँ एहि रूपमेँ बकुटि कऽ नहि पकड़बाक चाहैत छलनि। हमर धारणा अछि जे 'चाणक्य' महाकाव्यक वर्त्तनी हुनक सिद्धान्तक अनुकूल नहि छलनि। तेँ बरू ओ वर्ष मैथिलीक हेतु फोक चल गेलैक, एहिसँ पहिने एक मात्र पुस्तक मैथिलीमे पुरस्कृत भेल छलैक। निरन्तरतामे दोसरे वर्ष फोंक रहि जायब एकर दुर्बलताक बोधक छलैक। रमानाथबाबू अपन कट्टरताक कारणेँ एहिदिस दृष्टिपात नहि कयलनि।

किन्तु कस्तूरी मृगकेँ अपने नाभिमे स्थित कस्तूरीक सुगन्धक आभास नहि

Scanned by CamScanner

होउक, अन्यान्य जे ओकर समीपस्थ होइत अछि, ओ तँ ओहि सुगन्धक अनुभव करिते अछि। चाणक्य महाकाव्यकेँ अनेक विश्वविद्यालय पाठ्यग्रन्थक रूपमे स्थान दऽ ओकर समुचित मूल्यांकन करबे कयलक। यद्यपि हमरापर बन्धुजीक कोनो ऋण नहि छलनि, तथापि हमरा पर जे दृढ़ विश्वास छलनि जे पाण्डुलिपि एतय रहनेँ प्रकाशमे अयबे करत, तकरा हम अपनापर ऋण मानैत छी आ बन्धुजीपर साहित्यअकादेमी भारतीय साहित्यिके निर्माता' सिरीजमे विनिबन्ध लिखि ओ ऋण सधौलहुँ।

कृतज्ञ लोकसँ मिथिला महीमण्डल कहियो शून्य नहि रहल अछि। एहने दू व्यक्तिसँ जीवन मे सम्पर्क भेल जनिक कोनो उपकार नहि कयलियनि, अपन कर्त्तव्य निर्वाह कयल, तथापि ई दूनू गोटे तकरा उपकार मानि कृतज्ञता ज्ञापित करैत रहलाह, कऽ रहल छथि। प्रथम छथि 'भलमानुस'क रचनाकार आ 'सत्यक खोज'क अनुवादक योगानन्द झा। हमरासँ सब तरहेँ वरिष्ठ योगाबाबू सुमनजीक सम्पादनकालमे महात्मा गान्धीक आत्मकथाक अनुवाद करैत छलाह जे धारावाही रूपेँ मिथिला मिहिरमे छपैत छलनि। मैथिली अकादमी, पटना जखन स्थापित भेलैक तँ अनुवाद कार्यपर सेहो जोर देल गेलैक। नाम स्मरण नहि अछि, एक साहित्यकार बन्धु महात्मा गान्धीक आत्मकथाक अनुवाद कऽ प्रकाशनार्थ अकादमीकेँ पठौलथिन। हम प्रकाशन उपसमितिक सदस्य रही, हमरा संग दरभंगासँ प्रो० श्रीरमाकान्त मिश्र सेहो छलाह। उपसमितिक बैसकमे उक्त पाण्डुलिपि प्रकाशनार्थ विचार करबाक हेतु समक्ष राखल गेल। दू-तीन पृष्ठ पढ़लापर भाषाप्रवाह पूर्ण नहि बुझायल आ अकस्मात् 20-25 वर्ष पूर्व योगाबाबू द्वारा कयल अनुवाद मन पड़ि गेल। सर्वसम्मतिसँ ई निर्णय लेल गेल जे एहन उत्कृष्ट ग्रन्थक अनुवाद होयबेक चाही, किन्तु एक सधल हाथक कलमसँ कयल अनुवाद जँ उपलब्ध हो तँ पहिने ताहीपर विचार करब उचित होयत। तेँ पहिने योगाबाबूसँ हुनक कयल अनुवादकेँ प्राथमिकता देल जाय। योगाबाबूकेँ पत्र पठाओल गेलनि, ओ सहर्ष पाण्डुलिपि पठाय देलथिन आ अकादमी तकरा छपलक।

तकर बाद श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकारजीक अध्यक्षताक कार्यकालेमे योगाबाबू अकादमीक निदेशकक पद पर अयलाह। दूनू गोटे कोइलख निवासी, किन्तु दूनू गोटेमे सौमनस्यक अभाव रहनि, जाहि कारणेँ कार्य प्रगतिमे शिथिलता अबैत गेलैक। योगाबाबूसँ अकादमीमे भेट भेल। ओ अपन अनुवाद छपि जयबाक हेतु हमरा कृतज्ञता ज्ञापित करैत अघाथि नहि। विद्यालंकारजीक दोसर कार्य काल समाप्तप्राय छलनि आ प्रो. जयदेव मिश्रक नामक चर्चा छलनि। कार्य प्रगतिमे शिथिलताक कारण पुछलियनि तँ विद्यालंकार जीक अधिनायक प्रवृत्तिक विस्तृत चर्चाक क्रममे कहलनि जे अनुवाद ग्रन्थक पाण्डुलिपि पठयबाक आग्रहपत्र अकादमी हमरा पठौलक तँ हमरा आश्चर्य भेल। पछाति पता लगौलहुँ तँ ज्ञात भेल जे एकर प्रस्ताव अहीं कयने छलहुँ। हम एहि हेतु अहाँक सदा कृतज्ञ रहब।

Scanned by CamScanner

विद्यालंकारजीक अध्यक्ष रहैत हमर एते मोटक पोथी छपल से आठम आश्चर्य मानू । हमरा विद्यालंकार जीक प्रति अगाध श्रद्धा, तेँ हुनक निन्दा नीक नहि लागल । हम गप्पकेँ मोड़ैत कहलियनि– आब तँ सुनैत छी जयदेव बाबू अध्यक्ष भऽ रहल छथि । एखन जे जिच्च भऽ जाइत अछि ताहिसँ उग्रास होयत ।

योगाबाबू सेहो नोंसि लैत छलाह, से एक चुटकी लैत कहलनि– जयदेवो बाबू तँ कोइलखे, हे एकटा बात कहि दैत छी, एहिमे हमहू अपवाद नहि छी । गीरह बान्हि कऽ राखि लिअऽ, कोइलखमे जन्म लेनिहार लोकक लेल ब्रह्माकेँ अँतरी बनयबा लेल दोसर साँचा छनि, ओहिमे बहत्तरि हाथक अँतरी बनैत छैक जकर अन्तिम छोर पर माछ मारयवला जे बनसी होइत छैक ताहिमे जेहन अँकुसी रहैत छैक तेहने अँकुसी लागल रहैत छैक । हमरा कोइलखक विद्यालंकार जी, इंजीनियर अनिरुद्ध मिश्र, जयदेवमिश्र, हरिनाथमिश्र, डॉ. भवनाथ मिश्र, योगाबाबू सबसँ निकटता रहल । हरीबाबूक संग मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापनासँ पहिलुक गतिविधिक प्रसंग चर्चा कऽ चुकल छी । डॉ. भवनाथ बाबूक संग दरभंगा आकाशवाणीमे हास्य-गप्प-गोष्ठीमे अनेक बेर संग-संग बैसल छी, एतेक पैघ सिद्धहस्त चिकित्सक रहथि, अनेक बेर चिकित्सा कयलनि, कहियो एको पाइ फीस नहि लेलनि । अधिवक्ता दमनकान्त झा रहथि, दरभंगासँ जखन पटना हाइकोर्ट चल गेलाह आ आशियाना नगरमे अपन मकान बनौलनि तँ अत्यन्त आग्रह पूर्वक अनेक बेर आमन्त्रित कऽ पहुनाइ करौलनि । ककरोसँ अपेक्षा कम नहि भेल । एमहर आबि योगाबाबूक कहल बातक गीरह कनेमने सक्कत होयबाक अनुभव भेल । चिकरा-भोकरासँ चुप्पा बेसी घातक होइत अछि सेहो अनुभव भेल । एहि प्रसंग संस्कृतक एकश्लोक मन पड़ैत अछि–

प्राक्पादयोः पतति खादति पृष्ठ मांसम्
कर्णे किमपि रौति रवं विचित्रम्
छिद्रं निरीक्ष्य सहसा प्रविशत्यशंकः
सर्वं खलस्य चरितं मशकः करोति ।

चर्चा चलैत छल कृतज्ञताक । हम योगाबाबू द्वारा कयल अनुवाद 'सत्यक प्रयोग'क अनुशंसा कऽ कोनो बड़ पैघ उपकार नहि कयने रहियनि, किन्तु ओ आजीवन नहि बिसरलाह । पहिनहु कहने छी, पुनः कहैत छी–

दोसर व्यक्ति छथि दैवज्ञ शिरोमणि **श्रीकालीकान्त मिश्र** । ई गणित ओ फलित ज्योतिष दूनूमे पारंगत विद्वान छथि । 'विद्या ददाति विनयम्' एहि उक्तिक प्रत्यक्ष दर्शन करबाक इच्छा हो तँ हिनकासँ साक्षात्कार करू । हिनकासँ हमरा परिचय करौलक हिनक कृतज्ञताक भाव । बाट-घाट चलैत हिनकासँ देखा-देखी होइत छल । हिनक विशुद्ध मैथिल पण्डितक वेश-भूषा ताहिमे भीतरसँ झलकैत तेज हमरा आकृष्ट करैत छल, प्रायः

Scanned by CamScanner

हमरो चानन ठोप अथवा कतहु सभा समितिक मंचसँ हमर जोड़ल तुकबन्दी आकृष्ट करैत छल होयतनि, किन्तु कोनो साक्षात् सम्भाषणक अवसर नहि होइत छल, हमहू ठिकिया कऽ तकियनि आ ईहो हमरा दिस ठिकिया कऽ ताकि आगाँ बढ़ि जाथि ।

संयोग एहन भेलैक जे हमर बालक भारतीय स्टेट बैंकमे 1984मे जीविकापन्न भेलाह तँ हिनका सर्वप्रथम खगड़ियाक शाखामे योगदान करय पड़लनि । श्रीकालीकान्त बाबू ओहि समय रहीमपुर संस्कृत महाविद्यालयमे प्रधानाचार्यक पद पर कार्यरत छलाह । समस्त कर्मचारीक वेतन भुगतान ओही बैंकसँ होइनि । पहिने बैंक जाथि तँ कागत-पत्र जमाकऽ बहुत कालधरि प्रतीक्षा करय पड़ैत छलनि । श्री मुन्नूजीक योगदान कयलाक बाद जखन बैंक गेलाह तँ हिनक विद्याजन्य तेज श्रीमुन्नूजीकेँ आकृष्ट कयलकनि । ई चटपट काज कराय टाका दऽ देलथिन । तखन प्रसन्न भऽ हमरा बालककेँ परिचय पुछलथिन । से ज्ञात भेलापर हिनक शालीन व्यवहारसँ अभिभूत भऽ हृदयसँ आशीर्वाद दैत रहलथिन । ई कोनो बड़ पैघ उपकार नहि कयने रहथिन ।

किन्तु तकर दस वर्षक बाद श्रीकालीकान्त बाबू दरभंगेमे रहथि । श्रीमुन्नूजी बदली भऽ कमतौल शाखामे आबि गेल रहथि । हम अस्वस्थ भऽ गेल रही, डॉक्टर श्रीपी.एन्. मिश्रसँ परामर्श लेबय गेल रहथि । घुरतीमे दुर्योगवश स्कूटर दुर्घटनामे दहिना जांघक कुल्हा दू टुकरी भऽ गेलनि । हिनक जन्म कुण्डली लऽ श्रीकालीकान्त बाबूक ओतय गेलहुँ । चौंकैत पुछलनि- वैह बालक जे खगड़िया स्टेट बैंकमे छलाह ? ओहि अति साधारण उपकारक स्मरण ओहिना छलनि । जाहि आत्मीयताक संग ग्रहशान्ति करयबामे तत्परता देखौलनि से व्यक्त करबाक हेतु हमरा सर्वथा उपयुक्त शब्द नहि भेटि रहल अछि । ओही बीचमे शारदीय नवरात्र अयलैक । श्रीमुन्नू जीकेँ सात मास रोग शय्यापर पड़ल रहय पड़लनि । अपराजिता पूजा दिन श्रीकालीकान्त बाबू अपराजिता पूजा सम्पन्न कऽ अपराजिताक लत्ती लेने ओही पूजाकालिक परिधान पीताम्बरी पहिरने आसनसँ उठि सोझे हमर आवास पर आबि लत्ती बान्हि आशीर्वाद दऽ गेलथिन । हिनक हृदयक विशालता जीवन भरि अभिभूत कयने रहत । हिनक हमरा प्रति श्रद्धाभाव हमरा रोमांचित कयने रहैत अछि । एहने विशिष्ट लोकक प्रसादेँ मिथिला एहू विषम वातावरणमे अपन गौरवकेँ सुरक्षित रखने अछि ।

श्रीरमेन्द्र नारायण चौधरी– एक टा युग छलैक जहिया प्रकाशक समुदायमे विशेष रूपेँ बिहारमे पुस्तक भण्डार लहेरियासराय, पटनाक तूती बजैत छलैक । राष्ट्रकवि रामधारीसिंह 'दिनकर', रामवृक्ष शर्मा बनेपुरी, छविनाथ पाण्डेय, हवलदार त्रिपाठी आदि हिन्दीक दिग्गज साहित्यकारकेँ आगाँ अनबाक सम्पूर्ण श्रेय पुस्तकभण्डारकेँ जाइत छैक । जाहि दिनकरकेँ पौरुषक कवि ओ हिन्दी साहित्यक इतिहासकेँ गौरवान्वित करबाक श्रेय प्राप्त छनि, जाहि बेनीपुरीजीक प्रसंग कहल जाइत छलनि- बेनीपुरी का काँमा फुलस्टाप भी

Scanned by CamScanner

बोलता है, हिनका लोकनिक प्रतिभा-लताकेँ चतरबाक हेतु मचानक काज पुस्तक भंडारे कयने छलनि, किन्तु पुस्तक भण्डारकेँ रामलोचन शरणक देहावसानक बाद सर्वांशत: पटना स्थानान्तरित कऽ देल गेलैक तँ एक तरहेँ हिन्दीक अखाढ़ा दरभंगासँ उखड़ि गेलैक। मैथिलीकेँ मातृभाषाक रूपमे मान्यता भेटि गेलाक कारणेँ एकरामे नवजीवनक संचार भऽ गेल छलैक। एहने वातावरणमे श्री रमेन्द्र नारायण चौधरी 'ग्रन्थालय' नामक संस्था ठाढ़ कयलनि। पुस्तक भण्डार जेना हिन्दी साहित्यकार सभक आश्रय स्थल छलनि, तहिना ग्रन्थालय मैथिली साहित्यकार सभक। ओना पुस्तक भण्डारक विस्तार बिहारसँ बाहरो छलैक, पसार सेहो विस्तृत रहैक। चौधरीजी मातृभाषा प्रेमक चक्करमे पड़ि प्राथमिक वर्ग सभक हेतु मैथिलीक पोथी छपलनि, एमहर मान्यता भेटितो मिथिला क्षेत्रमे प्राथमिक शिक्षा जड़ि नहि पकड़ि सकल। मैथिली-हिन्दीक शताधिक पुस्तक छापि कीर्त्तिमान स्थापितो कयलनि, किन्तु पाठ्य पुस्तक नहि बिकयलाक कारणेँ घाटा सेहो उठाबय पड़लनि ?

कुमार गंगानन्द सिंह हमरा बहुत स्नेह दैत छलाह। हमर 'वीरकन्या' उपन्यास पढ़िकऽ अपन सम्मति लिखने रहथि। जखन हम 'अमल'सँ 'अमर' भऽ गेलहुँ आ कुमार साहेबकेँ ज्ञात भेलनि जे एहि षड्यन्त्रमे हुनक भागिन हीरानन्द शास्त्रीक हाथ छलनि, तखन हुनका अपना डेरासँ निकालि देने रहथिन। हीरानन्द जीक जेठ भाय श्यामानन्द झा राज हेड आफिसमे जीविकापन्न रहथिन आ डैनवी रोडमे एफ टाइप क्वार्टरमे रहैत रहथिन ओतय चल गेलाह।

कुमार साहेब जखन शिक्षामंत्री भेलाह तँ एक बेर कुमार साहेब नवादा (बहेड़ा) आयल रहथि। चौधरीजी देवनारायण झा तथा हमरा संग कऽ नवादा सब पोथी लऽ गेलाह आ कुमार साहेबकेँ देलथिन ओ प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीक पढ़ाइक आश्वासन सेहो देलथिन, किन्तु हिनक कोनो जूति नहि चलनि। शिक्षा राज्यमंत्री रहथि कृष्णकान्त सिंह ओ एकरा मटिया देलथिन से आइ अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटबाक बादो मटिअयले रहि गेल। अन्तत: ग्रन्थालय थस लऽ लेलक। हमरा बड़ बेर पर काज देने छथि। हमर साइकिल हेड़ाय गेल तँ हाथ-पैर हेड़ाय गेल। साइकिलक गुण विशेषक चर्चा पहिनहि कयने छी। ओहि संकटकालमे चौधरी 300/रु.मे 'एभेन' साइकिल कीनि देलनि तकर बदलामे हमर 'बिदागरी' उपन्यासक कॉपी राइट लऽ ओकरा छपलनि। बहुतो इष्टमित्र हमरा कहलनि– ग्रन्थालय अहाँसँ 'कापी राइट' लऽ ठकि लेलक। हम सबकेँ कहलियनि– यक्ष युधिष्ठिरसँ प्रश्न कयलकनि– 'किंच अनर्घ्यम्' अर्थात् कोन वस्तु अमूल्य थिक ? युधिष्ठिरक उत्तर छलनि– 'यत् अवसरे दत्तम्' अर्थात् अवसर पर देल वस्तु अमूल्य थीक। चौधरीजी अपन लूरि मुँहसँ ओकरा पाठ्य सूचीमे स्थान देआय अनेक संस्करण कयलनि, किन्तु हम अवसर पर देल राशिकेँ एखनहु अमूल्य मानैत छिऐक।

Scanned by CamScanner

चौधरीजी दोसर उपकार कयने छथि जे हमर भातिज 'मिहिर'कें जीविका दऽ अपन संस्थामे राखि लेलथिन जाहिसँ प्रेसक ज्ञान तँ भेबे कयलनि साहित्यकार सेहो भऽ गेलाह । आँखि-पाँखि भेलनि तँ नगरमे बसिओ गेलाह ।

तेसर उपकार हमरा छात्रावस्थेसँ डायरी लिखबाक सौख छल जे नियमित नहि भऽ पबैत छल । चौधरीजी विद्यापति डायरी बाहर करय लगलाह 1969सँ हमर डायरी लेखन नियमित भऽ गेल । विद्यापति डायरीमे मिथिला भरिक सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक परिचय परम उपादेय रहैत छलैक । ई बन्दो भऽ गेलैक तथापि हमर डायरी लेखन अद्यावधि चलैत अछि । हम एकरो उपकारे मानैत छी ।

चौधरीजीक चर्चाक क्रममे एक रोचक गप्प मन पड़ि गेल । क्षेपकमे से कहि दी । दमनकान्त बाबूक चर्चा कऽ चुकल छियनि, ईहो मन पाड़ि दी जे हुनको गप्पमे बड़ रस भेटैत छलनि तें 'गपाष्टक' नामक पोथी सेहो छपौने रहथि । दमनकान्त बाबू पटना चेतना समितिक महासचिव रहथि । एक बेर विद्यापति स्मृति पर्वमे सुमनजी, चौधरीजीक संग हमहू आमन्त्रित रही । रातिक भोजन हमरा तीनू गोटेक लेल दमनकान्ते बाबूक डेरापर रहय । सुमनजीकें काँच मूर ओ मेरिचाइ बड़ प्रिय छलनि । भोजन विन्यासमे सेहो छलैक। सुमनजी सब मूर खाय गेलथिन तँ परसनमे अयलैक । दमनकान्त बाबू परसनिहारकें चौधरीओजीकें देबाक हेतु कहलथिन, ताहिपर चौधरीजी कहलथिन– मूर हम नहि खाइत छी । हम टिप्पणी कऽ देलियनि– सूदे खा कऽ अघाय गेनिहार मूर किएक खायत ? दमन बाबू खूब हँसलाह । जीवनक बाटपर भुतिआइत एक युवककें एक एहन परिवेश भेटलनि जे आजीवन मैथिलीक हेतु समर्पित रहलाह । आइ मैथिली संसारकें हुनक अभाव खटकैत छैक । मिहिर कोनो दुर्लभ पुस्तक पाठककें उपलब्ध करयबामे तत्पर रहैत छलाह । आइ पाठक वर्ग बौआइत रहैत छथि । हिनक जेठ बालक डॉ. श्रीशचीन्द्रनाथमिश्र दू विषयमे एम्.ए्. कयने छथिन, योगानन्दझा पर शोधकार्य कऽ पी-एच्.डी. उपाधि सेहो प्राप्त कयने छथि तथापि जीविका नहि भेटलनि । पिताक जे आधार बनाओल छलनि तकरा सम्हारि कऽ रखने रहितथि तँ बेरोजगार नहि होइतथि, मुदा अकर्मण्यता दबने छनि । एहि विषयमे हम 'किसुन'जीक बालक श्रीकेदार कानन तथा शेखरजीक बालक श्री शरदिन्दु चौधरीक उद्यमिता ओ सक्रियतासँ प्रफुल्लित रहैत छी । ई दूनू अपन-अपन पिताक पथकें पकड़ने स्मृतिकें सहेजि कऽ रखने छथि । विचारधाराक जे कोनो मतभिन्नता हो, ताहि कारणें हमरा कतबो धकियाबथु, परन्तु दूनू हमर आत्मीय मित्रक सन्तति थिकाह, वात्सल्य भाव कोना छूटत । हिनका दूनूक कर्मण्यता सन्तुष्ट कयने रहैत अछि ।

प्रो. श्रीमुरारि मधुसूदन ठाकुर । एक एहन विशिष्ट व्यक्ति जनिकासँ बीसम शताब्दीक अन्तिम दशकमे परिचय भेल । आइ हुनक योगक्षेमक हेतु उत्कण्ठा बनल रहैत

Scanned by CamScanner

अछि। ओ थिकाह अंग्रेजी भाषा साहित्यक विश्वविश्रुत विद्वान श्रीमुरारिमधुसूदन ठाकुर। सरस्वती हिनका परिवारमे खुटेसल छथिन। हिनक विद्वत्ताक धाख केहन-केहन अंग्रेजीक दिग्गज विद्वान मानैत छथिन। हिनक बुद्धिमत्ताक ओ दूरदर्शिताक एक छोट सन उदाहरण दैत छी। एक दिन बहुत यत्नपूर्वक दू टा उपहार हमरा लै लेने अयलाह। उपहार शब्द सुनि अहूँ सबकेँ मनमे भऽ सकैत अछि कोनो मूल्यवान वस्तु छल होयतनि। वस्तुक नाम सुनि मन बहुत झुझुआन भऽ जयबाक सम्भावना, परन्तु हम कोनो वस्तुक मूल्य टाकासँ नहि लगबैत छिऐक। हमरा दृष्टिएँ वस्तुक मूल्य ओकर उपयोगितासँ आँकबाक चाही। अहाँकेँ उपहारमे क्यौ मोतीक माला दैत अछि, किन्तु उपयोगिताक दृष्टिएँ व्यावहारिक रूपमे अहाँक कोनो आवश्यकताक पूर्त्ति ओहि मालासँ नहि होयत आ तेँ उपहार दाता सेहो सतत स्मृतिपटल पर नहि रहताह, भनेँ माला लाख टाकाक हो। हम ठाकुरजीक उपहारसँ अधिक हुनक लक्ष्य अर्थात् स्मृतिपटल पर सतत रहबाक लक्ष्यसँ मन्त्रमुग्ध रहैत छी। अहाँक उत्सुकता वस्तुक नाम बुझबाक हेतु बढ़ि गेल होयत। जँ हम वस्तुक नाम नहि कही तँ अनुमान करबामे मन छटपटाय जायत, तेँ कहिए दैत छी। एक टा वस्तु बाहर बैसबाक स्थान पर आ दोसर आभ्यन्तर भूमिक मुँहथरिपर रहैत अछि। देहातमे एखनहु लोक सूति उठि हाथमे लोटा लऽ बाह्य भूमि जाइत अछि। नगरीय परिवेशमे 'एटैज्ड बाथरूम' रहैत छैक। हम बाह्य भूमिक सर्वथा विपरीत एहि व्यवस्थाकेँ आभ्यन्तर भूमि कहैत छिऐक। दूनू वस्तुक नाम पहिल 'डस्टर' दोसर पैर पोछना। सूति उठि आभ्यन्तर भूमि जाइत छी, बहराइत भीजल पैर पोछैत छी आ प्रो. ठाकुरजीक छबि मन-मस्तिष्कमे झलकि उठैत अछि। घरसँ बाहर होइत छी, बैसबाक हेतु गेंटल कुर्सी उतारैत छी, ओहिपर पड़ल धूलिकणकेँ झाड़ैत छी, प्रो. ठाकुर मन पड़ि जाइत छथि। साहित्य अकादेमी, चेतना समिति, बिहार राज भाषा परिषद सुन्दर ताम्र पत्र देने अछि, अनेक संस्था सुन्दर फ्रेम लगाय कवित्वमय अभिनन्दन पत्र देने अछि, कहाँ मन पड़ैत अछि, किन्तु प्रो. ठाकुर सतत स्मृतिमे बनल रहैत छथि। सतत स्मरण रखबाक हेतु प्रो. ठाकुर बुधियारी कयलनि की नहि ?

एहने बुधियारी हमर एक छात्र कयने छथि। अनुवाद पुरस्कार वितरण समारोह साहित्य अकादेमी हैदराबादमे हमर कार्यकालमे दू बेर कयलक। ओतय परम श्रद्धेय प्रो. उमानाथझाक सुपुत्र डॉ. श्रीअनिलकुमार झा पूर्ण यशस्वी चिकित्सकमे परिगणित छथि, ओ हमर छात्र रहि चुकल छथि। कोनो सूत्रसँ हुनका हमर हैदराबाद आगमनक सूचना भेटि गेल रहनि। हमर कोनो छात्र हैदराबादमे छथि से ज्ञातो नहि छल। संयोग एहन जे हुनक विवाह भदुआड़क श्रीरमेश मिश्रक कन्यामे। श्रीरमेश मिश्र तीन भाय श्रीसुरेशमिश्र इंजीनियर, डॉ. श्रीधनेशमिश्र सब हमर छात्र रहि चुकल छथि। जमाय सेहो छात्र, श्वसुर सेहो छात्र ओ आबि हैदराबादक दर्शनीय अनेक स्थल घुमाय देलनि, से एक बेर नहि, दूनू बेर। पहिल बेर उपहारमे टेबुलघड़ी आ दोसर खेप हाथघड़ी सहित फाइबरक छड़ी।

Scanned by CamScanner

एहन उपयोगी वस्तु जे कखनहु स्मृति पटलसँ दूर नहि भऽ पबैत छथि । आयुष्मान डॉ. श्रीअनिल कतेक सुयश आ धन अर्जन कयलनि अछि से एहिसँ अनुमान कऽ सकैत छी जे हैदराबाद सन महग नगरमे अपन केवल 12 वर्षक सेवावधिमे अपन भवन निर्माण कराय, रहि रहल छथि, मातृभाषाक विकास लेल ओतहु सचेष्ट रहैत छथि । हमरा आँखिमे मोतियाविन्द भऽ गेल छल । आग्रह करथि जे मात्र दू दिन अँटकि गेल जाय, काल्हि ऑपरेशन कराय परसू बिदा कऽ देब, मुदा हमरा संग पुरस्कार लेबाक हेतु छलाह नेहरा कॉलेजक अंग्रेजी विभागाध्यक्ष, लोकप्रिय कवि डॉ. श्रीराजानन्द झा सपत्नीक तथा सम्प्रति अन्तेवासी श्रीसुमितकुमार झा 'नटवर' चारूगोटेक आपसी टिकट एक संग छल, अँटकब सम्भव नहि छल । ई लोकनि डॉक्टर साहेबक हमरा प्रति भक्तिभाव देखि मन्त्रमुग्ध रहथि ।

मोतियाबिन्दक चर्चा कयलहुँ अछि तँ प्रसंगत: तकरो खिस्सा सुनाय दी । आयुष्मान श्री अनिलक पत्नी आयुष्मती श्री शेफाली कहलनि– बाबा ! ऑपरेशन करयबाक हेतु एतहि आयब आ श्रीनटवरकेँ कहलथिन– अहाँ बाबाकेँ लेने अयबनि से वचन दिअऽ, हम दूनू गोटेक फोन नम्बर दऽ दैत छी । मुदा एहीटा काज लेल एतेक दूर जायब कठिनाह लागल । एमहर आँखिक चिकित्साक हेतु नेपाल तराइ स्थित 'लहान'क बड़ चर्चा ओ सुयश छैक, किछु गोटे लहान जयबाक परामर्श देलनि । संयोगवश हमर परम हितचिन्तक, हमर पिताजीक शिष्य हरिहरपुर निवासी पं. देवचन्द्रझाक अनुज, चातुर्भाषिक मैथिली शब्दकोषक संकलयिता पं. श्रीउमेशचन्द्र झा अपन पत्नीक आँखिक ऑपरेशन लहान नेत्र चिकित्सालयसँ आयल **डॉ. श्रीजीतेन्द्र प्रसाद**, दरभंगामे अपन क्लिनिक चलबैत छथि, हुनकेसँ करबौने छलथिन, ओ एहि डॉक्टरक बहुत गुणगान करैत हिनकेसँ ऑपरेशन करयबाक परामर्श देलनि । हम आयुष्मती शेफालीकेँ एकर सूचना दऽ डॉ. श्रीजीतेन्द्र प्रसादक ओतय गेलहुँ । ईहो हमर स्कूलक छात्र रहि चुकल छलाह, हमर नाम पढ़ि जिज्ञासा कयलनि आ कहलनि हम अपनेक छात्र छलहुँ, अपनेक दुराग्रहसँ मुजफ्फरपुरवासी होयबाक कारणेँ शुद्ध मैथिली लिखबाक कोन बात, बाजिओ नहि सकैत छलहुँ तथापि मातृभाषा पत्रमे मैथिली पढ़लहुँ, ततेक बेसी अंक भेटल जे मेडिकल प्रवेशमे बड़ सहायक भेल । फीस कथी लेल लेताह ततेक तत्परतापूर्वक चिकित्सा कयलनि जकर वर्णन नहि हो । एकर उल्लेख एहि हेतु कयलहुँ जे जकरा अहाँसँ निश्छल वात्सल्य भेटल छैक ताहि व्यक्तिसँ निश्चित रूपेँ श्रद्धा भाव भेटत । सम्प्रति शिक्षा ओ शिक्षकक दुर्गति देखैत छिऐक तँ मनमे कचोट होइत अछि । पाश्चात्य वात्याचक्र गुरुशिष्यक ओहि पावन सम्बन्धकेँ प्रदूषित कऽ देलक ।

श्रीअशोककुमार ठाकुर एक प्रोफेसर ठाकुरक चर्चा कऽ चुकल छियनि दोसर ठाकुरजी थिकाह इंजीनियर श्री अशोककुमार ठाकुर । आब सेवा निवृत्त छथि । ई कहियो हमर छात्र

Scanned by CamScanner

नहि रहलाह । हँऽ हमर अनेक छात्र जे इंजीनियरिंग कॉलेजमे संगी भेलथिन वा जीविकापन्न भेलापर विभागीय सहकर्मी रहलथिन, ओही सूत्रेँ हमरा प्रति गुरुवत् भाव रखैत छथि । एतबे स्मरण अछि जे विभागीय इंजीनियरिंगक अतिरिक्त साहित्यिक इंजीनियरिंगमे सेहो पटु रहलाक कारणेँ हमर भातिज 'मिहिर'क संग स्वदेश सान्ध्यगोष्ठीमे प्रवेश कयलनि । कहिया से मन नहि अछि । हम साहित्यिक इंजीनियरिंगक नाम लेलहुँ अछि । ई मैथिलीकेँ अश्लीलता, वीभत्सता ओ उच्छृंखलतासँ बचैत दू गोट आधुनिकता बोधसँ परिपुष्ट 'निशान्त' ओ 'वसुधाक संसार' नामक मौलिक उपन्यासे देलथिन अछि जे हिनक कौशलक परिचायक छनि । एक अभियन्ता होइत साहित्यक एहन गम्भीर अध्येता हमरा नहि भेटलाह अछि ।

सुमनजीक परोक्ष भेलापर ओहि शून्यकेँ भरबाक तथा परस्पर विचारक आदान-प्रदान करबाक लेल कोनो स्थान अपेक्षित छल से हमरा सौभाग्यसँ ओ सान्ध्यगोष्ठी ससरिकऽ एतहि आबि गेल । बहुतोकेँ धारणा छनि जे जतय चिन्नी वा गुड़ रहतैक चुट्टी जयबे करतैक । संयोग एहन जे 2002मे सुमनजी दिवंगत भेलाह आ हुनक जे आन्तरिक इच्छा छलनि आ जकर चेष्टा 10 वर्ष पूर्व कयनहुँ रहथि से 2003मे हमरा साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रतिनिधित्व करबाक अवसर भेटि गेल । गुड़ लग चुट्टीक पहुँचब सेहो किछु भेलैक अवश्य । ताहि समय सान्ध्यगोष्ठी किछु झमटगर रहैत छल किन्तु साहित्यानुरागी लोकनि एखनहु दर्शन देबाक कष्ट करैत छथि, ताहिमे इंजीनियर ठाकुर अर्थात् श्रीअशोक कुमार ठाकुर प्रथम स्थान पर छथि ।

प्रसंगतः एक बात मन पड़ि गेल । 1955 सँ जे स्वदेश सान्ध्यगोष्ठी आरम्भ भेल से 5 मार्च 2002 धरि चलैत रहल । एहि मध्य सुमनजीक जीवन क्रममे अनेक हलचल भेलनि । विधायक भेलाह, सांसद भेलाह, साहित्य अकादेमीमे दू बेर प्रतिनिधित्व कयलनि, दू बेर दैनिक स्वदेशक संचालन कयलनि । एहि सब काजमे बाहर जाय पड़ैत छलनि तँ सान्ध्यगोष्ठी नहि जुटि पबैत छल, परन्तु समयक दीर्घ अन्तराल नहि होइत छलैक । घुरि अयलापर पूर्ववत् गोष्ठी चलैत रहैत छल । 1992मे साहित्य अकादेमीसँ अवकाश भेटलाक बाद क्रमशः शारीरिक शिथिलता बढ़ैत गेलनि । वयस सेहो 82 भऽ गेल छलनि, हल्लुक सन पक्षाघातसँ आक्रान्त भऽ गेल रहथि तथापि 10 वर्ष जीबैत रहलाह, ततबे नहि 'मन पड़ैत अछि' आत्म संस्मरण लिखलनि, कृष्णावतरण महाकाव्य अपूर्ण छलनि तकरा पूरा कयलनि । सबसँ महत्त्वपूर्ण तथा श्रमसाध्य काज छलनि 'प्राचेतस राज शास्त्रम्' शोधकार्य तकरा परिष्कृत रूप देलथिन आ तत्कालीन साहित्य अकादेमी सचिव डॉ. श्रीइन्द्रनाथ चौधरीक आग्रहपर ओकर हिन्दीमे अनुवाद कयलनि संगहि प्रो. श्रीमुरारि मधुसूदन ठाकुरसँ अंग्रेजीमे अनुवाद करौलनि । रवीन्द्र साहित्यक अस्सी प्रतिशत अंशक मैथिलीमे अनुवाद कयलनि । एतेक मानसिक ओ शारीरिक श्रम करैत मन ओ शरीर कतेक श्रान्त भऽ जाइत छल होयतनि से सहज रूपेँ अनुमान कयल जाय सकैछ ।

Scanned by CamScanner

5 बजेसँ क्रमशः हम सब पहुँचय लगैत छलहुँ । कहथि अहाँ लोकनिक आगमन हमरा औषधिक काज करैत अछि, तँ से कविक अतिशयोक्ति अलंकार सन प्रतीत होइत छल । आब जखन स्वयं ओहि वयसमे आबि गेलहुँ अछि, तँ स्वभावोक्ति अलंकार बुझाइत अछि । ओहि ठामक उपस्थितिमे जेना हमर स्थान छल, एहिठामक सान्ध्य गोष्ठीमे इं. श्रीअशोककुमार ठाकुर स्थान बनौने छथि । जँ कदाच कोनो दुर्योगवश साँझ शून्य रहि जाइत अछि तँ वस्तुतः मानसिक अस्वस्थाक अनुभव होअय लगैत अछि आ सुमनजीक कहल ओ वाक्य मनमे अन्तर्ध्वनित होअय लगैत अछि ।

सब जनैत छी जे मिथिला संस्कृत विद्याक खानि रहल अछि । एतेक धरि जे महाराज महेश ठाकुर विद्याक बलेँ मिथिला राज्य अर्जित कयलनि । हमरा सभक पीढ़ीक संस्कृत विद्वान लोकनिमे सम्प्रति महामहोपाध्याय, विद्यावाचस्पति **आचार्य श्रीजयमन्त मिश्र** संस्कृत-साहित्य-संसारमे मिथिलाक ध्वजा ततेक उच्च शिखर पर फहराय देलनि अछि जतय धरि पहुँचबामे किछु शताब्दी पुनः प्रतीक्षा करय पड़तैक । हिनक 'महामानव चम्पूकाव्यम्'' संस्कृत साहित्यक इतिहासमे एहन विशिष्ट वस्तु लऽ उपस्थित भेलनि अछि जकरा विषयमे 'यन्न भारते तन्न भारते' उक्तिकेँ पुनः दोहराओल जाय सकैछ । संसार आइ आसुरी महाशक्तिक कारणेँ विनाशक ज्वालामुखीक मुँहपर आनि देल गेल अछि । आसुरी आचरणमे संलिप्त देश विश्वशान्तिक भ्रामक नारा उछालि रहल अछि । महामनीषी आचार्य प्रवर उक्त ग्रन्थमे विश्वशान्तिक जे मार्ग निर्दिष्ट कयलनि अछि, ताहिसँ अतिरिक्त दोसर कोनो मार्ग नहि अछि । किन्तु समस्या तँ अछि' विनाश काले विपरीत बुद्धिः सँ मार्गदर्शके मण्डली अर्थात् नेतृवर्गे आक्रान्त अछि । संस्कृत वाङ्मयक श्रीवृद्धिमे सतत साधनारत श्रीजयमन्तबाबू अनेक मूल्यवान ग्रन्थरत्नसँ भण्डारकेँ भरि रहल छथि ।

ई महानुभाव मातृभाषाक परम अनुरागी रहलाक कारणेँ यदाकदा मैथिलीओक चरण पर काव्यार्घ्य अर्पित करैत रहलाह अछि । आइ काल्हि ज्ञानक स्तर कतेक निम्नस्तरपर आबि गेल अछि जे जखन 'कविता कुसुमांजलि' हिनक मैथिलीकाव्य संकलन साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत भेलनि तँ ज्ञानलव दुर्विदग्ध सभक जमातिकेँ पेटेमे मड़ोर देबय लगलैक । फुनगीपर उड़िकऽ बैसनिहार गिद्धकेँ गाछक जड़िक मोटाइ कोना बुझयतैक । यद्यपि कवि सम्मेलनक मंचपर एहि मर्मज्ञक संग बैसबाक सुयोग कहिओ नहि लागल अछि, तथापि अन्यान्य विचारमंच पर हिनका संग बैसबाक सौभाग्य प्राप्त कऽ अपनाकेँ गौरवान्वित बुझैत रहलहुँ अछि । ओना ककरोपर किछु आरोप लगयबाक मुँह हम अपनहु नहि रखने छी, तथापि ई मानय पड़त जे संस्कृत ज्ञानार्जनमे देश ह्रासोन्मुख भेल जाय रहल अछि । विद्यावाचस्पति श्रीशशिनाथ झा सदृश कर्मठ, ज्ञानपिपासु तथा सतत अध्ययनरत व्यक्तिकेँ देखि, पण्डितप्रवर श्री देवनारायण झा रचित 'श्री अटलबिहारी वाजपेयी शतकम्' पढ़ि तथा डॉ.पं. श्रीविद्याधर मिश्र द्वारा मैथिली लोकोक्ति सभक

Scanned by CamScanner

संस्कृत अनुवादक अवलोकन कऽ, डॉ.श्रीरत्नमोहन झा, राष्ट्रिय सं. संस्थान, दिल्लीक संस्कृतक प्रति समर्पण भाव देखि मनमे आशाक किरण जगैत अछि जे– 'रात्रिर्गमिष्यति, भविष्यति सुप्रभातम्' । संगहि प० श्रीविघ्नेश झाक पीयूषवर्षी वाणीक चमत्कार मन-प्राण केँ आप्यायित कयने रहैत अछि ।

निरक्षर कवि भाइ विन्देश्वर, लोकक मुँहेँ सुनैत रहलिऐक जे कवित्वक हेतु शिक्षाकेँ के कहय साक्षरतो आवश्यक नहि छैक, उदाहरणमे महात्मा कबीर दासक नाम लेल जाइत छनि । कबीर दास साक्षर छलाह वा निरक्षरसे निस्तुकी नहि जनैत छियनि, किन्तु एहि धारणाक पुष्टि कही अथवा सत्यापन एक एहन निरक्षर कविक साहचर्यसँ भऽ चुकल अछि, तेँ हुनक स्मरण करब उपयुक्त बुझायल ।

मिश्रटोलाक शाकद्वीपीय कुलमे उत्पन्न हमर अग्रज भवनाथमिश्रक संगी छलथिन, पढ़बा-लिखबामे नहि, भाङ पीबामे । हिनकर जेठ राजेश्वर मिश्र आयुर्वेद पढ़ैत रहथिन हमर बच्चा भाइक संग । कविक नाम रहनि विन्देश्वर मिश्र, मुदा अपन मिश्र उपाधिकेँ घरक आगुएमे दिग्घी पोखरि छनि ताहिमे जुमा कऽ फेकि देने रहथि । हिनक रचना प्रक्रिया एहि रूपेँ चलैत छलनि– जखन मनमे कोनो भाव उत्पन्न होइनि तँ दिग्घी पोखरिक घाट लग एकान्त शिवमन्दिर पर दौड़ि जाथि, चित्त भऽ पड़ि रहथि, धोतीक ढट्ठाकेँ फोलि लेथि, दूनू ठेहुन ठाढ़ कऽ मोड़ि, ढट्ठासँ मुँह सहित झाँपि, ठेहुन डोलबैत गुनगुनाय लागथि, पहिल पंक्ति जाहि भाषामे हिन्दी, मैथिली, भोजपुरीमे आयल ओही भाषामे पद जोड़ैत जाथि, कविता पूर्ण होइत फुरफुराय उठथि, दौड़ल कोनो विद्यार्थी लग जाय, पाचक खोआय, लड़ैत दूटा विलाड़ि, वा कूकुर अथवा जनमल कूकुरक बच्चाक कोंकिआयब से सुनाय तखन कहथिन– बौआ कने कागत कलम बाहर कर आ हम जे कविता कहैत छियौक से लिखने जो । एहन कविता सभक 5-6 टा पुस्तिका प्रकाशित छनि जाहिमे अंग्रेजीक सेहो छनि । स्कूल सबमे टिफिन समयमे जाथि, पाचक संग पोथी सेहो बिकाइनि आ ताहीसँ गुजर करैत छलाह ।

क्यौ कहि देलकनि जे पोथी जे छपबैत छी जे प्रेसवला अपनहु किछु प्रति बेसी छापि, राखि लैत अछि । तकर निराकरण हेतु चारिटा अक्षर 'विन्देश्वर' हस्ताक्षर सिखलनि आ छपल पोथी पर 'बिना हस्ताक्षर की पुस्तक जाली है' छापि एक-एक प्रति पर हस्ताक्षर करय लगलाह । हमरा घरैया नाम 'बतहू' कहि सम्बोधित करथि । एकटा 'गोलमोल' नामक पोथी छपौलनि से एक प्रति समर्पणमे– मैं बतहू को करता भेंट, रसगुल्लामे भाङ लपेट' लिखबाय हमरा देलनि । हम अपन 'त्रिफला' नामक पुस्तिका समर्पित कयलियनि तँ ओहि समर्पणमे लिखलियनि–

विन्दा भाइ, छह स्वयं प्रबुद्ध
त्रिफला करतह कोठी शुद्ध

Scanned by CamScanner

स्वाभिमानी तेहन जे कवि सम्मेलनमे अध्यक्षक होयब हुनका सह्य नहि रहनि। कहथि– तुलसी का पत्ता छोटा क्या और बड़ा क्या ? तेँ कवि सम्मेलनमे सहसा नहि जाथि। जखन पत्रं पुष्पं चलय लगलैक तँ कहलियनि– विन्दा भाइ, तोँ तँ वैद्य छह। कोनो दवाइमे तुलसी पातक रस अनुपान होइत छैक। रस बाहर करबा लै छोट पातसँ बेसी रस पैघ पातसँ बहरयतैक की नहि ? कहलनि– जरूर निकलेगा। हम कहलियनि– सैह बात कविओ मे होइत छैक। आसन ऊँच रहओ वा नीच, बिदाइ बराबरिए भेटैत छैक। तखनसँ कवि सम्मेलन सबमे जाय लगलाह। ई शेखरजीक बालसंगी रहथिन। हिनके नायक बनाय शेखर जी 'महाकवि पगलेट' नामसँ हिन्दीमे एक उपन्यास लिखने छथि आ प्राय: पेपर हाउसक संस्थापक सूर्यनारायण झा छपने छलथिन। नवतुरिया गजलकार श्रीनरेन्द्र हिनके जेठ भाय दिनेश्वरमिश्रक सुपुत्र थिकथिन।

डॉ. श्रीहरिराम यादव कवि ओ सफल कथाकार श्रीजीवकान्तजी अपन 'पंजरि प्रेम प्रकाशिया' शीर्षक आत्मकथात्मक संस्मरणमे ट्यूशन विषयक किरणजीक संग भेल वार्त्तालापक क्रममे छात्रसँ टाका लऽ पढ़यबाक निषेधक उल्लेख कयने छथि। ई एक आदर्शक स्थिति भऽ सकैत अछि, परन्तु अपकर्म नहि कहल जाय सकैछ। अपकर्म तखन कहि सकैत छिऐक जखन वर्गमे पढ़यबामे देह चोराबी। ऋषिकुल, गुरुकुलक कहियो समय छलैक, वर्त्तमान परिवेशमे ओ इतिहासक विषय भऽ चुकल अछि। धनाढ्य होयबाक हेतु नहि, सम्मान पूर्वक एक साधारण जीवन यापन हेतु हमरो ट्यूशन पढ़बय पड़ल। झुण्डकेँ नहि, व्यक्ति विशेषक धीयापूताकेँ पढ़बैत छलियनि सेहो संस्कृत ओ हिन्दी। मैथिली पढ़यबाक हेतु ककरोसँ फराक कऽ शुल्क नहि लेलियनि, अन्यान्य विषयक संग क्यौ कदाच मैथिलीओ पढ़ि लैत छलाह। स्कूलक अध्यापन स्तर ओ उत्कृष्ट परीक्षाफलक कारणेँ डॉक्टर, ऑफिसर, ओकील, प्रोफेसर आदिक धीया-पूता विशेषत: हमरे स्कूलमे पढ़ैत छलनि। एहि क्रममे ओहि वर्गक लोकक सम्पर्क अधिक रहल। एहनेमे एक नाम अबैत छनि डॉ. श्रीहरिराम यादवक, जनिक जन्मभूमि उत्तर प्रदेशमे छनि। हिनक तीन बालक ओ एक कन्याकेँ पढ़बैत रहियनि। जखन दैनिक स्वदेश बहराय लागल तँ आजीवन सदस्य बनयबाक अभियान चलल। एहि डॉक्टर साहेबकेँ मैथिलीसँ कोनो सम्पर्क नहि, तथापि अमैथिली भाषी होइतो चर्चाक्रममे विषय-वस्तु ज्ञात भेलापर स्वेच्छया एक हजार टाका दऽ ई दैनिक स्वदेशक आजीवन सदस्य बनि गेलाह। चारू सन्तान परीक्षोत्तीर्ण होइत गेलनि आ ई परीक्षा फल प्रकाशित भेला पर प्रति छात्र धोती-कुर्त्ता दऽ सम्मानित करैत रहलाह। आइ सेवानिवृत्तिक 27म वर्ष बिताय रहल छी, एही वर्षक गत जुलाइमे अस्वस्थ भऽ गेलहुँ 'एक्सरे' करयबाक प्रयोजन पड़ल, पहुँचलहुँ रंजन एक्स-रे क्लिनिक, अपने अस्वस्थ छलाह। तथापि जमा कयल फीस आपस कराय देलनि। परिवारक कोनो सदस्यक एक्स-रे करौने होइ, आइ धरि एक पाइ हमरासँ ग्रहण नहि कयलनि। भनेँ ई हमर आत्मप्रशंसा मानल जाय, तथापि

कहब जे शिक्षक पदक मर्यादाकेँ रखैत ट्यूशन करब कोनो अपकर्म नहि छलैक। आजुक स्थिति तँ मटुकनाथी भऽ गेल छैक, तेँ हम एखनुक स्थितिसँ सहमत नहि छी। आब तँ परीक्षोत्तीर्ण होयबाक लेल ट्यूशनक अतिरिक्त कोनो बाटे नहि बाँचल छैक। आइ आत्मविश्लेषणक क्षणमे डॉ. श्रीहरिराम यादव सन व्यक्तिक स्मरण सर्वथा स्वाभाविक मानैत छी।

श्रीमोहन भारद्वाज, हिनकासँ रक्तक कोनो साक्षात् सम्बन्ध नहि अछि। हिनक पिता पं. मदनमोहन झाक मातृक थिकनि नवानी तथा हिनक पितामही, मातृक खोजपुर। जाहि पं. बच्चू ठाकुरक पूर्वमे चर्चा कयने छियनि से पं. मदन मोहन झाक मातृमातामह छलथिन। हमर पिताजी पं. बच्चू ठाकुरसँ आरम्भमे किछु पढ़ने छलथिन तेँ हुनक कन्या बहिन भेलथिन। ताहि सम्बन्धेँ श्री मोहन भरद्वाजक पितामही केँ हम सब बहिन कहैत छलियनि, कहिते नहि छलियनि, हमर सबसँ जेठ वैमात्रेय बहिन नवानीमे छलीह, भ्रातृद्वितीयामे नवानी जाइ तँ जहिना अपन बहिनदाइक हेतु सनेसमे मखान-पकमानक एक मोटरी माय देथि तहिना हुनको आङन लै दोसर मोटरी देल करथि। विशेष बात ई जे सम्बन्ध केवल रक्तेक आधार पर दृढ़ नहि रहैत छैक, प्रत्युत भावना सम्बन्धकेँ सुदृढ़ बनबैत छैक। से भावनात्मक कतेक मधुर सम्बन्ध होइत छैक तकर व्यक्तिगत अनुभव ओहि परिवारसँ हमरा भेल अछि। एही कारणेँ श्री आनन्दमोहन जी अर्थात् मोहन भारद्वाजकेँ पटना प्रवासमे रहैत हम जखन पटना, विशेषतः चेतना समितिक आयोजनमे, जाइ तँ हमरा सबसँ बेसी सुविधाजनक तथा आत्मीयतापूर्ण आवास हिनके ओतय बुझाइत छल। ईहो मानसिक रूपसँ मानि चुकल रहैत छलाह जे बाबा एतहि रहबे करताह। स्वास्थ्यक अनुकूल सुक्खी रोटी दूधक व्यवस्था कयनहि रहैत छलाह।

साहित्य अकादेमीमे हमर प्रतिनिधित्वक पश्चात् ने जानि ओहि आत्मीय सम्बन्धक बीच कोन विषाणु प्रवेश कयलक जे कराह भरल दूधमे एकटा आमिल पड़ि गेल, जकरा हम बहुत पैघ घाटा मानैत छी। ओना बाह्य रूपेँ ई हमर कोनो अवमानना कयने होथि सेहो दूर-दूर धरि कतहु दृष्टिगत नहि होइत अछि। एखनहु मोहन भारद्वाजजी दरभंगा अबैत छथि तँ यथासम्भव समय बाहर कऽ भेट दइए जाइत छथि।

उपेन्द्र दोषी, एक अनुपम प्रतिभा सम्पन्न युवक अकाल काल-कबलित भऽ गेलाह। पत्र-पत्रिकामे हिनक कविता-कथा पढ़ैत छलहुँ तँ एहि युवकसँ साक्षात्कारक इच्छा प्रबल भऽ उठैत छल। हिनकासँ कहिया कतय पहिल भेट भेल से नहि स्मरण अछि, किन्तु कवि सम्मेलनक अनेक मंचपर भेट-घाट होइत रहल। ई 'मिहिर'सँ घनिष्ठ सम्बन्ध रखैत छलाह तेँ हमरा काकाजी कहि सम्बोधित करथि। आत्मीयता आ साहचर्य बढ़ल जखन पुस्तक भण्डारमे जीविकापन्न रहथि तँ पटनासँ बदली भऽ दरभंगा अयलाह तँ एक दिन आबि कहलनि— काकाजी, गोड़ लगैत छी, हम उपेन्द्र दोषी लहेरियासरायक

Scanned by CamScanner

पोथी भँडारमे पटनासँ बदली भऽ आयल छी । आब अहाँ सभक संसर्गमे रहि बहुत किछु सिखबाक-बुझबाक लाभ उठा सकब ।

विचारधाराक दृष्टिसँ ई दोमाङि पर रहथि । अन्त:करण भारतीय साहित्यिक परम्परासँ प्रभावित रहनि आ साहचर्य वामपन्थी विचारधाराक अनुगामी साहित्यकार सभक । दृष्टिमे सूक्ष्मता, तीक्ष्णता, वाक्यक प्रयोगमे स्पष्टता, भावाभिव्यक्तिमे दक्षता, प्रत्युत्पन्नमतित्व आदि सर्वगुण सम्पन्न छलाह । सुनल अछि जे एक साक्षात्कारमे प्रो. हरिमोहन झा तथा एहि पंक्तिक लेखनसँ प्रभावित रहबाक बात स्वीकार कयने छलथिन जाहि हेतु बहुत फज्झति सुनय पड़ल छलनि ।

लहेरियासरायमे रहैत कार्य व्यस्तता तथा दूरीक कारणेँ हमरा सभक साहचर्यमे अधिक समय नहि बाहर कऽ सकलाह, एहि ठाम बेसी दिन रहिओ नहि सकलाह, तथापि हिनका चिन्हबाक थोड़ बहुत अवसर ओही अवधिमे भेटल । हिनक 'यन्त्रणाक क्षणमे' कविता संग्रह बहुत आशा जगौने छल जे ई युवक मैथिलीक भविष्यकेँ प्रोद्भासित करबामे समर्थ होयताह, किन्तु विधाताकेँ स्वीकार नहि छलनि । हिनक अकाल कवलित होयबाक समाचार मर्माहत कऽ देलक । जागल आशा निराशामे परिणत भऽ गेल । मैथिलीक सम्पूर्ण हित चिन्तक वर्गकेँ धक्का लगलैक । स्वभाववश मैथिलीक हानि हमरा वैयक्तिक हानि जकाँ पीड़ादायक लगैत अछि । अपने तँ ई 'यन्त्रणाकक्षण' प्रकाशित कऽ चल गेलाह, किन्तु अनेक हितचिन्तक बन्धुकेँ आजीवन यन्त्रणाक अनुभव करबाक हेतु छोड़ि गेलाह ।

अमिय हलाहल, ई अपना ढंगक हास्य-व्यंग्यक बेछप कवि रहथि । ताहि दिनक भागलपुर जिलाक अन्तर्गत भ्रमरपुर गाम निवासी रहथि । हिन्दी आ भागलपुर दिस बाजल जाइत मैथिलीमे सिद्धहस्त रहबे करथि संगहिं अनुकृति (कैरिकेचर) करबामे अद्वितीय रहथि । अनुकृति हिनक जीविकाक आधार रहनि । सतत भ्रमणशील रहथि । स्कूल सबमे जाथि, प्रधानाचार्यसँ निवेदन कऽ 20-25 मिनटक कार्यक्रम प्रस्तुत करथि, ताहि समयक सय-सय टाका हिलोरि लेथि । हमरा अनेक मैथिली आ हिन्दीक मंचपर भेटिए जाथि, संगहि एम्.एल्.एकेडमीमे अनेक बेर अपन कार्यक्रम उपस्थित कयने रहथि । हमरा स्कूलमे छात्रक संख्या दू हजार सँ ऊपर रहैक, संभ्रान्त परिवारक बच्चा सेहो पर्याप्त रहैक, तेँ एक बेरक कार्यक्रममे 400 रु. सँ किछु उपरे आमदनी भेलनि । रातिमे छात्रावासेमे आतिथ्य ग्रहण कयलनि । वार्त्तालापक क्रममे कहलनि– आब हम्मे पाँच महीना घरेमे बैठीकेँ नवावी करबौन आ रूसल घऽरऽ बालीकेँ मनाय के रहबौन ।

आचार्य सुमनक पौत्री आयुष्मती जयन्तीक विवाहमे ई बरियातीमे आयल रहथि । पोखरिक कातमे बरियातीक स्वागत हेतु मंच बनल छलैक । अमिय हलाहलजी अपन करतब देखाय रहल छलाह, संयोगवश सोझाँमे जे मर्करी सब जरैत रहैक से सब सहसा

Scanned by CamScanner

मिझाय गेलैक । अमिय हलाहल जी बाजि उठलाह— ई दरभंगिया अनूठा व्यवस्था छौन, सामने प्रकाश गुम, चुत्तर प्रकाशमान ? वरक मातामहीक भाय रहथिन दुमका निवासी **शुद्धदेवझा 'उत्पल'**, हुनके प्रयासेँ ई आदर्श विवाह भेल छलैक । ओ हमरे लग बैसल छलाह । ओ स्वयं अनुपम कलाकार रहथि, केवल मुख मुद्रासँ काव्यगत नवो रसक अद्‌भुत प्रदर्शन करबामे परम पटु रहथि । अमिय हलाहलकेँ उत्तर देबा लै हमरा उसकौलनि । हम कहलियनि— अमिय हलाहल जी, अहाँक मुँहसँ अमिय रस जे चुइल तकर रसास्वादन सब श्रोता कयलनि, आब हलाहलक खोज लै पाछाँ दिस इजोत रखने छथि जे ओ कतय नुकौने छी । जोरसँ ठहाका पड़लैक । ओ मंचसँ उतरि हमरा लग आबि लोटपोट होइत रहलाह । उत्पलजी आ अमिय हलाहलजीमे जे तकर बाद कनफुसकी सन गप्प भेलनि तकर उल्लेखकेँ मर्यादा बाधित करैत अछि ।

आइ समस्तीपुर क्षेत्र पर्यन्तकेँ टेस्ट ट्यूबमे जनमाओल बच्चा जकाँ उच्चारणक ध्वनिमे कनेक अन्तर रहलाक कारणेँ मैथिली भाषी क्षेत्रसँ काटि बज्जिका भाषी क्षेत्र बनयबाक समधानल षड्‌यन्त्र रचल जाय रहल अछि । जाहि क्षेत्रमे म.म. चित्रधर मिश्र सन मीमांसक शिरोमणि जन्म लेने छलाह । जाहि क्षेत्रमे कवीश्वर चन्दाझाकेँ नरहन राज्यमे आश्रय भेटल छलनि । जाहि क्षेत्रमे महाकवि विद्यापतिक समाधि भूमि सदृश हमरा सभक साहित्यिक पवित्र तीर्थ अछि । जतय आचार्य सुमन, कविवर आरसीप्रसाद सिंह, महाकवि दीनानाथ पाठक बन्धु, महाकवि श्रीमार्कण्डेय प्रवासी, डॉ. श्रीवुद्धिनाथ मिश्र, श्रीकीर्तिनारायण मिश्र, डॉ. श्रीनरेश कुमार 'विकल' श्रीश्रीमन्त पाठक, गौरीकान्त चौधरी कान्त, स्नेहलता, डॉ. श्रीरवीन्द्र 'राकेश' श्री सत्यनारायण झा, श्री रमाकान्त राय 'रमा', श्री परमानन्द 'प्रभाकर' आदि जन्म लऽ मैथिलीक ध्वजा आकाशमे फहरबैत रहलाह, फहराय रहल छथि । हमर दृष्टि सर्वदा एहि क्षेत्रपर साकांक्ष रहल अछि ।

श्री रमाकान्त राय 'रमा' हमर कनिष्ठ मित्र मण्डलमे छथि जनिक मातृभाषा प्रेमक एक उल्लेखनीय घटना कहैत छी । श्रीरमाजी उपर्युक्त षड्‌यन्त्रसँ सतत सतर्क रहैत छथि । तेँ अपन गाम मानारायटोल सन ग्राम्य क्षेत्रमे साहित्य अकादेमी दिससँ एक कविसम्मेलन आयोजित कयलनि, किन्तु ताही क्रममे दरभंगा अबैत काल समस्तीपुर स्टेशन पर रेल दुर्घटनामे अपन दहिना छाबा धरि टाङ गमाय बैसलाह । सात–आठ मास धरि ओछाओन धयने रहलाह तथापि 'हारिए न हिम्मत, बिसारिए न हरिनाम' उक्तिकेँ आधार बनाय, ने साहस छोड़लनि ने मातृभाषा मैथिलीक नाम बिसरलाह । कृत्रिम पैर बनबाय, फराठीक बलेँ चलि, ओहन विशाल आ विलक्षण आयोजन सम्पन्ने कऽ दम मारलनि । एहि कार्यसम्पादन दिनमे हिनक पत्नीक उत्साह आ परिश्रम देखि समागत कविबन्धु आ अतिथि लोकनि विस्मय-विमुग्ध रहथि ।

एहि सम्पूर्ण आयोजनमे सहयोग देनिहार **'फहरय विजय पताका'** शीर्षक कविता

Scanned by CamScanner

संकलनक प्रणेता **श्री सत्यनारायण झा** सेहो एहने मातृभाषा-भक्त छथि, हिनक बाँहि पुरैत रहलथिन । आत्मनिरीक्षणक क्षणमे हिनका लोकनिक कर्मठता ओ उत्साह सिनेमाक रील जकाँ स्मृतिपटल पर घूमि रहल अछि । कहबी छैक बुन्देँ बुन्देँ घैल भरैत छैक । मैथिली यदि अपन न्यायोचित अधिकार पाबि सकल तँ ताहिमे एहने-एहने बुन्द घटपूर्त्तिमे सहायक भेल अछि । तेँ यदि कोनो व्यक्ति विशेष एकर श्रेय लेबाक दम्भ करैत छथि तँ हमरा दृष्टिमे भीतरसँ फोंक होयबाक प्रमाण प्रस्तुत कऽ रहलाह अछि ।

पं. राघवाचार्य शास्त्री हमरा पीढ़ीक एक जगजियार हस्ताक्षर छलाह पं. राघवाचार्य शास्त्री । हमरा हुनकासँ पहिल परिचय भेल 17वा 18 अगस्त 1947मे स्वतन्त्रता प्राप्तिक उल्लासमय वातावरणमे आयोजित विशाल कवि सम्मेलनमे । दरभंगा टाउन हॉलमे ई सम्मेलन भेल रहैक । आयोजक के छलाह से स्मरण नहि अछि । एहिमे भाषाक कोनो सीमा रेखा नहि रहैक । सोटल-गठल शरीर, श्याम रंग, स्वर्णाभ फ्रेमक चश्मा पहिरने, मधुर कण्ठ, ओजपूर्ण स्वर, वीररसक कविता पढ़लनि, हिनकासँ पूर्व जतेक कवितापाठ भेल रहैक सब जेना नेपथ्यक अन्हारमे चल गेलैक । कविता पढ़ैत-पढ़ैत मुखमण्डल पर स्वेदकण ताहिरूपेँ उभरि अयलनि जे मर्करी लाइटक प्रकाश ओहू पर प्रतिबिम्बित होइत प्रतीत भेल । कविता सुनि श्रोता थपड़ीसँ सम्पूर्ण हॉलकेँ गड़गड़ा देलकैक । ओही गड़गड़ाहटिक बीच विजयी मुद्रामे मंचपर बैसि गेलाह ।

तकर तुरन्त बाद हमर नाम आयल । पहिने कनेक सहमि गेलहुँ । ओही अवसरक हेतु हम 15 अगस्त शीर्षक छन्दमुक्त कविता लिखने रही । सरस्वतीक कृपासँ हुनक स्वर प्रधान कविता रहनि, हमर विचार प्रधान, उपयुक्त अवसरेक हेतु लिखल छल, तेँ श्रोता वर्ग संज्ञान लेलनि, कविता पैघ होइतो शान्तभावेँ सुनल गेल । जे भय पहिने भेल छल से बीच-बीचमे पड़ैत थपड़ीसँ दूर होइत गेल । अपन प्रशंसा जँ अपने नहि करब तँ दोसरकेँ कोन गर्ज छैक । हुनक पसरल प्रभाव हमरा कविताकेँ कोनो प्रकारेँ बाधित नहि कयलक । हम कविता पढ़ि थपड़ीएक मध्य आश्वस्त भऽ पुनः दर्शक दीर्घामे अपन स्थानपर चल गेलहुँ । राघवाचार्य शास्त्री सेहो हमर पाछाँ ओही ठाम आबि बैसलाह । हम हुनक उपस्थापनसँ आकृष्ट रहबे करी, परिचय पुछलियनि । कहलनि भीठ भगवानपुर घर थीक, डॉ. लक्ष्मण झा समाद पठौने रहथि, तेँ दरभंगा अयलहुँ, बाटेमे एहि कार्यक्रमक प्रचार होइत सुनलिऐक तँ पहिने एतहि आबि गेलहुँ, मुदा डॉ. लक्ष्मण झा एतय नहि अभड़लाह अछि । पुछलियनि– कतय अँटकब ? कहलनि– तकरे चिन्ता अछि, हमरा तँ भेल जे एतेक पैघ आयोजनमे डॉ. झा होयबे करताह । हुनक डेरा देखल नहि अछि, सुनल अछि जे राजाबहादुरक जे कूकुर सभक घर छनि, ताही लगपासमे कतहु छनि । हम संस्कृत छात्रावासेमे ताबत रही, कहलियनि– चलू, आइ ओतहि राति काटि लेब । संग अयलाह, ताहि दिन सँ जे आत्मीयता स्थापित भेल से संबोधनमे 'औ' सँ 'हौ' पर उतरि

Scanned by CamScanner

आयल । एकटा बात जे अनुभव भेल अछि से कहि दी जे आत्मीयताक प्रगाढ़ता औपचारिकताकेँ दबाय दैत छैक, किछु समवयस्कता सेहो कारण होइत छैक । हमरा छीतनबाबू, किसुनजी, राघवाचार्य शास्त्री, राधाकृष्ण 'बहेड़', श्रीचन्द्रभानु सिंह एहि पाँच गोटेक संग 'हौ' सम्बोधनक व्यवहार होइत रहल । हिनक संग मैत्री भाव ततेक बढ़ैत गेल जे नवरत्न गोष्ठीसँ तेसर पुस्तक हिनके 'वनकुसुम' कविता संग्रह प्रकाशित भेलनि ।

1952मे हमर डेरा राय साहेबक पोखरिसँ थोड़ेक पूब अपूर्ण कीर्त्तन भवन लग छल । ओहि वर्ष कोसीमे तेहन भयंकर बाढ़ि अयलैक जे भीठ भगवानपुरक गाममे घरेघर पानि ढुकि गेलैक । त्राहि-त्राहि मचि गेल छलैक । हमर परिवार गर्मी छुट्टीमे गाम चल गेल छल । राघवभाइ एक दिन कनैत कलपैत गामक दुर्दशाक वर्णन करैत कहलनि हमर परिवार बिलटि गेल, सब डूबि कऽ मरि जायत । हम सबकेँ अपन डेरापर आनय कहि देलियनि । आषाढ़सँ आसिन धरि चारि मास सपरिवार एतहि रहलाह । ओही समय डॉ. लक्ष्मण झा 'मिथिला' साप्ताहिक प्रकाशित करय लागल रहथि । एक साहित्यकार सहयोगी रहथि से इच्छा रहनि, किन्तु हुनक जीविकाक आधार की होइनि, तेँ बाबू जानकी नन्दनसिंहक अनुनय विनयकऽ हिनका सिनुआर मध्यविद्यालयमे स्थान देआय देल गेल छलनि । लहेरियासरायक चारूकातक गाममे हमर छात्रसेना पसरल छल । एक अनुगत छात्र कामेश्वर सिंह रहथि, हुनका प्रोत्साहित कयल । ओ गामक लोकसँ बाँस खऽढ़ बेहरी कऽ दू टा कोठली, एकटा भानस घर बान्हि, टाट फड़क लगाय आवासक प्रबन्ध कऽ देलथिन, तँ सपरिवार ओतय चल गेलाह ।

हिनक स्वरमे जेहन टाँस, जेहन ओज रहनि तेहन छन्द ओ मात्रा पर पकड़ नहि । जखन दोसर कविता संग्रह 'मधुकण' छपबय लगलाह तँ ताहि दिस ध्यान आकृष्ट कयलियनि तँ बेस जोरसँ बिगड़ि गेलाह, कहलनि तोरा पण्डिताइक दाबा भऽ गेलह अछि ?

कहलियनि– तोरा सोझाँ हम पण्डिताइक दाबा कोना कऽ सकैत छियह । हम शास्त्री परीक्षा पासकऽ आचार्य कयलहुँ आ तोँ पहिने आचार्य परीक्षा पासकऽ शास्त्री कयलह, तेँ ने राघाचार्य शास्त्री कहबैत छह । हम तँ परिहासमे कहलियनि, किन्तु बहुत गम्भीरतासँ एहि बातक गीरह बान्हि लेलनि । सम्पर्क कम भऽ गेल । एक दिन डॉ. लक्ष्मणझा सँ भेट भऽ गेल । कहलनि आब हमहू कवि भऽ गेलहुँ, दू टा पाँती जोड़लहुँ अछि– 'हे कवि तोँ बोकरैत जाह, हमरा सन सम्पादक सब समटि लेताह ।' मिथिला साप्ताहिकमे राघव भाइक खूब कविता छपैत छलनि । स्थिर चित्तक लोक नहि रहलाक कारणेँ शिक्षकक पद छोड़ि चल गेलाह । पाँच सात वर्षक बाद जाहि हिनक भातिज चि. कन्हैया तथा पुत्र चि. मुरलीधरकेँ ओहि चारि मासक अवधिमे काँख-कोरा लऽ खेलौने रहिऐक ताही दूनूक उपनयनक अवसरपर नोंत-पाता पठौने रहथि । उत्साहित भऽ नोंत

Scanned by CamScanner

पुरबाक लेल भीठ-भगवानपुर गेल रही । एक तँ ओ नेना सब कतेक टा भेल, की पढ़ैत अछि से उत्सुकता भेल, दोसर टूटल सम्पर्क फेर जुटि जायत तेँ गेल रही, किन्तु सम्पर्क नहि जुटि सकल । अद्यावधि तकर खेद मनकेँ कचोटैत रहैत अछि । रचना जे किछु रहनु, मातृभाषाक सेवाक आगि जे हुनका हृदयमे रहनि से आबक युवकमे कदाचिते कतहु दृष्टिगोचर होइत अछि ।

श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मैथिली साहित्यक मंचपर एक सर्वथा नव स्वाद, नव ढंगक वस्तु लऽ श्रोता वर्गकेँ रससागरमे सराबोर कऽ देनिहार रवीन्द्र-महेन्द्रक जोड़ी जाहिमे पद श्रीरवीन्द्रक आ स्वर प्रमुख रूपेँ महेन्द्रक रहैत छलनि, ताहिमे श्रीरवीन्द्रक परिवारसँ हमर पुरान सम्बन्ध रहल अछि । हिनक पिता पं. केदारनाथ ठाकुर हमर पिताक सम्पत्तिशाली शिष्यमे एक छलथिन । हमर पिताजी विद्यागुरु तँ रहबे करथिन, प्राय: दीक्षागुरु सेहो छलथिन । केदार भाइ जहिया रमेश्वर लतामे पढ़ैत रहथि तहिया हिनका संग खबास आ भनसीया रहनि । अपन सुतबाक हेतु जे चाकर-चौरस साँखुक चौकी बनबौने रहथि से पढ़ब समाप्त भेलापर हमर पिताजीकेँ देने गेलथिन । ई घटना हमर जन्मसँ पहिलुक थीक, किन्तु ओहि चौकीक नामे रहैक केदारबाबू वला चौकी, जकर उपयोग हमहू शिक्षकक जीवनमे 30 वर्ष पूर्व धरि करैत रहलहुँ । तीनटा पौआ दू टा पासि एखनो ओकर बाँचल छैक जे दलानपरक चौकीमे लागल अछि । हमर माय जहिया दरभंगामे रहथि तँ श्रीरवीन्द्रक माय डॉक्टरसँ देखयबाक हेतु दू बेर डेरा पर आइलि रहथिन । केदार भाइ प्रायश: गुरु पूर्णिमाक दिन दरभंगा अबिते रहथि । श्रीरवीन्द्र एक बेर धमदाहामे विद्यापति स्मृति पर्व मनौने रहथि तँ धमदाहा जयबाक अवसर भेटल रहय ताहिमे भौजीसँ आशीर्वाद लेबाक सुयोग लागल । एखन अपन ओकील पुत्रक संग पूर्णियाँमे रहैत छथि । 2007मे साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजत कविसन्धि कार्यक्रममे श्रीरवीन्द्रक काव्य पाठ भेल रहनि । भौजी हमर नाम सुनि कऽ कहलथिन– पूर्णियाँ अयलाह अछि तँ बिनु हमर भेट कयने नहि जाय सकैत छथि । दोसर दिन हुनक आशीर्वाद लइए कऽ आयल रही ।

एतेक निकट सम्पर्क रहितो श्रीरवीन्द्र आदि कोनो भायसँ परिचय नहि छल । जमसम निवासी कण्टीर झाक बालक श्रीखड्गनाथ झाक बहिन खोजपुरमे छलथिन, ओहो हमर भौजी रहथि । सातम दशकक मध्यमे श्रीखड्गनाथ झासँ अकस्मात् ट्रेनमे भेट भऽ गेल । पुछलापर कहलनि धमदाहासँ आबि रहल छी । प्रसंगत: कहलनि– केदारबाबूक जेठ बालक श्रीरवीन्द्र बड़ बढ़ियाँ कवि बहरयलैक अछि । मनमे भेटक उत्सुकता भऽ गेल । संयोगवश सी.एम्.साइन्स कॉलेजमे एक कवि सम्मेलनक अध्यक्षता करैत रही । दर्शक दीर्घासँ एकटा पुर्जी भेटल । लिखल रहैक हम कविता पाठ करय चाहैत छी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर धमदाहा । मन प्रफुल्लित भऽ गेल । अनुमति देलियनि । पद संयोजन आ उपस्थापन श्रोताकेँ चकित-विस्मित कऽ देलकैक । तहियासँ जे संग भेल से प्रायश:

Scanned by CamScanner

दू सयसँ अधिके मंचपर संग दैत रहलाह। एखनहु साहित्य संगीत कलाक साधनामे लागल पुत्रक संग दिल्लीमे रहैत छथि। 20-25 वर्ष धरि मैथिली मंच पर डॉ. प्रो. श्री मायानन्द मिश्रक उद्घोषणा आ श्रीरवीन्द्र-महेन्द्रक जोड़ी धूम मचौने रहलाह। एहन एहन अनेक प्रतिभा मैथिलीक उत्थान ओ जनजागरणमे योगदान दैत रहलैक अछि। एहि सब प्रतिभाक विकासमे हमरो कने-मने योगदान रहल अछि, ताहिसँ आत्म सन्तोष होइत अछि, तथापि मैथिली अपन जड़ि माँटि पर नहि जमाय रहल अछि तज्जन्य चिन्ता होइत अछि। अन्तःकरणसँ एहि समस्याक अनुभव कयनिहारोकेँ चिन्तन करबाक चाहियनि। **डॉ. श्रीरमानन्द झा 'रमण'**, हमर हितचिन्तक मित्रमे एक अनुपम व्यक्तित्वक धनी ईहो छथि। हमर रचना संसारमे ई बराबरि हुलकी मारैत रहलाह। जाहि ठाम अपना दृष्टिएँ दोष दृष्टिगत भेलनि अछि, तुरन्त टिप्पणी करैत रहलाह अछि। ई भिन्न बात जे कतहु-कतहु लाल बुझक्कड़ सेहो बुझाइत छथि, किन्तु तकर निर्णायक तटस्थ पाठके भऽ सकैत छथि। हमर अभाग्य ई जे हिनक साहचर्यक अवसर बड़ थोड़ भेटल। एकटा अवसर मन पड़ैत अछि, जाहि समय डॉ. श्रीसुरेश्वर झा साहित्य अकादेमीक दिससँ प्रयागमे स्वनामधन्य डॉ. अमरनाथ झाक जन्म शताब्दी मनौने रहथि, ताहि अवसर पर हम सपत्नीक एक पंथ दुइ काजक लोभसँ गेल रही। ओहि यात्रामे हम सब डॉ. श्रीकिशोर नाथझाक आवासपर अँटकल रही। श्रीरमणजी सेहो डॉ. आनन्द मिश्रक संग ओतहि अँटकल रहथि। ओहि यात्राक मुख्य उद्देश्य त्रिवेणी संगममे सह धर्मिणीकेँ स्नान करायब छल। डॉ. श्रीमती नीरजा रेणु सेहो हमरासँ काकाक सम्बन्ध रखैत छथि जे कहियो राज-दरभंगाक प्रशासकीय सेवामे रहल नवटोलवासी, साहित्य ओ साहित्यकारक अनुरागी हरिश्चन्द्र मिश्रक कन्या थिकथिन आ डॉ. श्रीकिशोरनाथ झाक पत्नी। श्री किशोरबाबू वचन देने रहथि जे तीर्थ स्नान कराय देब। हुनक आतिथ्यक वर्णन नहि कऽ सकब। जाड़ मास रहैक। त्रिवेणी स्नान प्रवाहमे कयल जाय। ओतय पण्डा सब प्रवहमान, किन्तु थाह पानिमे मचान बान्हि स्नानार्थी सबकेँ सुविधा दैत छथिन। ओहि स्नानमे श्रीकिशोर बाबूक संग श्रीरमणजी सेहो संग पुरल रहथि, संगे टा नहि पुरलनि, ओहि दृश्य सभक फोटो सेहो उतारलनि तथा स्मरणार्थ प्रति सेहो डाकसँ पठाय देलनि। ई प्रत्येक नववर्ष तथा जन्म दिनक अवसरपर पत्र लिखिते टा छथि। हम एहि सबमे अपटु छी।

यद्यपि ओ यात्रा हमरा हेतु अशुभ भेल। ओहि त्रिवेणी स्नानक बाद हमर पत्नी बाटेमे ज्वाराक्रान्त भऽ गेलीह। काशी विश्वनाथक पूजा करैत कोनहुना दरभंगा घुरलहुँ, किन्तु ओ जे ओछाओन पकड़लनि से सोझ भऽ ठाढ़ नहि भऽ सकलीह। झुरझुराइते रहथि ताही बीच पक्षाघातसँ ग्रस्त भऽ गेलीह। जे हमरा समक्ष जीवन भरि एककप चाह पर्यन्त नहि पीबैत रहथि से हमरा छोड़ि बेटा, पुतोहु, पौत्र ककरो हाथेँ एक चम्मच अन्न वा पानि नहि ग्रहण करथि। साढ़े तीन चारि वर्ष धरि अपन पतिधर्मक पालन हम करैत रहलहुँ। अन्ततः भाद्र कृष्ण चतुर्थी 2002मे शरीर त्याग कऽ देलनि। श्रीरमणजी द्वारा पठाओल

Scanned by CamScanner

ओ चित्र आब हमर स्मारक बनल अछि । साधारणतः स्त्रीगणकेँ तीर्थव्रत करबाक बड़ उत्कण्ठा होइत रहैत छैक । केवल अनदिना सिमरिया गंगास्नान तथा बाबा वैद्यनाथक दर्शनक इच्छा यदाकदा व्यक्त करबो करथि, अन्यान्य तीर्थक चर्चा नहि कहियो कयलनि, कहथि मन चंगा तँ कठौतीमे गंगा । सत्य पूछी तँ हुनक सुधपनीक कारणेँ हम कहियो कोनो विशेषकार्यमे परामर्शो नहि लियनि । 'नारीणांभूषणं लज्जा' जे कहल जाइत छैक तकर सदा पालन करैत रहलीह । हुनक परोक्ष भेलापर अड़ोस-पड़ोसक जे हुनक सखी-बहिनपा आदि छथिन तनिका सभक मुँहेँ परोक्ष रूपसँ सुनैत छियनि जे महिला मण्डलमे अपन प्रत्युत्पन्नमतिसँ बेस लोकप्रियता प्राप्त रहनि, सब हुनक व्यंग्य विनोदसँ आनन्दक अनुभव करथि । एहि विषयमे हमहू आधुनिकतावादी नहि भऽ सकलहुँ । हरिमोहन बाबू जेना पत्नीकेँ आधुनिका बनाय लेलनि, अथवा गोपेशजी सभा समितिमे सपत्नीक जाथि से साहस नहि जुटाय सकलहुँ ।

एहि प्रकरणमे हम कने गम्भीर भऽ गेलहुँ, अहूँसभक माथ भऽ सकैछ भारी भऽ गेल हो । तेँ अपन बाल सखा वैदिक देवेन्द्रनाथ झाक, जनिक चर्चा पहिनहु कयने छियनि, जे हमर हास्य कथाक उपजीव्य रहलाह अछि, एक अत्यन्त मनोरंजक घटनाक उल्लेख करैत छी । एकर विषयवस्तु कने-मने मर्यादाक रेखाकेँ टपैत छैक, तेँ हम सकपकाइत छलहुँ, किन्तु अनेक अनुज साहित्यकार बन्धुक दुराग्रह पर कने-मने लाजकेँ उठाकऽ घोरिकऽ पीबि, आगाँ बढ़ि रहलहुँ अछि ।

हमर देवेन्द्र भाइ हमरासँ मात्र तीन मास जेठ छलाह से बुढ़ारीमे आबिकऽ फड़िछायल । भरल जवानीएमे कोष बृद्धि भऽ गेलनि । पं. त्रिलोकनाथ मिश्रक भातिज दरभंगा मेडिकल कॉलेजमे पढ़ैत छलथिन जे हिनक वैमात्रेय भायक माम रहथिन, नाम रहनि जगन्नाथ मिश्र, ताहि समय ओ डॉ. कपिलदेव बाबूक अधीन हाउस सर्जनशिप कऽ रहल छलाह । हमरा भाइसँ अन्तरंग वार्त्ता होइत छल । भाइ कोष वृद्धि (हाइड्रोशील)सँ पीड़ित होइतो संकोचवश बाजथि नहि । एक दिन बहुत दुखी मनसँ हमरा लग अपन कष्ट आ एकरा व्यक्त करबामे संकोचक प्रसंग सकुचाइत व्यक्त कयलनि– कहलनि सुनै छिऐ भाइ जे ऋत्रकेँ बढ़ि गेला पर लिलेन्द्री सुटुकि जाइत छैक, ई कथा कहियौक ककरा ओ कोना, तेँ सोचैत सोचैत मन कहलक तोरा तँ भाइ सन बुधियार सखा छथुन, एकर निदान ओ तुरंत सुझाय देथुन । डैनवीरोडक चौबट्टी लग ठाढ़ दूनू गोटे गप्प करिते रही ओही समय ओ हाउस सर्जन मामा जगन्नाथ मिश्र पहुँचि गेलाह । हम भाइक समस्या हुनका कहय लगलियनि तँ जीह कुचैत हमर मुँहपर हाथ दऽ बन्द कऽ देलनि । मामाजीक उत्सुकता बढ़ि गेलनि । हम भाइक हाथ मुँहपरसँ जोर दऽ हटाय सब गप्प कहि देलियनि ।

मामाजी कहलथिन– हाय बताह ! ई कोन लाजक बात भेलैक ? आ ई कोन कठिन रोग भऽ गेलैक ? देखह, बाछाकेँ बधिया कऽ दैत छैक तँ तेहन बलगर बड़द

Scanned by CamScanner

भऽ जाइत छैक जे 20-25 मन लादल गाड़ीकेँ घीचि लैत छैक । छागरकेँ बधियाकऽ दैत छैक तँ बौकार खस्सी भऽ जाइत छैक । बस, एक सप्ताह कष्ट सहलापर एहि सँ जीवन भरि निश्चिन्त भऽ जाइत अछि लोक । एखन सबसँ नीक सर्जन एहि ठाम डॉ. कपिलदेव बाबू छथि आ संयोगसँ हम हुनके अण्डरमे छी, ने कोनो बेसी तरद्दुत होयतह ने कोनो बेसी कष्ट । भाइक समस्या हमरा कानमे पड़िए रहल छल ताबत समाधानोक मार्ग प्रशस्त भऽ गेलनि । भाइ कहलनि– भाइ, जहिया अहाँकेँ सुविधा हो, मामाजीसँ तिथि निर्द्धारित कऽ लिअऽ ।

हम कहलियनि– ऑपरेशन करायब अहाँ आ सुविधा हमरा ताकय कहैत छी ? कहलनि– अहाँ संग नहि रहब तँ हमरा साहस नहि होयत । अस्तु, तिथि निश्चित भेल, हमरा तँ स्कूल रहैत छल, तेँ रवि दिन चाहबे करी, किन्तु रवि दिन अस्पताल बन्द रहैत छैक । मामाजी आरम्भिक जाँच लेल कपिलदेव बाबूक नर्सिंग होममे आबय दऽ कहि, चल गेलाह । रवि दिन दूनू गोटे बिदा भेलहुँ । बाटमे भाइ पुछलनि पहिने मामाजी डॉ. कपिलदेव बाबूक नाम कहलनि आ चलय काल नरसिंह बाबूक नाम लेलनि, तेँ पहिने कतय जायब ? कहलियनि कपिलदेव बाबूक नर्सिंग होम जायब । ताहि पर पुछलनि– नरसिंह बाबू क्यौ छथि जे पहिने होम अर्थात् हवन कयने होयताह तेँ... हम कहलियनि ओतय नित्य होम होइत छैक । कहलनि– डाक्टर साहेब धार्मिक प्रवृत्तिक बुझाइत छथि । एहिना गप्प सप्प करैत ओतय पहुँचलहुँ । मामाजी प्रतीक्षेमे रहथि । डॉक्टर पुछलथिन– क्या होता है ? भाइ कहलथिन होता नहीं, भऽ गेल । क्या हो गया ? कोषवृद्धि । मामाजी स्पष्ट कयलथिन हाइड्रोशील हो गया है । भाइक वेश-भूषा, बजबाक भंगिमा डॉक्टरकेँ कुतूहल पूर्ण बुझयलनि । हँसैत पुछलथिन कितना बड़ा हो गया है ? भाइ कनेक सकुचाइत कहलथिन– ई परिमाण कोना स्पष्ट रूपेँ कहल जाय सकैछ, एतबे बूझल जाय जे एहिमे एक पुरुषाहारक्षम मांस अपनेकेँ भेटि सकैत अछि । हिनकर भाषा सुनि डाक्टर साहेब मामाजी दिस तकलथिन । मामाजी स्पष्ट करबामे असमंजसमे पड़ि गेलाह, संकुचित होइत कहलथिन– सर, यह बड़ा सीधा आदमी है । डॉक्टर साहेब नर्सकेँ सोर पाड़ि टेबुल झड़बाय– कहलथिन आप इस पर लेट जाइए, जरा मैं देख लेता हूँ । भाइ सकपकाइत, कनेक चौंकैत कहलथिन– अरे राम ! एहि ठाम ई दिव्यांगना छथि, मनोविकारक सम्भावना । तखन जे हँसी लगलनि से बन्दे नहि होइनि । मामाजीकेँ कहलथिन– किस दुनियाँसे अपने इस भाँजे को बझा कर लाये हो जगन्नाथ । यह तो बड़े मजे का आदमी है । भाइकेँ कहलथिन– पण्डितजी, आप शनिच्चर को आपरेशन के लिए तैयार होकर आइए । इसके पहले शुक्कर को रातमे खाना नहीं है, इसलिए दिन का खाना तीन चार बजे खा लीजिएगा, और बाल मुड़बा लीजिएगा । भाइ कहलथिन– अच्छा, आपरेशनसँ पहिने क्षौर आ एकभुक्त एहू काजमे अपेक्षित होइत छैक, तखन तँ ईहो एक धार्मिक अनुष्ठान भेल ।

Scanned by CamScanner

ऑपरेशनसँ एक दिन पूर्व देवेन्द्र भाइ बजाप्ता क्षौर कराय, एकभुक्त कऽ दोसर दिन डॉ. कलिपदेव बाबूक ओतय पहुँचलाह। डॉक्टर साहेब हिनक स्वरूप समुण्डन देखि पुछलथिन– पण्डितजी, यह सिर क्यों मुड़बा लिया है ? भाइ कहलथिन अपनहि कहने छलहुँ बाल मुड़बाय एक भुक्त कऽ आबय। डॉक्टर कहलथिन– मैंने सिर मुड़बाने के लिए तो नहीं, नीचे का बाल कहा था। भाइ कहलथिन डॉक्टर साहेब, अहाँ तँ मारि खोआबय चाहैत रही, जाहि नौआकेँ कहितिऐक से मारबे ने करैत। जे, से, देवेन्द्र भाइ ऑपरेशन करौलनि, संगहि कपिलदेव बाबूकेँ हँसबाक हँसयबाक तेहन मसाला दऽ अयलथिन जे मेडिकलक एको डॉक्टर नहि बाँकी रहलाह। जे ई प्रसंग नहि सुनने होथि आ अनका नहि सुनौने होथिन। डॉ. शम्भुनाथ चौधरी सभा–समितिमे अनेक ठाम भेटि जाथि तँ पुछबे करथि कहू अमरजी अहाँक एक पुरुषाहारक्षम मांस बला मित्र कुशल छथि ने ?

कविवर, **श्री उदयचन्द्रझा विनोद** जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार छथि। हमरा हिनक निकट सम्पर्क एम्हरे आबि भेल। यद्यपि मंच सब पर भेट–घाट बराबरि होइत रहल, किन्तु हिनक कविता सब दिन चित्तकेँ आकृष्ट करैत रहल। ओना ईहो सब विधामे लिखनिहार बहुविधावादी साहित्यकार छथि, किन्तु मूल स्वर कवितामे बेसी मुखर छनि। नवतावादीमे एहन फड़िछायल विचार तथा एहन सहज, सरल खाँटी मैथिलीक प्रयोग हमरा एहि पीढ़ीक दोसर कविमे दृष्टिगत नहि होइत छथि। शब्दक प्रयोगमे ई माहिर छथिहे, संगठनात्मक क्षमतामे सेहो बेजोड़ छथि। पहिने सासुर, पछाति निवास रहिका गामकेँ मैथिली–आन्दोलनक इतिहासमे ई प्रमुख स्थान देअयबामे सर्वथा सफल रहलाह।

आब किछु प्रवासी बन्धुक चर्चा करब। एहिमे **आचार्य डॉ. श्रीशोभाकान्तझाक** नाम लेबनि जे ई एखन धरि अर्द्धप्रवासीए छथि। डुमरा–चतरा निवासी थिकाह। ई दू सहोदर, दोसर हिनक अनुज ताराकान्त झा सेहो रायपुर (छत्तीसगढ़)मे जीविकापन्न भेलाह आ अपन–अपन सुन्दर मकान बनाय ओतय बसि गेल छथि। डॉ. श्रीशोभाकान्त झा हिन्दीक प्राध्यापक पदसँ सेवानिवृत्त छथि। गाम अबैत जाइत रहैत छथि। मध्यकालीन हिन्दी साहित्यक गहन गम्भीर अध्येता रहलाह अछि। अनेक ग्रन्थ प्रकाशित छनि। हिन्दी, मैथिली, ब्रज भाषा तीनू भाषामे कविता आ समीक्षाक पुस्तक सब प्रकाशित छनि। सबसँ पैघ विशेषता ई छनि जे चिरप्रवासमे रहितहु, हिन्दीक अध्यापन करितहु अपन मातृभाषाक अनुराग तिलमात्र झूस नहि भेलनि अछि। ई 'मिथिलायतन' नामसँ एक मैथिलीक संस्था चलबैत छथि तथा मिथिलायतन नामसँ एक वार्षिक पत्रिका 1958 सँ प्रकाशित करैत आबि रहल छथि जाहिमे कहियो कोनो व्यवधान नहि भेलनि अछि। पत्राचारसँ पुरान परिचय छले, विधाता एहन संयोग लगौलनि जे हमर बालकक विवाह हिनक ममियौत कटैया निवासी जगन्नाथ झाक कन्यासँ भेलनि तँ 'समधी' छलाहे, समधि सेहो भऽ गेलाह। ई मध्यप्रदेशमे विगत 16म शताब्दीसँ बसि गेल मैथिल ब्राह्मण परिवारमे बिसरल

Scanned by CamScanner

मैथिलीकेँ पुनः जिअयबाक चेष्टामे लागल रहलाह अछि । हिनके संस्थाक सहयोगसँ हम 2007मे साहित्य अकादेमीक 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम रायपुरमे बड़ उत्साहमय वातावरणमे सम्पन्न करयबामे कृतकार्य भऽ सकलहुँ, संगहि परामर्शी मण्डलक अन्तिम बैसक सेहो कयल । श्रीब्रजेन्द्र त्रिपाठी, उपसचिव, साहित्य अकादेमी उक्त कार्यक्रममे उपस्थित रहथि, श्रीकुंजबिहारी मिश्र, श्रीरामसेवक ठाकुर, श्रीकन्हैयाजी आदि कलाकार सभक प्रस्तुति देखि दंग रहि गेल छलाह । ओकर एहन गम्भीर प्रभाव पड़लैक जे दोसरे वर्ष राजनाँद गाँवमे प्रवासीबन्धुक साहित्यसेवा पर विचार संगोष्ठीक संग बहुभाषी कवि सम्मेलन सेहो भेल । वर्त्तमान मैथिलीक प्रतिनिधि डॉ. श्रीविद्यानाथ झा 'विदित' केँ छत्तीसगढ़क विलासपुर, मांडला आदि ठामसँ कार्यक्रम आयोजित करबाक आमन्त्रण भेटि रहल छनि । एहि जागरणक मूल कारक तत्त्व थिकाह आचार्य डॉ. श्री शोभाकान्त झा । एहने-एहन उत्साही मातृभाषाप्रेमीक साधनाक बलेँ मैथिली आगाँ बढ़ि सकैत अछि ।

दोसर नाम जनिक स्मरण करब हम तँ नहिए बिसरि सकैत छियनि, अपनहु लोकनि हिनक कर्मठतासँ चकित-विस्मित रहि जायब । ओ थिकाह 'विश्वविभूति विद्यापति' ग्रन्थक प्रणेता **श्रीसीताराम झा** हिनक पूर्वज करीब तीन सय वर्ष पूर्व इटावा उत्तरप्रदेश जाय बसि गेलथिन । ई रेलवेक इंजीनियरिंग विभागमे ट्रैक सुपरवाइजरक पद पर गोरखपुरमे पदस्थापित छलाह । जखन विद्यापतिस्मृतिपर्वक पसाही सौंसे देशमे पसरय लगलैक तँ गोरखपुरमे सेहो किछु जीविकापन्न मैथिलीभाषी लोकनि पर्व मनयबाक हेतु उत्साहित भेलाह आ अर्थ संग्रहक हेतु नगर भ्रमणमे बहरयलाह । रेलवे कॉलोनीमे एक मकानमे श्रीसीताराम झा नामपट्ट लागल देखि हिनको ओतय पहुँचलाह । उद्देश्य कहलथिन । श्रीसीताराम बाबू कहलथिन– भाई, मैथिल ब्राह्मण तो मैं ज़रूर हूँ, मगर महाकवि विद्यापति के नामसे जरूर परिचित हूँ । आपलोग जब आ गये हैं और आपस में आपलोग बात जिस भाषा में कर रहे हैं, उसकी मिठास से अभिभूत हो गया हूँ । आप लोग स्वागत समिति की जब जब बैठक करें, मुझे जरूर खबर करें, मैं हर बैठक में भाग लूंगा । हिनका लोकनिक सम्भाषण सुनि, मैथिलीक मधुरिमाकेँ गुनि मनमे मैथिली सिखबाक संकल्प लऽ लेलनि ।

संकल्प एहन लेलनि जे मैथिली ताहि रूपेँ सिखलनि जे मैथिलीमे 'विश्वविभूति विद्यापति' नामसँ पुस्तक लिखलनि, छपौलनि । हिन्दी आ अंग्रेजीमे पहिनहिसँ कविता लिखैत छलाह । एकटा अंग्रेजीमे कविता संग्रह प्रकाशित छलनि तकर मैथिलीमे अनुवाद कऽ 'छीटल दाना' नामसँ प्रकाशित कयलनि । अनेक पुस्तकक समीक्षा विभिन्न मैथिली पत्रिकामे छपल छनि । एकरा कहैत छैक भाषा प्रेम जे पछाति पारिवारिक भाषा मैथिली भऽ गेलनि ।

आचार्य सुमन जखन साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रतिनिधि रहथि तँ दिल्ली

Scanned by CamScanner

बैसकमे जाइत काल गोरखपुर स्टेशनपर वैशालीकेँ इंजिन बदलबामे आध घंटा समय लगैक। श्रीसीताराम बाबू किछु मैथिली प्रेमीक संग गोरखपुर स्टेशन पर फलं तोयं लऽ हमरा सभक स्वागतमे ठाढ़ रहथि। हमरा लोकनिकेँ ततेक आत्मीयता भऽ गेल जे हुनक दरभंगा गमनागमन बराबरि होअय लगलनि। हमरा अनेक बेर हुनक आतिथ्य करबाक सुयोग लागल। हमर दूनू पौत्र श्रीआदित्यभूषण आ श्रीविभूतिभूषण हिनक मैथिलीक किछु विलक्षण उच्चारणसँ आकृष्ट भऽ भरि पेट गप्प करथि। हुनको एहि नेना सब संग गप्प करबामे बड़ आनन्द प्राप्त होइनि। विगत दू वर्षसँ पत्रक कोनो उत्तर नहि भेटैत अछि। सेवानिवृत्तिक बाद ई कानपुरमे गुजैनी महल्लामे अपन स्थायी निवास बनौलनि ओकर नाम रखलनि मिथिला। पुत्र नहि, केवल चारि गोट कन्या अपन-अपन सासुर बसैत छथिन। पत्नीक देहान्त भऽ गेल छनि। पत्राचार बराबरि होइत रहल। विद्यापति सेवा संस्थान मिथिला विभूति सम्मानसँ सम्मानित कयने छनि। ई एक अप्रतिम उदाहरण छथि। पत्रोत्तर नहि पाबि चित्त संशकित रहैत अछि।

तेसर प्रवासी बन्धु छथि **श्री ओमप्रकाश उपाध्याय 'मधुर'**। श्रीमधुरजीक पिता गयाप्रसाद उपाध्यायक पूर्वज फीरोजाबाद उत्तर प्रदेशमे जाय बसि गेलथिन। यद्यपि हिनक परिवारकेँ एखनहु मिथिलासँ वैवाहिक सम्बन्ध बनल छनि। गयाप्रसाद उपाध्याय मैथिल महासभासँ सदा सम्बद्ध रहलाह। मैथिली भाषा यद्यपि परिवारमे नहि छनि, तथापि परिवारसँ लुप्त नहि भेलनि अछि। पिताक प्रेरणासँ मधुरजी 1969सँ 'मिथिला आलोक' नामक मासिक पत्र आरम्भ कयलनि। यद्यपि एकर मुख्य भाषा हिन्दी छलैक तथा हिन्दीएक माध्यमसँ प्रवासी मैथिल ब्राह्मण परिवारकेँ मिथिलाक संस्कार ओ संस्कृतिसँ सम्पृक्त रखबाक प्रयास उक्त पत्रिका द्वारा होइत छलैक, तथापि उपलब्ध भऽ गेलापर मैथिलीक रचना सेहो एक आध टा छपैत छलैक। जहाँ धरि स्मरण अछि हमरा श्रीमधुरजीसँ आगरा मैथिल महासभाक अवसरपर परिचय भेल। ई लोकनि 10-5 वर्ष पूर्व धरि सौराठ वैवाहिक सभाक अवसर पर अबिते छलाह। एक बेर एहिना सौराठ सभासँ घुरैत गया प्रसाद उपाध्याय, श्री मधुरजी अन्य तीन व्यक्तिक संग हमर आवास पर अकस्मात एहन समयमे आयल रहथि जखन पाँच दिन झक्कड़ लधने मेघ ओही दिन आकाश छोड़ने छलैक। राति साढ़े आठ-नओक समयमे पहुँचल रहथि आ हमर मिश्रटोलाक फूसक घरकेँ पवित्र कयने रहथि।

1983मे श्रीमधुरजी फीरोजाबादमे विद्यापतिस्मृतिपर्व मनयबाक प्रस्ताव लऽ आयल रहथि, ओही वर्ष हमर पत्रकारिताक इतिहास साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत भेल छल। 1984क फरवरीमे आचार्य सुमनक संग दिल्ली जयबाक छल। फीरोजाबाद बाटेमे पड़ैत छैक। श्रीमधुरजी कहने रहथि जे हमर संस्था आर्थिक दृष्टिसँ ततेक सबल नहि अछि, तेँ बेसी गोटेकेँ आमंत्रित करब सम्भव नहि होयत। हम विचार देलियनि जे हमरा

Scanned by CamScanner

फरवरीमे दिल्ली जयबाक अछिए । सुमनजीक संग रहब आ हमर बालक हमरा संग रहताह । अनदिना अहाँ हमरा दूनू पीठक ट्रेन भाड़ा जे देब ताहिसँ नीक होयत जे सुमनजीक आ हमर फीरोजाबादसँ दरभंगाक रिजर्वेशन करायब तँ पाइ ओतबे लागत आ आचार्य सुमन सन विशिष्ट, वरेण्य साहित्यकार सेहो मंच पर उपस्थित रहताह । प्रश्न रहल हमरा बालकक से हुनक किरायामे लागल टाका हम अहाँकेँ दऽ देब । ओ स्वीकार कयलनि, हम सब घुरतीक रिजर्वेशन नहि कराय फीरोजाबादक सामान्य टिकट लऽ निर्धारित तिथिमे फीरोजाबाद दिन-देखार पहुँचि गेलहुँ ।

पहिने वातावरणक प्रसंग जनाय दी । साहित्य अकादेमी ताहि समय अतिथि वा प्रतिनिधि सभक आवासक व्यवस्था अपने नहि करैत छलैक, तदर्थ टी.ए.डी.ए. दैत छलैक । फरवरीमे साधारणत: जाड़ फाटि गेल रहैत छैक, तेँ बेसी गरम कपड़ा नहि लऽगेल रही । ओहि समय डॉ. श्रीसुदिष्ट मिश्र, जे ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालयक सेवामे प्रधानाचार्यक पद पर रहथि आ मिश्र टोलामे हमर आवासक निकट कियायाक मकानमे रहैत छलाह, आब ओही ठाम अपन भवन बनाय रहैत छथि । हुनक जेठि कन्या आयुष्मती ललिता, जे हमर छात्रा छलि आ जे हमर 'आशा दिशा' कविता संग्रहक प्रेस कापी बनाय देने छलि, से विवाहक बाद दिल्लीमे रहैत छलि । ओकरे अतिशय आग्रह पर हम सब ओकरे डेरा पर अँटकल रही । ओहि दिनक स्वादिष्ट भोजन सुमनजीकेँ सदा मन रहलनि । अकस्मात् मेघ अयलैक आ बदरी लाधि देलकैक । माघोमासमे ओहि वर्ष एहन कनकनी नहि भेल छलैक । अगत्या हमरा श्रीमुन्नूजी लै ऊनी कोट कीनय पड़ल छल । एहन जाड़क कारणेँ दिन-देखारे फीरोजाबाद आयल रही ।

श्रीमधुरजीकेँ हमर अनुज मित्र कवि ओ कथाकार **श्रीउग्रनारायण मिश्र 'कनक'**सँ घुट्ठा सोहार आपकता छनि । श्रीकनकजी दिल्ली जयबासँ किछु दिन पहिनहि फीरोजाबाद जयबाक निर्णयक बाद, एक दिन श्रीमधुरजीक कन्याक प्रति श्रीमुन्नूजीक प्रति कथाक उत्थान कयने रहथि । हमर बालक श्रीमुन्नूजी आइ.एस्.सी.क परीक्षा देलाक बाद आ परीक्षाफल प्रकाशित होयबासँ पूर्व प्रसिद्ध होमियोपैथ डॉ. चन्द्रमोहन झाक पुत्र, हमर छात्र तथा भारतीय स्टेट बैंकमे जीविकापन्न श्रीविजयकुमार झाक कहलापर खेल-खेलमे बैंकक प्रतियोगिता परीक्षामे बैसल रहथि, किन्तु बी.ए. प्रतिष्ठामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कयलाक बाद प्रतियोगिता परीक्षाक परीक्षाफल प्रकाशित भेलनि जाहिमे कम्पीट कयने रहथि । फीरोजाबाद पहुँचलहुँ तँ मित्रवर श्रीकनक जी पहिनहि सँ ओतय 'उपस्थितोऽस्मि' ।

ओहि ठाम गयाप्रसाद उपाध्यायजी अपन दुमंजिलापर अद्‌भुत आवासीय व्यवस्था कयने रहथि । उपर जयबाक हेतु एक काठक सीढ़ीसँ एस्बेस्टस वा खपरैल से ठीकसँ स्मरण नहि अछि, ताहि पर जाउ, ओकरा टपि कऽ गया प्रसादजी कोठलीक बाहर जे

Scanned by CamScanner

बरामदा रहैक ताहिपर सुमनजीक संग हमरा लऽ जाय बैसाय देल गेल । बूढ़ा उपाध्यायजी एक अद्भुत टेलीफोन बनौने रहथि । ओकर प्रसार केवल हुनक हबेलीधरि सीमित छलनि । ओही टेलीफोनसँ हमरा दूनू गोटेक हेतु जलपान, चाह-पान आदिक व्यवस्था करैत रहलाह । श्रीकनकजी ओही ठाम आबि बैसलाह । हम चारूकात ताकी, मुदा श्रीमुन्नूजीक कतहु कोनो पता नहि । ओहि समय विवाहयोग्य बालकक अपहरण कऽ विवाह कराय देबाक समाचार देशमे चारू भाग सुनि पड़ैत छल । श्रीकनकजी अयलाह तँ हुनकासँ श्रीमुन्नूजीक बारेमे पुछलियनि । कहलनि ओम्हरे कतहु टहलय गेल होयताह । तखन कहलनि– हम श्रीमुन्नूजीक विवाहक प्रसंग अहाँसँ पूर्वे चर्चा कयने रही । की विचार भेल ? कन्या सर्वगुण सम्पन्न छैक । जेहने पढ़बामे तेहने गृहकार्यमे ।

आब हमर मनक पाप और चिन्तित कऽ देलक । विशेषतः श्रीकनकजीक पूर्वहिसँ ओहि ठाम उपस्थितिसँ माथ ठनकल, ताहिपर हुनक प्रस्ताव चित्तकेँ अतिशय चंचल कऽ देलक । हम कहलियनि अहाँकेँ पाँच टा बालक छथि (हुनक एकटा बालक हमरा संग रहि दरभंगेमे पढ़ैत छलथिन) एक गोटेक विवाह दूरो कराय देबनि तँ कोनो क्षति नहि, मुदा हमरा तँ एकमात्र बालक छथि । एतेक दूर समधियान होयत जे एकबेर अयबाक हेतु दू-चारि कट्ठा जमीन बेचय पड़त । जलपानमे सोझाँमे राखल रसगुल्ला हमरा उजरा ओलक टोटी सन प्रतीत होअय लागल । सुमनजी सेहो हमर उद्विग्नता देखि विमन भऽ गेलाह । तेहन ठाम बैसाओल गेल रहय जे उतरि कऽ नीचाँ आयब कठिन छल । कनेक कालक बाद श्रीकनकजी घसकि गेलाह ।

ओही अजगुत फोन पर बूढ़ा उपाध्यायजीकेँ सभाभवन चलबाक सूचना अयलनि । भीतर-भीतर क्रोध ततेक रहय जे लड़खड़ाइत पैरेँ कोनहुना नीचाँ उतरैत गेलहुँ । ताबत चारि-पाँच घण्टाक बाद नीचाँ उतरलापर श्रीमुन्नूजी भेटलाह । पुछलियनि– अहाँ कहाँ चल गेलहुँ ? कहलनि– हमरा भीतर आङन लऽ गेलाह । ओतय बहुत महिला सब हमरा घर-परिवारक मादे पूछि रहल छलीह । पुछलियनि जलखै कयलहुँ ? कहलनि ततेक छलैक जे सबटा खाइओ नहि भेल । कहलियनि– आब हमरा लगसँ पाँचो मिनट फराक नहि जायब ।

सभा भवनमे मंगलाचरण, स्वागत गान कयनिहारि कन्याक समूहमे अपन कन्या सभक प्रदर्शनमे मग्न, स्वागत भाषाणमे सुमनजीक चर्चा मात्र नहि, एकछाहा हमर गुणगान, अकादेमी पुरस्कार बूझू रावण पर रामक विजय, ताहूसँ पैघ उपलब्धि भेल हो, हमरा विषण्ण बनाय देलक । सुमनजी हमर विषादक अनुमान करथि, किन्तु हुनकर सहनशीलता जेहन अतुलनीय छलनि, एमहर हमर असहिष्णुता सेहो तेहने । ट्रेनक समय 12.30 बजे राति छलैक, मंचपर 10 बाजि रहल छल । हड़बड़मे हमरा सबकेँ भोजन कराय, ओहि कुहेस भरल रातिमे स्टेशनपर लऽ जाय, जेनरल डिब्बाक टिकट ई कहैत जे टी.टी. अपना

Scanned by CamScanner

आदमी है, ट्रेनमे बैठने के बाद रिजर्वेशन बना देगा, फर्दमे बैसाय कार्यकर्त्ता जे चढ़बय आयल छल से चल गेल । मगध एक्सप्रेस डेढ़ घंटा लेट छलैक । पहिने कहि चुकल छी जे गरम कपड़ा नहिए जकाँ लऽ गेल रही, ओहि हल्फीमे श्रीमुन्नूजीकेँ ऊनी कोट रहनि तैयो जाड़ होइनि तखन हमर आ सुमनजीक की दशा भेल होयत से सहजहि बूझल जाय सकैछ । झोरासँ अंगपोछा बाहर कऽ दूनू गोटे कानकेँ कसि कऽ बन्हलहुँ । डिब्बामे तिल धरबाक जगह नहि तखन 'जतय सुइ न समाय, ततय फार घोंसिआय' लोकोक्ति चरितार्थ करैत सुमनजीकेँ मोटा पर बैसाय अपने दूनू बापुत एकटंगा देने, टाङ फेरैत पटना पहुँचलहुँ । आत्म ग्लानि होअय जे हमरे आग्रहपर सुमनजी फीरोजोबाद उतरब स्वीकार कयने छलाह, अन्तःकरणसँ इच्छा नहि छलनि ।

दरभंगा आबि ओहि क्षोभ आ क्रोधक प्रतिक्रियामे श्रीमधुरजीकेँ दू पाँतीमे अभिव्यक्त करैत पोस्टकार्ड लिखि देलियनि–

स्वस्ति श्री उपाध्यायजी को नमस्कार ।

यह जानकर आपको विस्मय होगा कि हम लोग जिन्दा ही दरभंगा पहुँच गये ।

भवदीय- श्रीअमर'

यद्यपि एहन अप्रिय घटनाक उल्लेख करब समुचित नहि छल, पछाति एहि कृत्य पर अपनहु पश्चात्ताप भेल छल, किन्तु घटना चिरस्मरणीय नहि, आविस्मरणीय अछि । हमर असहिष्णुताक पराकाष्ठासँ अपने लोकनि अपरिचित रहि जइतहुँ । एहन उग्र भाषा रहितहु श्रीमधुरजी स्वभावसँ ततेक मधुर छथि जे एकरा गम्भीरतासँ नहि लेलनि । एमहर अबिते छथि, अनेक कुटमैती छनि, अबैत छथि तँ दर्शन देबाक कष्ट करिते छथि । दू-तीन वर्ष पूर्व आयल रहथि तँ टटका छपल कविता पुस्तक देने गेलाह, पोथी देबे टा नहि कयलनि, अपितु ओहि ठामक व्रजभाषा मिश्रित जनपदीय भाषामे लिखल चारि-पाँच टा लोकगीत गाबि कऽ सुनयबो कयलनि । ई जनाय दी एहने जनपदीय लोक गीतक लेखन तथा मधुर स्वरमे उपस्थापनक हेतु लोकमे जनप्रिय कवि रूपमे खूब ख्याति प्राप्त कयने छथि,उपनामानुरूप गुणक प्रतिमूर्त्तिए छथि ।

जीवनमे असंख्य लोकसँ क्षणिक परिचय भेल आ विस्मृतिक गर्त्तमे विलाइत गेल, किन्तु किछु लोक एहनो भेटैत रहलाह जनिकासँ परिचय भेल तँ अविच्छेद्य बन्धुतामे परिवर्त्तित भऽ गेल, ताहि सबमे बहुतोक चर्चा कऽ चुकल छियनि, किछु एहन छथि जनिका प्रसंग कहब जे जाहि आँखिसँ सम्पूर्ण संसारकेँ देखैत छिऐक ताहि आँखिक निकटतम छैक पपनी (किछु लोक पिपनी सेहो कहैत छथिन) किन्तु निकटतम रहितहु आँखि पपनीकेँ नहि देखि पबैत छैक । उदाहरणार्थ **यात्रीजी** । हिनकासँ रक्तक सम्बन्ध सेहो छल । यात्रीजी घुमन्त लोक रहथि तेँ सब ठाम तँ नहि तथापि समय-समयपर

Scanned by CamScanner

विभिन्न मंचपर संग-संग कवितापाठ करबाक सुयोग लगैत रहैत छल । पहिल भेट जहाँ धरि स्मरण होइत अछि 1942 वा 43मे 'बूढ़ वर' आ 'विलाप' नामक दू टा चरिपनियाँ बुक लेट छपबाय सौराठ सभा पहुँचल रहथि । हमरा हिनक भाषाक सहजता आ अभिव्यक्तिक सरलता बड़ आकृष्ट कयने रहय । पहिले दिनसँ 'हओ' कहय लगलाह । गोटेक सय प्रति हम दूनू पोथी सभागाछीमे घूमि-घूमि, गाबि-गाबि बेचि देने रहियनि । ओतहि कहलनि जे हमर मातामह कहने रहथि जे तोरासँ कोनो सम्बन्ध हमरो अछि । फड़िछा कऽ नहि बूझल अछि ।

1948मे हम अपन मायकेँ प्रयाग होइत काशी लऽ गेलियनि तँ नीलकण्ठमे अँटकलहुँ । ओहि ठाम एक बूढ़ा बैसल छलाह । सामान रखैत देखि पुछलनि कोन गाम घर भेल ? उत्तर- खोजपुर । उत्साहित होइत हमर पिताक नाम लऽ पुछलनि हुनका चिन्हैत छियनि ? कहलियनि- हुनके बालक थिकहुँ हम । बाउ ! पहिने हमरा गोड़ लागू, हम अहाँकेँ पीसा होयब । अहाँक पिता दुर्गानाथ मिश्रक पौत्र थिकाह आ हुनक छोट सहोदर आर्त्तिनाथ मिश्रक दौहित्री थिकीह हमर पत्नी । तरौनीमे हमर एकटा नाति अछि ठक्कन, ई दुलारक नाम थिकै' असल नाम वैद्यनाथ मिश्र । ओ विवाह-दानक बाद घर-दुआरि छोड़ि बौंड़ि गेल, बौद्ध भऽ गेल । हम टोक दऽ देलियनि- आब तँ यात्रीजी नामसँ ख्यात छथि । पीसाजी कहि उठलाह- बस, बस, ओ कवि अछि, अहाँकेँ परिचय अछि ? कहलियनि- घुट्ठा-सोहार । एही वार्त्तालापक क्रममे रक्तक सम्बन्ध फड़िछायल । हमर माय जा धरि हमर डेरापर रहथि, यात्रीजी दरभंगा आबथि तँ फरमाइश कऽ तरल तिलकोड़ आ जमाइनिसँ छौंकल पटुआ साग खाथि । हम आजीवन हिनक प्रतिभासँ पूर्ण प्रभावित रहलहुँ । ओहि बलेल सन कायामे सरस्वती जिह्वेपर रहथिन । हमरा हिनकासँ एक शब्दक कारणेँ मतभिन्नता- हिनक एकटा पद छनि-

अपने छलाह मूर्ख, हमरा पढ़ा गेला बाप जे
बौआ कमा कऽ लगा देता टाल
बुढ़ारीमे बैसि कऽ खूब खैब
हितक संग शतरंज खूब खेलैब
मुदा हाय रे कप्पार ।

पिताकेँ 'मूर्ख' कहब केँ हम अवांछनीय मानैत छी । यात्रीजी सन शब्दशिल्पीकेँ एहि दिस ध्यान नहि गेलनि । एही बात केँ ओ कहि सकैत छलथिन-

अपने छला निरक्षर हमरा चारि अक्षर पढ़ा गेला बाप'' तखन बापकेँ मूर्ख कहबाक पापसँ बाँचि जइतथि । हिनक अनुयायी जे लोकनि भेलथिन से सब हिनक जन्मजात प्रतिभामे जे तीक्ष्णता छलनि से कतयसँ अनितथि ? तखन एहि विकृतिकेँ प्रगतिशीलता मानि, गुरुजनक प्रति अवाच्य प्रयोग करय लगलाह । यात्रीजीक जे चुम्बकत्व

Scanned by CamScanner

रहनि से चेला मुड़बामे आरो चोख भऽ गेलनि । एकरे प्रतिफल भेल जे एक गोटे लिखलनि– **औ बूढ़, हाथ उठाउ, फटाक्**

तँ दोसर गोटे दू डेग आगू बढ़ि गेलाह, ओ लिखलनि– **रौ बूढ़, हाथ उठा, फटाक्**

हुनक अवगति एहने जे 'रौ' सम्बोधन रहने 'बूढ़' शब्दक ऊनार्थक प्रयोग 'बुढ़बा' भऽ जयतैक । मातृभाषा थिकनि, मातृभाषामे व्याकरणक विचार हमरे सन अपटु लोक करैत अछि ।

दोसर एहने आत्मीय लोकमे छलाह **डॉ. व्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म** । ई जे मैथिली लोकसाहित्यकेँ धाङि कऽ मैथिलीक फलककेँ विस्तृत कयलनि से हिनका इतिहासक पृष्ठपर अमर बनाय देलकनि । अगणित मंचपर हिनका संग भ्रमण करबाक सुअवसर भेटैत रहल । हिनका संगक अनेक संस्मरण यदा-कदा पत्रिकामे छपैत रहल अछि । हम वारंबार कहलहुँ अछि जे बहुत किछु होइतो विद्वान टा नहि भऽ सकलहुँ । तथापि मैथिलीतँ मातृभाषा थीक आ हमर मायक भाषा टकसाली छलनि । हुनका शब्दक शुद्धता तथा वाक्य प्रयोगक विशेषताक प्रसंग मणिपद्मजी 'हुनकासँ भेट भेल' शीर्षक पुस्तकमे हमरा प्रसंग जे लिखने छथि से देखल जाय सकैछ । ओ हमरा सम्पूर्ण भाषा सम्बन्धी उपलब्धिक श्रेय हुनके देने छथिन ।

आब पुनः कनेक पाछाँ घुरैत छी । डॉ. श्रीरामनारायण झा (डॉ.आर.एन.झा)क परिवारक संग पिताजीकेँ विरोध भेलनि तकर कारण पर प्रकाश देबाक हेतु पहिनहि वचन बद्ध भऽ गेल छी, से सुनि लेल जाय ।

खोजपुरमे खौआड़े नहास मूलक परिवार जाति-पाँजि, धन ओ जनबलमे सब सँ आगू, किन्तु विद्या-वैभवमे ताहि समय सबसँ पछुआयल । डॉ. साहेबक पितामह तीन भाय विश्वेश्वर झा, रामेश्वरझा, भीखरझा । हिनका सभक परिवार जखन विस्तृत भऽ गेलनि तँ दछिनबारि टोल परक वास संकीर्ण भऽ गेलाक कारणेँ तीनू भाय टोल सँ दू-अढ़ाय सय गज दूर टोलसँ पूब जाय प्रशस्त वासडीह बनौलनि । ई सब घटना हमर जन्मसँ पहिलुक थीक । हमर पिताजी जे खोजपुरमे बसबाक निर्णय लेने रहथि तकर मुख्य आकर्षण छलनि मधुबनी बाबू साहेब सभक जमीन्दारीमे ई गाम छलनि आ बाबू क्षेमधारी सिंह हमर पिताक एकनिष्ठ छात्र रहथिन, जकर उल्लेख मधुबनी जिलाक परिचयात्मक एक पुस्तिकाक प्रकाशन मधुबनीक प्रशासन विभाग करौने अछि ताहिमे बाबू बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर' कयने छथिन । बाबू क्षेमधारी सिंहक प्रसंग एक क्षेपक कहैत छी । खड़ौरे बबुआन लोकनि पछबारि पारक ब्राह्मणक संग एक आसन पर बैसब अपन मर्यादा (शान)क प्रतिकूल मानैत छलाह, किन्तु बाबू क्षेमधारी सिंह ततेक प्रगतिशील विचारक रहथि जे अपन दलान पर सीमेन्टक एक सुन्दर ओठङयबला बेंच बनबौने रहथि, आ भेट

Scanned by CamScanner

कयनिहारक संग ओहि पर बैसथि । हमरा अनेक बेर हुनक डेउढ़ीपर जयबाक, हुनकर आशीर्वाद लेबाक तथा ओहि बेंचपर संग बैसबाक सुयोग भेटल अछि, डॉ.श्रीआर.एन्. झाक पितामह लोकनि जाहि घड़ारीकें छोड़ि गेल छलाह तकर किछु अंश नीलाम भऽ गेल छलनि, जे बाबू क्षेमधारी सिंहक सहयोगसँ हमरा पिताक नामें बन्दोबस्त भऽ गेल छलनि; किन्तु लाठी हाथें ओ लोकनि दखल नहि होअय देथिन । दूनू परिवारमे एही कारणें अश्वमाहिष चलि रहल छलनि, से बाल्यकालमे हमरो देखल अछि ।

रामेश्वरझाकें एक मात्र बालक जयनारायण झा, हुनक विवाह दुलारपुरक ख्यातनामा जमीन्दार खड्गपति चौधरीक कन्यासँ, जे हमर सासुक सहोदर छोटि बहिन छलथिन, हुनका पाँच गोट कन्या मात्र, बालक नहि । बेला निवासी यदुवंश झाक कन्या हीरादेवीसँ हमर विवाह एही चिर विरोधकें समाप्त करबाक उद्देश्यकें ध्यानमे राखि कऽ कराओल गेल । सम्बन्ध भऽ गेलाक बाद दूनू परिवारमे सौमनस्य स्थापित करयबाक हेतु हमर श्वसुर एक दिन रामेश्वर झाक संग हमर पिताजीसँ भेट कयलथिन । ओ पिताजीकें कहलथिन– हमर पूर्वजन्मक कोनो पाप छल जे अहाँ सन ऋषिकल्प लोकसँ वैमनस्य कराय देलक । हमरा एकटा पौत्रक मुँह देखबाक लालसा लगले अछि, अहाँ हमरा आशीर्वाद दिअऽ जे हम पौत्रक मुँह देखि सकी ।

पिताजी कहलथिन– हमरा सभक वाणीमे से सामर्थ्य कहाँ, किन्तु अहाँकें विश्वास अछि तँ हम भगवतीकें हृदयसँ प्रार्थना करैत छियनि जे अपनेक मनोरथ पूर करथु । भगवती हुनकर प्रार्थना सुनलथिन । 1943मे हमर द्विरागमन भेल, आ ओही वर्ष जयनारायणझाकें बालक जन्म लेलथिन । नाम राखल गेलनि श्री विक्रमनारायण, पछाति ई स्वयं विक्रम शब्दकें हटाय ब्रजेन्द्र जोड़लनि । सम्प्रति ई तीन भाय छथि, छोट दू गोटे छथिन श्री सुरेन्द्रनारायणझा, श्रीधीरेन्द्रनारायण झा ।

हिनका कुलमे ई धारणा छलनि जे पढ़ब-लिखब नहि धारैत अछि । किन्तु एहि अन्धविश्वासकें श्रीविक्रमजी अर्थात् श्रीब्रजेन्द्र नारायणझा पितासँ विद्रोह कऽ तोड़लनि । जीवन भरि संघर्ष करैत घरसँ पड़ाय बेलमोहनमे नवे हाइ स्कूल फूजल रहैक ततय, एक प्रकारें गुप्त स्थाने बुझबाक चाही, पराश्रित रहि मैट्रिक कयलनि । कतहु-कतहु छोट-मोट जीविका अर्जन करैत कोनहुना बी.ए. कयलनि, भाग्य संग देलकनि बिजली बोर्डमे नौकरी भेटि गेलनि । ओतहु नौकरी करैत एम्.ए.पी-एच्डी. कयलनि । इमानदारी आ अपन कार्यक्षमताक बलें बिजली विभागक डी.डी.पी. पदपर पहुँचलाह, तखन एल्.एल्.बी. कयलनि । सम्प्रति सेवानिवृत्त भऽ राँची हाइ कोर्टमे ओकालति करैत छथि, बालकक विवाह प्रसिद्ध गीतकार श्रीरवीन्द्रक कन्यासँ करौलनि । बादमे डॉ. श्रीबी.एन्. झा प्रभाकर कहाबय लगलाह । अनुजमे श्रीसुरेन्द्रनारायण झाकें बिजली इंजीनियरिंग धरि पढ़ाय अपने बिजली बोर्डमे जीविकापन्न करौलनि जे बिजली विभागक एस्.डी.ओ. पदसँ एही वर्ष

Scanned by CamScanner

सेवानिवृत्त भेलथिन अछि । ताहिसँ छोट श्रीधीरेन्द्रनारायण झा बिहार राज्य खाद्य निगममे उच्च पदाधिकारी छथिन ओ बी.एस्.सी. छथिन । ई दूनू भाय हमरा संग रहि पढ़ैत रहथिन ।

विद्याक क्षेत्रमे खोजपुर बहुत पछुआयल छल । आचार्य पण्डित हमर पिता मात्र बाहरसँ जाय बसल छलाह । हुनकाबाद हमही दोसर आचार्य उपाधिधारी भेलहुँ, हँऽ हमरा संग दोसर आचार्य भेलाह हमर अग्रज भवनाथ मिश्रक सहपाठी कुमर झा आ हुनक दोसर समवयस्क संगी **श्रीलालधर झा** सर्वप्रथम मैट्रिक पास कऽ दारोगा भेलाह ओ खोजपुरमे विद्याक क्षेत्रमे क्रान्तिक बिगुल फुकने रहथि । सम्प्रति 92 वर्षक वयसमे सेवानिवृत्त जीवन बिताय रहल छथि । एहिसँ अतरिक्त हमर समवयस्क सुखचन्द्र मिश्र ओहियुगमे रेडियो इंजीनियर भेल रहथि जे दरभंगाक आकाशवाणीकेन्द्रक संस्थापक रहथि, एही वर्ष दिवंगत भेलाह अछि । जाहि कुलमे 'विद्या नहि धारैत अछि' एहन धारणा छलैक, ताही कुलमे आइ सरस्वती खल-खल हँसैत छथिन । डॉक्टर, इंजीनियर, ट्रेण्ड ग्रेजुएट, ऑभरसीयर, ओकील होइत गेलथिन । डॉ. श्रीआर्.एन्. झा सदृश सिद्धहस्त शल्य चिकित्सक, यशस्वी, मृदुभाषी ओही कुलमे छथिन । हिनक पितामह जे तीन भाय छलथिन ताहिमे सबसँ जेठ विश्वेश्वर झाक पौत्र थिकथिन राजनीति ओ साहित्य दूनू क्षेत्रमे दखल रखनिहार श्रीपद्म नारायण झा विरंचि । माझिल भाय रामेश्वरझाक तीनू पौत्र हमर सबसँ जेठ सार इन्दिरा प्रियदर्शिनी काव्यक प्रणेता स्व. दिनेशचन्द्र झा ओ सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्रीउमेशचन्द्र झाक मसियौत तथा सबसँ छोट भीखरझाक पौत्र थिकाह स्वनाम धन्य डॉ. श्रीराम नारायण झा । लक्ष्मी आ सरस्वतीकेँ संग खेलाइत एहि परिवारमे देखि सकैत छियनि ।

भने घासे-पात हो, किन्तु जतेक गद्य लिखलहुँ मैथिली-हिन्दी मिलाय तकर दशमो अंश कविता नहि पूरत, तथापि जे थोड़-बहुत प्रसिद्धि भेटल अथवा घुमबा-फिरबाक योग लागल से कवि सम्मेलन सभक मंचक प्रसादसँ । हम ने कोनो खण्ड काव्य ने कोनो महाकाव्य लिखलहुँ, केवल मुक्तक लिखैत रहलहुँ, ताहूमे कोनो बड़का तीर मारने होइ से तटस्थ भावसँ देखला उत्तर अपनहु नहि प्रतीत होइत अछि, तथापि 1942सँ 2009 धरि जहिया ई 'अतीत मन्थन' आरम्भ कयल अर्थात् विक्रम संवत् 2066क प्रथम दिनसँ पूर्वधरि कवि सम्मेलन सबमे भाग लैत रहलहुँ । एतबा निःसंकोच कहि सकैत छी जे जँ हिन्दीमंचकेँ जोड़ि देल जाय तँ छात्र जीवनसँ आरम्भ कऽ अद्यावधि सहस्रावधि मंच पूरि गेल होयत । जाहिमे शतावधि सम्मेलनमे अध्यक्षतो कयने होयब ।

हिन्दीक अनेक महान कवि यथा हरिवंश राय 'बच्चन' रामकुमार वर्माक प्रसंग डॉ. अमरनाथ झाक आवास परक चर्चा कऽ चुकल छी, तदतिरिक्त पं. श्रीजानकी वल्लभ शास्त्री, दिनकर जी, मोहन लाल महतो वियोगी, पं. राम दयाल पाण्डेय, हंसराज तिवारी, कपिलदेव नारायण सिंह 'सुहृद', श्री आनन्द नारायण शर्मा । ओना साहित्य अकादेमी द्वारा

Scanned by CamScanner

आयोजित क्षेत्रीय बहुभाषा कवि सम्मेलन सबमे बंगला, उड़िया, असमी, नेपाली, मणिपुरी, संथाली आदि भाषाक कवि सभक संग, पटना आकाशवाणीक चौपाल कार्यक्रममे मगही, भोजपुरीक कवि सभक संग कविता पाठ करबाक अवसर भेटैत रहैत छल ।

विशुद्ध मैथिली मंचपर हमरा सभक टीममे अधिक सँ अधिक ठाम संग देनिहारमे मधुपजी, मणिपद्मजी, श्रीचन्द्रभानुजी, श्री मायानन्द मिश्र, श्री प्रवासी साहित्यालंकार श्री सोमदेवजी, डॉ.श्रीआर्.के. 'रमण' (हिनका हम रा.का. 'रमण' कहैत छियनि) ब्रजभूषण झा 'भूषण' श्रीश्रीमन्त पाठक, इन्द्रनाथझा 'इन्दु' श्रीअनन्त बिहारीलाल 'इन्दु' रमानाथ मिश्र 'मिहिर' आद्यानाथ झा 'निरंकुश' श्रीरवीन्द्र आदि संग रहैत छलाह । सुमनजी किरणजी, आरसी प्रसाद सिंह 'किसुन'जी, हरिमोहन बाबू, शेखरजी अधिक ठाम नहि जाथि । विशेष परिस्थितिमे संग देथि । श्रीभीमनाथ झा पछाति एमहर अयलाह ताबत कवि-सम्मेलनक धाही कम होअय लागल छलैक । तैयो बहुत मंच पर संग रहल छी ।

अति आरम्भिक कालमे, चेतना समिति पटनाक स्थापनासँ पूर्व हमसब बहेड़ा आ सोतिपुराक कवि सभक सङोर कऽ, अपन खर्चा-पानी संग लऽ, साइकिल, पैदल यात्रा कऽ जनजागरणक हेतु गाम-गाम जाइ । सभा-समितिक आकर्षण मुख्य रूपें गमैया दालिभातक भोजमे अन्तमे परसायबला जेना सकरौड़ीक रहैत छलैक तहिना कवि सम्मेलनक रहैक । सभक हृदयमे एक मात्र उद्देश्य, मैथिली हमरा सभक समृद्ध भाषा थीक, एहि तथ्यसँ जनसाधारणकें अवगत करायब रहैक । लोभ-लाभक लेश मात्र आकांक्षा नहि । किछु दिनक बाद गाम-घरमे आयोजन हो, से इच्छा लोकक मनमे सुगबुगयलैक तँ आपसमे चन्दा (बेहरी)कऽ यात्रा व्ययक नाम पर किछु पत्रम्-पुष्पम् समागत साहित्यकारकें भेटय लगलनि । गामसँ पसरैत-पसरैत औद्योगिक नगर सबमे पसरय लगलैक तँ लिफाफ चलय लगलैक, क्रमशः लिफाफक मोटाइ बढ़लैक से श्रीरवीन्द्र-महेन्द्रक जोड़ीकें मंचपर अवतरित भेलाक बाद । क्रमशः जोड़ीक संख्यामे बृद्धि होअय लगलैक श्री शशिकान्त-सुधाकान्त, नवल-नन्द, सरस-रमेश, धीरेन्द्र-महेन्द्र पछाति धीरेन्द्र-महेन्द्रक संग जयरामक जुटलापर तिजोरी नामकरण भेलैक । क्रमशः गायिका नर्त्तकी लोकनिक मंचपर प्रवेश भेलनि । मिथिलाक भोजमे खाजा, मुङबा, अमिर्त्ती बालुसाहीक प्रतिपत्ति छलैक । रसगुल्लाक आगमनक बाद जेना ओ मधुर सब पात परसँ लुप्त होइत गेल तहिना कवि सम्मेलन पतराइत गेल । आरम्भमे एहि पर्वक नामक संग विद्यापति नाम जुटल रहलाक कारणें लाजें-पच्छें कतहु-कतहु विधिपुरौअलि धरि रहि गेलैक अछि अन्यथा आब रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमक नाम पर घोर असांस्कृतिक वातावरण सृष्ट होइत गेलैक अछि । हमरा लोकनिकें औद्योगिक नगर सबमे लिफाफ भेटय तँ सोझे अपन जेबीमे राखि ली, फोलि कऽ देखबामे संकोच होअय । मनमे होअय जे हम सब जाहि लक्ष्यकें लऽ आरम्भ कयने रही ताही लक्ष्यक पूर्त्तिमे ई सब योगदान

Scanned by CamScanner

करैत छथि, ताहीसँ सन्तोष होइत छल। आब ई पेशा भऽ गेल अछि, तेँ कलाकार लोकनिक कल्लाक आकार सेहो पैघ भेलनि अछि, पहिने साटा-पाटा कऽ लेल जाइत छैक। संस्कृतिक नाम पर एतेक विकृति पसरि गेल अछि जे ताहि सभक चर्च कयने मारिओ खाय सकैत छी।

भाषण तँ किछु गनल-गूथल चिन्तक सबकेँ छोड़ि बुद्धिजीवीओ लोकनिकेँ भीषण बुझाइत रहलनि अछि। आब कवि सम्मेलन सेहो आयोजक लोकनिकेँ गराँक घेघ प्रतीत भऽ रहल छनि। एमहर कविता, जकरा हम हृदयक उद्‌गार मानैत छी, मस्तिष्कक स्तर पर चल गेल अछि। मस्तिष्कक विषय थिकैक दर्शन शास्त्र, तकरो किछु अंश रहितैक तँ किछु सन्देश भेटितैक, किन्तु तकर कोन सम्भावना। छन्दक स्थान स्वच्छन्द प्रवृत्ति छेकि लेलकैक। तेँ प्रतिक्रियामे एहि कलमसँ एहनो पंक्ति लिखाय गेल–

...कृत्रिम उपग्रहसँ अन्तरिक्ष बाट पकड़ि
धरतीकेर लोक चन्द्रलोककेँ टपैत अछि।
प्रकरण थिक यैह, जाहि प्रकरणमे काव्यगगन
बहुतो उपग्रहसँ सम्प्रति आच्छन्न अछि।
चक्कर ओ मारि रहल गुह्यक अन्वेषणमे
अर्थ लुप्त, भाव गुप्त, छन्द-अलंकार लुप्त...
भ्रान्तिक अन्हार बीच, क्रान्तिक आह्वान सूनि
शान्तिक सुरक्षा लै साहित्यक माथे पर
अणुबम विस्फोट भेल, ...कविता बेचारी किन्तु
मारलि गेलि अनचोके।
मारलि गेलि कविता आ मरि गेलि कविता
तँ कविओकेँ जान छुटल पिंगल उनटयबासँ...

एहने-एहने प्रतिक्रियाक कारणेँ हम परम्परावादी कहाय एकढ़वा भेल छी। किन्तु एमहर हमर पीढ़ीक बादक पीढ़ीमे ख्यातनामा, साहित्य अकादेमी पुरस्कृत, विभिन्न विधामे अनवरत रचनाशील साहित्यकार हमरा एकपत्र लिखलनि आ ताहिमे ईहो सूचित कयलनि जे एहि पत्रकेँ कोनो पत्रिकामे छपबाय हम एकरा सार्वजनिक करब, तेँ हम एतय सम्पूर्ण पत्र उद्धृत कऽ रहल छी ओ थिकाह **श्रीजीवकान्तजी**।

पछाति पूर्वमे कवि सम्मेलनक प्रसंग चर्चा कऽ रहल छलहुँ जाहि सबठामक बहुत किछु कटु-तिक्त-कषाय-लवण-अम्ल ओ मधुर सब रससँ परिपूर्ण अनुभव अछि। ओतेककेँ ने समेटब सम्भव, ने आवश्यक अछि। बानगीक रूपमे किछु उद्‌धृत कऽ दैत छी।

Scanned by CamScanner

जीवकान्तजीक पत्र

जीवकान्त 28/12/2008

अग्रज प्रिय अमरजी,

'कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा' पढ़ि कए काल्हि खतम कएलहुँ । बम्बै हम गेल नहि छी । मुदा 1964 ई.क कालखण्डमे ई नगरी बहरियाक नजरिमे केहेन छल, तकर सामान्य वर्णन पढ़बाक अवसर भेटल । ई पोथी बम्बैक व्यस्तता आ अवसरवादिताक कथा तँ कहैत अछि, एक पंडितपुत्र आ पंडित-धर्म निमाहैत एक गुरुजीक रुचि-अरुचि आ सबलता-दुर्बलताक नीक अध्ययन आ विश्लेषण उपस्थित करैत अछि ।

एहिमे अमरजी नामक कविक अपन कविताक जनतामे असरि देखबाक सुख-दुखक सेहो अंकन भेल अछि । हिन्दीमे पढ़ल (आ लिखल) गुजराती हाइ स्कूलमे अमरजीक काव्यपाठ कतेक बाल-वृद्धकेँ आह्लादित आ प्रफुल्लित करैत अछि, से बूझब हमरा लेल आनन्ददायक भेल ।

हम छन्दोबद्ध कविताक प्रति कहियो उदार दृष्टि नहि राखल । मुदा जनाइत अछि जे छन्दोबद्ध कविता महत्त्वपूर्ण अछि । ओ समाजकेँ संगठित कए सकैत छथि, ओ दस बर्खक बच्चोक हृदयमे प्रकाश आनि सकैत अछि । जेना बम्बैक ओहि स्कूलक बाल वर्गक छात्रोकेँ ओ संस्कारित कए देलक ।

कविताकेँ नव पुरान ओकर शिल्प बनबैत छैक । नवकविता मुक्तछन्द (अथवा छन्दमुक्ति)केँ अपन मूल धर्म बना लेलक, से पूर्णतः ठीक नहि भेलैक । यात्रीजी एतेक अतिवादी नहि छलाह । ओ कवितामे लय, प्रवाह आ तुकक दुराग्रही नहि छलाह, तँ ओ कवितामे एहि सभ वस्तुक विरोधो नहि कएल । कही तँ अन्त धरि ओ लोक धर्म लय, छन्दकेँ आवेश पूर्वक अपन मैथिलीयो रचनामे प्रतिष्ठित कएने रहलाह ।

हम जे बुझैत छी– कविताकेँ नव अथवा पुरान ओकर शिल्प बनबैत छैक, से एक आंशिक लक्षण थिकैक । कविताकेँ पुरान बनबैत छैक, ओकर कथ्य (ओकर विषय-वस्तु) । पुरान कविता (जेना सुमनजीक कविता) आधुनिक प्रगतिक कदाचित विरोध आ ओकरा उपेक्षित करैत रहल । ओ कविताकेँ कण्व ऋषिक आश्रममे बन्न कए देलक आ ओकरा चारूकात नागफणिक बेढ़सँ घेरि देलक ।

कविता केँ नव बनबैत छलैक ओकर विषय-वस्तु । राष्ट्रीयता संसारकेँ युद्धमे ठेलैत छैक, तेँ मनुक्खकेँ राष्ट्रीय अस्मिताक गुणगान नहि कए सार्वभौम मानवताक शोषण आ पीड़ाकेँ शब्द मे चित्रित करबाक चाही ।

कविताकेँ संस्कार देबा लेल मैथिलीमे कोनो आयोजन नहि छैक । राजनैतिक

Scanned by CamScanner

पार्टियो सभ लेखकके दू गोलमे बँटने छैक, से आन भाषामे बेसी देखाइत छैक । मैथिली केँ जनाधार (पाठकक संख्या) नहि छैक, तँ पार्टियो सभ मैथिलीक कवि सभ दिस आँखि उठा कए नहि देखलक अछि ।

मैथिलीमे अहाँक कवि रूप प्रधान भेल अछि, कारण अहाँ कवितामे एक छाप बनाओल, एक हठ रोपल आ ओहि हठकेँ बलपूर्वक पँजिऔने रहलहुँ ।

''कन्यादान... नेपथ्य कथा''मे अहाँक शिक्षको रूप बहुत फड़िछा कए आएल अछि ।

डेढ़-दू मास बम्बै प्रवास मे अहाँ अपन स्कूलक दैनन्दिन जीवन लेल, छात्र सभ लेल, शिक्षणक अपन विषय लेल जतेक औनाइत छी, से तीव्रतासँ झलकैत अछि । ओहि ठाम ई नहि बुझाइत अछि जे अहाँ कवि छी, अथवा कविए टा छी जे अपन श्रोता, पाठक आ प्रशंसकक बीच ततबा प्रफुल्लित होइत अछि जे ओ अपन नोकरी (अध्यापन वृत्ति) आ अपन परिवारो केँ किछु उपेक्षणीय बूझए लगैत अछि ।

ई पोथी यद्यपि अहाँक फिल्मी जीवनक थोड़ेक कटु-मधु अनुभवक छोट झलकी थिक, मुदा अहाँक प्रतिभाक महत्त्व केँ ओ रेखांकित करैत अछि । अहाँ ओहिमे रमि कए किछु आरो संभावनाकेँ मूर्तिमान कए सकैत छलहुँ, मुदा अहाँक अंतरात्मा (अथवा मैथिल पंडित-वर्गक अन्तरात्मा) एक संघर्ष आ सन्तापक बोध करैत रहल । उन्नैस सए चौंसठि मे जे अन्तर्द्वन्द्व अहाँक मोनमे छल जे सिनेमाक जीवन नट-नट्टिन लेल छैक, पवित्र आ मर्यादित वर्ग लेल नहि छैक, से कदाचित आइयो अक्षुण्ण अछि ।

अहाँ पोथी केँ पत्नी हीरादेवी (स्वर्गीय)क पुण्य-स्मृतिकेँ समर्पित करैत छी । ताहिमे लिखैत छी– ''फिल्ममे घटित घटना-चक्रकेँ सत्य मानि, एकर बादे वानप्रस्थ ग्रहण कयनिहारि, शुद्धान्तःकरण रखनिहारि एक नारी ओ हमर धर्मपत्नी सौभाग्यवती...केँ समर्पित'' । ई स्पष्ट होइत अछि जे अहाँक नट-वेषकेँ देखि ओ क्षुब्ध भेली, ओ ओकरे असली मानि ओ पत्नी आ पत्नी-भावसँ विरक्त भए गेली । मैथिली मे फिल्म नहि बनत । बनत, तँ नहि चलत । तकर कारण जे हमरा सभक समाज घोर शुद्धतावादी आ संरक्षणवादी अछि । उदार आ क्षमाशील नहि अछि ।

चरित्र अभिनेताक रूपमे अहाँ काज कएल । लालकका बुच्ची दाइक गालपर टघरैत बुच्ची दाइक नोर पोछैत छथि । अहाँ केँ नोर पोछबामे जे तारतम्य आ असौकर्य भेल, ताहि प्रसंगक चर्चा करब । अहूँ ओहि प्रसंगक चर्चा महत्त्वक संग करैत छी । ई चर्चा बहुत मार्मिक भेल अछि । फिल्मक निर्देशक फणिदा जे प्रबोधन अहाँकेँ देलनि, सेहो अद्‌भुत आ चित्ताकर्षक भेल अछि । अहाँ अवसरानुकूल हुनक नीक प्रशंसा आ उचित प्रशंसा कएल अछि ।

Scanned by CamScanner

बम्बैमे 'भैया' शब्द अछि। महीस पोसनिहार सभक जे वर्णन अहाँ कएल अछि, से बहुत मौलिक अछि। आजुक महाराष्ट्रमे जे बिहारी-विरोध आ तकर फलस्वरूप जे रक्तपात होइत छैक, से स्पष्ट भए जाइत अछि।

महानगरीमे धनिकसँ धनिक आ गरीबसँ गरीब मैथिलसँ अहाँ भेँट करा देल, ताहूसँ पाठकक अनुभव-विस्तार होइत छैक।

अहाँ सम्पूर्ण पोथीमे एक 'नोस्टेलजिया'केँ ध्वनित करैत छी जे अहाँ (अर्थात् संस्कारी मैथिल सभ) अध्यापन वृत्तिमे अपनाकेँ सुरक्षित बुझैत छी। एहि वृत्तिकेँ छोड़बाक संभावना देखैत माँतर असहाय आ अनाथ भेल अनुभव करैत छी। मास्टरी वृत्ति जंगल वला ऋषि-मुनिक गुरुकुलक समर्थन आ अनुमोदन थिक। से बात कहबामे अहाँ सफल भेल छी।

फीनिक्स मिलक मनेजर जे यथास्थान अहाँक मोहिनी-मंत्रसँ प्रभावित भेलाह, से अहाँक संस्कृतक योग्यताक कारणेँ भेलाह। एहि पोथीमे ई ध्वनित भेल अछि जे मिथिलाक लोक देशमे कोनो दोसर-तेसर भूभागमे एही लेल आदरणीय आ महत्त्वपूर्ण बूझल जाइत छथि जे ओ संस्कृतक ज्ञाता छथि आ ओकर रक्षा कएने जाइत छथि। एहिसँ संदेश भेटैत अछि जे संस्कृतक ज्ञान हमरा सभक अस्मिता थिक आ अस्मिताकेँ बचा कए राखब जरूरी अछि। दुर्भाग्यवश हमरा लोकनि एहि दिस बहुत सचेष्ट आ साकांक्ष नहि छी।

एक बात आर कहबाक मोन अछि जे अहाँ एक संग शिक्षक आ कवि रहलहुँ। तकरा संग एक सफल पारिवारिक लोक भेलहुँ। अहाँक परिवारक अनुराग रहि-रहि कए उदास स्वर-लहरी जकाँ पूरा पोथीमे सुनाइत अछि।

बहुतो लेखक आ बहुतो मास्टर परिवारकेँ उपेक्षित बनौने रहैत छथि। कतोक एहेन लोक अपन बच्चा सभपर ध्यान नहि दैत छथि, आ परिवार दुर्भाग्य आ दुर्दशाक भोग करैत अछि।

अहाँ अपन हठकेँ पोसैत एक सफल जीवन जीलहुँ।

अहाँक डाइरी लेखन विधामे संस्मरणक पोथी एक सफल रचना थिक। पढ़ि कए प्रफुल्लता होइत छैक। उत्सुकता बनल रहैत छैक। कथा-साहित्य जकाँ ई लेखन चित्ताकर्षक भेल अछि।

एक टा आग्रह।

जँ डाइरी अहाँ लिखने गेल होइ, तँ डाइरीकेँ आरो आगाँ विकास दैत अपन कवि जीवन आ अकादमी प्रतिनिधिक रूपमे देशक आन भाषाक लेखक लोकनिक संग भेल अनुभव आ आग्रहक संस्मरण लिखि भाषाकेँ समृद्ध करी।

Scanned by CamScanner

एक बात आर । हमर अपना बारेमे । "कन्यादान... नेपथि कथा" मे प्रकाशन-वर्ष देल अछि 2003 ई० । ई पोथी हमरा हाथ आएल जनवरी 2006 ई०मे । पूरे तीन वर्षक पछाति दिसंबर 2008 मे हम एकरा पढ़बा लेल बहार कएल । तीन दिनमे थोड़-थोड़ कए पढ़ि एकरा समाप्त कएल ।

तीन वर्ष धरि एकर उपेक्षा भेल । ई उपेक्षा हमरा द्वारा भेल । की मैथिली किताबक गति यैह छैक ? की हमरो सभक पोथी जे हमहू सम्मानार्थ (बिना मूल्य लेने ककरो पठबैत छी, तकर यैह गंजन होइत होयतैक ?

हम आनो भाषाक (जेना हिन्दी विशेष, अंग्रेजी थोड़) पोथी किनैत छी । बेसी पोथी हाथमे अबैत अछि, की पढ़ब शुरू कए दैत छी । ओहू सभमे सभ किताब पूरा पढ़ल नहि होइत अछि । किछु किताब आवेशसँ शुरूसँ अन्त धरि पढ़ि कए प्रफुल्लताक (परितोषक) अनुभव करैत छी ।

पोथी सभक उपेक्षा होइत अछि । मैथिली पोथीक उपेक्षा हम करैत छी । मैथिली भाषी लेखक आ अ-लेखक बंधु अपन पोथीक उपेक्षा करैत छथि की ई आकस्मिक अथवा संयोगवश होइत अछि ? हम कहि सकैत छी जे संस्कार-वश हमरा सभ पोथी क प्रति जे भावना रखने छी, ताहिमे सुधार आ संशोधनक आवश्यकता अछि ।

—जीवकान्त

28/12/2008

श्रीजीवकान्तजीक एहि पत्रमे व्यक्त विचारमे दू बिन्दु सुमनजीक कविता आधुनिक प्रगतिक कदाचित विरोध आ ओकरा उपेक्षित करैत रहल तथा राष्ट्रीयता संसारकेँ युद्धमे ठेलैत अछि' पर हम सहमत नहि छी ।

श्रीजीवकान्तजीक हाथक लिखल पत्र अविकल हुनके अक्षरमे सेहो दऽ देल गेलनि अछि—

Scanned by CamScanner

[illegible] 28/12/2008

अग्रज प्रिय अमरजी,

'कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा' पढ़ि कए कालिह खतम कएलहुँ। बम्बै हम गेल नहि छी। मुदा 1964 ई० क कालखण्डमे ई नगरी बहरियाक नजरिमे केहेन छल, तकर सामान्य वर्णन पढ़बाक अवसर भेटल। ई पोथी बम्बैक अस्तता आ अवसरवादिताक कथा तँ कहैत अछि, एक पंडितपुत्र आ पंडित-धर्म निमाहैत एक गुरुजीक रुचि-अरुचि आ सबलता-दुर्बलताक नीक अध्ययन आ विश्लेषण उपस्थित करैत अछि।

एहिमे अमरजी नामक कविक अपन कविताक जनतामे असरि देखबाक सुख-दुखक सेहो अंकन भेल अछि। हिन्दीमे पढ़ल (आ लिखल) गुजराती हाइ स्कूलमे अमरजीक काव्यपाठ अनेक बाल-वृद्धकेँ आह्लादित आ प्रफुल्लित करैत अछि, से बूझब हमरा लेल आनन्ददायक भेल।

हम छन्दोबद्ध कविताक प्रति कहियो उदार दृष्टि नहि राखल। मुदा जनाइत अछि जे छन्दोबद्ध कविता महत्त्वपूर्ण अछि। ओ समाजकेँ संगठित कए सकैत छथि, ओ दस बर्खक बच्चोक हृदयमे प्रकाश आनि सकैत अछि। जेना बम्बैक ओहि स्कूलक बाल वर्गक छात्रोकेँ ओ संस्कारित कए देलक।

कविताकेँ नव प्रयास ओकर शिल्प बनबैत छैक। नवकविता मुक्तछन्द (अथवा छन्दमुक्ति) केँ अपन मूल धर्म बना लेलक, से पूर्णतः ठीक नहि भेलैक। यात्रीजी एतेक अतिवादी नहि छलाह। ओ कवितामे लय, प्रवाह आ तुकक दुराग्रही नहि छलाह, तँ ओ कवितामे एहि सभ वस्तुक विरोधी नहि

Scanned by CamScanner

कएल। कहीतँ अन्त धरि ओ लोकधर्मी लय, छन्दकेँ आवेशपूर्वक अपन मैथिलीयो रचनामे प्रतिष्ठित कएने रहलाह।

हम जे बुझैत छी — कविताकेँ नव अथवा पुरान ओकर शिल्प बनबैत छैक, से एक आंशिक लक्षण थिकैक। कविताकेँ पुरान बनबैत छैक, ओकर कथ्य (ओकर विषय-वस्तु)। पुरान कविता (जेना प्रगतिशील कविता) आधुनिक प्रगतिक कदाचित विरोध ओ ओकर उपेक्षित रहैत रहल। ओ कविताकेँ [illegible] आश्रममे बन्द कए देलक आ ओकरा चारूकात नागफणिक बेढ़ सँ घेरि देलक।

कविताकेँ नव बनबैत छलैक ओकर विषय-वस्तु। राष्ट्रीयता संसारमे पहुँचि ठेलैत छैक, तँ मनुक्खकेँ राष्ट्रीय अस्मिताक गुणगान नहि कए सार्वभौम मानवताक शोषण आ पीड़ाकेँ शब्दमे चित्रित करबाक चाही।

कवितामे संस्कार देबा लेल मैथिलीमे कोनो आयोजन नहि छैक। राजनैतिक पार्टियो सभ लेखककेँ दू गोलमे बँटने छैक, से आन भाषामे बेसी देखाइत छैक। मैथिलीमे जनाधार (पाठक संख्या) नहि छैक, तँ पार्टियो सभ मैथिलीक कवि सभ दिस आँखि उठा कए नहि देखलक अछि।

मैथिलीमे अहाँक कवि रूप प्रधान भेल अछि, कारण अहाँ कवितामे एक छाप बनाओल, एक हठ रोपल आ ओहि हठकेँ बलपूर्वक पँजिऔने रहलहुँ।

"कन्यादान ... नेपथ्य कथा" मे अहाँक शिक्षको रूप बहुत फड़िछा कए आएल अछि।

Scanned by CamScanner

उद्, - दू मास बम्बे प्रवास मे अहाँ अपन स्कूलक दैनन्दिन जीवन लेल, छात्र सभ लेल, शिक्षणक अपन विषय लेल जतेक औनाइत छी, से तीव्रता सँ झलकैत अछि। ओहि ठाम ई नहि बुझाइत अछि जे अहाँ कवि छी, अथवा कविए टा छी जे अपन श्रोता, पाठक आ प्रशंसकक बीच ततबा प्रफुल्लित होइत अछि जे ओ अपन नोकरी (अध्यापन वृत्ति) आ अपन परिवारो मेँ उपेक्षणीय बुझने अछि।

ई पोथी यद्यपि अहाँक फिल्मी जीवनक थोड़ेक मधु- छोट झलकी मुदा अहाँक प्रतिभाक महत्त्व मेँ ओ रेखांकित करैत अछि। अहाँ ओहिमे रमि गए किछु आरो संभावनाकेँ मूर्तिमान भए सकैत छलहुँ, मुदा अहाँक अंतरात्मा (अथवा मैथिल पंडित-वर्गक अन्तरात्मा) एक संघर्ष आ सन्तापक बोध करैत रहल। उन्नैस सए चौंसठि मे जे अन्तर्द्वन्द्व अहाँक मोनमे छल जे सिनेमाक जीवन नट-नट्टिन लेल छैक, पवित्र आ मर्यादित वर्ग लेल नहि छैक, से कदाचित आइयो अक्षुण्ण अछि।

अहाँ पोथीकेँ पत्नी हीरादेवी (स्वर्गीया) क पुण्य-स्मृतिकेँ समर्पित करैत छी। ताहिमे लिखैत छी— "फिल्ममे घटित घटना-चक्रकेँ सत्य मानि, एकर बादे वानप्रस्थ ग्रहण कयनिहारि, शुद्धान्तःकरण रखनिहारि एक नारी ओ हमर धर्मपत्नी सौभाग्यवती ... केँ समर्पित"। ई स्पष्ट होइत अछि जे अहाँक नट-वेष केँ देखि ओ क्षुब्ध भेली, आ ओकरे असली मानि ओ पत्नी आ पत्नी-भावसँ विरक्त भए गेली। मैथिलीमे फिल्म नहि बनत। बनत, तँ नहि चलत। तकर कारण जे हमरा सभक समाज घोर शुद्धतावादी आ संरक्षणवादी अछि। उदार आ क्षमाशील नहि अछि।

Scanned by CamScanner

चरित्र अभिनेताक रूपमे अहाँ काज कएल। लालकका बुच्ची दाइक गालपर टघरैत बुच्ची दाइक नोर पोछैत छथि। अहाँकेँ नोर पोछबामे जे तारतम्य आ असामर्थ्य भेल, तहि प्रसंगक चर्चा करब। अहूँ ओहि प्रसंगक चर्चा महत्त्वक संग करैत छी। ई चर्चा बहुत मार्मिक अछि। फिल्मक निर्देशक फणिदा जे प्रबोधन अहाँमे देलनि, सेहो अद्भुत आ चित्ताकर्षक भेल अछि। हुनक नीक प्रशंसा आ उचित प्रशंसा कएल अछि।

बम्बैमे 'भौआ' शब्द अछि। महीस पोस-निहार समाज जे वर्णन अहाँ कएल अछि, से बहुत मौलिक अछि। आजुक महाराष्ट्रमे जे बिहारी-विरोध आ तकर फलस्वरूप जे रक्तपात होइत छैक, से स्पष्ट भए जाइत अछि।

महानगरीमे धनिकसँ धनिक आ गरीबसँ गरीब मैथिलसँ अहाँ भेँट करा देल, ताहूसँ पाठकक अनुभव-विस्तार होइत छैक।

अहाँ सम्पूर्ण पोथीमे एक 'नोस्टेलजिया'केँ ध्वनित करैत छी जे अहाँ (अर्थात संस्कारी मैथिल सभ) अध्यापन वृत्तिमे अपनाकेँ सुरक्षित बुझैत छी। एहि वृत्तिकेँ छोड़बाक संभावना देखैत मातर असहाय आ अनाथ भेल अनुभव करैत छी। मास्टरी वृत्ति जंगलवला ऋषि-मुनिक गुरुकुलक समर्थन आ अनुमोदन थिक। से बात कहबामे अहाँ सफल भेल छी।

फीनिक्स मिलक मनेजर जे यथास्थान अहाँक मोहिनी-मंत्रसँ प्रभावित भेलाह, से अहाँक संस्कृतक योग्यताक कारणेँ भेलाह। एहि पोथीमे ई ध्वनित भेल अछि जे मिथिलाक लोक देशक कोनो दोसर-तेसर भूभागमे एही लेल आदरणीय आ महत्त्वपूर्ण बूझल ~~आइत~~ जाइत छथि जे ओ संस्कृतक ~~ज्ञाता छथि आ ओकर रक्षा करैत आबि~~। एहि सँ संदेश भेटैत अछि जे संस्कृतक ज्ञान हमरा सभक अस्मिता चिह्न ~~आ~~ अस्मिताकेँ बचा कए राखब जरूरी अछि। दुर्भाग्यवश हमरा लोकनि एहि दिस बहुत सचेष्ट आ साकांक्ष नहि छी।

एक बात आर कहबाक मोन अछि जे अहाँ एक संग शिक्षक आ कवि रहलहुँ। तकरा संग एक सफल पारिवारिक लोक भेलहुँ। अहाँक परिवार अनुराग रहि-रहि कए उदास स्वर-लहरी जकाँ पूरा पोथीमे सुनाइत अछि।

बहुतो लेखक आ बहुतो मास्टर परिवारकेँ उपेक्षित बनौने रहैत छथि। कतोक एहेन लोक अपन बच्चा सभपर ध्यान नहि दैत छथि, आ परिवार दुर्भाग्य आ दुर्दशाक भोग करैत अछि।

अहाँ अपन इष्टकेँ पोसैत एक सफल जीवन जीलहुँ।

अहाँक डाइरी लेखन विधामे संस्मरणक पोथी एक सफल रचना थिक। पढ़ि कए प्रफुल्लता होइत छैक, उत्सुकता बनल रहैत छैक। कथा-साहित्य जकाँ ई लेखन चित्ताकर्षक भेल अछि।

Scanned by CamScanner

एक टा आग्रह।

जँ डाइरी अहाँ लिखने गेल होइ, तँ डाइरीमेँ आरो आगाँ विकास दैत अपन कवि जीवन आ अकादमीक प्रतिनिधिक रूप मे देशाक आन भाषाक लेखक लोकनि क संग भेल अनुभव आ आग्रह क संस्मरण लिखि भाषाकेँ समृद्ध करी।

एक बात आर। हमर अपना बारे मे। "कन्यादान नेपथ्य कथा" मे प्रकाशन वर्ष देल अछि 2003ई०। ई [redacted] हमरा हाथ आएल जनवरी 2006ई० मे। पोथीक प्राप्ति दिसंबर 2008 मे। हम एकरा पढ़ब नहि बहार कएल। तीन दिन मे थोड़-थोड़ कए पढ़ि, एकरा समाप्त कएल।

तीन वर्ष धरि एकर उपेक्षा भेल। ई उपेक्षा हमरा द्वारा भेल। की मैथिली किताबक गति यैह छैक? की हमरी सभक पोथी जे सम्मानार्थ (बिना मूल्य लेने) भेटैत छी, तकर यैह गंजन होइत होयतैक?

हम आनो भाषाक (जेना हिन्दी विशेष, अंग्रेजी थोड़) पोथी किनैत छी। बेसी पोथी हाथमे अबैत अछि, मोने पढ़ब शुरू कए दैत छी। ओ सभमे सभ किताब पूरा पढ़ल नहि होइत अछि। किछु किताब आवेशसँ शुरू सँ अन्त धरि पढ़ि कए प्रफुल्लताक (परितोषक) अनुभव करैत छी।

पोथी सभक उपेक्षा होइत अछि। मैथिली पोथीक उपेक्षा हम करैत छी। मैथिली भाषी लेखक आ कवि आ लेखक बंधु अपन पोथीक उपेक्षा करैत छी। से संयोगवश होइत अछि? की ई आकस्मिक अथवा संयोगवश होइत अछि? की हम नहि सकैत छी जे संस्कार-वश हमरा सभ पोथीक प्रति जे भावना रखने छी, तहिमे सुधार आ संशोधनक आवश्यकता अछि।

—— [signature]
28/12/2008

श्रीजीवकान्तजीक एहि पत्रमे व्यक्त विचारसँ

5 बिन्दु - सुमनजीक कविता आधुनिक वैज्ञानिक कहाबित : विरोध आ ओकरा उपेक्षित करैत (4)
– रहल तथा राष्ट्रीयता संसारकेँ युद्धमे ठेलैत अछि' पर हम सहमत नहि छी।

जीवकान्त 29-12-2008 पुरान बर्खक अन्तमे ई पत्र। पछिला सप्ताह मे हम
अहाँक बम्बै डाइरी पढ़ि बहुत प्रफुल्लताक अनुभव कएलहुँ। एहि पत्र कें हम कार्बन पर चढ़ा कए
लिखल, तें एक प्रति हमरा बचैत अछि। मूल प्रति अहाँकें पठाएब। पत्र सँ बेसी एक टिप्पणी-सन
वस्तु ई भए गेल अछि। कोनो पत्रिकामे पठएबाक मनोरथ सेहो होइत अछि। कतहु प्रकाशनार्थ पठाएब
एहि मे कोनो एकान्ती-सन अथवा वैयक्तिक कोनो प्रसंग नहि अछि जे जकरा तोपि देल जाय।
आशा करैत छी अहाँ स्वस्थ-प्रसन्न होएब।
हम एम्हर किछु पद्य-कथा लिखल अछि, जकरा पुस्तकाकार देब।
स्वास्थ्य एहेन अछि जे किछु पढ़ि दिन काटि सकी। बहुत दिन ई काया चलत, से सन्देह।
सेवामे
श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर, मिश्रटोला, दरभंगा

जीवकान्त 29-12-2008 पुरान बर्खक अन्तमे ई पत्र। पछिला सप्ताह मे हम अहाँक बम्बै डाइरी पढ़ि बहुत प्रफुल्लताक अनुभव कएलहुँ। एहि पत्रकेँ हम कार्बन पर चढ़ा कए लिखल, तेँ एक प्रति हमरा बचैत अछि। मूल प्रति अहाँकेँ पठाएब। पत्रसँ बेसी एक टिप्पणी-सन वस्तु ई भए गेल अछि। कोनो पत्रिकामे पठएबाक मनोरथ सेहो होइत अछि। कतहु प्रकाशनार्थ पठाएब। एहिमे कोनो एकानती-सन अथवा वैयक्तिक कोनो प्रसंग नहि अछि जकरा तोपि देल जाय। आशा करैत छी अहाँ स्वस्थ-प्रसन्न होएब।

हम एम्हर किछु पद्य-कथा लिखल अछि, जकरा पुस्तकाकार देब।

स्वास्थ्य एहेन अछि जे किछु पढ़ि दिन काटि सकी, बहुत दिन ई काया चलत, से सन्देह।

सेवामे

श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर, मिश्रटोला, दरभंगा

Scanned by CamScanner

पं. विनोदानन्द झा राजस्वमन्त्री रहथि । कमतौलमे सरकारी स्तर पर विकास सम्मेलन आयोजित रहैक । श्रोता वर्गक मनोरंजनार्थ ताहि समय कवि सम्मेलन सेहो आयोजित होइक । हमरा सभक विद्यापति गोष्ठी स्थापित भऽ गेल छल । कवि सम्मेलनक अध्यक्षताक हेतु गयासँ मोहनलाल महतो 'वियोगी' आमन्त्रित छलाह, उद्घाटन प्रो. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र कयने रहथि । दरभंगासँ पं. शंकर मिश्र सहित सात-आठ गोटे मंचमार कवि सभक संग हमहू रही । कवि सम्मेलनसँ घुरतीमे ताहि समय ट्रेनमे एकटा ड्यौढ़ा दर्जाक डिब्बा होइत छलैक । कनेक सर्वसाधारणसँ उच्च वर्गक लोक एहिमे यात्रा करय । वियोगी जी तथा प्रो. जगन्नाथप्रसाद मिश्रक रोचेँ हमरो सभक टिकट ओही डिब्बाक रहय । हमसब एक ठाम बैसलहुँ । कमतौलसँ गाड़ी ससरलैक तँ एकटा लुक्कड़ छौंड़ा गेट फोलि फानि कऽ चढ़ल आ गेट फोलनहिं, ठाढ़े रहि, सिगरेट लेसि, धूकय लागल । एमहर दसटा साहित्यकार एकठाम रहलासँ चुप्पी कोना रहि सकैत छलैक, तेँ वियोगीएजी आग्रह कयलथिन– तुमलोग नौजबान हो, क्या सब सोचते हो, क्या सब लिखते हो, कुछ कुछ सुनाते चलो । 'एक तँ राकस दोसर नोंतल' सब तँ नवतुरिए छलहुँ । नवतुरियाकेँ अपन नव रचना सुनयबाक हेतु मन पन्हायल रहैत छैक । ताहिपर एक सुप्रतिष्ठित वरिष्ठ लोकक आग्रह । श्रीकामेश्वरसिंह मस्त अपन कविता सुनबैत छलथिन । ओ छौंड़ा जे सिगरेट धूकैत छल से डिब्बामे धूआँ अबैत छलैक, ताहूमे सबसँ समीप हम छलहुँ तेँ सबसँ बेसी प्रभावित होइत छलहुँ आ हमरा बीड़ी-सिगरेटक धूआँसँ माथ घूमय लगैत अछि, तेँ कहलिऐक– जरा शिष्टाचार सीखो, ऐसे-ऐसे बुजुर्ग लोग बैठे हैं और तुम बेशर्म की तरह धूक रहे हो ।

ताहिपर ओ डबल सोंट मारलक आ गाल फुलाय मुँहकेँ घुमबैत गोलाकार बनाय धूआँ फेकलक । हमरा बुझाय गेल जे ई साधारण नहि, अड्डैल बूड़ि अछि । ओना गोल-गोल कऽ धूआँ देखि कहलिऐक वाह, वाह, तुम तो सधा हुआ कलाकार मालूम पड़ते हो । ताबत कविता पाठ तँ बन्दे भऽ गेल छलैक, सभक ध्यान एम्हरे आकृष्ट भऽ गेल रहनि । हमरा द्वारा कलाकार कहलापर ओ फेर एक सोंट खीचि मुँह घोंकचाय दूनू नाक बाटेँ धूआँ फेकलक । हम कहलिऐक क्या खूब ! अच्छा रेल इंजिन की तरह तो दिखा दिया, अब मोटरकार की तरह धूआँ निकाल कर दिखा दो तो तुम्हें इनाम भी मिलेगा । सब हमर कहबपर साकांक्ष भऽ सुनैत छलाहे, मोटरकार की तरह सुनि कऽ सब भभा कऽ हँसि उठलाह । वियोगीजी ठहक्का सुनि कऽ जिज्ञासु होइत पुछलथिन– क्या हुआ । शंकर बाबू फड़िछा कऽ कहलथिन, तखन जे वियोगीजीकेँ हँसी लगलनि से तोड़ खाइते ने रहनि । ताबत ट्रेन महमदपुर स्टेशन पहुँचि गेल, छौंड़ा कूदि कऽ पड़ायल । पुनः कविता पाठ आरम्भ भेल । दरभंगा समीप अयलैक तँ हम वियोगीजीसँ निवेदन कयलियनि– धृष्टता माफ हो, अब हमलोग दरभंगा पहुँच रहे हैं, श्रीमान सन्देश के रूप में कुछ सुना देने की कृपा करें । वियोगीजी कहलनि– अरे, मैं क्या सुनाऊँ ? मगर तुमने

Scanned by CamScanner

इतना हँसाया और ऐसा हँसाया कि कभी नहीं भुला पाऊंगा, तुम्हारा आग्रह कैसे टालूँ, सुनो–

देखा, परिचय, स्नेह, मिलन, फिर भोगी विरह व्यथा
मानव जीवन ! यही तुम्हारी करुणा भरी कथा

दू पाँतीमे सम्पूर्ण जीवनक सब तत्त्व कहि देलनि । किछु वर्षक बाद दलसिंहसरायमे हुनके अध्यक्षतामे भेल कवि सम्मेलनमे दर्शन भेल, जाहिमे रामजीवन शर्मा 'जीवन'सँ 'यह अजब जिला दरभंगा है' कविता पर छन्दोबद्ध उतराचौरी भेल छल । ओतय देखितहि चीन्हि गेल छलाह आ तखनहु कहलनि– कार की तरह धुआँ छोड़ो यह तुम्हारी बात आज भी याद है । ओहि उतराचौरीमे खूब रस लेने रहथि । ओ बहुचर्चित घटना अछि तेँ हम विशेष उल्लेख नहि करब ।

किछु विस्मयकारी घटना

आब सहसा विश्वास नहि करय योग्य, किन्तु जीवनमे घटित विस्मयकारी घटना सभक उल्लेख करैत छी । कहि चुकल छी जे रामेश्वरझाकेँ पौत्र जन्म लेलथिन तेँ परिवारमे उल्लासमय वातावरण छलनि । हमर द्विरागमन भऽ गेल छल । हमर मसिया सासु परिछनि करय चाहैत छलीह । फागुन मास, किछु-किछु जाड़ होइते छलैक । हमर टोल आ हुनक टोल मे 200 मीटरक दूरी, पूरा फाँक, टोल लग उपटैत एकटा गाछी, जाहिमे चारि-पाँचटा आमक गाछ आ गाछीक आड़ा पर पाङल एकटा जामुनक गाछ छलैक । आड़ा टपि गाछी दऽ बाट रहैक । परिछनि-तरिछनि, भोजन-भात होइत राति साढ़े दस बजेसँ अधिक भऽ रहल छलैक, इजोड़िया छलैक । हम बिदा भेलहुँ अपन टोल, गाछी टपि आड़ा पर अयलहुँ तँ एकाएक ओ जामुनक गाछ हड़हड़यलैक उज्जर सपेत कपड़ामे लेपटायल सन छओ-सात हाथक काया ओहि गाछ पर सँ उतरि हमरा दिस दौड़ल, हम अचेत भऽ आड़ा पर खसि पड़लहुँ । एगारह बजे धरि गाम पर नहि पहुँचलहुँ तँ बच्चा भाइ झिंगुराकेँ संग कऽ हमरा ताकय बिदा भेलाह । आड़ा पर हमरा अचेत खसल देखि घबड़ायल हमरा सम्हारिकऽ उठौलनि, देखैत छथि जे हम जे हॉफ स्वेटर पहिरने रही से सबसँ तऽरमे आ कुर्त्ताक ऊपरसँ गंजी पहिरल अछि । हमरा चेतना भेल तँ बुझायल सूति कऽ उठल होइ । देहक सब कपड़ा उनटल देखि गाम पर सब विस्मित रहि गेलाह । आशंकित चित्तेँ राति बीतल, प्रात भेलापर वामा बाँहिमे एकटा सिन्दूर आ दोसर काजरक रेखा देल देखल गेल । तकर बाद किछु दिन बाँहि कनकनाइत रहल, दू चारि दिनक बाद दूनू रेखापर दू टा फोंका बहरायल, हाथ बाँहि सुखाय लागल । दरभंगा आबि बहुत दवाइ कयलाक बाद ओ घाव छूटल, किन्तु बामा बाँहि कज्जी भऽ गेल से रहिए गेल । एकरा की कहबैक ?

Scanned by CamScanner

दोसर घटना अछि डॉ. श्रीनागेन्द्र चौधरीसँ सम्बद्ध । श्रीनागेन्द्र चौधरी पिण्डारुछक हमर छात्र, बहुत मधुरकण्ठ । स्कूलक सरस्वती पूजाक अवसरपर जे नाटक सभक निर्देशन करैत रही ताहिक्रममे बहुत गीत सिखौने रहियनि ताहिसँ अधिक निकटता रहय । पछाति ओ मेडिकल कालेजमे पढ़ि डाक्टर भेलाह । बेंतामे डेरा छलनि । एम्.एल्. एकेडमीमे एकटा क्राफ्ट टीचर रहथि मोहिनीमोहन बनर्जी, ओ तन्त्रसाधक रहथि । हुनकर एकटा बेटा मरि गेल रहनि जकर दाह संस्कार ओ अपन शाहगंज, लहेरियासराय स्थित आवासे पर कयलनि आ ओहि सारापर छोटसन मन्दिर सेहो बनौलनि । एक बेर हुनकर दोसर बेटा दु:खित पड़लनि तँ डॉ. श्रीनागेन्द्रसँ देखौलथिन । श्रीनागेन्द्र देखि कऽ दवाइक पुर्जी लिखि देलथिन आ एजेन्ट सब दवाइक नमूना दैत छैक से रहनि तँ किछु दवाइओ दऽ देलथिन । हिनकर गलती भेलनि जे ओहि दवाइक 'एक्सपायरी डेट' नहि देखि लेलथिन । रोगीकेँ ओ दवाइ खोऔलापर री-एक्शन कऽ गेलैक । मोहिनीबाबू ओकर बिगड़ल स्थिति देखि डॉ. दास गुप्ताक ओतय लऽ गेलथिन । दास गुप्ता कहलथिन दवाइ तँ ठीक लिखल छैक, मुदा री-एक्शन भऽ गेलैक अछि । मोहिनी बाबूकेँ क्रोध भऽ गेलनि । ओकरा प्रातेसँ श्रीनागेन्द्रक डेरा पर प्रेतक उपद्रव आरम्भ भऽ गेलनि । चारू कातसँ ईंटाक बड़का-बड़का रोड़ा बरिसय लगलनि । पुलिसमे शिकाइत कयलथिन, एस्.पी. चारिटा पुलिस मकानक चारूकात पहरा पर राखि देलथिन । रोड़ा तऽ बरसिते रहलनि संगहि बक्सा-पेटीमे राखल कपड़ा जरि कऽ छाउड़ भऽ जाइनि, पत्नी आलू पड़ोर काटि, तरकारी भूजि, पानि मसाला दऽ झाँपि देथिन, खदकला पर उघाड़थि तऽ छोट-छोट हवाइ चप्पल खदकैत भेटनि । आलमारीमे बुइयाम, शीशी सबमे चाहक पत्ती, चीनी, तेल, मसाला राखल रहनि, सब भीतरमे चनचना कऽ फूटि जाइनि ।

लोक कहलक तँ विश्वास नहि भेल । सत्यताक पता लगयबाक हेतु एक दिन हम पिण्डारुछेक एक पुरान छात्र इन्द्रनाथ झा 'इन्दु' आ जमाय डॉ. श्रीरामदेव झाक संग साँझमे श्रीनागेन्द्रक डेरापर पहुँचलहुँ । बीचमे टेबुल, चारूकात श्रीनागेन्द्रक संग हम सब बैसल छी आ बीच टेबुलपर धाँइ-धाँइ रोड़ा खसि रहल अछि । रैकपर राखल बुइयाम चनचना कऽ फूटि रहल अछि । प्रो. दामोदर झाक डेरापर एहने उपद्रव होइत छलनि से सूनल छल, ओहि दिन प्रत्यक्ष देखि रहल छलहुँ । सब वृत्तान्त सुनौलनि । पश्चात् सुनलहुँ जे मोहिनी बाबूसँ क्षमा याचना कयलथिन, ओ अपन पुत्रक सारा पर स्थित मन्दिरमे एक छागरक बलिदान देबय कहलथिन । से कयलापर सब उपद्रव शान्त भऽ गेलनि । एहन आँखिक देखल घटनासँ प्रेत योनिक अस्तित्व प्रभाणित भऽ गेल । एकरा की कहबैक ?

लोक कहैत छैक नजरि-गुजरि मनक भ्रम थिकैक । हम दू गोट घटनाक, जकरा नवतुरिया सब भोगल यथार्थ कहैत छथिन, उल्लेख करैत छी, जकर भुक्तभोगी छी । एक बेर प्रो. कृष्णकान्त मिश्र वैदेही समितिक दिससँ दिग्घी पोखरिपर स्थित कार्यालयमे कोनो

Scanned by CamScanner

विशेष आयोजन कयलनि । आदरणीय मित्र श्रीरामचरित्र पाण्डेय 'अणु'जीकेँ सम्मानित करबाक हेतु आमन्त्रित कयने रहथिन । कोनो विशेष कारणवश हम आमन्त्रित नहि रही । साँझमे कवि सम्मेलन छलैक, ताही काल पानि बिहाड़ि आबि गेलैक, जेनरेटर सेहो फेल भऽ गेलैक । अणुजी एक कोनमे सुटकल भरि राति बैसल रहि गेलाह, सम्मानकेँ के पूछय, अपमानो करबाक हेतु एको व्यक्ति दृष्टिगोचर नहि भेलनि । दोसर दिन भिनसर हमरा डेरापर अयलाह । हम संयोगवश सन्ध्यावन्दनक क्रममे गायत्रीजप करैत रही । हमर पिताजी सेहो एक टाङ पर ठाढ़ भऽ गायत्री जप करैत रहथि । मान्यता छैक जे एक टाङ पर 108 बेर जप कयलापर सहस्र जप करबाक फल प्राप्त होइत छैक । 1936 ई.मे उपनयन भेल रहय, तहिए सँ हमहू ओहिना जप करैत आबि रहल छलहुँ । अणुजी आबिकऽ चुपचाप बैसि रहलाह । वयस, विद्या, पद सबमे हमरासँ ज्येष्ठ-श्रेष्ठ छथि, हमर हितचिन्तक छथिहे, हमरो हृदयमे हुनका प्रति आदर भाव अछि । हमर अनिष्ट किएक सोचताह । किछु काल प्रतीक्षा करय पड़लनि तेँ मनमे संकोचो भेल । आसनसँ उठलहुँ तऽ नमस्कार पातीक बाद यैह पुछलनि– एतेक काल एक पैर पर कोना ठाढ़ भेल होइत अछि ? हमरा तँ आश्चर्य बुझायल । कहलियनि अभ्याससँ भऽ जाइत छैक, आब तँ ई अठावनम वर्ष पूरि रहल अछि । दुइए दिनक बादसँ ठेहुनक जोड़सँ आरम्भ कऽ शरीरक प्रत्येक जोड़मे दर्द शुरू भेल जे आब क्रमशः पंगु सन बनाय देलक अछि । एकरा की कहबैक ?

दोसर घटना दू-तीन वर्ष पूर्वक थीक । साहित्य अकादेमीक बैसक समाप्त कऽ दिल्लीसँ घुरैत छलहुँ । शारीरिक स्थितिक कारणेँ संगमे मैथिलीक उदीयमान कवि 'जगले रहबै' शीर्षक कवितासंग्रह जनिक नवोदय योजनाक अन्तर्गत साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित भेल छनि से श्रीदिलीपकुमारझा 'लूटन' छलाह । हम ट्रेनमे दूरक यात्रा पर जाइत छलहुँ तँ बाटमे पढ़बाक लेल मोटगर पोथी लऽ लैत छलहुँ । ओहि यात्रामे श्रीमन्त्रेश्वरझा प्रणीत 'कतेक डारि पर' लऽ गेल रही, समाप्त करबाक लक्ष्यसँ अनवरत पढ़ैत आबि रहल छलहुँ । ओही डिब्बामे चिकनाक 70-72 वर्षक बूढ़ आँखिक ऑपरेशन कराय अपन बेटाक दिल्लीक डेरापरसँ आबि रहल छलाह । ई कहि दी जे एहिसँ पहिने हमरो चश्मा लगबय पड़ैत छल, विगत 15-16 वर्षसँ प्रयोजन नहि रहि गेल छल । हमर पिताजीकेँ सेहो एहिना भेल छलनि । ओ बूढ़ा अनवरत हमरा पढ़ैत देखि श्रीलूटनकेँ पुछलथिन– 'ई बूढ़ा के थिकाह ? हमरोसँ बेसी बूढ़ छथि, तैयो बिनु चश्माक पढ़ि रहल छथि, एको बेर मूड़ी नहि उठैत छनि । श्रीलूटन हमर नाम कहलथिन तँ ओ चौंकैत बाजि उठलाह– औ, जे लिखने छथिन 'जे मकैक नेढ़ा तकैत छल से सब ऊँच मचान दैत अछि' ? श्रीलूटन कहलथिन– हँऽ । ओ सहटिकऽ हमरा लग आबि कहलनि– प्रणाम, अपनेक वयस कतेक अछि ? कहलियनि– विरासीम । अपनेकेँ चश्माक काज नहि पड़ैत अछि ? कहलियनि– 40 वर्ष धरि पहिने लगबय पड़ैत छल 14-15 वर्षसँ छूटि गेल । ओ दीर्घ

Scanned by CamScanner

नि:श्वास लैत कहलनि– हम अपनेसँ 10 वर्ष छोट छी, तैयो मोतियाबिन्दक आपरेशन कराय दू मासपर बेटाक लगसँ गाम जाय रहल छी । हम तऽ लगातार मूड़ी झुकौने पढ़ैत देखि छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ ।

पाँचे सात दिनक बाद आँखि झलफलाय लागल । लिखय-पढ़यमे बाधा पड़य लागल । मित्रमण्डलीमे बहुतो गोटे क्यौ दिल्ली, क्यौ चेन्नइ, क्यौ लहान जाय आँखि देखयबाक विचार देअय लगलाह । ओना एहि परोपट्टामे लहानक आँखिक अस्पतालक बहुत ख्याति छैक । संयोगवश लहान अस्पतालकेँ यश देयौनिहार विशिष्ट नेत्र चिकित्सक श्री जीतेन्द्र प्रसाद, लहेरियासराय, अलपट्टीमे अपन क्लिनिक चलबैत छथि, हम हुनके सँ देखौलहुँ । हम कोना चिन्हितियनि, डाक्टरे साहेब बड़े नाटकीय ढंगसँ कहियो हमर छात्र रहबाक रहस्योद्घाटन कयलनि तथा जाहि उदारता आ तत्परतासँ मोतियाबिन्दक ऑपरेशन कयलनि तकरा शब्द द्वारा व्यक्त करबामे अनेक पृष्ठ लागि जायत । आब कहू जे नजरि-गुजरिकेँ हम मौगियाही फूसि कोना मानि लियऽ ।

एहिना आस्था आ विश्वासक प्रसंग किछु घटनाक उल्लेख करैत छी । हमर बाल सखा वैदिक देवेन्द्रनाथ झासँ सम्बद्ध आँखिक देखल घटना अछि । हुनकर डेरा पर एक दिन पाँच बजे पहुँचलहुँ । आङनमे दू-अढ़ाय वर्षक हुनकर बेटी अड़राहटि मारि रहल छलनि, भाइ बाहर बरण्डा पर आँखि मुनने गम्भीर मुद्रामे दुर्गा-दुर्गा बाजि रहल छलाह आ आङनमे हुनक बहिन खौंझाइत किछु-किछु बाजि रहलि छलथिन । हम बरण्डासँ सटाकऽ साइकिलकेँ ठाढ़ कऽ जोरसँ घण्टी बजाय देलिऐक, भाइ चौंकैत आँखि फोललनि, बाजि उठलाह– अरे– भाइ ! आउ आउ बड़ बेर पर अयलहुँ । पुछलियनि– भीतरमे अना बहिन (अन्नपूर्णा) कथी लै लोहछि रहलि छथि ? की कहू भाइ, कल्याणी (बेटी) खेलाइत-खेलाइत एक मकै नाकमे ठूसि लेलक । ई दूनू ननदि आ भाउजि आङुरसँ बाहर करबाक प्रयासमे आरो भीतर ठेलि देलथिन । आब नाक फूलल जाय रहल छैक, तेँ कहैत छथि जे एकरा डाक्टर लग लए जाही । अहीं कहू भाइ, हम रौदायल विद्यालयसँ अयलहुँ अछि, बाह्य भूमि जायब, विजयाक बेर भए गेल, शिलान्यास करब आ कि एकरा लए कए डॉक्टर ओतए जाउ ? अहाँ जनैत छी भाइ हम चरफर लोक नहि छी, कतए, कोन डाक्टर लग जाइ सेहो ज्ञात नहि, तेँ आना बहिनकेँ कहलियनि घबड़ाह जुनि, सब दुर्गाकेँ भारा छनि, तेँ लोहछि कए बाजि रहल छथि, ता कनेक तमाकू खोआउ । हम, तमाकू चुनाबय लगलहुँ ।

हमर आबाजकेँ अकानि आना बहिन कल्याणीकेँ उठौने, अङनेसँ बजैत-हे, ले अपन बेटी, मरतौ तऽ तोरे बध लागतौ । हमरा ओकर फूलल नाक, कनैत-कनैत लेरपोटासँ भरल चेहरा देखबैत कहलनि देखियौ भाइ एहि छौंड़ीक हाल, आ एकरा कहैत छिऐक तऽ कहैत अछि दुर्गाकेँ भारा । एतबा कहैत ओकरा हमरे लग चौकी पर राखि देलथिन ।

Scanned by CamScanner

हम ताबत तमाकू चुनाय थपड़ी देलिऐक, ओकरा सुरसुरी लगलाक कारणेँ तेहन जबरदस्त छिक्का भेलैक जे छट् दऽ मकै नाकसँ बाहर चौकीपर खसि पड़लैक । भाइ हाक दैत कहलथिन– आना बहिन ! लए जाहक, हम कहैत छलियह दुर्गाकेँ भारा, तोरा सबकेँ विश्वासे नहि, मकै बाहर भए गेलैक । एकरा काकतालीय न्याय कहि टारि दियौक, किन्तु हम एकरा दृढ़ आस्थाक प्रतिफल मानैत छिऐक, अन्यथा हम ओही दिन, ओही समयमे किएक पहुँचि गेलहुँ, भाइ अपन डिब्बी नहि फोलि हमरे किएक तमाकू खोआबय कहलनि ?

दोसर घटना सूनू– हमर एकमात्र बालक श्रीशम्भुनाथ (मुन्नूजी) केँ बाल्य कालमे विचित्र रोग रहनि । भिनसरबा रातिमे एकाएक मूर्च्छा जकाँ भऽ जाइनि, मुँहसँ गाउज आ नाकसँ लच्छाक लच्छा बत्ती जकाँ कफ बहराय लगनि, ओकरा चुटकीसँ पकड़ि घिचने द्रौपदीक चीर जकाँ अन्ते ने होइक । खनका चौकसँ पच्छिम परेशबाबू नामक बंगाली डाक्टर रहथि, ओ हमरा लेल धन्वन्तरि रहथि । हुनके सँ चिकित्सा करबियनि । ओ सिक्वील नामक टेवलेट देथिन ताहिसँ ठीक भऽ जाइनि ।

बाबाधाममे मुण्डन कबुला रहनि । समयपर बाबाधाम बिदा भेलहुँ । स्टेशन पर जाय मन पड़ल जे सिक्वील नहि लेलहुँ । फेर मनकेँ ई कहि आश्वस्त कयल जे जखन बैद्यनाथक शरणमे जाइत छी तँ बैद्यक चिन्ता नहि करबाक चाही । मेला ठेलाक समयकेँ बारिए कऽ गेल रही । बाबा धाममे एक हिन्दीक कवि, पूर्व मुख्यमंत्री पण्डित विनोदानन्द झाक पिसियौत सत्यनारायण नरौने हमर मित्र रहथि ओ शिवगंगा आ बाबाक मन्दिरक बीचमे एक जन-शून्य धर्मशालामे आवासक व्यवस्था कऽ देने रहथि । हुनका श्रोताक अभाव रहनि, हम जखन जाइ तँ धैर्यपूर्वक हुनकर कविता सुनियनि, तेँ जतेक दिन रही ओ हमर अनुव्रजनमे रहथि । पहिने चाह पीबिकऽ हाथ धोयबाक अभ्यास हमरो नहि रहय, ओ महाशय हमरासँ हाथ धोय लेबाक शपथ करौलनि ।

दैव दुर्योगवश ओहू राति 3 बजे करीबमे श्रीमुन्नूजीकेँ रोगक आक्रमण भऽ गेलनि । पत्नी माथ कपार पीटय लगलीह । बिजली नहि रहैक, मोमबत्ती लेसलहुँ । पत्नी कहथि कतहुसँ दवाइ उपर करू । अपरिचित स्थान, निसभेर भेल सूतल नगर, दवाइक दोकानक पता के कहत । ओह, आब बैद्यनाथक जे इच्छा होयतनि, चिन्ताक्रान्त चित्त किं कर्त्तव्य विमूढ़ बनाय देलक ताबत बाहरसँ क्यौ केबाड़क जिंजीरकेँ झनझनौलक । भितरेसँ के, कहैत केबाड़ फोलय बहरयलहुँ ताबत आवाज आयल हम्मे नरौने छिकौँ । चिन्ताक ज्वालापर जेना क्यौ घैल भरि पानि उझीलि देलक । आतुर होइत कहलियनि– बच्चाक हाल देखहक । देखि कऽ घबड़ाय गेलाह । कहलियनि हमरा सिक्वील नामक दवाइ चाही । नरौनेजी तीर जकाँ ओहिठामसँ छुटलाह, पहिने टाबर पर गेलाह, सब दोकान बन्द, ओतयसँ विलासी टाउन जाय, दोकानदारकेँ उठाय, टाबर पर आबि, दवाइ लऽ चारि बजे

Scanned by CamScanner

घुरलाह । टेबलेट खयलाक बाद ज्वर भऽ जाइत छलनि से भऽ गेलनि । प्राते मुण्डनक दिन छलनि, ज्वर रहिते मुण्डन कराबय पड़ल । एहि तरहेँ आकस्मिक संयोग कोना लागि गेल ? हमर आस्था विश्वासकेँ दृढ़ कयलक जे बाबा बैद्यनाथे ओहि तीन बजे रातिमे हमर सहायताक हेतु नरौनेकेँ पठाय देलनि ।

हिनकेसँ सम्बद्ध घटना थीक । श्री मुन्नूजीक रोग निवारणार्थ की की नहि कयलहुँ, कतय-कतय नहि छिछिअयलहुँ, बाबाधाममे एकटा पण्डा कहलनि सोन धिपा कऽ ललाटपर जतय ठोप करैत छी ताहि ठाम दागि देबनि । दरभंगा आबि सेहो टोटमा कयलियनि । ओहि कालक हिनक चीत्कार बिसरल नहि अछि । दरभंगा अस्पतालमे 9 दिन भर्त्ती कऽ रखलियनि कोनो लाभ नहि भेलनि । प्रसंगतः मानव सेवामे समर्पित चिकित्सक लोकनिमे आन्तरिक ईर्ष्या केहन रहैत छनि तकरो अनुभव ओही क्रममे भेल । बच्चा वार्डमे भर्ती रहथि । ओहि वार्डक इंचार्ज रहथि डॉ. दासगुप्ता, हिनको कन्याकेँ ट्यूशन पढ़बैत रहियनि, किन्तु श्रीमुन्नूजी डॉ. ओम् जायसवालक वार्डमे रहथि, हिनको कन्या एम्.एल्. एकेडमीक छात्रा रहथिन ।

एक दिन दासगुप्ता निरीक्षणमे अयलाह । हमरा देखि पूछि देलनि– पण्डितजी, आप ? कहलियनि मेरा बच्चा भर्ती है । ओ हिनक बेड लग अयलाह, दवाइक पुर्जा आ चार्ट सब देखि कहलनि ट्रीटमेंट ठीक चल रहा है । साँझमे डॉ. जायसवाल अयलाह तँ प्रायः हुनका डॉ. दासगुप्ताकेँ आबि एहि बच्चाकेँ देखबाक सूचना नर्स दऽ देलकनि । ओ हमरा बजबाय कहलनि आप अपने बच्चे को ले जाइए । हम पुछलियनि ठीक हो गया ? उत्तर देलनि आपको मुझपर विश्वास ही नहीं है तो मैं कैसे कह दूँ कि ठीक हो गया या नहीं ? हम पुछलियनि किसने आपको कह दिया कि मुझे आप पर विश्वास नहीं है ? कहेगा कौन ? अगर आपको विश्वास होता तो डॉ. दासगुप्ता को क्यों बुलाते ? तखने हमर पूर्व छात्र डॉ.श्रीकृष्णानन्द झा, जे हुनक संग हाउस सर्जनशिप कऽ रहल छलाह, पहुँचि गेलाह । हम डॉ. जायसवालकेँ कहलियनि– मैंने बुलाया नहीं था । जैसे आपकी लड़की मेरे स्कूल की छात्रा है उसी तरह उनकी लड़की भी मेरी छात्रा है । मैं उसे ट्यूशन पढ़ाता हूँ इसलिए उनसे मेरा घनिष्ठ परिचय है । वे खुद राउण्ड में आये थे, मुझे देख कर पूछ बैठे– आप ? तब मैंने अपना हाल बताया और वे आकर बच्चे के कागजात देखकर चले गये । मुझसे उन्होंने इतना ही कहा कि ट्रीटमेंट ठीक चल रहा है । तखन कहलनि अच्छा, आप एम्.एल्. एकेडमी में शिक्षक हैं ? श्रीकृष्णानन्द बाहर आबि कहलनि– डॉक्टर लोकनिकेँ भीतरसँ एक दोसरासँ बड़ ईष्या रहैत छनि । मनहिमन भेल जे ई लोकनि मानवताक सेवाक स्वांग मात्र करैत छथि । हमरा ओहूसँ कोनो लाभ नहि भेल ।

तकर बाद क्यौ कहलनि जे क्यौटीमे एकटा क्रान्तिकारी खुदीराम बोसक सहकर्मी आ स्वतन्त्रता सेनानी सूर्यनारायण झा छथि ओ तान्त्रिक सेहो छथि । सुनैत छी

Scanned by CamScanner

नि:स्वार्थ समाज-सेवामे हुनका बहुत सुयश छनि । कोनो शनि अथवा मंगल दिन बच्चाकेँ लऽ जइयौन । आर्त्त व्यक्तिकेँ जेहन होइत छैक, हम श्रीमुन्नूजीकेँ लऽ गेलियनि । देखलिऐक एक विशुद्ध देहाती खद्धड़क मैल सन धोती, कोकटी कपड़ाक गोलगला गंजी पहिरने दलानक चौकी पर बैसल एक व्यक्ति, हुनका लगसँ एक पंक्तिमे ठाढ़ कच्चे बच्चे सहित गोटेक सय व्यक्ति । एक गोटे कहलक एही पंक्तिमे पाछाँ जाकऽ लागि जाउ । हम पाँतीमे ठाढ़े भेल होयब ता एक व्यक्ति आबि कहलक अहाँकेँ बजबैत छथि । गेलहुँ, ओ हमरासँ बिनु किछु पुछनहि बकय लगलाह– अहाँ दरभंगासँ अयलहुँ अछि, एहि बच्चाकेँ मूर्च्छा जकाँ भऽ जाइत छैक, डॉक्टर वैद्यसँ औषधि कराय थाकि गेल छी, कोनो चिन्ताक काज नहि । बदामी रंगक कागतमे कोनो चूर्ण छलनि, कागत मचोड़ल सन छलैक, ओकर कोन परसँ गोटेक इंच नाम-चाकर टुकरी फाड़ि, कानपर राखल पेन्सिलसँ ओहिपर एकेबेर हाथ घुमाय किछु लिखि, ओकरा मोड़िकऽ हमरा हाथमे धरबैत कहलनि– लोहाक तऽब केँ खूब धीपय देबैक तकर बाद कमसँ कम चारू कात एक-एक गोटे बैसि ध्यानसँ तकैत एहि कागतकेँ ओहिपर धऽ देबैक । एकर तीन टा स्थिति भऽ सकैत छैक, पहिल ई जे ई कागत लुप्त भऽ जाय, दोसर जरि जाय, तेसर तऽब पर कूदैत रहय । आठ-दस बेर कूदि जाय तथापि ने लुप्त हो ने जरय तखन तामकेर एकटा यन्त्र दैत कहलनि एहिमे दऽ कऽ मुँहकेँ लाहसँ भरि, कारी तागमे गाँथि, गर्दनिमे पहिराय देबनि, जाहिसँ छातीपर लटकैत रहनि, जहिया कहियो टूटि कऽ खसि पड़नि ओकरा तकबाक प्रयोजन नहि । पुछलियनि एकर दक्षिणा ? जीह कूचैत बजलाह– चर्चो नहि करबाक थीक । जँ लुप्त भऽ जाय अथवा जरि जाय तँ पुनः भेट करी । लोक सब कहलक ककरोसँ एको पाइ छूबैत नहि छथिन ।

डेरापर आबि हुनका निर्देशानुसार प्रक्रिया कयल । नहि पूछू, ओ कागत बीत-बीत भरि ओहि पर कूदय जेना कोनो सजीव फतिंगा हो । अन्तमे यन्त्रमे दऽ पहिराय देलियनि । ताहि दिनसँ पलटि पुनः कहियो नहि भेलनि । ओहिना किछु दिनक बाद खसिओ पड़लनि । गोटेक वर्षक बाद अपने सूर्यनारायण झा हमरा डेरा पर अयलाह । आह्लादित होइत उठि कऽ कहलियनि आयल जाओ, बैसल जाओ । उनटे पैरेँ घुरैत कहलनि हमरा जँ बैसबाक होयत तँ हम स्वयं बैसि जायब, बैसबाक हेतु हमरा कहियो नहि कहल जाय, हमरा संग अदृश्य कतेको गोटे और रहैत छथि । एतबा कहि आपस चल गेलाह । आब कहू, भुक्तभोगी हम कोना अविश्वास करी ?

आब एक रोमांचक घटनाक उल्लेख करैत छी । माय मरि गेलि रहथि । चपाहीमे हमर सबसँ छोटि मौसी रहथि ओ बहुत जोर दु:खित पड़ि गेलीह । एकबेर भेट कऽ जाय लेल समाद देलनि । कहबी छैक 'मरय माय, जीबथु मौसी' सब वर्ष गर्मी छुट्टीमे आम खयबाक लेल दू-चारि दिन चपाही जाय रहबे करी । ओहि वर्ष कोनो कारण

Scanned by CamScanner

विशेषें नहि जाय भेल रहय । गर्मी छुट्टीक बादस्कूल फूजि गेल रहय । संयोगवशे अर्द्धवार्षिक परीक्षाफल पहिने नहि प्रकाशित भऽ सकल छलैक, तकर तैयारी चलि रहल छलैक । अपना विषयक एक मात्र शिक्षक हमही रही, तें उत्तर पुस्तिका सेहो सब वर्गक मिलाय गोटेक हजारभऽ जाय । वर्ग शिक्षक रहबाक कारणें अपना वर्गक रिजल्ट सीट सेहो तैयार करय पड़य, मार्क्ससीट भरय पड़य । समाद भेटलाक बाद पहिल शनि एहीमे बाझि गेल, नहि जाय सकलहुँ । अगिला शनि दिन पंचमी रहैक । पंचमी शनि मृत्यु योग होइत छैक । जयनगर जाय वाली गाड़ीक समय अढ़ाय बजे रहैक, जखन अधपहरा रहैत छैक । सबटा दुर्योगे, एमहर समाद भेटना 10-12 दिन भऽ गेल छल । मनमे भेल मौसी की कहैत होयतीह । डाकक वचन छनि–

रविकें पान, सोमकें दर्पण, मंगलकें किछु धनियाँ चर्वण
बुधकें गूड़, वृहस्पति राइ, शुक्र कहय जे दही सोहाइ
शनिक दिन कह अदरख भाव, सकल काज सिद्ध कर आब
ने लागय भदवा ने दिक् शूल, कहय डाक सब तूलम तूल

पत्नीकें पुछलियनि– आद अछि ? हो तँ एक टुकरी दियऽ । एक टुकरी आद खाय, मनकें मनाय बिदा भऽ गेलहुँ ।

राजनगरसँ चपाही 8-9 कीलोमीटर होयतैक । ट्रेन आध घंटा विलम्बसँ पहुँचौलक । झटकैत बिदा भेलहुँ, बकुआड़ गाम पार कऽ एकटा पैघ सन कलम बाग छैक जाहिमे ओहि दिन खट्टिक सब झाड़ि-झूड़ि सब आम तोड़ि बाँसक खुंझामे भरि रहल छल। कलमक बीचोबीच कोना-कोनी एकपेड़िया छलैक, आड़ा पार कऽ कलम बागक पुबरिया उतरवरिया कोनपर आड़ाक समीप पहुँचलहुँ, सूर्य अस्ताचल पहुँचि रहल छलाह, पच्छिम आकाश सिनुराय गेल छलैक । आड़ासँ गोटेक लगा दूरेसँ मूड़ी उठाय आगाँ तकलहुँ, मन सन्न भऽ गेल, एक जोआयल सुच्चा गहुमन छत्र काढ़ने जेना सूर्योपस्थान कऽ रहल छल । कंठक खेप सुखा गेल । सहसा मनमे भेल शनि दिग्विरोध, पंचमी मृत्युयोग, दू बजे दिनमे यात्राक समय अधपहरा, डाकक कहल आद एतेककें नहि काटि सकैत, साक्षात् मृत्यु हमरा एतय लऽ अनलक । स्तब्ध भेल ठमकल ठाढ़ रहलहुँ । ओ भुजंगराज काढ़ल छत्र मूड़ीकें बाम-दहिन घुमौलनि । हमर घरक गोसाउनि पंचभगिनी त्रिपुर सुन्दरी दक्षिणकालिकाक संग शीतला ओ विषहराक नित्य पूजा होइत छनि । मृत्युक भयसँ धार्मिक आस्था मनमे जागि गेल, मनहि मन बजलहुँ हेनागराज, हमर घरमे नागपंचमीक दिन अहाँक विशेष पूजा होइत अछि, हमर कुलक लोक अहाँक जातिपर हाथ नहि उठबैत अछि, हम अहाँक किछु नहि बिगाड़लहुँ अछि । दू सँ तीन मिनट ई स्थिति रहल होयत । ओ गहुमन तीनू दिस मूड़ी घुमबैत लगेमे उतरबरिया आड़ामे एक बीहरि रहैक ताहिमे पैसि गेल । तकर बाद हमरा तड़ तड़ घाम छूटय लागल आड़ा पार कऽ एकटा झमटगर संयुक्त बड़ पीपरक गाछ

Scanned by CamScanner

रहैक, पैर थरथराइत छल, लुद्द दऽ ओहि तर जाय बैसि गेलहुँ से बैसलमे झलफल साँझ भऽ गेल। बाट डेढ़ कीलोमीटर बाँकी छल, फेर साहस कऽ झटकारैत बिदा भऽ गेलहुँ।

और किछु घटनाक विवरण दैत छी। 1962 ई.मे 8 गोट ग्रह एक केन्द्रमे एकत्र भऽ रहल छथि। एहि समाचारसँ समाजमे आतंक पसरल छलैक। गाम गाममे अष्टयाम, लाखक लाख महादेवक पूजा, शतचण्डी-सहस्रचण्डी यज्ञ, जकरा जेहन फुरयलैक तेहन धार्मिक अनुष्ठानक आयोजन करैत रहल। डरहार शहरक कात सटल गाम रहलाक कारणेँ कनेक बेसीए जागरूक। ध्यातव्य जे मैथिल महासभाक विशाल अधिवेशन एहि गामक उत्साही लोक अपना गाममे आयोजित कयने रहथि जाहिमे राघोपुर ड्योढ़ीक बाबू कृष्णनन्दन सिंह हमर युगचक्र पुस्तिका सबटा प्रति कीनि वितरित कयने रहथि। एहि गाममे हमर छात्रक ओ मित्रक प्रचुर संख्या। मिश्रटोलामे अपन आवास बनयबाक क्रममे उल्लेख कऽ चुकल छी। एहने एक हितचिन्तक मित्र पं. शोभाकान्त मिश्र, जे ताहि समय पहिने कुशोधरि हाइ स्कूलमे हेड पण्डित रहथि। ओहि स्कूलकेँ जे शिक्षा विभागक स्वीकृति भेटलैक से ताहि समय शिक्षा विभागक एस्.डी.ओ. शिवशंकर कुमार रहथि, ओ साहित्यकार छलाह, हुनकर एक हिन्दीमे 'शक और हकीकत' नामक उपन्यास छपलनि, जाहिमे बहुत सहयोग कयने छलियनि, हमरासँ 'दू अक्षर' परिचय सेहो लिखबौने रहथि। ओ कुशोथरि इन्सपेक्शनमे हमरो संग लऽ गेल रहथि। पं. शोभाकान्तमिश्र छात्रावस्थामे संगी नहि रहथि, किन्तु ओहि दिनसँ घनिष्ठता बढ़ैत गेल। डरहारमे सहस्र चण्डी यज्ञ ठनैत गेलाह। हिनके दुराग्रहसँ हमरो ओहिमे सम्मिलित होअय पड़ल। दिनमे अनुष्ठानी लोकनिकेँ फलाहार होइनि। नवम दिन विचार भेलैक जे आइ गायक दूधमे साबूदानाक तस्मै बनय। से सूर-सार होइत देखि यज्ञ स्थलक जे टहलू रहय से कहलकैक- हऽहऽ, आइ बुझाइयऽ पण्डित आउर के बोखार उतरलनि, ताही से सबुरदाना के पत्थ पड़तनि। विनोदार्थ एकर उल्लेख कयल, संगहि अनुष्ठान सेहो कयने छी से अपने सबकेँ ज्ञात हो।

ओहि नओ दिनक साहचर्यमे शोभा बाबूसँ घनिष्ठता बढ़ि गेल एमहर हमरा स्कूलमे दिनानुदिन छात्रक संख्या बढ़ैत गेलैक, तेँ वर्गक संख्या बढ़लासँ संस्कृतक एक शिक्षकक प्रयोजन भेलैक। हम जहिया महेश शर्माक अनुशंसा एहि आशासँ कयने रहियनि जे तीन गोटे आचार्य भऽ जायब तकर प्रतिफल ई भेल जे ओ कट्टर विरोधी भऽ हमर प्रतिस्पर्द्धी बनि गेलाह। शोभाबाबू ग्राम्य क्षेत्रसँ नगरीय परिवेशमे आबय चाहैत छलाह। हम झिंगुर बाबूकेँ अनुकूल कयल, ई एम्.एल्. एकेडमीमे आबि गेलाह। मध्य विश्रामक अवधिमे किछु गोटेकेँ छोड़ि सब शिक्षक अपन अपन गुट मिलि चाह-पान हेतु बहराइ। हम तीनू आचार्य एक संग जाइ।

एक दिन एही अवधिमे एक व्यक्ति हमर पुछारि करैत स्कूलमे पहुँचलाह। हम नहि चिन्हलियनि। ओ बहुत आत्मीयताक संग हमर परिवार, संस्कृत विद्यालयक

Scanned by CamScanner

पुरान–पुरान छात्र सभक जिज्ञासा करय लगलाह । सब गोटे चाह पीबि पानक दोकानपर अयलहुँ । मस्तिष्क पर कतबो जोर देलहुँ, मुदा ई के थिकाह से ध्यानमे नहि आयल । हम एहि ताकमे रही जे गप्प–सप्पक क्रममे कोनो सूत्र भेटि जाय, मुदा से नहि भेटल । एतेक आत्मीयताक संग गप्प कयनिहारसँ परिचय पुछबामे संकोच भेल । अयबाक प्रयोजन पुछलियनि तँ कहलनि– हम सब जहिया रमेश्वरलतामे पढ़ैत रही ताहि समय अहाँक चंचलता आ गतिविधि देखि निराश रही, होअय जे बूढ़ागुरु जीक प्रतिष्ठाकेँ अहाँ नहि बजाय सकबनि । मुदा अखबारमे यदा–कदा नाम देखैत रहैत छी, तेँ भेटक उत्कण्ठा भेल । एतबा कहैत ओ एकटा औंठी ई कहैत देलनि जे ई धारण कयने रहब तँ लक्ष्मीक कृपा सदा बनल रहत, दरिद्राकेँ अहाँक दिस नजरि उठयबाक साहस नहि होयतैक ।

हमरा मनमे ई पाप उत्पन्न भेल जे एही माध्यमसँ किछु झीटि लेबाक उद्देश्य होयतनि । हम पुछलियनि– एकर दक्षिणा ? कहलनि– एक लाख । हम विहुँसैत कहलियनि– लाख तऽ हम सब पेन्सिलिन सूइमे सुनैत छिऐक । ध्यातव्य जे प्राइवेट स्कूलमे प्रबन्ध समिति वेतनमे वार्षिक मात्र दू टाकाक बृद्धि करैक । महगी भत्ता लगाय 80 वा 82 टाका वेतन छल होयत । ओ कहलनि ई धारण कऽ लिअऽ, जहिया अपनासँ एक लाख फाजिल भऽ जाय हमरा पठाय देब । ताहि कालमे ई नहि फूरल जे कहियनि– अपन पता लिखाय दिअऽ, घंटी बाजि गेल । झिंगुर बाबूक तेहन कठोर अनुशासन रहनि जे हड़बड़ायल हमहू कक्षा दिस बढ़ि गेलहुँ, ओहो बिनु कोनो औपचारिकता कयने चल गेलाह । किन्तु परिवारक पालन, सामाजिक तथा कौटुम्बिक औचित्यक पालनमे जे कठिनताक अनुभव होइत छल से औंठी धारण कयलाक बाद क्रमशः दूर होइत गेल, मुदा औंठी देनिहारक परिचय आइ धरि नहि मन पड़ल ।

एहने एक दोसर घटना अछि । श्रीमती अम्बिकामिश्र सहरसासँ 'कोसी–कुसुम' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित करय लगलीह तँ ओकर लोकार्पण हेतु हमरा आमन्त्रित कयलनि । आचार्य सुमन सन पत्रकारक अछैत हमरा ई भार अनुचित लागल । अनुमान कयल जे हमर 'पत्रकारिताक इतिहास'केँ साहित्य अकादेमी पुरस्कृत कयने छल । प्रायः एही उपलब्धिकेँ प्रतिष्ठा देबाक हेतु एहन विचार भेल होयतनि । अस्तु ।

ओहि समय जानकी एक्सप्रेस सरहसा जाइत छलैक, ओहीमे आरक्षण छल । दरभंगा बड़ी लाइन नहि आयल रहैक । झाझाक एक सेवा निवृत्त ज्यौतिषी कोनो काजेँ संस्कृत विश्वविद्यालय आयल रहथि, हुनका समस्तीपुर धरि एहि गाड़ीसँ जयबाक छलनि । गाड़ी 1 नंबर लगतैक से उद्घोषणा भेल छलैक । हम प्रतीक्षामे बैसल रही । मैथिल संस्कृत पण्डितक परिधानमे हमरा देखि ओ बृद्ध सहटि कऽ अयलाह, कतय जायब से जिज्ञासा कऽ अपन व्यग्रता सेहो कहलनि । प्लेटफार्म पर अपार भीड़ रहैक । कहलनि एहि रेड़ामे हम कोना चढ़ि सकब । हम आश्वस्त कयलियनि जे अपनेकेँ

समस्तीएपुर धरि जयबाक अछि, हमरा आरक्षण अछि, हमरे संग ओही डिब्बामे चलब । ट्रेन अयबासँ 5 मिनट पहिने उद्घोषणा भेलैक गाड़ी 3 नंबरपर लागत । घोषणा होइत देरी हुर्र-बड़ेरा मचि गेलैक । यात्रामे जतबा अपने उठाय सकी ततबे समान लऽ चलबाक अभ्यासी रहलहुँ अछि । हम जहाँ उठलहुँ कि बूढ़ा ज्योतिषीजी हमर पीठ दिस लटकैत तौनीक छोर पकड़ैत कहलनि– औ पण्डितजी, एहि बुढ़बाकेँ छोड़ि नहि देबैक । पुल पार करबाक रहय । आब ओहि वयसमे अयलहुँ अछि, तखन हुनकर मानसिक स्थितिक अनुभव भऽ रहल अछि । ओहि पार जाय गाड़ीमे बैसलहुँ । दोसर कात जयनगरेसँ एक मारबाड़ी दम्पती आबि रहल छलाह ।

एहि ठाम पुनः एकटा क्षेपक कहैत छी । जयनगरमे हमर हिन्दीक कवि आ सहृदय साहित्यकार मित्र रहथि **महावीर प्रसाद मस्करा**, मित्रता केहन पुरान छल से एहिसँ बूझू, 1957–59 हम जे मैथिली साहित्य परिषदक महामन्त्री रही तँ ओहि कार्य समितिक सदस्य मस्करा जी सेहो छलाह । मारवाड़ी होइतो खाँटी मैथिली बजैत छलाह । असल समाज सेवी, जयनगरक 'ज्योत्स्ना मंडल' हिनके देन थिकनि । ई वर्षमे दू गोट कवि सम्मेलन करैत छलाह । कौमुदी महोत्सव आ सरस्वती पूजा, एकमे तँ निश्चिते, दूनूमे सेहो अधिक काल जाइ । एहन कविता प्रेमी श्रोता विरले भेटलाह अछि, तेँ बेस झमटगर जुटान होइक । एहि कारणेँ उक्त दम्पती हमरा चिन्हैत छलाह । आह्लादित भऽ हमरा पुछलनि– कहाँ, कोनो कवि सम्मेलनमे ?

हमरा उत्तर देबासँ पहिने बूढ़ा ज्यौतिषी कहि बैसलथिन अहाँ दूनू प्राणी पुत्र-प्राप्ति कामनासँ बाबा धाम जाय रहल छी ने ? ओ तऽ चकित भेबे कयलाह, हमहू विस्मित भेलहुँ । ज्यौतिषीजी हुनक अतीतक विषयमे कहने जाथिन, हुनका मिलल जाइनि तेँ आरो चकित भऽ गेलाह । अन्तमे ज्यौतिषीजी हुनका कहलथिन अहाँ गोमेद धारण कऽ लिअऽ, कोनो पैघ सोनारक दोकानमे भेटि जायत । ओ कहलथिन– हम गोमेद नहि चिन्हैत छिऐक, सोनार जँ ठकि लेअय ? ताहि पर कहलथिन गोमेद कोनो पन्ना-पोखराज नहि थिकैक जे हजार बजार दाम होयतैक 15–20 रुपैयामे कतेक ठकत ? ओना लोहक औंठीमे हमरो लग अछि, स्वेच्छासँ एकरा चानीमे सेहो मढ़बाय सकैत छी । ओ दूनू प्राणी 30/ रुपैयामे दू टा कीनि लेलनि ।

तकर बाद हमरा दिस उन्मुख होइत कहलनि ई अपनहु धारण कऽ ली तँ श्रेयस्करे होयत । हम कहलियनि एकटा हमरो दऽ देल जाय । ताहि पर कहलनि अपने यात्रामे छी आ अपनेक जेबीमे मात्र छत्तीसेटा टाका अछि, यद्यपि जतय जाय रहल छी ततय किछु अर्थलाभ होयबे करत । हम चलबासँ पूर्व एकटा 50/ टाकाक नोट बाहर कऽ ओछाओनपर रखलहुँ जे कुर्त्ता पहिरब तखन मनीबैगमे राखि लेब, किन्तु से बिसरि गेल । हमरा जेबीमे मात्र छत्तीसे टाका किएक होयत ? तेँ हम मनीबैग बाहर कयल, ठीके ओतबे

Scanned by CamScanner

छल, तखन मन पड़ल जे पचसटकही तँ गेड़ुए तर छूटि गेल । हमरा अपनो मनीबैगक पाइ गनल नहि छल, ओ बूढ़ा कोना बूझि गेलाह ? औंठी हमहू किनलहुँ, दू टा दसटकही देलियनि, ओ एकटा घुरबैत कहलनि अपने बड़ उपकार कयल, तेँ लागत मूल्य 12/रु. छैक, दू टामे हमरा 6/ रु. लाभ भेटि गेल अछि, हम बूझब जे चारिएटाका लाभ भेल, हानि नहि अछि । भेलैक ने विस्मयजनक बात ?

आब किछु सामाजिक स्थितिक चर्चा करैत छी । भऽ सकैछ तथाकथित प्रगतिवादी विचार रखनिहार एहिसँ हमरा मनुवादी, यथास्थितिवादी, संकीर्ण मनोवृत्तिक, पिछड़ल, पछुआयल आदि विशेषणसँ विभूषित करैत अपनाकेँ गौरवान्वित बूझथि । तथापि हम प्रश्न करब जे स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्व तथा प्राप्तिक पछाति सामाजिक समरसतामे विकास भेल अछि अथवा ह्रास ? सामाजिक संगठनमे दृढ़ता आयल अछि वा दड़ारि पड़ल अछि ? पारस्परिक सौमनस्यमे बृद्धि भेल अछि वा वैमनस्यमे ? महात्मा गान्धी द्वारा स्वतन्त्रता संग्रामक समय निर्दिष्ट नीतिक अनुकूल व्यवस्था लागू अछि वा प्रतिकूल ? सामन्तवादी मानसिकताक अन्त भऽ गेल वा विस्तार ? भौतिकवादी प्रवृत्ति बढ़ल अछि वा अध्यात्मवादी ?

हमरा दृष्टिमे सब प्रश्न, उत्तर नकारात्मके अछि । भारत माता ग्रामवासिनी छथि से मान्यता छल । आइ गाम उजड़ि रहल अछि । अधम चाकरी मानल जाइत छल, सम्प्रति चाकरीक स्थान समाजमे शीर्ष पर अछि । दस बीघा खेत जोतनिहार गृहस्थक घरमे लोक अपन बेटीक विवाह करयबामे हिचकिचाइत अछि, किन्तु चतुर्थवर्गीयो सरकारी नौकरी पाबि गेल वरक मूल्य लाखकेँ टपि गेल अछि । पिता-पुत्रमे, पति-पत्नीमे, सेहोदर-सहोदरमे पारस्परिक विश्वासक बीज सड़ि-गलि गेल अछि, तखन पड़ोसी वा परार पर विश्वास कोना रहत ? भौतिक सुख-सुविधा प्राप्तकरबाक हेतु लोक मनुष्यताक परित्याग कऽ पशुक प्रवृत्ति दिस अग्रसर भऽ रहल अछि । स्वार्थ सबदिनसँ रहलैक अछि, परन्तु आइ मनुक्ख स्वार्थान्ध भऽ गेल अछि । अनकर उन्नति देखि द्वेषक आगिमे जरनिहार पहिनहु छल, परन्तु संख्या अत्यल्प छलैक, आब अनकर उन्नति देखि आनन्दित भेनिहारक संख्या शून्य प्राय अछि । दू व्यक्ति, दू वर्गक मध्य द्वेषक आगि पजारि अपन स्वार्थ सिद्ध कयनिहारक संख्या शुक्लपक्षक चन्द्रमा जकाँ बर्द्धमान अछि तथा दू व्यक्तिक मध्य उत्पन्न द्वेष भावकेँ दूर कयनिहारक संख्या कृष्णपक्षक चन्द्रमा जकाँ क्षीण होइत त्रयोदशी-चतुर्दशी तिथि पर पहुँचि गेल अछि ।

पहिने गामक मर्यादाकेँ ध्यानमे गरीबसँ गरीब व्यक्तिक ओतय काज-करतेबता (कर्त्तव्यता) उपस्थित भेलापर सम्पूर्ण समाज यथाविभव सहायताक हेतु उद्यत रहैत छल । हमरा प्रतीत होइछ जे चुमाओन, सोहाग, मुँह देखाओन आदि व्यवहार तकरे प्रतीक थीक । कोनो साधनविहीन लोकक ओतय पाहुन-पड़क अबैत छलथिन तऽ टोल भरिक लोक अपन बाड़ी-झाड़ीसँ तरकारी उपलब्ध कराय देथिन । लगहरि गाय-महींस रखनिहार

Scanned by CamScanner

दूध–दहीक जोगाड़ धराय देथिन । आइ घूरि कऽ ककरो देखनिहार–पुछनिहार नहि छैक । बेटाक उपनयन, बेटीक विवाह, श्मशान जायब, श्राद्ध ई सब वैयक्तिक होइतो सामाजिक बूझल जाइत छलैक । कोनो वर्णक मुर्दा टोलपर रहैत छलैक तँ कोनो घरमे मुर्दा उठलासँ पहिने चुलहामे पजार नहि पड़ैत रहैक । आइ ई सब विचार–विवेक, सामाजिकता स्वप्नक बात भेल जाइत छैक । ई सब सामाजिक विघटन देखि–देखि क्षुब्ध रहय पड़ैत अछि । एहि सभक मूलमे प्रदूषित राजनीति ओ धर्मनिरपेक्षता कारण अछि । आइ समाज हमरा जनैत खण्ड–पखण्डे नहि, बुकनी–बुकनी भऽ गेल अछि । अभारतीय दृष्टिकोणक प्रसार–प्रचार पर पत्रकारिता सर्वस्व अर्पित कयने भारतीयताक उन्मूलन हेतु फाँड़ बान्हि भीड़ि गेल अछि ।

एमहर कल्याण राज्यक नाम पर वोटक लोभसँ राजनेता जनताकेँ परावलंबी बनाय रहल छथि । स्वावलम्बन समाजसँ लुप्त भेल जाय रहल अछि । एक टा छोट सन उदाहरण देखू, छठि पावनिमे सबसँ अधिक शुचिताक ध्यान राखल जाइत अछि । सब वर्ण, सब वर्ग ई पावनि करैत अछि । सूर्यकेँ अर्घ्यदेबाक हेतु लोक पोखरि सबमे घाटकेँ स्वच्छ–साफ करबाक काज उत्साहसँ कऽ लैत छल । आब ईहो दायित्व सरकार अपने उठाय लेलक अछि । कृषक अपन खेतमे उपजयबाक हेतु जे कोनो वस्तु लगबैत छल, पुनः अग्रिम वर्षक हेतु ओहीमेसँ बीजक व्यवस्था कऽ रखैत छल, उन्नत खेतीक नामपर आब बाहरसँ आयातित बीजसँ उपजल वस्तु पुनः बीज नहि भऽ पबैत अछि । परिणामतः एही रूपेँ परावलम्बनक विस्तार भऽ रहल अछि । आब पहिने जकाँ गाम–घरक लक्ष्मीवान लोक धर्मार्थ ने इनार कोड़बैत छथि ने पोखरि, ने धरम बान्ह बन्हबबैत छथि ने स्कूल–पाठशाला स्थापित करैत छथि ।

विशेषतः ब्राह्मणवर्गक चर्चा करब । स्वतन्त्र भारतमे सबसँ अधिक दुर्गति ब्राह्मणे समाजक भेलैक अछि आ ताहि हेतु हम सब अपने दोषी छी । एहन कर्त्तव्यच्युत दोसर जाति नहि भेल जतेक ब्राह्मण भेल अछि आ भेल जाय रहल अछि । अपना हृदय पर हाथ राखि अन्तरात्मासँ पूछू जे ब्राह्मण कुलमे जन्म मात्र छोड़ि आन कोनहु रूपक ब्राह्मणत्वक पालन करैत छी ? विधिवत् गायत्री मन्त्र दान, यज्ञोपवीत धारण आइ होइत अछि ? एहि प्रसंग 'दहीक खुँइचा' नामक लघुकथा संग्रहमे 'हमरा ठकै छी ?' शीर्षक कथा लिखने छी । आइ गायत्री मन्त्रक कैसेट बजैत रहैत अछि, विभिन्न प्रकारक साज–बाजक संग । ओहि कैसेट'केँ सुनलासँ गायत्री मन्त्रसँ प्राप्य ऊर्जा कहियो प्राप्त कयल जाय सकैछ ? केहनो झकझक करैत बर्त्तनमे स्वच्छ निर्मल जलक अदहन दऽ मेंहीसँ मेंही सुगन्धित चाउर दऽ गैसक चुलहा पर चढ़ाय, बिनु स्वीच ऑन कयने छोड़ि देबैक तँ ओ चाउर भात भऽ सकत ? हम सब सन्तानक उपनयनमे ढोल–ढाक, नाच–तमाशा, भोज–भात, मँड़बाकेँ सजायब एहि सबमे हजारक हजार बूकि लैत छी, योग्य आचार्यक वरण, हवन

Scanned by CamScanner

आदि जे शास्त्रीय विधान छैक ताहिपर रंच मात्र ध्यान दैत छिऐक ? आइ पुरोहित पद अप्रतिष्ठाक पर्यायवाची भऽ पुर्रहित भऽ गेल अछि, कतय गेलनि वृहस्पति, वसिष्ठ शतानन्दक प्रतिष्ठा ? साधारण सन्यनारायण भगवानक पूजा करौनिहार शुद्ध उच्चारण नहि कऽ पबैत छथि । जनिक वाणी पवित्र छनि से एकरा गर्हित उपहासास्पद कर्म मानैत छथि ।

वर-कन्याक विवाह कतेक सादा-सादी, लम्फ-लम्फासँ दूर रहैत छल, कन्यागत अपन विभवानुसार, अपन प्रतिष्ठा-मर्यादाकेँ ध्यानमे रखैत जी-जान उपछि कऽ यथासम्भव स्वागत-सत्कार वरसँ लऽ वरियाती लोकनिक करिते छलथिन । आइ प्रदर्शन पाछू बेहाल वरागत वरियातीक नाम पर हँसेरी लऽ पहुँचैत छथि, भोज्य सामग्रीमे सामिष भोजनक फरमाइश कऽ बड़प्पन झाड़ैत छथि । पुत्र कन्याक पाणिग्रहण करैत छथिन आ पिता समधिक गट्टा ग्रहण कयने रहैत छथिन । एकरे ब्राह्मणत्व कहबैक ?

समाजमे समरसता अनबाक नामपर अन्तर्जातीय विवाहकेँ प्रोत्साहित कयल जाइत अछि, एहिसँ उत्पन्न वर्णशंकर आततायी किएक नहि होयत ? वर्णशंकर बृद्धिसँ महाभारत होयत, महात्मागान्धीक सपनाक रामराज्यक आशा करबे व्यर्थ ।

नारी सशक्तीकरण हो, स्त्रीवर्गमे शिक्षाक प्रकाश पसरय, जीवन-रथक दूनू पहिया समतूल हो, से मूर्खकेँ छोड़ि आन किएक ने चाहत ? परन्तु नारी स्वतन्त्रताक नाम पर लज्जाकेँ समुद्रमे भसाय देल जाय से विवेक स्वीकार नहि करैत अछि । विधाताक जे प्राकृतिक संरचना छनि तकर उपेक्षा उच्छृंखलताकेँ जन्म दैत छैक । पूर्वजक कहल छनि-

घृत कुम्भ समा नारी, तप्तांगार समः पुमान्
तस्माद् घृतं च वह्निं च नैकत्र स्थापयेद् बुधः

एक दिस नैसर्गिक मनोविकारकेँ उत्प्रेरित करबाक संरजामसँ सम्पूर्ण स्थान भरि देल गेल अछि, दोसर दिस अपहरण, बलात्कार, भ्रूणहत्या, आतंक, लूटि, भ्रष्टाचारकेँ बढ़ैत देखि सरकार पर, प्रशासन पर दोषारोपण करबैक ताहि सँ समस्याक समाधान सम्भव नहि अछि । संस्कृतमे एक कवि कहने छथि-

विश्वामित्र पराशर प्रभृतयो वाताम्बु पर्णाशनात्'
तेऽपि स्त्रीमुख पंकजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहंगताः
शाल्यन्नं सघृतं पयोदधि युतं भुंजन्ति ये मानवाः
तेषामिन्द्रिय निग्रहो यदि भवेद् विन्ध्यस्तरेत् सागरम्

ताहि स्थितिमे पत्र-पत्रिकामे जाहि रूपक नग्न चित्र छपैत अछि, दूरदर्शनमे जेहन दुर्दर्शनीय दृश्य देखाओल जाइत अछि से विवेककेँ कतेक काल सजग रहय देत ? एहि दिस कतेक गोटेक ध्यान जाइत छैक ? जँ किछुकेँ अप्रिय, अमर्यादित बुझाइतो छैक तँ ओकर प्रतिवाद

Scanned by CamScanner

एहि आधिभौतिक सुखोपभोगक उन्मादक समक्ष के सुनतैक ? भारतक उच्चतम न्यायालय समलैंगिकताकेँ मान्यता दैत अछि । युगधर्मक नाम पर सब किछु घटोसने जाय रहल छी । एहि कलमसँ उगिलल दू पाँती–

पण्डित लोकनि तकै छथि सहजहि
सुरसुर-मुरमुर, नोनगर-तेलगर
कहबै ककरा, के अछि मुँहगर ?

हम स्वयं ककरा दुसबैक, सामाजिक एहि विषमताक कारणेँ हमरो पौत्र शिखा छेदन कराय लेने छथि । कारण पुछलापर कहलनि कॉलेजमे छौंड़ा सब टीक नोंचि लैत अछि, यद्यपि अष्टोत्तर शत गायत्री जप नित्य करैत छथि । एहने स्थितिकेँ देखि कहियो एहि कलमसँ कोनो अदृश्य शक्ति लिखबाय लेलक– **देशक नौकामे ई उनटा पाल तनल अछि** एहिसँ ब्राह्मणत्व कतेक काल टिकत ? सत्य कहैत छी, ई सब स्थिति जिजीविषाक क्षरण कऽ रहल अछि ।

राजनीतिक ओ शासनिक-प्रशासनिक स्थिति पर की बाजू । एक टा छैक, तिल-तण्डुल न्याय, अर्थात् चाउरमे फेँटायल तिलकेँ फराक-फराक करबामे भनेँ कठिनता हो, चिन्हबामे एको क्षण नहि लागत । आजुक राजनीति छल-कपट, दुरभिसन्धिक पर्यायवाची भऽ गेल अछि । लोककेँ लोक कहैत छैक फल्लाँ हमरासंग राजनीति कऽ रहल छथि अर्थात् छल-प्रपंच करैत छथि । एक तँ विचारणीय ई होयबाक चाही जे राजा शब्द एहि प्रजातन्त्रमे शब्दकोषटामे रहि गेल अछि, तखन राजनीति की ? प्रजातन्त्रमे राजाक अस्तित्वे नहि, पुनः राजनेता शब्दक प्रयोगे हमरा जनैत अवांछनीय थीक । परन्तु बाँसक पासिबला जौड़ खट्टासँ उठि, एहि प्रजातन्त्रक अनुकम्पासँ उड़नखटोला पर उड़निहार विदूषक शिरोमणि जनप्रतिनिधि अपनाकेँ राजा कहयबामे स्वर्गिक आनन्दक अनुभव करैत छथि ।

शासन-प्रशासनक सम्बन्धमे किछु कहबासँ पहिने एकटा खिस्सा मन पड़ि गेल । बहुचर्चित ई कथा सबकेँ जनले-सुनले अछि, तैयो सोतिक नाम पर ख्याति प्राप्त खिस्सा दोहरबैत छी । फल्लाँ बाबू अपन दलानक चौकीपर बैसल छलाह । जमीनक मालगुजारी असुलबा लै देवानजी गाममे डेरा खसौने रहथि आ एक लाल मुरेठा बला सिपाहीकेँ रैयत सबकेँ खबरि करबाक हेतु पठौलथिन । फल्लाबाबू दूरेसँ लाल मुरेठाकेँ एमहर अबैत देखि दलानक कातेमे झमटगर भाँटाक बाड़ी रहनि, सहटिकऽ ताहिमे जाय नुकाय रहलाह । सिपाही दलान पर आबि हाक पाड़य लगलनि । तीन-चारि हाक सुनला पर नहि रहल गेलनि तँ ओतहिसँ कहलथिन– नहि छथि । सिपाही टोकलकनि– अहाँके बाजि रहल छी ? उत्तर देलथिन– हम भाँटा बाजि रहल छी । ताहि पर सिपाही पुछलकनि– भाँटा तऽ नहि बजैत छैक । कहलथिन– सब भाँटा कतहु बजैक, हमरा बीया लेल छोड़ि देलक अछि, तेँ बजैत छी ।

Scanned by CamScanner

आशय ई जे प्रशासनक एतेक भय होइत छलैक, कोनो नियम-कानूनकेँ तोड़ि देब असाधारण बात छलैक । जखन मोरारजी भाइ देसाइ प्रधानमंत्री भेलाह तँ लोककेँ निर्भीक होयबाक सन्देश देलथिन । आइ एक विशाल समूह तेहन निर्भीक भऽ गेल अछि जे न्यायालयमे जाय बम फोड़ि विधिव्यवस्थाकेँ औंठा ठाढ़ कऽ देखाय रहल अछि । हमर कहबाक तात्पर्य ई नहि अछि जे पहिलुके स्थिति ठीक छल, किन्तु आइ जाहि अराजकताक स्थिति देखि रहल छी, स्वाधीनता प्राप्त करबाक संघर्षमे प्राण आहुति देनिहार सभक आत्मा कनैत नहि होयतनि ?

वैचारिक मतभिन्नता सब दिनसँ सब देशमे रहलैक अछि, किन्तु अपना देशमे मतभिन्नता शत्रुताक स्वरूप ग्रहण कऽ चुकल अछि । ग्राम पंचायतसँ लऽ लोकसभा धरि पहुँचनिहार जनमतक प्रसादेँ पद पर पहुँचलाह अछि, तथापि जे जतेक उच्च पद पर छथि तनिका ततेक कड़ा सुरक्षाव्यवस्था चाहियनि । थिकाह जनप्रतिनिधि आ हुनका प्राणपर संकटक भय ? ई कोन जनतन्त्र भेलैक ? स्वाधीन देशमे जकर जन्म भेलैक सेहो आइ सेवा निवृत्तिक वयसमे पहुँचि गेल । एतेक लम्बा अवधि बीति गेल, किन्तु रेल, तार, सड़क, अस्पताल, शिक्षालय आदि ककरो बपौती नहि, प्रत्युत भारतमे रहनिहार प्रत्येक व्यक्तिक सम्पत्ति थीक, एतबो भावना जनसामान्यमे भरबाक काज आजुक नेता सब बुतेँ नहि भऽ सकलनि । आक्रोशक शिकार सबतरि राष्ट्रिये सम्पत्ति भऽ रहल अछि । निरीह, निर्दोष हजारक हजार लोकक संहार भऽ रहलैक अछि । एहना स्थितिमे एहि सम्बन्धमे की बाजू । विकास भेलैक अछि एकरा एकटा आन्हर सेहो अस्वीकार नहि कऽ सकैछ । हम जाहिठाम, दरभंगामे 1957मे घर बनौलहुँ, एतय श्रमिक वर्गक एकटोल छैक । 50-52 वर्ष पूर्व फूसक छोट-छोट घर छलैक, आइ अस्सी प्रतिशत पक्का पिटाय गेलैक अछि । जे टेलीफोन आध शताब्दी पूर्व ऐश्वर्यक प्रतीक मानल जाइत छल, आइ जनबोनिहारसँ लऽ कुज़ड़नी-मलाहिन धरिक खोंइछ पर्यन्तमे मोबाइल स्थान पाबि गेल अछि, किन्तु ई भौतिक विकास नैतिकताकेँ मनुष्यताकेँ, पारम्परिक ओ पारस्पकिर सौमनस्यकेँ गर्त्तमे धकेलि देलक अछि, उद्दाम लालसाक ज्वालाकेँ धधकाय देलक अछि । एक मात्र नैतिकताक ह्राससँ देशक आन्तरिक स्थिति विस्फोटक स्थितिमे पहुँचि गेल अछि । अमीर आ गरीबक मध्य खाइ दिनानुदिन चाकर भेल जाय रहल अछि । कृषकक देश भारतमे लाखक लाख कृषक आत्महत्या कऽ रहल अछि । प्रकृति कोन रूपेँ कुपित भऽ गेल अछि से विश्वक विभिन्न भागमे रहि रहि भूकम्प, भरि वर्षा ऋतुमे प्रत्यह वज्रपात, समाचारपत्रमे कोनो दिन पन्द्रह-बीस ठाम ठनका खसबाक समाचार पढ़ैत रहलहुँ अछि । मर्यादाक पालन हेतु जे समुद्र उपमान मानल जाइत छल, वैज्ञानिक लोकनिक कथन पढ़ि ज्ञात होइत अछि से समुद्र मर्यादाकेँ तोड़ि क्रमहि बढ़ि रहल अछि । हमरा जनैत विकासक स्पर्द्धामे रहि आसुरी प्रवृत्तिक बाढ़ि मानव जातिकेँ अपने हाथेँ अपन विनाशक मार्ग प्रशस्त करबाक हेतु प्रेरित कऽ रहलैक अछि ।

Scanned by CamScanner

साहित्यकेँ हम तीन श्रेणीमे बँटैत छी– साहित्य,राहित्य ओ आहित्य । ई बात सत्य जे हम अल्पज्ञ छी, तथापि जतबे बुझैत छिऐक तदनुसार हितक भावनासँ समाजमे उत्पन्न विकृतिकेँ परिष्कृत करबाक उद्देश्यसँ कयल जाइत लेखनकेँ साहित्य, मानसिक थकानसँ मुक्त होयबाक हेतु विशुद्ध मनोरंजनार्थ रचित रचनाकेँ राहित्य तथा मनोविकारकेँ उत्प्रेरित करयबला लेखनकेँ आहित्य मानैत छी । दुर्गुण ई अछि जे आहित्य पढ़ि मन उद्वेलित भऽ जाइत अछि, तज्जन्य भेल प्रतिक्रियाकेँ बिनु व्यक्त कयने रहल नहि जाइत अछि । परिणामतः विचारकेँ लऽकऽ हमरा प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपेँ सबदिन संघर्ष करैत रहय पड़ल । अमर्यादित, अनटोटल शब्दक प्रयोग हमरा असह्य रहल अछि, प्रतिक्रिया व्यक्त कऽ दुर्जरू बनि जाइत छी । युवावस्थामे जकरा उत्कीर्णा बुझैत छलिऐक से आब दुर्गुण बुझाइत अछि, तैयो नहि रहल जाइत अछि ।

विगत 69-70 वर्षक साहित्यिक जीवनमे अनेक एहन प्रसंग यथा– डपोर–शंख–हड़ाशंख, खट्टर कका बनाम बुचकुन बाबा, गंगा गारि प्रसंग आदिमे अनेक नव–पुरान साहित्यकार दू–दू हाथ करबा लै अखाढ़ा पर उतरल छलाह । एहिना तथाकथित प्रगतिवादी ओ परम्परावादीक मध्य घमासान मचल छल, जाहिमे अन्ततः मिथिला दर्शनमे हमरा 'घिनबय चाही तऽ घिना लिअऽ' लिखय पड़ल छल । एहन–एहन प्रसंगक उल्लेख करब श्रेयस्कर नहि प्रतीत भेल । जीवनक एहि सान्ध्यवेलामे महान–महान साहित्यकारकेँ उदारताक नाम पर मैथिलीक मूल प्रकृतिसँ हटैत आ हिन्दीसँ सटैत देखैत छियनि तँ मैथिलीक भविष्यक प्रति निराशाक अन्धकार सघन होइत प्रतीत होइत अछि ।

अंग्रेजीकेँ अङेजिकऽ आधुनिक होयबाक दम्भ अशोककेँ अशोका, योगकेँ योगा कृष्णाकेँ कृष्णा बनाय देलक अछि । अशोक अशोका, योग योगा भऽ गेल ताहिपर ततेक आपत्ति नहि, कृष्णकेँ कृष्णा भेलापर अर्थ विपर्यय होइत अछि, कारण द्रौपदीक दोसर नाम कृष्णा छलनि जे कृष्णक पिसियौत बहिन छलथिन । एहन आधुनिकतासँ परहेज रखबाक चाही ।

योग बाबा रामदेव बाबाक साधनासँ पृथक् चिकित्सा पद्धति बनि गेल अछि ।

योगक दू गोट परिभाषासँ हम परिचित छी । प्रथम–'योगः चित्तवृत्ति निरोधः' आचार्य सुमनक पंक्ति छनि– **चंचल लहरी, चंचल बिजुरी, ताहूसँ चंचल मानव मन**

मनक एही चंचलता पर अंकुश लगयबाक हेतु सर्वत्र योग साधनाक महत्त्व मानल गेल अछि । पारलौकिक सिद्धि प्राप्तिक हेतु आध्यात्मिकता अनिवार्य होइछ । आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करबामे योगक मार्ग कहल गेल अछि । हम व्यक्तिगत रूपेँ एहि हेतु बहुत चेष्टा करैत रहलहुँ अछि, किन्तु चित्तवृत्ति निरोधमे आंशिको सफलता भेटल हो तकर कोनो संकेत नहि भेटल अछि ।

Scanned by CamScanner

दोसर परिभाषा छैक– योगः कर्मसु कौशलम् । सांसारिक सिद्धि प्राप्तिक हेतु कयल जाइत कर्म सबमे जे कुशलता, निपुणता सेहो योग थीक । आत्मनिरीक्षण कयला उत्तर प्रतीत होइत अछि जे आंशिक रूपेँ एहिमे सफल रहलहुँ अछि । यद्यपि ऐश्वर्यक कोनो सीमा रेखा निर्द्धारित नहि छैक । एक श्लोक छैक–

निःस्वः वष्टि शतं, शती दशशतं, लक्षं सहस्राधिपः
लक्षेशः क्षितिपालतां क्षितिपतिः चक्रेशतां वांछति
चक्रेशः पुनरिन्द्रतां सुरपतिः ब्राह्मं पदं कांक्षति
ब्रह्मा शैव पदं, शिवो हरिपदं चाशावधिः के गताः ?

अर्थात् निर्धन सय टाका चाहैत अछि, सय रखनिहार हजार, हजारक स्वामी लाख, लखपति राजा, राजा चक्रवर्त्ती सम्राट, चक्रवर्त्ती सम्राट् इन्द्र, इन्द्र ब्रह्मा, ब्रह्मा शिव आ शिव विष्णुक पद पयबाक आकांक्षा रखैत छथि अर्थात् प्राप्तिक आशाक अन्त धरि के पहुँचल अछि ? क्यौ नहि । तेँ नीतिकार 'संतोष एवं पुरुषस्यपरं निधानम् अर्थात् सबसँ श्रेष्ठ धन सन्तोषकेँ कहने छथि । हम विश्वास पूर्वक कहि सकैत छी जे एहि दृष्टिएँ सन्तुष्ट छी । आशा–आकांक्षाक अन्त नहि होइत छैक ताहिसँ मुदा मुक्ति नहि भेटल अछि । नित्य सूर्योपस्थानमे प्रार्थना करिते छी अदीनाः स्याम शारदः शतम्, दीनता जाबत आबय, एक लोटा पानि क्यौ आनि देअय, एहिसँ पहिनहि एहि शरीरक विसर्जन भऽ जाय से आकांक्षा अछिए ।

एक विचारणीय प्रश्न हमरा मनमे बहुत दिनसँ घुरिआइत रहल । बहुत चिन्तनक बाद आ जीवनक बहुत रास मूल्यवान समयकेँ गमाय देलाक पश्चात् किछु उत्तर भेटि सकल, से सर्वथा संगते अछि, हम तकर दाबा नहि करब, किन्तु हमरा जे तर्कसँ मनमे आयल तकर उल्लेख कऽ दी जाहि पर जँ किनको जिज्ञासा होइनि तँ तर्क–वितर्क करथि ।

मनमे घुरिआइत प्रश्न ई जे एकटा तत्त्व अछि 'काम' जकरा प्रसंग पौराणिक मान्यता अछि जे भगवान शंकरक समाधि भंग करबाक हेतु देवता लोकनिसँ प्रेरित भऽ कामदेव जखन उपद्रव आरम्भ कयलथिन तँ भगवान शंकरक तेसर आँखि फूजि गेलनि आ कामदेव भस्म भऽ गेलाह, किन्तु कामक उपयोगिताक प्रसंग ईहो कहल गेल अछि– 'कामः संसार हेतुश्च' कामक अनुपस्थितिसँ सृष्टिक घटना चक्रे नहि चलि सकैछ, तेँ अनंग रूपमे हिनका पुनः जीवन भेटलनि जे जीवमात्रमे व्याप्त छथि ।

एहि कामकेँ एक दिस पुरुषार्थ चतुष्टयमे सेहो परिगणित कयल गेल छनि– धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष । पुनः मनोविकारक परिगणनमे मुख्य स्थान छनि– काम–क्रोध–लोभ–मोह इत्यादि । एके तत्त्व जे सृष्टिक कारण अछि से गुण–दोष दूनू कोटिमे परस्पर विरोधी रहितहु कोना परिगणित होइत अछि ? जँ गुण थीक तँ त्याज्य किएक, जँ दोष थीक तँ ग्राह्य कोना ?

Scanned by CamScanner

हम अपन अत्यल्प बुद्धिसँ एहि निष्कर्षपर पहुँचलहुँ जे पुरुषार्थ चतुष्टयमे जे चारि टा नाम अछि धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष एहि अनुक्रममे पालन कयल जाय तँ काम गुण सिद्ध होइत अछि, यदि क्रम भंग कयल जाइछ तँ दोषक रूपमे प्रथम स्थान पर पहुँचि जाइत अछि । काम-क्रोध-लोभ-मोह इत्यादि । चारू पुरुषार्थक क्रममे प्रथम स्थान धर्मक छैक । धर्म माने पूजा-पाठ, व्रत-उपवास-तीर्थ यात्रादिसँ नहि छैक, धर्मसँ तात्पर्य छैक कर्त्तव्य पालन । जेना कृषकक धर्म थिकैक अन्न-फल-दूध आदि एहि शरीरक पालन-संवर्द्धन हेतु सब शक्ति लगाकऽ उत्पादन करब जाहिमे आलस्य, उपेक्षा आदि करब धर्मसँ च्युत होयब थीक । च्युत भेलापर क्रममे जे दोसर स्थान अर्थक छैक तकर सिद्धि नहि होयतैक, तखन क्रममे तेसर स्थान जे कामकेँ छैक तकर पूर्त्ति हेतु अनुचितकर्ममे प्रवृत्ति होयतैक जे मोक्षमे बाधक बनतैक । एहिना अन्यान्य जाहि कर्मसँ जीविकोपार्जन करैत अछि लोक ताहिसँ ओकर अपन ओ अपन परिजनक पोषण तऽ होइते छैक, संगहि अप्रत्यक्ष रूपसँ समाज ओ राष्ट्र सेहो लाभान्वित होइत अछि, तेँ अपन सम्पूर्ण शक्ति, दक्षता, पटुता लगा कऽ सम्पादित करब ओहि व्यक्तिक धर्म थिकैक अर्थात् कर्त्तव्य पालने वस्तुतः धर्म थीक । सम्पूर्ण शक्ति ओ श्रम लगा कऽ अर्जित अर्थक अपव्यय करबासँ अपने मन रोकैत छैक । फलतः अपकर्म-दुष्कर्मसँ अपनाकेँ दूरे रखबाक हेतु लोक तत्पर रहैत अछि ।

कामकेँ विज्ञानसँ तुलना कऽ सकैत छी । विज्ञान एक रूपमे वरदान थीक जे भौतिक सुख-साधनक अंवार लगा देलक अछि । जाहि अणुशक्तिक आविष्कारसँ बिजलीसन वस्तु अत्यन्त सुलभ होइत अछि, जाहि विद्युत शक्ति पर आइ सम्पूर्ण संसार आश्रित भऽ गेल अछि, ताहि अणु शक्तिक दुरुपयोगक परिणाम द्वितीय विश्व युद्धक क्रममे जापान भोगि चुकल अछि आ आइ सम्पूर्ण संसार आतंकित अछि । एहि दृष्टिएँ विज्ञान अभिशाप थीक ।

बीसम शताब्दी जाहि विषम स्थितिकेँ पार करैत बीति गेल से मानव जातिक इतिहासमे एखन धरि अद्वितीये मानल जायत । दू-दू गोट विश्व युद्ध शताब्दीकेँ भोगय पड़लैक । सामाजिक ओ प्रशासनिक सम्पूर्ण व्यवस्थामे आमूल परिवर्त्तन भऽ गेलैक । प्रकृतिक अनेक रहस्य उद्घाटित भेलैक । मानव मस्तिष्क प्रकृतिक अनेक कार्यमे हस्तक्षेप करबामे क्षम भऽ गेल । प्रकृति मनुष्यकेँ स्थलचर रूपमे जन्म दैत छैक, किन्तु मनुष्य अपनाकेँ गगनबिहारी बनाय लेबामे समर्थ भऽ गेल । अपवर्ग चतुष्टयसँ आदि ओ अन्तक अर्थात् धर्म ओ मोक्षक नाम काटि देल गेलैक । अर्थ ओ काम दुइए टा प्रधान भऽ गेल । पौराणिक आख्यान सबमे देवासुर संग्रामक वर्णन पढ़ैत छी । हमरा दृष्टिएँ एखनहु देवासुर संग्राम चलिए रहल अछि । मधुकैटभ, महिषासुर, चण्ड-मुण्ड, रक्तबीज, शुम्भ-निशुम्भ दोसर रूपमे एखनहु विद्यमान अछि । एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक

Scanned by CamScanner

अन्तिम वर्षमे हमरो जीवन काल पहुँचि गेल अछि। एतबा दिनमे बहुत देखलहुँ, बहुत सुनलहुँ, खेद जे गुनलहुँ नहि केवल वर्ष गनैत रहलहुँ। महाकवि विद्यापति सन साधक पर्यन्तकेँ अन्तमे कहय पड़लनि– 'माधव हम परिणाम निराशा'।

पहिनहु कहि चुकल छी, अन्तमे पुनः स्पष्ट कऽ दी जे ने हम महात्मा छी आ ने दुरात्मा एक संवेदनशील सामान्य लोक छी, सामान्य लोक जकाँ जीवन यापन करैत जीवनक सान्ध्य बेला धरि पहुँचि गेल छी। यथासम्भव असत् कर्मसँ बँचि कऽ चलबाक चेष्टा करैत रहलहुँ। पर-पीड़नक उद्देश्यसँ कहियो फूसि नहि बजलहुँ, किन्तु आत्म रक्षार्थ ओहिसँ परहेज नहि रहल, जेना नागपुर यात्रामे म.म. उमेश मिश्रके ँ भाङ्क चूर्णकेँ सितोपलादि कहलियनि। जँ सत्य बात कहि दितियनि तँ उठाकऽ पीबि नहि जइतथि तथापि मानव-सुलभ दुर्बलता सत्य नहि बाजय देलक। ई दौर्बल्य एखनहु अछि।

आत्म संस्मरण कहियो पूर्ण नहि भऽ सकैत छैक, कारण लोक अपन चैतन्य अवस्थामे लिखि लैत अछि, किन्तु जीवनक्रम तकर बादो चलिते रहैत छैक। 'संस्मरण' शब्दमे 'मरण' शब्द घोंसिआयल छैके। मरण धरि पहुँचैत-पहुँचैत व्यक्ति चेतना शून्य भऽ जाइत अछि, लेखन आ मरणक अन्तरालमे घटित घटना अनुल्लिखिते रहि जाइत छैक।

तखन अरकच-बथुआसँ भरल एहि वृत्तान्तकेँ धैर्यपूर्वक पढ़निहारकेँ एतबा हम आश्वस्त कऽ सकैत छियनि जे जीवनकेँ सन्तोष पूर्वक जीबाक हेतु हम धनकेँ साध्य कहियो नहि मानलहुँ, साधन रूपमे उपयोग करब सेहो एक कला थिकैक, हम ताहि कलाकेँ अपनौने रहलहुँ आ ताहिसँ आत्मसन्तोष भेटैत रहल। इहलोकक दृष्टिसँ अपनाकेँ सफल, परलोकक दृष्टिसँ विफल मानैत छी। कर्मकाण्डपर आस्था रहल, स्तोत्र आदि पाठ करैत रहलहुँ, फलश्रुति सब जे छैक ताहिसँ मनमे किछु भरोस अछि। कहने छी जे जीवन मे द्वितीय श्रेणी भेटैत रहल, अन्तोमे द्वितीये श्रेणीक आशा अछि। खेद, जे फलश्रुति सत्य थीक वा मिथ्या से कहबाक हेतु महायात्रासँ घूरि कऽ आइ धरि के आयल अछि ? इति शुभम्

महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह जयन्ती
अग्रहायण भैरवाष्टमी, 10.11.09

Scanned by CamScanner

परिशिष्ट- I

2003सँ2007धरि साहित्य अकादेमीमे मैथिली

साहित्य अकादेमी सन सर्वोच्च साहित्यिक संस्था, जाहिमे भारतवर्ष सन एक अरब दस कोटि निवासीक 24 गोट समृद्ध-साहित्य-सम्पन्न भाषा सभक प्रतिनिधि अपन-अपन भाषाक साहित्य अकादेमीसँ सम्बद्ध साहित्यिक संस्था द्वारा निर्वाचित भऽ प्रतिनिधित्व करबाक हेतु जाइत छथि, जाहिठाम अंग्रेजीए भाषाक माध्यमसँ अधिकतर कार्यवाही होइत छैक, यद्यपि सम्पर्क भाषाक रूपमे बेचारी हिन्दीओक नाम जुटल छैक, किन्तु हिन्दीओक प्रतिनिधि अंग्रेजीएमे बाजब अपन प्रतिष्ठाक अनुकूल मानैत छथि, जकर सामान्य सभा (जेनरल काउंसिल) मे प्रत्येक राज्यक प्रतिनिधि, 165 गोट विश्वविद्यालयसँ एक बेरमे 20 गोट प्रतिनिधि, केन्द्रीय सरकारक प्रतिनिधि, एक बेरमे 21 गोट महत्तर सदस्यता प्राप्त विश्व विख्यात साहित्यकार तथा आठ गोट अति प्रतिष्ठित (एमिनेंट राइटर) सदस्य होइत छथि। एहन विशिष्ट संस्थाक हेतु कोनो अदूरदर्शी संस्था हमरा सन अपटु, अल्पज्ञकेँ बिना कोनो सूचना देने नाम पठा देलक, ताहि संस्थाक जतेक भर्त्सना कयल जाय से थोड़ बुझल जायत।

हमरा स्वप्नोमे ई आकांक्षा कहिओ नहि भेल जे एहन महान संस्थाक सदस्यता हमरो भेटैत। एक दिन प्रसंग बश मित्रप्रवर प० श्री गोविन्द झाकेँ कहनहु छलियनि जे ई ढोल हमरा गर्दनिमे लटका देल गेल तँ प्रतिवाद करैत ओ कहने छलाह-अहाँ एकरा ढोल कहैत छिएक ? ई पारिजातक माला थिकै। जाहि पारिजात फूल लै श्रीकृष्ण भगवानकेँ साक्षात देवराज इन्द्रसँ युद्ध करऽ पड़ल रहनि ताहि पारिजातक माला हमरा सन अति सामान्य मातृभाषा-सेवीक गराँमे पड़ि कतेक अपमानित भेल होयत से सुधी समाजकेँ सोचबाक चाहियनि।

हमरा निर्वाचनक बेरमे जे कहिओ नहि भेल छल से घटित भऽ गेल। हमर अकर्मण्यताकेँ ध्यानमे रखैत मैथिलीक हितचिन्तक सब सतर्क भऽ गेलाह आ हमर प्रतिस्पर्द्धामे एहन नाम प्रस्तावित भेल जनिका आङुर पकड़ि मैथिली मंचपर उतारने रहियनि, जाहि बातकेँ ओ मौखिक नहि, लिखित रूपमे स्वीकार कयने छथि, (द्रष्टव्य-अमर अर्चना, पृष्ठ 69)। ईश्वर साक्षी जे तावत धरि हमरा ज्ञातो नहि छल जे हमर नाम प्रस्तावित अछि। निश्चित रुपेँ हुनका सन पटु ओ दक्ष लोककेँ गेलासँ

Scanned by CamScanner

अकादेमीमे मैथिलीक बहुत काज होइतैक । परन्तु भाषा साहित्यक दुर्भाग्य छलैक जे हमरा नामक निर्वाचन ब्रह्माक लेख भऽ गेलैक, कतबो मेटयबाक चेष्टा भेलैक, हमरा विरुद्ध हित चिन्तक लोकनि द्वारा हस्ताक्षर अभियान भेल, हमरा कवितामेसँ पाँती ताकि, तकरा उद्धृत करैत हमरा सम्प्रदायवादी सिद्ध कऽ अकादेमी कार्यालयमे पत्रक अमार लागि गेलैक जे कूड़ादानमे सुरक्षित राखल होयतैक । हम मैथिलीक कपारपर बथा गेलिऐक ।

संकीर्ण मानसिकताक हमरा सन व्यक्तिकेँ तथापि जे बन्धु-बान्धवी लोकनि, सहृदय विद्वान साहित्यकार-कलाकार लोकनि सहयोग कयलनि, जाहि सहयोगक बलेँ थोड़-बहुत काज कऽ सकलहुँ, तनिका सभक प्रति हृदयसँ आभार व्यक्त करैत छियनि । हमर पाँच वर्षक सदस्यताक अवधि पूरि गेल । जे किछु भऽ सकल तकर विवरण समाजक समक्ष उपस्थित करैत त्रुटिक हेतु क्षमा-याचना सेहो करैत छी ।

जखन हम परामर्शी मण्डलक गठन कयलहुँ तखन स्थिति ई छल-

नवे गोट छल जगह, मुदा नब्बे उत्सुक प्रत्याशी
ककरो रखितहुँ तैयो बचले रहितथि शेष एकाशी
हम सब सदा भजौलहुँ, असली सेवक सब छुटले छथि
हम सब हाथ सुतारल, ओ सब सेवामे जुटले छथि

हुनका सभक लेल कामना जे-

माय मैथिली विस्तृत करथुन सबहिक धैर्यक सीमा
पूर मनोरथ होयतनि जखने पुरतनि जीवन बीमा

एक व्यक्ति एहनो प्रत्याशी छलाह जे प्राय: छठम वर्गसँ एगारहम वर्ग धरि हमर छात्र रहलाह । मातृभाषा पत्रमे मैथिलीएमे एम्.ए., पी-एच्.डी. कयलनि आ एक विश्वविद्यालयक विभागाध्यक्ष पदसँ सेवा निवृत भऽ लेखन, सम्पादन, अनुवाद कार्यमे लागल महान साहित्यकारक रूपमे स्थापित छथि । ओ परामर्शी मण्डल पर एक द्वैमासिक पत्रिकाक माध्यमसँ टिप्पणी करैत लिखलनि-ई हिजड़ाक जमात थीक । किछु आत्मीय बन्धु-असहयोग करबाक निर्णय लेलनि । तथापि क्यौ पुरस्कार योग्य पुस्तकक आधार सूची बनयबामे, क्यौ निर्णायक मण्डलक सदस्यक रूपमे, क्यौ विचार-संगोष्ठी (सेमीनार) सबमे आलेख प्रस्तुत कयनिहारक रूपमे, क्यौ कवि वा कलाकार रूपमे, एहि प्रकार विभिन्न कार्यक्रममे सहयोग दऽ हमरा कृतार्थ कयलनि तनिका सभक नामोल्लेख करब हम उचित कर्त्तव्य बुझैत छी । कर्त्तव्य नहि आवश्यको एहि हेतु जे एहि अवधिमे सम्पादित विचार संगोष्ठी पर दरभंगा टावरसँ लऽ पटना-दिल्ली धरिक पत्र-पत्रिकामे प्रशिक्षण शिविर, इन्टरमिडिएट स्तरक डिवेट कहल गेल । विगत पाँच वर्षक कार्यकालमे हमरा पर

Scanned by CamScanner

सम्बन्धवाद, परिवारवाद, पक्षपातपूर्ण निर्णय करयबाक हेतु हस्तक्षेप करबाक, भ्रष्टाचारमे लिप्त रहबाक आरोप लगैत रहल ।

नामक सूचीक उल्लेखसँ पूर्व उल्लेख कऽ दी जे साहित्य अकादेमी द्वारा दू प्रकारक कार्यक्रम कयल जाइत छैक, पहिल पुस्तक प्रकाशन दोसर विभिन्न कार्यक्रम आयोजन। मैथिलीमे मौलिक, संकलन, अनूदित ग्रन्थ ओ ऐतिहासिक महत्त्वक ग्रन्थक पुनः प्रकाशन, विचार संगोष्ठी, काव्योत्सव, लेखकसँ साक्षात्कार एतवा कार्यक्रम एहिसँ पूर्वहु होइत रहल अछि । एहि विगत पाँच वर्षमे एहिसँ अतिरिक्तो नव कार्यक्रम आरम्भ भेल । यथा–

1. कवि सन्धि, एहिमे श्री मार्कण्डेय प्रवासी (पटना) श्रीरवीन्द्रनाथठाकुर (पूर्णिया)मे सम्मानित भेलाह ।

2. हमर समयः हमर लेखन, एहिमे कोलकातामे श्रीविवेकानन्द ठाकुर, श्री रमाकान्त राय 'रमा' तथा श्री शैलेन्द्र आनन्द भाग लेलनि ।

3. नवीन स्वर, एहिमे भुवनेश्वरमे सर्वश्री चक्रधर ठाकुर, राजकुमार मिश्र, विमलेन्दु शेखर पाठक, प्रदीप बिहारी, अरविन्द कुमार सिंह झा, कुमार मनीष अरविन्द तथा हरिश्चन्द्र हरित (अनुपस्थित रहलाह) श्रीमती सुष्मिता पाठक भाग लेलनि ।

4. मुलाकात, ई कार्यक्रम कोलकाता, दिल्ली तथा पूर्णियाँमे भेल जाहिमे सर्वश्री अमरनाथ भारती, विनय भूषण, दिलीप कुमार 'लूटन' परमानन्द प्रभाकर, कुमार मनीष अरविन्द, अखिल आनन्द, शिव कुमार 'नीरव', कुशेश्वर कश्यप भाग लेलनि ।

5. अस्मिता, ई कोलकाता तथा जमशेदपुरमे भेल, जाहिमे सर्वश्रीमती हेमलता चौधरी, साधना झा, डॉ. शान्ति सुमन, आशा मिश्र, मुन्नी झा, सुश्री श्वेता झा ।

6. I पूर्वांचलीय कार्यक्रम गुवाहाटीमे श्रीमती ज्योत्स्ना चन्द्रम् आ श्रीचक्रधर ठाकुर ।
   II कोलकातामे– श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद' आ श्री अरविन्द अक्कू ।
   III अनुवाद कार्यशालामे– श्रीमती कृष्णा सेन, श्री रामलोचन ठाकुर
   IV गैंग टोकमे– श्री सत्यनारायण झा, श्री रमाकान्तराय 'रमा'
   V आसाममे– श्रीअमलेन्दुशेखर पाठक

7. लेखकसँ साक्षात्कारमे डॉ॰ श्रीमायानन्दमिश्र (पटना)
   डा. श्रीरामदेवझा (दरभंगा)

8. ध्यातव्य जे भाषा सम्मानक हेतु डॉ॰ श्रीशशिनाथ झाकेँ 2008 मे प्रस्तावित सम्मान प्राप्त भेलनि

9. व्यक्ति ओ कृतिमे–इं. श्रीअशोक कुमार ठाकुर (दरभंगा)
   (ई कार्यक्रम साहित्येतर क्षेत्रक लोकक हेतु)

Scanned by CamScanner

10. हमरा वातायनसँ- हम स्वयम् (दरभंगा)

11. लोक : विविध स्वर- (ई कोलकाता, दिल्ली आ रायपुरमे प्रस्तावित छल । रायपुर टामे भऽ सकल) एहिमे-सर्वश्री रामसेवक ठाकुर, कुंज बिहारी मिश्र, कन्हैया जी एवं 5 व्यक्ति अन्यान्य रहथि ।

12. एकर अतिरिक्त एहि अवधिमे छओ गोट सेमिनार आयोजित भेल जाहिमे

1. लोक साहित्य, 2. लोक नाट्य (प्रस्तुति सहित), 3. मैथिली नाटकक रंग मंच (प्रस्तुति सहित) कोलकातामे भेल जकर श्रेय मिथिला विकास परिषद, ओ श्री अशोकझाकेँ छनि ।

4. 'लोक गाथा : विवेचन ओ प्रस्तुति' खुटौनामे भेल, जकर श्रेय कल्याण पथ दायिनीक संस्थापक डॉ. श्री महेन्द्र नारायण रामकेँ छनि ।

5. साहित्यकार त्रय आचार्य रमानाथझा, कविचूड़ामणि मधुप ओ डॉ. कांचीनाथझा 'किरण'क शत वार्षिकी पूर्तिक अवसर आयोजित भेल जकर श्रेय ज्योत्स्ना मण्डल जयनगरक अध्यक्ष डॉ. श्री मैथिलीशरण उपाध्याय ओ प्रसिद्ध नाटककार डॉ. श्री कमलकान्त झाकेँ छनि ।

6. 'मैथिली उपन्यासक विकास यात्रा' पर जमशेदपुरमे सम्पन्न भेल जकर श्रेय मिथिला सांस्कृतिक परिषदक कर्मठ कार्यकर्त्तालोकनि विशेषतः डॉ. श्रीअशोक अविचल तथा डॉ. श्रीरवीन्द्र कुमार चौधरीकेँ छनि ।

7. कवीश्वर चन्दाझाक पुण्यशतीक अवसर पर दरभंगामे सम्पन्न भेल जकर श्रेय डॉ. श्री सुरेश्वर झा आ श्री जीवछ झा केँ छनि ।

समान्यतः परामर्शी मण्डलक प्रतिवर्ष एक टा कऽ बैसक होइत रहलैक अछि। एहि अवधिमे क्रमशः दिल्ली, कोलकाता, खुटौना, दार्जिलिंग, गुवाहाटी तथा रायपुरमे सब मिलाय छओटा बैसक भेल ।

उपरि लिखित कार्यक्रम सबमे 23 गोट निम्नांकित महिला लेखिकाक योगदान रहलनि-

1. डॉ. श्रीमती अणिमा सिंह
2. डॉ. श्रीमती माधुरी झा
3. डॉ. श्रीमती कमला चौधरी
4. डॉ. श्रीमती शेफालिका वर्मा
5. डॉ. श्रीमती शान्ति सुमन
6. डॉ. श्रीमती नीता झा
7. डॉ. श्रीमती वीणा कर्ण
8. डॉ० श्रीमती वीणा ठाकुर
9. श्रीमती नीरजा रेणु
10. श्रीमती शैल झा
11. श्रीमती आशा मिश्र
12. श्रीमती ज्योत्स्ना चन्द्रम्

Scanned by CamScanner

13. श्रीमती साधना झा
14. श्रीमती सुष्मिता पाठक
15. श्रीमती प्रेमलता मिश्र
16. श्रीमती मंजू सिंह
17. श्रीमती स्वयंप्रभा झा
18. श्रीमती हेमलता चौधरी
19. श्रीमती कृष्णा सेन
20. श्रीमती वीणा झा
21. श्रीमती मुन्नी झा
22. श्रीमती श्वेता झा
23. श्रीमती गौरी मिश्र

(एकर अतिरिक्त लोक नाट्य तथा लोक : विविध स्वर कार्यक्रममे सेहो महिला लोकनि छलीह जनिका सभक नाम ध्यानमे नहि आबि रहल अछि ।)

जनिका सभक मूल्यवान सहयोग भेटैत रहल से सब थिकाह-

1. सर्वश्री आचार्य जयमन्त मिश्र
2. प. गोविन्द झा
3. डॉ. आनन्द मिश्र
4. डॉ. विश्वेश्वर मिश्र
5. प्रो. मुरारि मधुसूदन ठाकुर
6. प्रो. रमाकान्त मिश्र
7. डॉ. मायानन्द मिश्र
8. डॉ. सुरेश्वर झा
9. डॉ. शोभाकान्त झा (रायपुर)
10. डॉ. अमरेश पाठक
11. डॉ. इन्द्रकान्त झा (सदस्य)
12. डॉ. वासुकी नाथ झा
13. डॉ. रामदेव झा
14. डॉ. लेखनाथ मिश्र
15. डॉ. विद्यानाथ झा 'विदित'
16. डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'
17. डॉ. सदन मिश्र
18. डॉ. देवेन्द्र झा (सदस्य)
19. डॉ. गंगेश गुंजन
20. डॉ. ताराकान्त झा (गुवाहाटी)
21. डॉ. ताराकान्त झा (कोलकाता)
22. डॉ. ताराकान्त मिश्र
23. डॉ. किशोरनाथ झा
24. डॉ. भीमनाथ झा
25. डॉ. लक्ष्मण चौधरी 'ललित'
26. डॉ. रमानन्द झा 'रमण'
27. डॉ. मैथिलीशरण उपाध्याय
28. डॉ. अजित कुमार वर्मा
29. डॉ. अमरनाथ चौधरी
30. डॉ. अमरनाथ झा
31. डॉ. देवकान्त झा
32. डॉ. खुशीलाल झा
33. डॉ. कमलकान्त झा (सदस्य)
34. डॉ. वीरेन्द्र मल्लिक
35. डॉ. हरिवंश 'तरुण'
36. डॉ. शिवाकान्त पाठक
37. डॉ. बुचरू पासवान
38. डॉ. योगानन्द झा
39. डॉ. मुरलीधर झा
40. डॉ. शशिनाथ झा

Scanned by CamScanner

41. डॉ. विद्याधर मिश्र
42. डॉ. विभूति आनन्द
43. डॉ. नरेश कुमार 'विकल' (सदस्य)
44. डॉ. नरेश मोहन झा
45. डॉ. नवोनाथ झा
46. डॉ. नरेन्द्र नारायण सिंह 'निराला'
47. डॉ. अमरनाथ
48. डॉ. मनोरंजन झा
49. डॉ. धीरेन्द्रनाथ मिश्र
50. डॉ. धर्मेन्द्र कुमर
51. डॉ. अशोक कुमार मेहता
52. डॉ. रवीन्द्र कु० चौधरी (जमशेदपुर)
53. डॉ. अशोक अविचल (जमशेदपुर)
54. डॉ. श्रीशंकर झा (रोसड़ा)
55. डॉ. फूलो पासवान
56. डॉ. अरविन्द 'अक्कू'
57. डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास
58. डॉ. जयनारायण यादव
59. डॉ. सुनील कुमार ठाकुर
60. डॉ. ब्रजकिशोर मिश्र (दुमका)
61. डॉ. अयोध्या पासवान
62. डॉ. केष्कर ठाकुर (भागलपुर)
63. डॉ. अरुण कुमार कर्ण
64. डॉ. दमन कुमार झा
65. डॉ. महेन्द्र नरायण राम (सदस्य)
66. डॉ. कमल कान्त भंडारी
67. डॉ. रमण झा
68. डॉ. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'
69. श्री शशिबोध मिश्र 'शशि'
70. डॉ. लुटेश्वर झा
71. डॉ. ललितेश्वर झा
72. डॉ. वेदनाथ झा
73. डॉ. चण्डेश्वर झा
74. डॉ. शिवकुमार 'निखिलेश'
75. डॉ. तिलकनाथ मिश्र
76. डॉ. अरविन्द कुमार सिंह झा
77. डॉ. आदित्यनाथ झा
78. डॉ. जयप्रकाश चौधरी 'जनक'
79. श्री उमेश चन्द्र झा
80. श्री मार्कण्डेय प्रवासी (सदस्य)
81. श्री कामदेव झा (कोलकाता)
82. श्री अशोक झा (कोलकाता)
83. श्री विनय प्रतिहस्त
84. इं. श्री अशोक कुमार ठाकुर
85. श्री रामलोचन ठाकुर
86. श्री तारानन्द 'तरुण'
87. श्री तारानन्द वियोगी
88. श्री बुद्धिनाथ झा
89. श्री दयानाथ झा
90. श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद'
91. श्री प्रदीप चौधरी
92. श्री विनय भूषण ठाकुर
93. श्री महेन्द्र प्रसाद सिंह
94. श्री मोती लाल मुखिया
95. श्री रमाकान्त राय 'रमा'
96. श्री चन्द्रेश
97. श्री शंकरदेव झा
98. श्री शैलेन्द्र आनन्द

Scanned by CamScanner

99. श्री छत्रानन्द सिंह झा
100. श्री सूर्यकान्त मिश्र 'निराला'
101. श्री अमलेन्दु शेखर पाठक
102. श्री अभय कुमार यादव
103. श्री प्रदीप बिहारी
104. श्री सुरेन्द्र झा
105. श्री अर्द्धनारीश्वर (बोकारो)
106. श्री फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'
107. श्री जीवछ झा (जमशेदपुर)
108. श्री सहदेव झा
109. श्री जीवछ झा (ल.सराय)
110. श्री चन्द्रभानु सिंह
111. श्री चन्द्रशेखर चौधरी 'बटोही'
112. श्री राधाकान्त ठाकुर 'रमण'
113. श्री हरिश्चन्द्र हरित
114. श्री शम्भुनाथ मिश्र
115. श्री सत्यनारायण झा
116. श्री अमरनाथ चौधरी (सिंगियाघाट)
117. श्री दिलीप कुमार झा 'लूटन'
118. श्री नागेश्वर सिंह 'शशीन्द्र'
119. श्री परमानन्द 'प्रभाकर'
120. श्री प्रभुनारायण झा
121. श्री उपेन्द्र यादव
122. श्री आलोक भारती
123. श्री देवेन्द्र लाल कर्ण
124. श्री नारयण यादव
125. श्री देवशंकर नवीन
126. श्री पंकज पराशर
127. श्री विवेकानन्द ठाकुर
128. श्री सियाराम 'सरस'
129. श्री चक्रधर ठाकुर
130. श्री विमलेन्दु शेखर पाठक
131. श्री अमरनाथ भारती
132. श्री शिव कुमार 'नीरव'
133. श्री अखिल आनन्द
134. श्री कुशेश्वर कश्यप
135. श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर
136. श्री कुमार मनीष अरविन्द
137. श्री रामसेवक ठाकुर
138. श्री कुंज बिहारी मिश्र
139. श्री कन्हैया

एतदतिरिक्त जे आहूत भेलाह मुदा भाग नहि लऽ सकलाह

1. डॉ. श्री नन्दनन्दन झा 2 बेर
2. डॉ. श्री जगदीश मिश्र 2 बेर
3. डॉ. श्री राम नरेश सिंह 2 बेर
4. डॉ. श्री सत्यधन मिश्र (देवघर)
5. डॉ. श्री सुधाकर चौधरी
6. डॉ. श्री बुद्धिनाथ मिश्र
7. डॉ. श्री विद्यापति झा
8. डॉ. श्री यशोदा नाथ झा
9. प्रो. श्री मनमोहन झा
10. श्री जगदानन्द झा
11. श्री श्रीमन्त पाठक
12. श्री सत्यानन्द पाठक

Scanned by CamScanner

ध्यातव्य जे एहि सूचीमे अनेक व्यक्ति छथि, जनिका लोकनिकेँ उपयोगिताक दृष्टिएँ अनेकबेर सहयोग करबाक कष्ट उठाबऽ पड़लनि । कतोक एहनो छथि जनिका सब ठाम नहि बजा सकलियनि से रुष्ट छथि । हम अपना जनैत दिल्लीसँ जयनगर धरि आ गुवाहाटीसँ रायपुर धरिक लोकक सहयोग प्राप्त करबाक चेष्टा कयल ।

प्रकाशन :

प्रकाशित विनिबन्ध :

1.	भुवेनवर सिंह	डॉ. श्री नरेश कुमार विकल
2.	डॉ. लक्ष्मण झा	डॉ. श्री सुरेश्वर झा
3.	ललित	डॉ. श्री विभूति आनन्द
4.	स्नेहलता	डॉ. श्री योगानन्द झा
5.	आरसी प्रसाद सिंह	श्री मार्कण्डेय प्रवासी
6.	सुरेन्द्र झा सुमन	आचार्य जयमन्त मिश्र
7.	धूमकेतु	श्री तारानन्द वियोगी
8.	धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'	श्री शैलेन्द्र आनन्द

अनूदित विनिबन्ध :

1. वाल्मीकि
2. मल्लिनाथ
3. उदयनाचार्य
4. चन्दू मेनन
5. माधव देव
6. कालिन्दी चरण पाणिग्रही

मुद्रणाधीन

1.	डॉ. सुभद्र झा	डॉ. श्री रामदेव झा

प्रस्तावित ओ अनुबंधित

1.	श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार	डॉ. सुरेश्वर झा
2.	प्रभास कुमार चौधरी	डॉ. विभूति आनन्द
3.	रामलोचन शरण	श्री मार्कण्डेय प्रवासी
4.	राजेश्वर झा	श्री केदार कानन
5.	उपेन्द्रनाथ झा व्यास	डॉ. श्री रत्नेश्वर मिश्र
6.	योगानन्द झा	डॉ. श्री शचीन्द्र नाथ मिश्र
7.	छेदी झा द्विजवर	डॉ. श्री मनोरंजन झा
8.	मदनेश्वर मिश्र	डॉ. श्री इन्द्रकान्त झा
9.	बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर'	डॉ. श्री फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' (प्रकाशित)
10.	डॉ. प्रबोध ना० सिंह	श्री राजनन्दन लाल दास

Scanned by CamScanner

11. साहेब रामदास — डॉ. श्री श्रीशंकर झा

12. हंसराज — डॉ. श्री धीरेन्द्रनाथ मिश्र

13. डॉ. सुधाकर झा 'शास्त्री' — डॉ. श्री देवेन्द्र झा (प्रकाशित)

संकलन- एहिमे किछुक पाण्डुलिपि समर्पित किछु लेखनक क्रममे अछि । समय -समय पर विचार संगोष्ठी होइत रहल अछि । किन्तु आलेख सभक सम्पादन ओ प्रकाशन एहिसँ पूर्व मैथिली गद्यक विकास तथा मैथिली काव्यक विकास दू गोट मात्र पुस्तकाकार भेल छल । हमर कार्यकाल मे प्रकाशित भेल अछि –

1. मैथिली कथाक विकास, 2. मैथिली नाटकक विकास, 3. मैथिली लोक साहित्य, 4. मैथिली पत्र-पत्रिका, 5. मैथिली लोक गाथा, 6. मैथिली नाटकक रंगमच : अतीत वर्त्तमान ओ भविष्य ।

1. मुद्रणाधीन– मैथिली लोकनाट्य, 2. साहित्यकार त्रयक शतवार्षिकी पूर्त्ति, 3. मैथिली उपन्यासक विकास तथा 4. कवीश्वर चन्दा झा पुण्यशती ।

बहुतो पुस्तक जे प्रकाशनक बाट तकैत छल ताहि दिस हम बेसी तत्पर रहि प्रकाशित कराओल । यथा

1. **मैथिलीमे महिला लेखन बीसम शताब्दी-** श्रीमती नीरजा रेणु

2. **मैथिली एकांकी संग्रह-** श्री महेन्द्र मलंगिया

अकादेमी नव प्रतिभाकेँ प्रोत्साहित करबाक हेतु एक योजना रखने अछि–नवोदय योजना । एहि शृंखलाक अन्तर्गत तीन टा कविता संग्रह छपल–एहिमे पहिल पूर्व प्रस्तावित छल । एकटा कथा संग्रह

1. **पराती जकाँ-** श्री विद्यानन्द झा, सम्पादक- श्री मोहन भारद्वाज

2. **लावनि परक दीप-** श्री अमलेन्दु शेखर पाठक, सम्पादक – श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

3. **जगले रहबै-** श्री दिलीप कुमार झा 'लूटन', सम्पादक- श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

4. **सन्धि-समास (कथा संग्रह)** श्री शंकर देव झा, सं.- श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

आधुनिक कालमे लोक साहित्य, लोकगाथा, लोकोक्ति लोककथा आदि पर विशेष बल देल जाइत रहल अछि । एहि दिशामे विचार-संगोष्ठी सब आयोजित होइत रहल, जकर उल्लेख भऽ चुकल अछि । एहि क्रममे दू गोट लोकगाथाक प्रकाशन भेल

1. **सलहेस लोकगाथा-** सम्पादक डॉ. श्री महेन्द्र नारायण राम तथा डॉ. श्री फूलो पासवान

2. **दीनाभद्री लोकगाथा-** सम्पादक डॉ. श्री महेन्द्र नारायण राम तथा डॉ. श्री फूलो पासवान

Scanned by CamScanner

डॉ. श्री देवकान्त झा द्वारा अंग्रेजीमे मॉडर्न मैथिली लिटरेचरक इतिहास लिखाओल गेल आ प्रो. श्रीमुरारि मधुसूदन ठाकुर जकर वाचन-सम्पादन कयलनि । ई पुस्तक 2004मे छपल, प्रथम संस्करण गोट-गोट कऽ खपि गेल । दोसर संस्करण मुद्रणाधीन अछि ।

अंग्रेजीमे 2 गोट आरो पोथी छपल- रामकृष्ण झा 'किसुन' पर लिखल श्री मोहन भारद्वाजक 'विनिबन्ध' जकर अनुवाद कयलनि डॉ. श्री शिवेन्द्र दास तथा समकालीन मैथिली कथा पर 25 दिसम्बर 1999मे एक अनुवाद कार्यशाला भेल छल, जाहिमे 30 गोट कथाकार कथाक अंग्रेजी अनुवाद भेल छल । प्रो. श्री मुरारि मधुसूदन ठाकुर द्वारा सम्पादित ओहो पोथी प्रकाशित भेल ।

अनुवाद :-

उपन्यास :

1. दुधमुहाँ (अंग्रेजीसँ)
2. कालवेला (बंगलासँ)
3. शब्द सब (अंग्रेजीसँ)
4. साप आ जौड़ (अंग्रेजीसँ)
5. उपरवास कथात्रयी (गुजरातीसँ)
6. अथाह (नेपालीसँ)
7. अनुभव, पाण्डुलिपि वा रचनाधीन
8. ययाति (प्रकाशित)

कथा :

1. विहारक लोक कथा (पुरस्कृत)
2. समकालीन भारतीय कथा
3. संस्कृत लघुकथा संग्रह (वाचनाधीन)

पद्य :

1. युद्ध आओर योद्धा (नेपालीसँ) पुरस्कृत
2. काजी नजरुल इस्लामक विद्रोही ओ अन्यान्य कविता (बंगलासँ)

निबन्ध :

1. संरचनावाद-उत्तर संरचनावाद एंव प्राच्य काव्यशास्त्र (उर्दूसँ)

एकांकी :

1. बीछल-बेरायल मराठी एकांकी
2. वाङ्ला एकांकी संग्रह (वाचनाधीन)
3. असमिया एंकाकी (अनुवाद क्रममे)

साहित्य अकादेमीक स्वर्ण जयन्ती वर्षमे प्रस्तावित

Scanned by CamScanner

1. शताब्दी संचयन (कथा संग्रह तथा मैथिली लोकोक्ति संग्रह प्रेसमे)

1965सँ 2002 धरि अकादेमी द्वारा 24 गोट मैथिली साहित्यकार पर विनिबन्ध लिखायल आ 45 गोट अन्यान्य भाषासँ अनूदित भेल ।

13 टा उपन्यासक 8 टा कथाक 3 टा नाटकक मैथिली साहित्यक इतिहासक 6 गोट अन्यान्य भाषा साहित्यक इतिहासक अनुवाद कयल गेल । 9 गोट बाल साहित्य मौलिक ओ अनूदित सहित तथा 11 गोट विविध विषयक पुस्तक सब मिलाय 37 वर्षमे 130 टा पोथी प्रकाशित भेल अछि ।

पुस्तक प्रकाशित तँ होइत अछि, किन्तु पाठकक ततेक अल्पता अछि जे बेसी पोथी गोदाममे सड़ैत रहैछ । एमहर पुस्तक मेला सबमे आधा दाम पर पोथी भेटऽ लगलाक बाद विक्रयमे प्रगतिक सूचना अछि । एकर अतिरिक्त कवि चूड़ामणि 'मधुप'क बीछल-बेरायल कविता संग्रह प्रकाशित, आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क उगनाक देयदबाद तथा मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक अंग्रेजी अनुवाद यथाशीघ्र प्रकाशित होयबाक आशा कयल जा सकैछ ।

हमर कार्यकालमे मे किछु थोड़ बहुत आयोजन तथा प्रकाशन भऽ सकल तकर श्रेय निवर्त्तमान अध्यक्ष डॉ. श्री गोपीचन्द नारंगक सहृदयता तथा मैथिलीक प्रभारी उपसचिव श्री बजेन्द्र त्रिपाठीक सहयोगकेँ छैक । हम तँ तत्पर मात्र रहलहुँ । एकटा विशिष्ट कार्य एहि अवधिमे ईहो भेल जे साहित्य अकादेमी विभिन्न भाषाक महान साहित्यकारक वृत्त चित्त सेहो बनबैत अछि । मैथिलीक प्रख्यात गीतकार श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर एहि दिशामे प्रत्यनशील छलाह । ओना ओ पहिने लिलीरेक हेतु प्रस्ताव देलथिन, परन्तु ओ समय नहि दऽ सकलथिन तँ दोसर नाम प. श्री गोविन्द झा प्रस्तावित भेलनि ओ वृत्तचित्र बनि प्रदर्शितो भेल । यद्यपि ओहिमे हिनक एक प्रलाप जे 'जय जय भैरवि' पद महाकवि विद्यापतिक नहि थिकनि ' केर विरोधमे चेतना समिति पटनाकेँ सन्नद्ध होमऽ पड़लैक । दुर्योग कही वा कुयोग हमरा ओ वृत्त चित्र देखबाक अवसर नहि भेटल ।

21म शताब्दीमे अपन ओ हमरा सँ सम्बद्ध प्रकाशित पोथी :-

1. ठाँहि पठाँहि (कविता)
2. कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा (संस्मरण)
3. किछु चुनल कविताक अंग्रेजी अनुवाद- प्रो. श्रीमुरारि मधुसूदन ठाकुर
4. जीवो पावर (हास्य कथा संग्रह)
5. खजबा टोपी (एकांकी संग्रह)
6. दहीक खुँइचा (लघु कथा संग्रह)
7. संक्षिप्त जीवन वृतान्त (अंग्रेजी अनुवाद)- डॉ. श्रीराजानन्द झा
8. अमरजीक परिचय संसार ओ पत्राचार (चिट्ठी सभक संकलन) सं. डॉ.श्रीशंकरदेव झा

Scanned by CamScanner

II

विद्यापति गोष्ठी का संक्षिप्त इतिहास

18 दिसंबर 1948 की संध्या, स्थानीय कमलानेहरु स्मारक पुस्कालय परिसर मे आचार्य प्रो. जगन्नाथ प्रसाद मिश्रके आवास पर कुछ नवोदित छात्र साहित्यकार जैसे सर्व श्री कामेश्वर सिंह 'मस्त' त्रिभुवन प्र. वर्या 'अमरेन्द्रु' अनन्त विहारी दास 'इन्दु' जगदीप नारायण 'दीपक' आदि के साथ मैं भी बैठा था । बातचीत के सिलसिलेमें उन दिनों की चर्चा छिड़ गयी जब चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज (जो अब सी.एम.कॉलेज के नाम से जाना जाता है) का आरम्भिक काल था ! यहाँ प्रध्यापक के रूपेमें आचार्य जगन्नाथ प्रसाद मिश्र सदृश मर्मज्ञ विद्वान, आदरणीय कलक्टर सिंह 'केसरी' सदृश मर्मज्ञ कवि, राम लोचन शर्मा 'कण्टक' समान स्वच्छन्द विचारकर, प्रो. कपिल सदृश मिलनसार कवि आदि प्राध्यापक तथा वदरी दास 'विधुर', विनोदानन्द ठाकुर, उपेन्द्र ठाकुर, सदृश उदीयमान प्रतिभा सम्पन्न छात्र मौजूद थे । नगरमे आदरणीय कविवर सुरेन्द्र झा 'सुमन' जैसे कला पारखी पत्रकार, इसके अतिरिक्त शेखर, आदि नवोदित कवि साहित्यकार विद्यमान थे । कैसा सुन्दर साहित्यिक वातावरण, कैसी चहल-पहल, कैसा उल्लास और उत्साह था ! मगर आज ?

आज कोई छोटी सी भी संस्था नहीं है जिसके मंच पर नगर के साहित्यकार बैठ कर समय-समय पर विचारों का आदान-प्रदान किया करें । अन्तमें निर्णय किया गया कि सभी भाषाओंके लिए जिसका द्वार खुला रहे ऐसी एक संस्था संघटित हो ।

4 जनवरी 49 को सी.एम.कॉलेजके तत्कालीन प्रिंसिपल विश्वमोहन कुमार सिन्हा के हाथों कार्यारम्भ हुआ । सर्वसम्मति से समस्त पूर्वोत्तरीय अंचल की जनपदीय भाषाओं को प्रेरणा देने वाले मैथिल कवि केकिल, कवि कण्ठहार अभिनव जयदेव महाकवि विद्यापति के नाम पर इस संस्था का नाम विद्यापति गोष्ठी रखा गया । स्थायी अध्यक्ष का भार प्रो.जगन्नाथ प्रसाद मिश्र और मन्त्री का भार भाई मस्तजीने सँभाला ।

गोष्ठी का उद्देश्य

इस गोष्ठी के उद्देश्य के सम्बन्ध मैं दो बातें मुख्य थी । एक तो नगर के

Scanned by CamScanner

साहित्यकारों को एक जगह बैठने का अवसर मिले, दूसरी बात साहित्य क्षेत्रमें दरभंगा का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है, वह हिन्दी, मैथिली, बंगला तीनो भाषाओके शीर्ष पुरुषों का कर्मक्षेत्र रहा है, फिर भी इसकी उपेक्षा होती रही है, उसका निराकरण हो । इसका स्पष्टीकरण इस तरह हो सकता है कि खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग साहित्य क्षेत्रमें भारतेन्दु हरिश्रन्द्र से आरम्भ हुआ और हिन्दी का उसी भारतेन्दु युगमें एक स्तम्भ भुवनेश्वर मिश्र थे जिनके घर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वयं आये हुए थे, किन्तु हिन्दी साहित्य के इतिहास में कोई विशेष चर्चा नहीं है । 'मिथिला-मिहिर' की उम्र की कोई दूसरी पत्रिका बिहारमें नही है । उपन्यास-संसार मे चहल-पहल पैदा करने वाला उपन्यास 'विमाता' के लेखक अवध नारायण आज भी इस नगरमें विद्यमान हैं । वैशाली को इतिहास के गर्त्त से निकाल कर उसके ऐतिहासिक महत्त्व को उजागर करनेवाले बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' से प्रेरित-प्रोत्साहित हो पनपने वाले साहित्यकार बिहारमें सम्मान प्राप्त कर रहे हैं, परन्तु 'भुवन' जी इतिहस में आज भी उपेक्षित है । इसका कारण मुझे यही प्रतीत होता है कि एक झोलीमें राजनीति को और दूसरी झोलीमें साहित्य को लेकर चलने वाले लेखक यहाँ नहीं हुए ।

प्रतिभा की कमी यहाँ कभी नहीं रही, किन्तु एक बात और है जो सर्वथा खेद जनक है । यहाँ के साहित्यकारोंमें सद्भावना एवं पारस्परिक सौजन्य के बीच एक भ्रामक धारणा रोड़े की तरह अँटकती रही है । वह धारणा है मैथिली, जो यहाँ की मातृभाषा और हिन्दी जो यहाँ की राष्ट्रभाषा है, में परस्पर विरोधात्मक सम्बन्ध । यद्यपि इन दोनों भाषाओं में विरोध की कोई गुंजाइश नहीं है । भारतवर्ष के इतिहास में इस भू-भाग का बड़ा महत्त्व रहा है । यह मिथिला का केन्द्र स्थान है, जिस मिथिला की पुरानी सभ्यता, संस्कृति, भाषा-भूषा, लिपि के साथ अपना समृद्ध साहित्य रहा है जिसकी निरन्तर बनी रही है । इस साहित्य को कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर के गद्य, महाकवि विद्यापति की कोमल कान्त पदावली, और उमापति के 'पारिजात हरण' नाटक पर गर्व रहा है, और है । इस गौरव को हड़पने की भावना और भावना को मूर्त्त रूप देने की कुत्सित चेष्टाएँ भी कुछ लोगों में झलकती रही हैं । इस कारणसे भी मौके-बेमौके मनोमालिन्यको पनपने का अवसर मिलता रहा है । यहाँ मैं स्पष्ट शब्दों में कह देना चाहता हूँ कि कुछ कट्टर मातृभाषा प्रेमी द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी का विरोध हुआ है, किन्तु इसीलिए कि कुछ कट्टर राष्ट्रभाषा प्रेमीके द्वारा नहीं, बल्कि औरोके अधिकार को हथिया कर अपना उल्लू सीधा करने वालों की एक जमातने मैथिली को निगलने की कोशिश की है जिसकी प्रतिक्रिया में कुछ लोग हिन्दीके विरोधमें उठ खड़े हुए ।

मेरी समझ से तो मातृभाषा और राष्ट्रभाषा दोनों के क्षेत्र अलग, स्थान अलग और अलग महत्त्व हैं । भूल से नहीं, भ्रमवश भी नहीं, बल्कि स्वार्थ सिद्धिमें बाधक मानकर

Scanned by CamScanner

मैथिली विरोधियोंसे मैं शिवदान सिंह चौहान लिखित 'हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष' पुस्तक पढ़ने का निवेदन करता हूँ। भला भात और दाल में, सब्जी और रोटीमें चूड़ा और दहीमें विरोध क्या सम्भव है ? एक दूसरे का पूरक हैं, विरोध कैसा ? इस तरहके विरोध का अन्त करना भी इस गोष्ठीके उद्देश्योंमें एक प्रमुख उद्देश्य है !

ईर्ष्या, द्वेष और अवज्ञा भावको हृदयसे निकाल कर अपने हृदयको टटोलें और मिथिलाके अधिकतर साहित्यकार, दोनों भाषाओं में समान रूप से रचना करते आये हैं, उनकी सेवाको देखें और परखें। उदाहरणके तौर पर कुछ साहित्यकारों के नाम अंकित कर रहा हूँ जिन्हे हिन्दी जगतमें पूरी प्रतिष्ठा प्राप्त है, पर उनकी मातृभाषा वस्तुतः मैथिली है। वे नाम है कविवर आरसी प्रसाद सिंह, सुप्रसिद्ध साहित्यकार नागार्जुन (मैथिली में यात्री) मैथिली पत्रकारितामें महावीर प्रसाद द्विवेदी कहे जाने वाले प. सुरेन्द्रझा 'सुमन' जो 1936में ही 'मिथिला मिहिर' का मिथिलाक नामसे विशेषांक सम्पादित कर हिन्दी पत्रकारितामें अपना चमत्कार दिखा चुके हैं। (इन तीनों को पश्चात् मैथिली पुस्तक पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ)इस गोष्ठीके स्थायी सभापति प्रो. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र जी, जिन्हें बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलनका अध्यक्ष होनेका गौरव प्राप्त है। इन सबोंकी मातृभाषा मैथिली ही है।

वर्तमान तो विद्यमान है ही, उन्नीसवी सदीमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से भी 20 वर्ष पहले मिथिलामें जो चन्दा (कवीश्वर चन्दा झा) उदित हुआ उसकी चाँदनी भी समान रूपसे दोनों भाषाओंको चमकाती रही। मुझे एक पद याद आता है। कवीश्वर चन्दा झा ने लिखा है :-

जब रेल चली

कोउ वाहन न समान बली

भारत भूमि अन्न को ढोती यह कुरीति, नहि रीति भली।

उसमें शोषणका जो जीवन्त चित्र है, वह इतिहासको ललकार कर कहता है कि हिन्दी को समृद्ध बनाने के लिए मिथिला बहुत पहले से राष्ट्रीय चेतना को उद्बुद्ध करने में अग्रसर रही है। इस तरह हिन्दीके अनेक सेवक इस भूमिमें रहे हैं और आज भी हैं। हिन्दी के विकास के लिए दरभंगा भी एक केन्द्र रहा है। 'विद्यापति काव्यालोक' के लेखक नरेन्द्र नाथ दास, सुप्रसिद्ध उपन्यासकार नागार्जुन, हिन्दी-दर्शन के प्रणेता प्रो. हरिमोहन झा, सर्वोपरि अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष स्वनाम धन्य डॉ. श्री अमरनाथ झा विद्यमान हैं, मिथिलावासी हिन्दी के विकास में अपने योगदान का दावा पेश करते रहेंगे।

Scanned by CamScanner

गोष्ठीकी उपलब्धियाँ

यहाँ के साहित्यकारों में अपूर्व उत्साह पाया जाता था । अतःएक दिन ऐसा प्रस्ताव आया कि यहाँसे विकसित होकर जितनी प्रतिभाएँ आज साहित्य-गगनको गुंजायमान कर रही हैं, उन सारे लोगों की कविताओं का एक संग्रह प्रकाशित किया जाय । प्रस्ताव जो सर्वसम्मति से पारित हुआ, पत्र-पत्रिकाओंमें सूचना छपी, परन्तु संग्रह प्रकाशन का काम ठप्प ही रहा ! स्थानीय नगरभवनमें प्रसादजयन्ती गोष्ठीके तत्त्वाधान में मनायी जा रही थी उसीमें शेखर जी से मुलाकात हुई । उन्होंने सुझाव दिया कि संग्रह प्रकाशन के लिए एक चैरेटी शो किया जाय । कमला नेहरू स्मारक पुस्तकालय में इस पर विमर्श करने के लिए साहित्यकारोंकी एक बैठक हुई और सर्व सम्मतिसे श्री शेखरजी रचित 'तमाशा' नाटक मंचित करने का निर्णय किया गया । इसी बीच श्रीदीपक की बदली पटना हो गयी । भाई दीपक जी बिहार बैंक में जीविकापन्न थे । नाटकमें भाग लेने वाले साहित्यिक बन्धुओंमें शिथिलता आ गयी । मैं खुद 'दामस' रोग से पीड़ित हो गया, नाटक मंचित नहीं हो सका । फिर एक रसीद छपी, टिकट खरीदने वालों से वादा किया गया कि बादमें प्रत्येक को एक पुस्तक भी भेंट की जायेगी । उस रसीदी टिकट से 192रु की आय हुई, पर पूर्वाभ्यास (रिहर्सल) में साथ ही मंच बनाने में 118.31 पैसे खर्च हो गये जब कि मंच बनानेमें हिन्दी साहित्य परिषद के तत्कालीन मन्त्री श्री देवीदत्त पोद्दार ने बहुत मदत की । गोष्ठी इसलिए उनका आभारी हैं ।

नाटक में भागलेने वाले साहित्यकारोंमें श्री शेखर जी, भाई अमरेन्दुजी और मुझको छोड़कर सभी मौके पर मुकर गये । नाटकमें पूर्ण सफलता नहीं मिली । उधर टिकट खरीदने वाले पुस्तक का तकाजा करने लगे । गोष्ठीकी साख बचाने के लिए। भाई अमरेन्दुने कविवर बच्चन की मधुशाला की पैरोडी साली-साला लिखी थी जो छपकर प्रेसमें पड़ी थी । अमरेन्दु जी होमियोपैथी चिकित्सक थे, सदा अर्थाभाव रहता था । अन्तमें वही पुस्तक शेष पैसों से निकाल कर टिकट खरीदने वालों को दी गयी ।

अबतक किसी संस्थाने इस ओर ध्यान नही दिया था । गोष्ठीमें निर्णय हुआ और 1950-52 मे क्रमशः विद्यापति की जन्मभूमि बिस्फी, सिद्धिभूमि भवानीपुर और समाधिभूमि बाजितपुरकी साहित्यिक यात्रा की गयी, जिनमें स्थायी अध्यक्ष प्रो.मिश्रजी साथ रहे । ध्यातव्य जो बाजितपुर रेलवे स्टेशन को विद्यापति नगर नामकरण का प्रस्ताव इसी गोष्ठीने सबसे पहले पारित किया था ? इस अभियान का प्रभाव अच्छा रहा । जगह-जगह विद्यापति गोष्ठी का प्रसार हुआ ? भवानीपुरमें तो सहस्रावधि लोगों का खास मेला लग गया । 1953 में बिहार सरकार के राजस्व मन्त्री श्री कृष्ण वल्लभ सहाय ने जो कुछ प्रस्ताव विस्फी में रखा, गोष्ठी पहले ही उपस्थित कर चुकी थी ।

1952 के दिसंबर में प्रिन्सिपल कलक्टर सिंह 'केसरी' की अध्यक्षता में गोष्ठी

Scanned by CamScanner

का प्रथम अधिवेशन एम.एल्.एकेडमी के मैदान में किया गया । उक्त अवसर पर यद्यपि गोष्ठी के सभी सदस्य उपस्थित नहीं हो सके, फिर भी तीस कवियों के कविता पाठ से वातावरण काव्यमय बना रहा । इस आयोजन के लिए अर्थ व्यवस्था समस्या थी, परन्तु उस समय 'आचार्य विनोवा भावे द्वारा भूदान यज्ञ चल रहा था, उसके समर्थनमें गोष्ठी की ओर से भूदान यज्ञ नाम से एक पुस्तिका जिसमें सर्व श्री नागार्जुन, शेखर, अमरेन्दु मस्त और मेरा भी गीत था । उससे आयी रकम से अधिवेशन का आयोजन सम्पादित हुआ ।

इससे पहले समय-समय पर विभिन्न स्थान पर घूम-घूमकर गोष्ठी की विशिष्ट बैठकें जैसे कविवर नागार्जुन की अध्यक्षतामें कविता परिषद, श्रीयुत विभूतिषण मुखो पाध्याय की अध्यक्षतामें कथा परिषद, प्रिन्सिपल पण्डित त्रिलोकनाथ मिश्र की अध्यक्षतामें संगीत परिषद, कुलानन्द 'नन्दन' की अध्यक्षतामें पत्रकार परिषद, प्रो.निन्यानन्द प्रसाद सिन्हा की अध्यक्षतामें एकांकी परिषद और यदुनन्दन शर्मा प्रलयंकर की अध्यक्षतामें निबन्ध परिषदका आयोजन होता रहा ।

यद्यपि गोष्ठीकी ओरसे राम जयन्ती, कृष्ण जयन्ती, गान्धी जयन्ती, रवीन्द्र जयन्ती, प्रेमचन्द जयन्ती, भारतेन्दु जयन्ती, प्रसाद और विद्यापति-स्मृति सप्ताह, तुलसी स्मृति-सप्ताह आदि उत्साह पूर्वक मनाया जाता था, साथ ही सम्मान्य व्यक्तियोंका अभिनन्दन जैसे मन्त्रित्रय श्री हरिनाथ मिश्र स्व.महम्मद शफी, श्री देव शरण सिंह, गोष्ठीके स्थायी अध्यक्ष प्रो.श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्र के राज्य परिषदमें सदस्य मनोनीत होने पर, 'पं.श्री सुरेन्द्र झा सुमन' के मिथिला कॉलेजमें प्राध्यापकके रूपमें नियुक्त होने पर, मिथिला विद्वत्परिषद द्वारा पं. श्री काशीकान्त मिश्र 'मधुप' को कवि चूड़मणि उपधि देने के और भारत सरकार द्वारा 'त्रिवेणी' कथा काव्य पर 500रु पुरस्कार प्राप्त होने के अवसर पर गोष्ठी द्वारा प्रीतिभोज दिये गये । इन सारे कार्यक्रमोंके विवरण आर्यावर्त्त, इण्डियननेशन, राष्ट्रवाणी, नवराष्ट्र, मिथिलामिहिर, पंचयाती राज, निर्माण, वैदेही आदि दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिकाओं मे छपते रहे । परन्तु, कविता संग्रह प्रकाशनका कार्य बहुत मन्थर गतिसे चलता रहा । इस बीचमें शेखरजी की 'फूल और कलियाँ' नामक छोटी सी गीत पुस्तिका, श्री विन्देश्वर सिंह रचित 'यशोधरा का काव्य रूप' समीक्षात्मक निबन्धग्रन्थ गोष्ठी द्वारा प्रकाशित हुआ । उन दिनों मिथिला-मिहिर के अतिरिक्त 'पंचायती राज' उदय, और 'निर्माण' (साप्ताहिक) बालक और वैदेही (मासिक) पत्रिकाएँ इस नगर से प्रकाशित होती थीं जिनके द्वारा गोष्ठीको पूर्ण प्रोत्साहन मिलता रहा ।

गोष्ठी की सदस्यता के लिए मासिक बैठकमें जिस किसी विधामें हो, अपनी नवीनतम रचना ही शुल्कके रूपमें उपस्थित करना आवश्यक माना जाता था । जिससे साहित्य-सर्जना अबाध गति से चलती थी ।

Scanned by CamScanner

संयोगवश गोष्ठी के स्थायी अध्यक्ष 'राष्ट्रवाणी' दैनिक पत्र का सम्पादक होकर पटना चले गये और मस्त जी भी बी.ए.पासकर कानून पढ़ने के लिए पटना चले गये। मन्त्री पद का भार स्नेही मित्र श्री अनन्त बिहारी दास 'इन्दु' को सौंपा गया परन्तु आइ. ए.परीक्षामें सम्मिलित होनेके कारण कुछ ही दिनोंके बाद उन्हौने अपनी असमर्थता व्यक्त की। परिणामत: अनेक कार्यभार रहते हुए इसका दायित्व स्वीकार करना पड़ा। कविता संग्रह प्रकाशन का संकल्प पूरा करने के लिए सहकारिताके आधार पर प्रत्येक कविसे 5रु देने का अनुरोध किया गया, मगर रचना तो 57 कवियों की मिली, पैसे कुछही प्रतिष्ठित लोगों से प्राप्त हुए।

मैं उस समय 'निर्माण' साप्ताहिक का सम्पादन करता था। मानदेय के रूपमें मुझे 60रु प्रतिमाह देने का वचन मिला था, जो समय पर नहीं प्राप्त होता था। अन्तत: निर्माण प्रेस के संचालक मिथिला केसरी बाबू जानकी नन्दन सिंहके सहयोगसे इस संग्रह का प्रकाशन सम्भव हो सका।

आशा और निराशाके उत्थान-पतनमें उठता-गिरता हुआ आज आपके समक्ष 'विद्यापति के देश में' एक ऐतिहासिक महत्त्व रखने वाला कविता संग्रह उपस्थित करते हुए हर्ष और लज्जा दोनों का अनुभव कर रहा हूँ। हर्ष इसिलिए कि अन्तत: इस गोष्ठी का संकल्प साकार हो सका, वह भी इस पैमाने पर जो एक प्रकारसे सम्पूर्ण मिथिला का प्रतिनिधित्व करता है। लज्जा इसलिए कि लगातार तीन वर्ष तक चेष्टा करते रहने पर भी राष्ट्र कवि श्री दिनकर जी, काव्य मर्मज्ञ कवि पं. श्री जानकीवल्लभ शास्त्री और प्रो. श्री रामलोचन शर्मा 'कण्टक' की रचनाएँ सम्मिलित कर पाने में अक्षम रहा। इस संग्रह की एक विशेषता है। कभी प्रो.मिश्रने प्रसंगत: कहा था कि साहित्य क्षेत्रमें सभी कदम बढ़ाने के लिए सबसे पहले कविता लिखने का ही प्रयास करते हैं, किन्तु कवि कर्म कुछ ऐसा जटिल होता है जो नैसर्गिक प्रतिभाके अभावमें आगे नहीं बढ़ पाता है। उसी सिलसिलेमें उन्हौने कह दिया कि जब मैं हजारीबाग-जेल में 1930 में था तो मैंने भी 'गाँधी स्तव' शीर्षक एक कविता लिखी थी। दूसरी कविता लिखनेकी चेष्टा करते समय ही मुझे आभास हुआ कि मुझमें कविता करने की प्रतिभा नहीं है, और मैं सम्पूर्ण रूपसे गद्य लेखन की ओर मुड़ गया। इतनी बात सुन लेनेके बाद मैं उनके पीछे पड़ गया कि जीवनमें लिखी एक कविता ही सही, इस संग्रहमें संकलित करने के लिए दी जाय। बहुत दिनतक टाल-मटोल करते रहे, पर जिद के चलते बाइस वर्ष पुरानी कविताको फाइलसे ढूंढ़ कर निकाला गया और इस संग्रह का मंगलाचरण उसी कविता से किया गया है, जिसका मुझे गर्व है।

अन्तमें मैथिली-हिन्दी का संयुक्त संग्रह उसी का प्रतीक है कि हिन्दी और मैथिली दोनों भाषाओं की स्वतन्त्र सत्ता है और दोनों में विपुल समृद्ध साहित्य है, एक

Scanned by CamScanner

दूसरे की पूरक है विरोधी नहीं है । सौभाग्य वश इस गोष्ठी को ऐसे मर्मज्ञ कवि और विद्या वैभव सम्पन्न विद्वान महारथियों का आशीर्वाद प्राप्त है जिसके प्रभावसे यह गोष्ठी उद्देश्य प्राप्तिकी दिशामें निर्बाध रूप मे जबतक जीवित रहेगी अग्रसर होती रहेगी ।

इस संग्रहको उपस्थित करनेमें जो कुछ विलम्ब हुआ वही मेरी अल्पज्ञता और अनुभव-हीनता का द्योतक है । इस पर से क्षमा याचना तो घृष्टता ही समझी जायगी । फिर भी सभी सहयोगी बन्धुओं, गुरुजनों के अतिरिक्त कमला नेहरू स्मारक पुस्तकालय के मन्त्री श्री सूरत लाल जी का आभार मानता हूँ, जिनका अमूल्य सहयोग सदा मिलता रहा है । गत विद्यापति-स्मृति-सप्ताह के अवसर पर दी गयी सहायता के लिए मिथिला केसरी बाबू श्री जानकीनन्दनसिंह जी का कृतज्ञ रहूंगा ।

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'
मन्त्री, विद्यापति गोष्ठी,
कमलानेहरू स्मारक पुस्तकालय,
लहेरियासराय, दरभंगा ।

कालिक धवल त्रयोदशी
(निआपति स्मृति दिवस)
8.10.1954 ई.

नाम	:	**श्रीचन्द्रनाथमिश्र**
लेखकीय नाम	:	श्रीअमर
माय द्वारा संबोधन	:	बतहू
पिता	:	पं. मुक्तिनाथमिश्र, प्रधानाचार्य म.अ. रमेश्वरलता संस्कृत महाविद्यालय, दरभंगा-846004
माता	:	दाइजी देवी
जन्म	:	ज्येष्ठ कृष्ण पड़ीव, तदनुसार 2 मइ १९२५ इ.
जन्मस्थान	:	खोजपुर, मधुबनी
निवास	:	आदित्य सदन, मिश्रटोला, दरभंगा व्याकरणाचार्य, धर्मकोविद, डिप. इन. टिच.
सन्तति	:	डा. श्रीमती योगमायाझा,
जमाय	:	डा. श्रीरामदेवझा, कबिलपुर डा. श्रीमती सावित्रीझा (दिवंगता)
जमाय	:	श्रीमहेन्द्रझा, बलभद्रपुर
पुत्र	:	श्रीशम्भुनाथमिश्र, एम.ए.
पुत्रवधू	:	श्रीमती अपर्णामिश्र, एम.ए
पौत्र	:	श्रीआदित्यभूषणमिश्र श्रीविभूतिभूषणमिश्र
दौहित्र	:	श्रीकृष्णदेवझा, एम.एस-सी. डा. श्रीशंकरदेवझा, एम.ए., एल. एल.बी., बी.जे.एम-सी., पत्रकार श्रीविजयदेवझा, एम. ए., पत्रकार
दौहित्री	:	श्रीमती ममताझा, एम.ए. डा. श्रीमती कविताझा, एम.ए. श्रीमती विद्यामिश्र, एम.ए.

Scanned by CamScanner

लेखकक-अन्यान्य कृति

कविता : गुदगुदी, युगचक्र, ऋतु-प्रिया, आशा-दिशा, उनटा पाल, ठाँहि-पठाँहि, विविधगीत, अमर संगीत (हिन्दी)

कथा : जल समाधि, जीरो पावर, दहीक खुँइचा

उपन्यास : वीरकन्या, विदागरी

एकांकी : समाधान, खजबा टोपी

निबन्ध : मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण

संस्मरण : कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा

विनिबन्ध : म.म.मुरलीधरझा, काशीकान्तमिश्र 'मधुप', दीनानाथपाठक 'बन्धु'

इतिहास : मैथिली पत्रकारिताक इतिहास, मैथिली साहित्य परिषदक इतिहास, मैथिल महासभाक संक्षिप्त इतिहास

सम्पादन : मैथिली लोकसाहित्य, मैथिली रंगमंच : अतीत, वर्त्तमान, भविष्य, विद्यापति सूक्ति तरंगिणी, लाबनि परक दीप, जगले रहबै, सन्धि-समास, विजय शंख, पद्य प्रसून, लोचन, आदि।

सह सम्पादन : ललितनारायणमिश्र स्मृति ग्रन्थ, श्रीसुमन साहित्य सौरभ, कविवर जीवनझा रचनावली, मैथिली अकादमी कविता संग्रह, विद्यापतिके देश में (हिन्दी)

संकलन : मुहावरा ओ लोकोक्ति, प्रतिनिधि एकांकी, स्वातन्त्र्य स्वर, कथा किसलय

विविध : त्रिफला, मैथिली साहित्यालोक, मैथिली पाठावली, मैथिली साहित्य-सुमन

अनुवाद : विद्यापति सूक्ति तरंगिणी, हरिनारायण आप्टे, वंकिमचन्द्र चटर्जी परशुरामक बीछल-बेरायल कथा

पत्र-सम्पादन : स्वेदश (दैनिक), जनक, निर्माण (साप्ताहिक), वैदेही (पाक्षिक, मासिक)

लेखकसँ सम्बद्ध अन्यान्य पोथी :

अमर-अर्चना (अभिनन्दन ग्रन्थ), सं.-डा. मदनेश्वरमिश्र, म.म. श्रीजयमन्तमिश्र, श्रीचन्द्रनाथमिश्र अमरक साहित्यमे हास्य-व्यंग्य (शोध-प्रबन्ध) - डा. श्रीभाग्यनारायणझा, अमरजीक परिचय संसार ओ पत्राचार - डा. श्रीशंकरदेवझा, सेलेक्टेड पोएम्स ऑफ अमरजी अनु.- प्रो. श्रीमुरारि मधुसूदन ठाकुर, पारागॉन ऑफ परसेवरेन्स बायोग्राफी ऑफ अमरजी (ले.- डा. श्रीरामदेवझा), अनु. - डा. श्रीराजानन्दझा।

Scanned by CamScanner

अतीत-मन्थन

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

नवरत्न-गोष्ठी
आदित्य सदन
मिश्रटोला, दरभंगा

Scanned by CamScanner